बनजारा जाति : भाषा और लोकसाहित्य

हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
की
पी-एच. डी. उपाधि के लिए प्रस्तुत
शोध – प्रबंध

1983

प्रस्तुतकर्ता
यल. पाण्डु, एम. ए.

अध्यक्ष एवं निर्देशक
डॉ. चन्द्रभान रावत,
एम. ए., पी-एच.डी., डी. लिट्.,
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद ।

हिन्दी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद–500 001

D E C L A R A T I O N

It is declared that this work has been originally carried out by the under signed, under the Supervision of professor Chandra Bhan Rawat in the Department of Hindi, University of Hyderabad, Hyderabad, and that this has not been submitted for any degree to any other University.

Hyderabad (INDIA) L. PANDU.

C E R T I F I C A T E

It is certified that this thesis work has been originally carried out by Sri L.Pandu under my Supervision.

This thesis has been submitted in the Department of Hindi, University of Hyderabad, Hyderabad for the award of the degree of Doctor of Philosophy.

DATE:

HYDERABAD(INDIA)

(PROFF. CHANDRA BHAN RAWATH)
Supervisor & Head,
Department of Hindi,
University of Hyderabad,
HYDERABAD.

-.ooOoo.-

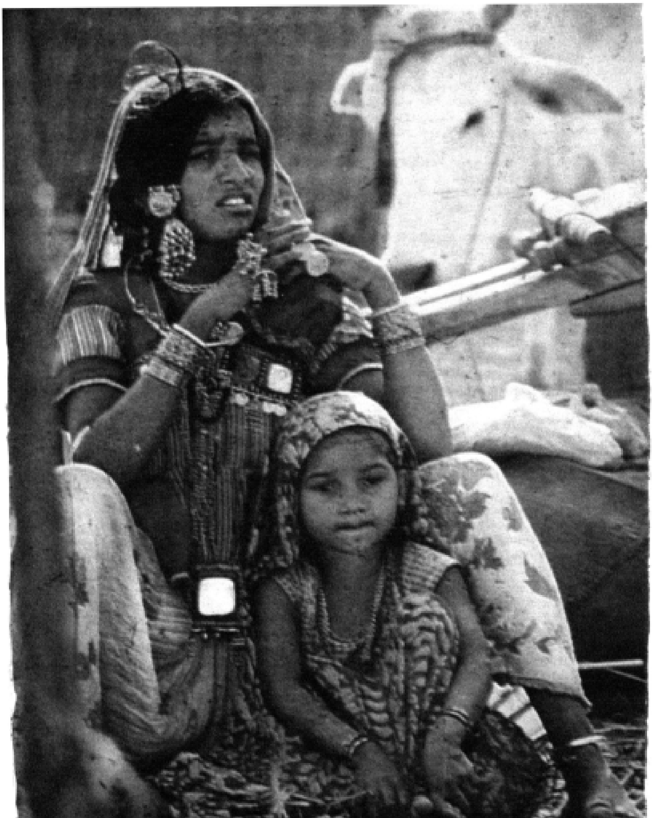

विषय अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय :

बनजारा जाति : सामान्य परिचय

0. बनजारा : सामान्य परिचय

1.1. बनजारा शब्द और व्युत्पत्ति

1.2. बनजारा : उद्भव और विकास

1.3. बनजारा : मूल निवास स्थान

1.4. बनजारा बोली

1.5. बनजारा जनसंख्या

1.6. बनजारों का दक्षिण गमन

1.7. बनजारे और जिप्सी

1.8. बनजारा : वंशोद्भव

2.7 राजपूत और बनजारा गोत्र

3. गोर बनजारा

4. चारण बनजारा

5. ढाडी बनजारे

6. मथुरा बनजारे

7. मुसलमान बनजारे

1.1.1.1 ह्रस्व स्वर

1.1.1.1.1 ह्रस्व स्वरों का संस्वनात्मक विवरण

1.1.1.2. दीर्घता पर आधारित संस्वन

1.1.1.3. श्रुति पर आधारित संस्वन

1.1.1.4. नासकीय करण-जन्य संस्वन

1.1.1.5. अनुनासिक्य

1.1.1.6. स्वर संयोग

1.2. व्यन्जन ध्वनिग्राम

1.2.1. व्यन्जन ध्वनिग्राम के स्वल्पान्तर युग्म :

1.2.2. व्यन्जन ध्वनिग्राम तथा उनके संस्वन

1.2.3. व्यन्जन संयोग ।

चतुर्थ अध्याय :

पद विचार

0. प्रस्तावना

1. संज्ञा की प्रत्यायात्मक संरचना

1.1. पूर्व प्रत्यय या उपसर्ग

1.2. अन्त्य प्रत्यय

2. वचन प्रत्यय

2.1. वचन प्रत्यय के रूप

3. कारक और विभक्ति

4. सर्वनाम

4.1. संज्ञाओं के तिर्यक रूपों के स्थानापन्न

4.2. विशेषणों के स्थानापन्न

5. परसर्ग :

6. विशेषण

पंचम् अध्याय :

क्रिया-विचार

0. प्रस्तावना

1. धातु

1.1. एकाक्षरात्मक धातुएँ

1.2. द्व्यक्षरात्मक धातुएँ

1.3. रूप रचना

1.4. धातुओं के साथ प्रत्ययों का योग :

1.5. काल रचना

1.6. कृदन्तीय रचना

1.7. वर्तमान पूर्ण निश्चयार्थ

1.8. भूतकालिक पूर्ण निश्चयार्थ

1.9. क्रियार्थक संज्ञा के साथ रूप रचना

2. संयुक्त क्रिया :

2.1. पूर्वकालिक कृदन्तों पर अन्य क्रियाओं का संयोग

§

तृतीय खण्ड { लोक साहित्य }

षष्ठ अध्याय :

लोक साहित्य : सामान्य परिचय

0. लोक

1. ग्राम जन तथा लोक

2. लोक-संस्कृति, लोकवार्ता तथा फोकलोर

3. लोक साहित्य

4. परम्परा

5. साहित्य और लोक साहित्य

6. लोक साहित्य की विधाएँ

6.1. लोकगीत

6.2. लोकगाथा

6.3. लोक कथा

6.4 लोकोक्ति

6.5 लोक कला

6.5.1 लोक संगीत

6.5.2. लोक नृत्य

6.5.3. लोक चित्र कला

सप्तम् अध्याय :

बनजारा लोक गीत

0. प्रस्तावना

1. जन्म के गीत

1.1. गर्भवती का खाना-पीना

1.2. प्रसव गीत §जणोदगीत§

1.3. पुत्र जन्म

1.4. काढ़ा §काढ़ो§

1.5. भूजमा लाम्सी §ऊलवा§

1.6. छटी

1.7. जल पूजन और कौमरी बाँटना
§घूघरी वेंटणो§

1.8. नामकरण

1.9. अन्न प्राशन §लपटो चटाणो§

1.9.1 कर्ण छेदन §कानों में बाळी डालना§

2. विवाह के गीत

2.1. सगाई

2.2. मनोरंजन

2.3. वर यात्रा

2.4. वर का स्वागत

2.5. घोटार नक्ता [घोल पीने का कार्यक्रम]

2.6. नवलेरीर वायार हंगोकी
[कन्या का विवाह स्नान]

2.7. तेतडुर हंगोकी [वर का स्नान]

2.8. वायार ओगेर नक्ता [सप्तपदी से पूर्व अनुष्ठान]

2.9. वाया भंदिर तैयारी [सप्तपदी की तैयारी]

2.9.9.2 छोरीन भार काक्गो [कन्या की विदाई]

3. मृत्यु संस्कार के गीत

3.1 मृत्यु संबंधी गीत

3.2. शवयात्रा के पूर्व का गीत

4. देवी-देवताओं के गीत

4.1. पौराणिक देवता

4.2. लोकदेवता

4.3. सन्त या महापुरुष वर्ग

4.4. सती

5. पर्वोत्सव सम्बन्धी गीत

5.1. होली

5.2. दीपावली

5.3. दशहरा {दसराव}

5.4. तीज

6. श्रम परिहार सम्बन्धी बनजारा लोकगीत

6.1. पशु चराने के गीत

6.2. कृषि गीत

6.3. चक्की गीत

6.4. पणिहारी गीत

7. व्यापार के गीत

अष्टम अध्याय :

बनजारा लोक गाथा

1. लोक गाथा की परिभाषा

2. लोक गाथा की विशेषताएं

3. लोक गाथा साहित्य का वर्गीकरण

4. बनजारा लोक गाथा का वर्गीकरण

4.1. धार्मिक गाथाएं :

4.2. वीरगाथा

4.3. प्रणय गाथाएं

4.4. रोमांचक गाथाएं

नवम् अध्याय :

बनजारा लोक कथा

0. प्रस्तावना

1. लोकगीत और लोक कथा

2. कथा और कहानी

3. लोक कथाओं की प्राचीनता

4. बृहत्कथा

5. बनजारा लोक कथाओं का वर्गीकरण

5.1 उपदेशात्मक कथा

5.2. प्रेम कथा

5.3. पशुओं की कथा

5.4. अद्भुत कथा

5.5. मनोरंजक कथा

5.6. व्यापारिक कथा

दशम् अध्याय :

बनजारा लोकोक्तियाँ

0. [illegible] लोकोक्तियों की प्राचीन परंपरा

1. लोकोक्तियों की विशेषताएं

2. मुहावरें

3. लोकोक्तियाँ

4. कहावतें

5. पहेली

5.1. पहेलियों का वर्गीकरण

6. उ प सं हा र

<u>परिशिष्ट</u>

परिशिष्ट - एक

परिशिष्ट - दो

परिशिष्ट - तीन

<u>सहायक ग्रन्थ सूची</u>

हिन्दी

अंग्रेजी

<u>बनजारा चित्रावली</u>

प्राक्कथन

प्राक्कथन

आजकल विश्व के अनुसन्धान केन्द्रों पर जन-जातियों की संस्कृति, भाषा और उनके साहित्य सम्बन्धी शोध कार्य में रुचि ली जा रही है । भारत में जन-जातियों के क्षेत्रों में देशी और विदेशी विद्वानों के द्वारा शोध कार्य किया जा रहा है । बनजारा जाति यायावर प्रवृत्ति की एक भारत व्यापि जनजाति है । भारत में ही नहीं यूरोप में भी जिप्सी जाति के घुमंतु समूह और टाँडे मिल जाते हैं । भारत में विशेष रूप से इस जाति के पड़ाव महाराष्ट्र, कर्नाटक और आन्ध्र में है । महाराष्ट्र में इनके संबंध में शोध कार्य भी हुआ है । किन्तु आन्ध्र के विश्वविद्यालयों में इस जाति पर कोई महत्वपूर्ण शोध कार्य नहीं हुआ है । प्रस्तुत अध्ययन आन्ध्र प्रदेश के बनजारों/लम्बाड़ियों की भाषा और साहित्य के सम्बन्ध में पहला कार्य है ।

किंवदंतियों, परम्पराओं अनुश्रुतियों और आगवत प्रमाणों के आधारों पर यह सिद्ध होता है कि आन्ध्र प्रदेश के बनजारों का जातीय मूल स्रोत राजस्थान है । वहाँ से चलकर विभिन्न क्षेत्रों से होते हुए यह जाति आन्ध्र में प्रविष्ट हुई और इसके केवल घुमन्तु समूह ही यहाँ नहीं मिलते बल्कि टाँडों के रूप में इनकी बस्तियाँ भी आन्ध्र में मिलती है । बनजारा और लम्बाड़ी शब्दों की व्युत्पत्ति कई प्रकार से की जाती है । इन व्युत्पत्तियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह जन जाति पशुओं के व्यापार, सामान लादने के काम और नमक के व्यापार से सम्बन्धित रही ।

लाखा बनजारे की अनुश्रुति इस जाति के माल ढोने के व्यापार को प्रमाणित करती है । बनजारा जाति के जातीय संघटन को देखने से

यह स्पष्ट हो जाता है कि मुसलमान और हिन्दू दोनों ही प्रकार के बनजारे मिलते हैं । हिन्दू बनजारों के गोत्र प्राय: राजपूत गोत्र ही है । व्यवसाय के आधार पर बनजारों की चारण, ढाडी, सोनार आदि शाखाएं भी मिलती है ।

जहाँ तक बनजारों के टाँडे की संरचना का प्रश्न है, इसका एक प्रधान होता है जिसको नायक कहते हैं । बनजारों की, बनजारों की जातीय पंचायत के संघटन का केन्द्र यही नायक होता है । जातिगत समस्याओं का न्याय नायक "नसाब" § न्याय स्थान § में जाति के अन्य प्रमुख व्यक्तियों के साथ करता है ।

बनजारों के पारिवारिक सम्बन्ध सामान्य रूप से अन्य हिन्दुओं के पारिवारिक सम्बन्धों जैसे ही है । केवल उनकी वेशभूषा और इनके आभूषण अन्यों से विशिष्ट है । जहाँ तक इनके धार्मिक संघटन का प्रश्न है, बनजारा जाति कुछ स्थानीय लोक-देवताओं के साथ-साथ शक्ति के उपासक है । बलि की प्रथा भी इनमें मिलती है । इनके पर्व त्यौहार मस्ती और उल्लास से भरे रहते हैं ।

ऊपर बनजारा जाति के जिन पक्षों को स्पष्ट किया गया है उनका सम्बन्ध बनजारों के जातीय स्तर और उनकी संस्कृति से सम्बन्धित हैं । इन दोनों विषयों का विवेचन प्रबन्ध के प्रथम खण्ड के पहले और दूसरे अध्याय में किया गया है ।

दूसरे खण्ड में बनजारों की भाषा का परिचयात्मक विश्लेषण किया गया है । इस खण्ड के तीन अध्यायों में बनजारा भाषा की ध्वनियों और पदों व क्रिया विचार पर विवरणात्मक दृष्टि से विचार किया गया है । वाक्य विचार को इस अध्ययन में

सम्मिलित नहीं किया गया है क्योंकि बनजारों का वाक्य विधान इतना जटिल और विस्तृत है कि इसके लिए अलग से एक शोध-प्रबन्ध आवश्यक है । केवल प्रमुख वाक्यों के नमूने परिशिष्ट में संकलित कर दिये गये हैं ।

तीसरे खण्ड में के छटे अध्याय में बनजारा जाति में प्रचलित लोक साहित्य के विविध प्रकारों और रूपों का सामान्य परिचय दिया गया है । अन्य क्षेत्रों के समान ही बनजारा लोक साहित्य में गीत, गाथा, कथा, लोकोक्तियाँ आदि समाविष्ट है ।

सातवें अध्याय में बनजारों के लोकगीतों का विस्तृत परिचय दिया गया है । इस जाति के जीवन में कोई भी ऐसा महत्वपूर्ण अवसर नहीं होता जबकि गीतों का गायन नहीं हो । विशेष रूप से पुत्र जन्म और विवाह के अवसर अपरमित गीतों से गूंजते रहते हैं । विवाह का तो एक-एक अवसर गीतों की भीड़ से भरा रहता है । विशेष रूप से कन्या की बिदाई का अवसर करुण गीतों से सजल रहता है । स्वयं बिदा होती हुई कन्या भी रोते-रोते गाती है । इसके लिए उसे पहले प्रशिक्षण भी दिया जाता है ।

वर्ष के पर्व और उत्सव भी गीतों से निनादित रहते हैं । इनमें मुख्य रूप से दशहरा, दीपावली, होली और तीज उल्लेखनीय हैं ।

धार्मिक गीतों में यात्रा के गीत और देवी देवताओं के गीत आते हैं । देवी देवताओं से सम्बन्धित गीतों के दो प्रकार किये जा सकते हैं । एक तो वे गीत जो हनुमान, देवी, राम, कृष्ण और बालाजी आदि प्रसिद्ध हिन्दू देवी-देवताओं से सम्बन्धित हैं । गीतों का दूसरा वर्ग लोक-देवताओं और संतों से सम्बन्धित है । इनमें तुलजा, लोकामसंद,

सेवाभाया तथा कुछ सतियाँ आती है ।

धार्मिक गीतों के अतिरिक्त बनजारों के श्रम का परिहार भी कुछ गीतों के द्वारा होता है । इनको श्रम गीत की संज्ञा दी जा सकती है । यदि पशुचारण और कृषि कार्य के समय गीतों का गायन होता है तो स्त्रियाँ पानी भरने के समय, चक्की चलाते समय गीत गाती है ।

आठवे अध्याय में बनजारों की लोककथाओं का वर्गीकरण और विवेचन किया गया है । नौवे अध्याय में लोकगाथाओं का वर्णन किया गया है । यद्यपि नृत्य साहित्य में सम्मिलित किये नहीं जा सकते फिर भी इनको इसलिये विवेच्य बनाया गया है कि लोकगीत इनके साथ गाये जाते हैं और वे गीत साहित्य के अभिन्न अंग है ।

दसवें अध्याय में बनजारों के व्यवहार में गूंथे हुए मुहावरें तथा पहेलियाँ एवं लोकोक्तियों का परिचय दिया गया है । यह बनजारों के जीवन व्यवहार का बहुत सजीव अंग है ।

अंत में कुछ परिशिष्ट भी जोड दिये गये हैं । पहले परिशिष्ट में बनजारों के कुछ हास-परिहासमय गीतों का परिचय दिया गया है । दूसरे परिशिष्ट में बनजारा बोली के वाक्यों के नमूने जोड़ दिये गये हैं । इनको एक विशिष्ट व्याकरणिक क्रम में रखा गया है । तीसरे परिशिष्ट में बनजारा जाति की विशिष्ट शब्दावली प्रस्तुत हैं ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की प्रकृति ऐसी है कि इसके लिए बहुत कुछ क्षेत्रीय कार्य भी करना पड़ा । मुख्य रूप से धारूर टाँडा, कुम्मम टाँडा, मदनपल्ली टाँडा आदि उल्लेखनीय हैं । इन टाँडों के नायकों और वहाँ के बनजारा भाईयों से सामग्री संग्रह में बहुत सहयोग प्राप्त

हुआ । इन सभी का मैं आभारी हूँ । सभी ने उस प्रकार मेरी सहायता की कि जैसे - उन्हीं का कार्य हो रहा हो ।

प्रबन्ध की योजना बनाने से लेकर प्रस्तुतीकरण तक मेरे निर्देशक प्रोफेसर चन्द्रभान रावत का वरदहस्त मेरे ऊपर रहा । हर स्थिति में उनका वैज्ञानिक निर्देशन मुझे प्राप्त होता रहा । उनके प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ । विभाग के अन्य गुरुओं से भी समय-समय पर प्रोत्साहन मिलता रहा उनके प्रति भी मैं आभारी हूँ । मेरे कई मित्रों ने मेरी जाने-अनजाने सहायता की उन्हें भी मैं धन्यवाद देता हूँ ।

मेरी धर्म पत्नी श्रीमति सरोजा देवी का सहयोग भी कम नहीं है । मैं उसको साभार स्वीकार करता हूँ ।

इन शब्दों के साथ मैं शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

- एल. पाण्डु

प्रथम खण्ड :
****

बनजारा जाति

प्रथम अध्याय : .. ..

बनजारा जाति : सामान्य परिचय

1. बंजारा : सामान्य परिचय

भारत की बंजारा जाति का इतिहास प्राचीन तथा गौरवशाली है ।[1] राजस्थान के साहसी एवं पराक्रमी राजपूत वीरों के ये वंशज हैं ।[2] ये राजस्थान से आये और देश के सभी प्रदेशों में फैल गए ।[3] प्राचीन काल से ही बंजारा घुमक्कड़ जाति रही है, जिसका प्रमुख व्यवसाय व्यापार रहा है ।[4] एक स्थान से सामान बैलों पर लाद कर उसे दूसरे स्थान पर पहुँचाना एवं उस स्थान से आवश्यक वस्तुओं का क्रय-विक्रय करते हुए अपने परिवार के साथ घूमते रहना ही बंजारों की विशेषता रही है ।[5] मध्य-काल में मुगलिया फौजों के लिए सामग्री पहुँचाने का काम इनके जिम्मे था ।[6] मुगलों का राज्य अस्त हुआ, अंग्रेज आए और इनके साथ रेलगाड़ी और मोटर आई, फलस्वरूप इन बंजारों का नमक का व्यवसाय नष्ट हो गया ।[7] काल - प्रवाह में पड़कर इनके सारे लोग इधर उधर बिखर गए ।[8] अलग-अलग प्रदेशों में इनकी अवस्था भी एक सी न रही । बिहार, उड़ीसा, बंगाल, आंध्र, गुजरात में इन्हें आदिम जाति माना गया । दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, मैसूर, राजस्थान, केरल में अनुसूचित जाति के रूप में मान्यता मिली । महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, मद्रास में अवर्गीकृत जाति के अंतर्गत इन्हें रखा गया है । अन्य राज्यों में अन्य अनुसूचित पिछड़ी जाति के रूप में स्वीकार किया गया है ।[9]

---

1. Col. Mackenzie : Berar Census Report, 1881, p.152.
2. Report of the Criminal Tribes Act Enquiry Committee, 1949, Government of India, p.12.
3. Irvin : Army of Indian Mughals, p.192.
4. Baines, Athlestane : Ethnography, 1912, p.60.
5. Ibid : p.61.
6. Col. Tad, James : Letters on Mahrattas, Indian Office Tracts, (1798), p.67.
7. Nanjundayya, H.V. :The Mysore Tribes and Castes, Mysore (1928), Vol.II, p.136.
8. The Constitution (S.T.) Order, 1950.
9. Report of All India Banjara Study Team, 1968, p.24.

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा॰ राजेंद्रप्रसाद के शब्दों में --
" कोई विदेशी जो भारत से बिल्कुल अपरिचित हो, वह एक छोर से दूसरे छोर तक सफर करे तो उसको इस देश में इतनी विभिन्नताएँ देखने में आएँगी कि वह कह उठेगा कि यह देश नहीं बल्कि कई देशों का एक समूह है, पर विचार करके देखा जाए तो इन विभिन्नताओं की तह में एक ऐसी एकता फैली हुई है जो अन्य विभिन्नताओं को ठीक उसी तरह पिरो लेती है और पिरोकर एक सुंदर मणियों का समूह बना देती है ।" 1॰

श्रीमती गांधी के अनुसार - " हिंदुस्तान की एकता की बुनियाद में यह बात है कि हम हिंदुस्थानी बनें, हिंदुस्तान की तरक्की के लिए ऊँचे से ऊँचे जो काम हैं, उन्हें करते रहें और अपने अस्तित्व को भी कायम रखें - यही बुनियाद है भारत की एकता में ।"2

विविधता और एकता के इस धूपछाँही खेल में बंजारा जाति के योगदान का रंग अनूठा है । " नक्शी काम का कपड़ा जब बनता है तो जुलाहा जहाँ जरूरत हो, वहीं सुनहरा धागा लगाता है, बाकी सब कपास के धागे होते हैं । फिर भी सुनहरा धागा कपड़े के अंदर फैला हुआ दिखाई देता है, ऐसा ही यह बंजारा समाज है । हिंदुस्तान के अंदर इस बंजारा समाज का धागा सब जगह फैला हुआ है।

1॰ डा॰ राजेंद्र प्रसाद : अखिल भारतीय सांस्कृतिक सम्मेलन -1951, दिल्ली का उद्घाटन भाषण ।

2॰ श्रीमती इंदिरा गांधी : अखिल भारतीय बंजारा सेवक शिविर, 1966 उद्घाटन का भाषण ।

3॰ मेहता अशोक : अखिल भारतीय बंजारा सेवक शिविर 1966, समारोहांत का भाषण ।

1.1. बनजारा : शब्द और व्युत्पत्ति : ... .

बनजारा के लिए ये शब्द प्रचलित है : *

बनजारा, बंजारा, बनजारे, बनजारी, ब्रिंजारी, ब्रजवासी, लभान, लाभानी, लम्बानी, लम्बाडा, लम्बाडी, लवान, लवाना, लभान, लभानी, लभाना, लोभाना, लदेनिया, सुगाली, गवार, गौरिया, गवरिया, गमालिया, गवरा, कांगिया, कागशिया, पचनाडा, शिरकीबन्द, शिरकीवाला, शिगाडे, बनजारी

इनमें से प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति नीचे दी गई है ।

[क] बनजारा :

1. वाणिज्यकार > वानिज्जार > बनजार[2]
2. बन + जारा = बनजार = बन का राजा

---

* रिपोर्ट आफ दि आल इंडिया बनजारा स्टैडी टीम, 210 हिन्द राजस्थान बिल्डिंग, दादर, बम्बई-14, पृ.सं. 9 के अनुसार बनजारी महाराष्ट्र की बनजारी जाति नहीं ।

2 राजा का ध्वनि विपर्यय हो गया ।

3 बनजर > बंध्या > बंझा > बंज > बंजार - आ
बनजर भूमि पर बसने वाला ।

4 बनजारा~ बंजारा~ वंजारा~ बनजारे~ बनजारी

[ख] ब्रजवासी = "ब्रज प्रांत के निवासी"

[ग] लमान~ लामानी ~लम्बानी~ लम्बाडी~ लबान
लबाना~ लभान~ लभानी ~ लभाना~ लोभाना

लवण * से लमन - लभान - लभनी
"नमक का व्यापार करनेवाला"

इनमें से [बन] का संज्ञक व्युत्पत्ति अधिक मान्य है ।
लम्बाडा शब्द दक्षिण भारत में अधिक प्रचलित है ।

[घ] लदेनिया - "लादनेवाला"

[ङ] सुगाली - "पशु पालन करनेवाला"

[च] गवार या गोरिया

1] गवार~ गोरिया~ गवारिया
पंजाबी भाषा से प्रभावित जाति [2]

2] गोर शब्द पंजाबी से आया है ।
गोर से ही गोर बनजारा बना ।[3]

3] गवारिया~ गमालिया~ गोरा
राजस्थानी भाषा से प्रभावित जाति ।[4]

---

* रिपोर्ट आफ दि बनजारा स्टडी टीम

2 रिपोर्ट आफ आल इंडिया बनजारा स्टडी टीम, 210 हिन्द राजस्थान बिल्डिंग, दादर, बम्बई-14, पृ. 10

3 वही 4 वही ।

§छ§ कागि-कागिशया-पनाडा

1§ कागि = कंघी *

2§ कागिशया = कंघी का व्यापार करनेवाला ।[2]

3§ पनाडा = कंघी मराठी में कंघी को पनी कहते है । पनी से ही पनाडा हुआ ।[3]

§ज§ शिरकी बंद-शिरकी वाला ।

शिरकी = एक प्रकार का घास जिससे चटाई बुनते है ।[4]

शिरकीवाला = चटाई बुननेवाला § पंजाब, हरियाणा और दिल्ली प्रदेश के रहनेवाले ।[5]

इन शब्दों में स्रोत शब्द लवण है । इस शब्द की आरंभिक ध्वनि §ल§ सभी शब्दों में सुरक्षित है । मध्य वर्ग की ध्वनि §व§ का विकास §म§ या §भ§ में हुआ है । अंत्य ध्वनि §ण§ का विकास §न§ में होना स्वाभाविक है ।[6]

---

* रिपोर्ट आफ आल इंडिया बनजारा स्टडी टीम 210 हिन्द राजस्थान बिल्डिंग, दादर, बम्बई-14, पृ.10

2 वही 3 वही 4 वही

5 वही ।

6 यद्यपि राजस्थानी बोलियों में ण ध्वनि सुरक्षित रहती है तथापि राजस्थान की कुछ पडोसी बोलियों में ण न की प्रवृत्ति मिलती है । हो सकता है इन्ही का प्रभाव है ।

सन्द शब्दों में स्रोत शब्द "गो" से भी संबंधित है । इस शब्द की आरम्भिक ध्वनि (ग) गो वाले सभी शब्दों में सुरक्षित है । मध्य वर्ग की ध्वनि (व) का विकास (म) में हुआ है । अंत्य ध्वनि (र) है । *

शब्दों की व्युत्पत्ति से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं :-

1) यह जाति वाणिज्य करने वाली थी / है ।[2]

2) यह यायावर व्यापारी थे / है ।[3]

3) यह बैलों/पशुओं पर सामान लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते थे । बनजारों की कोटि उनके द्वारा लादने के व्यापार में काम आने वाले पशुओं के संख्या पर आधार की जाती थी । लाखा बनजारा वह होता था जिसके पास एक लाख पशु होते थे ।[4]

4) बनजार शब्द का स्पष्टीकरण करते समय नालन्दा शब्द कोष में ऐसा लिखा है - बैलों पर अन्न लादकर जगह-जगह बेचने वाला व्यक्ति (1) व्यापारी (2) सौदागर ।[5]

---

* पंजाब की बोलियों में गोर शब्द सुरक्षित है । राजस्थान और पंजाब की कुछ पडोसी बोलियों में गो गड गवार गोरिया गोर गमालिया शब्द पाये जाते हैं ।

2 वाणिज्य शब्द इसका प्रमाण है ।

3 यह पंक्तियाँ इसके यायावारी प्रवृत्ति के परिचायक है -
सब ठाट पडा रह जायगा, जब लाद चलेगा बनजारा ।

4 गोर बनजारे लोकाचा इतिहास, के. बळीराम पाटील, माळवी

5 लाखा बनजारा बंक के विषय में कई दन्त कथाएं प्रचलित है ।
नालन्दा शब्द कोष

मुगलकालीन इतिहासकारों एवं अंग्रेज विद्वानों में " बंजारा " शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में मतभेद था । उस शब्द के व्युत्पत्त्यर्थ द्वारा ही इसका अर्थ पुष्ट हो जाता है ।

1. "बंजारा" शब्द का उद्गम संस्कृत " वाणिज्यं " से हुआ है । " वाणिज्यं " का अर्थ है व्यापार, उससे बना वणिज : अर्थात व्यापारी, बनिया ।[1] बनिया – संस्कृत वणिक् प्रा. वणिअ हिंदी बनिया ।[2] व्यापार करने वालों को " बंजारा " कहा गया । वे लोग बैलों की पीठ पर माल लाद कर ढोया करते थे -- " जब लाद चलै बंजारा । "[3] संस्कृत "वणिज:" से ही विभिन्न भारतीय भाषाओं में जो रूप बने हैं, उनमें बहुत समानता है । उदाहरणार्थ --- गुजराती – (वनजारा), राजस्थानी (बनजारा) मराठी (बंजारी या वंजारी) ।

2. संस्कृत " वाणिज्य " से प्राकृत " वनजारा " अर्थात व्यापारी बना ।

3. वनचर --- संस्कृत वन = जंगल, चर = घूमनेवाला । जंगलों में घूमने के कारण इन्हें " बंजारा " कहा गया ।[4]

4. वन (सं.) = जंगल, और (सं.) शत्रु । अर्थात जंगली प्राणियों का संहार करने वाला । वन अरि बंजारी ।[5]

5. बंजर (उर्दू) = शोक जमीन – जो संस्कृत " वंध्या " से निकला है ।[6]

---

1. Apte, V.S. : Sanskrit - English Dictionary, p.500.
2. कुलकर्णी, कृ.पा. : मराठी व्युत्पत्ति कोश, पृ. 206 ।
3. डा. रामशंकर शुक्ल : भाषा शब्द कोष, पृ. 1354 ।
4. Elliot H.M., The races of north western Provinces of India, Volume I, p.52, Hassan S.S., The Castes and Tribes of Nizam's Dominition, p.17.
5. Ibid.
6. Ibid.

6. बिरंजर – (फारसी) या बेरिंग – बिरिंद = चावल का व्यापार करने वाला – इससे "बंजारो" हुआ ।[1]

7. बनज – (पंजाबी) – अर्थ व्यापार – व्यापार करने वाले "बंजारे" कहलाए ।[2]

8. वनचर वनचार बंजारा – प्राय: ये लोग जंगलों में ही निवास करके जीवन-यापन करते थे ।[3]

इनके इस व्यवसाय का उल्लेख कर्नल टॉड, एल्फिंस्टन, हेग आदि इतिहासकारों ने बड़े गौरव के साथ किया है । पुराने ज़माने में माल या रसद ढोने के साधन बहुत सीमित थे । बैल आदि पशुओं के अतिरिक्त कोई चारा न था । ऐसे समय में अनाज, नमक आदि आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति करके बंजारों ने समाज की अभूतपूर्व सेवा की । थर्स्टन ने इनके महत्त्व को स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है ।[4]

---

1. Shakespeare's Dictionary and Elliot's Races of N.W. P. India, p.52.

2. Temple, R.C., Indian Antiquarry, Vol.IX, foot-note, p.206.

3. बंजारों की दशा का मार्मिक वर्णन करने वाला एक दोहा निम्नलिखित है --

   बनजारा बन में फिरे, लिए लकड़िया साथ ।
   टाँडा वहीं लद गया, कोई संगी नहिं साथ ।।

4. "Banjaras associate chiefly together, seldom or never mixing with other tribes. They seem to have no home, no character but that of merchants, in which capacity they travel great distances to whatever parts are most in want of merchandise, which is the greatest part of corn."

   -- Thurston, E., Castes and Tribes of Southern India, Vol. IX, Madras, 1909, p.213.

1.2. बंजारा : उद्भव और विकास

आधुनिक सभ्यता और संस्कृति का उद्भव और विकास इसी आदिम संस्कृति से हुआ है । विज्ञान के पंखों पर उड़ने वाले प्रगतिशील विश्व की पृष्ठभूमि में आज भी ये आदिवासी अपनी सभ्यता और संस्कृति के आदिम रूप को लिये हुए दुर्गम अरण्यों एवं पर्वतों के बीच रहते हुए आखेट, पशु-पालन एवं कृषि-कर्म में लीन रहते हैं । यही कारण है कि इनकी सभ्यता और संस्कृति अपने प्रकृत रूप में वर्तमान है । संभवतः इसी तथ्य को ध्यान में रखकर एक बार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने इन लोगों को " भगवान के निष्पाप पुत्र " की संज्ञा से अभिहित किया था ।[1]

भारतीय सभ्यता और संस्कृति इसी आदिम सभ्यता का उन्नत तथा विकसित रूप है । स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल नेहरू ने ठीक ही लिखा है कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता जो इतिहास के उषा काल से लेकर लंबे युग को पार करती हुई वर्तमान काल तक चली आई है, इसके लंबे विस्तार और सिलसिले का ख्याल दिलचस्प और बहुत कुछ आश्चर्यजनक है । एक अर्थ में भारत के हम लोग इन हजारों वर्षों के उत्तराधिकारी हैं ।[2]

जानपद, जन और जनजाति

सम्राट अशोक के अष्टम प्रधान शिलालेख में आदिवासियों का उल्लेख " जानपद जन " के रूप में हुआ है । गोपथ ब्राह्मण में इन जनपदों का अत्यंत प्राचीन उल्लेख मिलता है । महाभारत में भी इनकी सूची प्राप्त होती है ।[3] पाणिनी के अष्टाध्यायी में " जनपद शब्दात् क्षत्रियाद " का उल्लेख मिलता है ।

---

1. Unspoiled children of God.
2. नेहरू जवाहरलाल, विश्व इतिहास की झलक, पृ.15
3. द्विवेदी हरिनिवास, मध्यभारत का इतिहास, प्रथम खंड, 1956, पृ.3

जनजाति की व्याख्या बैन, हटन, बोआस,[1] जैकब और स्टर्न तथा मुजुमदार[2] आदि अनेक नृतत्व शास्त्रियों ने की है । गिलिन और गिलिन के अनुसार -- " जनजाति किसी भी ऐसे स्थानीय समुदाय के समूह को कहा जाता है, जो एक सामान्य भू भाग पर निवास करता हो, एक सामान्य भाषा बोलता हो और सामान्य संस्कृति का व्यवहार करता हो ।[3]

बंजारा : जनजाति नहीं बल्कि जाति

वर्तमान बंजारा जाति एक विशिष्ट भू भाग पर निवास नहीं करती । वह भारत के विभिन्न प्रदेशों में फैली हुई है । " जाति और जनजाति के अंतर पर दृष्टिपात करते हैं तो सबसे पहला अंतर प्रतीत होता है कि जनजाति के लिए एक निश्चित भू भाग का होना अनिवार्य है, जबकि जाति के लिए यह आवश्यक नहीं है । जाति के लोग विभिन्न प्रदेशों में रहते हुए भी एक जाति के सदस्य रह सकते हैं । "[4] व्यवसाय, देशांतर आदि कारणों से जनजाति का रूपांतर जाति में हो जाता है ।[5]

---

1. Boas, F; General Anthropology, p.41.
2. Dr. Mujumdar, D.N. : Science and culture, p.330.
3. " Any collection of preliterate local groups which occupies a common general territory, speaks a common language and practices a common culture is a tribe." - Gillin, J.L. & Giltin, J.P. : Cultural Sociology, p.282.
4. त्रिपाठी शंभुरत्न : भारतीय संस्कृति और समाज, किताबघर, पृ. 46.
5. "Castes are of many kinds, tribal, racial, sectarian, occupational. Some are due to migration. When members of an old caste migrate to a different part of the country they become a new caste." -Dr.S.Radhakrishnan : Hindu View of Tribe, 1927, 1st Ed., p.93.

1.3. बंजारा : मूल निवास स्थान

बंजारों की उत्पत्ति, मूल निवास स्थान, वंश, रक्त आदि के संबंध में पर्याप्त मत वैभिन्न्य पाया जाता है। इस उपेक्षित जाति पर जो कमोबेस दृष्टिपात किया गया है, वह अंग्रेज विद्वानों के द्वारा ही। इबोटसन के मतानुसार इनका मूल स्थान उत्तर भारत के गोरखपुर से हरिद्वार तक की उप-पर्वत श्रेणी है।[1] कर्नल मैकेन्जी ने राजपुताना बताया है।[2] सैयद सिराज-उल हसन की राय में ये उत्तर हिंदुस्तानी हैं।[3] इलियट ने इनका मूल स्थान मुलतान माना है।[4] सिंक्लेयर ने उत्तर हिंदुस्तान माना है लेकिन उत्तर हिंदुस्तान के किसी विशिष्ट भू-प्रदेश का उल्लेख नहीं किया है।[5] गोवर्धन शर्मा के शब्दों में "ये बंजारे राजस्थान के मूल निवासी थे और व्यापार के सिलसिले में माल लाद कर दूर दूर पहुंचते थे।"[6] कर्नल टॉड ने भी बंजारों के टांडों का आदि वर्णन करते हुए यही मत व्यक्त किया

---

1. 'The origin of Banjara Caste is said to have its habitat in the sub-mountain tract from Gorakhpur to Hardwar.' -Ibbetson :Punjab castes and Tribes.Vol.II.p. 62-63.
2. Col. Mackenzie : Berar Census Report-1881,p.152.
3. Syed Siraj - ul - Hassan : The Castes and Tribes of H. E.H. Nizam's Domination , Vol.I, Bombay-1920, p.17.
4. 'Thus assert that they came originally from Multan and left their newly chosen country of the Deccan, under a leader called Rustamkhan.'
   -- Elliot, H.M., The races of North-Western Provinces of India, Vol.I, London - 1869, p.53.
5. Sinclair : Caste in the Dekkan, Indian Antiquary, July 1874, p.33.
6. श्री गोवर्धन शर्मा : डिंगल साहित्य, पृ. 240।

है ।[1] रोज ने पंजाब बताया है ।[2] श्री नर्मदेश्वर प्रसाद[3] और बैन[4] ने राजपूताना का उल्लेख किया है । अय्यपन[5] अय्यर,[6] कनेडी[6A] नन्जुन्देया[7] ने मारवाड़ मूलस्थान बताया है । मालवा प्रदेश की जनगणना रिपोर्ट में भी यही विधान मिलता है ।[8]

---

1. Col. Tod, James : Annals and Antiquities of Rajasthan, Vol. II, London, 1950, p.500.
2. Rose, H.A. : Tribes and Castes of Punjab & N.W.F. Provinces, Vol.II, Lahore- 1911, p.62.
3. Prasad Narmadeswar : People of Tribal Bihar, Ranchi, The Tribal Research Institute, 1961, p.146.
4. Baine, Athlestane : Ethnography, 1912, p.101.
5. Aiyappan, A : Report on the Socio-Economic Condition of the Ab-original Tribes of the Provinces of Madras, 1948 P.164.
6. Krishna Iyer, L.A. : Anthropology in India, p.56.

6A. Kennedy, M. : Criminal Classes of Bombay Presidency, p.3.

7. Nanjundayya, H.V., The Mysore Tribes and Castes, Vol.II, p.136.
8. 'Northern India probably Marwar was their original home.' -- Census of India, 1961 : Report on the population, Estimates of India (1820-30), The provinces of Malwa and adjoining Districts, 1922, P.98, para 50.

सिक्खों के सातवें गुरु गुरु हरगोविंदसिंह (ई. 1595 - 1644) से बंजारों का संबंध था । इसके उपरांत नवम गुरु गुरु गोविंद सिंह (ई. 1676) के पास कुछ बंजारे काम मांगने आए थे । अपना परिचय देते हुए उन्होंने कहा था -- " हम मारवाड़ से आए हैं .. हम मारवाड़ के ब्रिन्जोली एवं सलम्बूर के निवासी हैं । [1] " सिक्खों की फौजों में इन्हें मारवाड़ी अथवा मारवाड़ी लुहार के रूप में जाना जाता था । [2]

बंजारों के मूल निवास स्थान के संबंध में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है । बंजारों का मूलस्थान निर्धारित करने के लिए उनके वंश एवं कुल पर ध्यान देना होगा । यदि वे राजपूत वंश से संबंधित हों तो इनका निवास स्थान राजस्थान अथवा मारवाड़ निर्विवादतः सिद्ध हो जाएगा । राजपूतों का राठोड वंश मारवाड़ की देन है । [3]

---

1. ' We have come from Marwar --- Brinjoli and Salam - boor are our native places in Marwar.' - Sher, S.S. : Sikligars of Punjab - p.12.

2. Ibid - page 13.

3. Col. Tod, James : Annals and Antiquities of Rajasthan, Vol. I, p.602.

1.5. बनजारा बोली

सन् 1961 की जनगणना रिपोर्ट में " राजस्थानी - हिंदी-की - बन्जारी, गूजरी, हाडौती, जयपुरी, खीचीवाडी, मालवी, मारवाडी, मेवाती, मेवाडी, उमटवाडी, निमाडी, राजस्थानी, सिपारी तथा सोंडी नामक 14 उपबोलियों की गणना की गई है"।[1] "राजस्थान के निकट राज्य का जो भू-भाग है, उनमें बंजारी, गूजरी ...; आदि बोलियों का उल्लेख है। ये बोलियाँ उन जनपदों की द्योतक हैं, जन्हों इनने अपनी विशिष्टताएँ अर्जित की।"[2]

डा. ग्रियर्सन के अनुसार राजस्थान की मेवाती मालवी ,मारवाडी, लमानी और जयपुरी आदि अनेक विभाषाएं हैं"।[3] राजस्थानी राजस्थान और मालवा की भाषा है।[4] "उसके बोलने वाले सुदूर देहातों में मिलेंगे।"[5] "जिनमें परस्पर अंतर नहीं है।"[6] इसलिए बंजारा बोली भी राजस्थानी हिंदी ही सिद्ध होती है। कुछ विद्वानों ने राजस्थानी को हिंदी से पृथक भाषा माना है।[7] लेकिन जिस अपभ्रंश भाषा से भारतीय आर्य भाषाओं का विकास हुआ, [8] उसी गुर्जरी - अपभ्रंश से राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति हुई, [9] और

---

1. Census of India, 1961, Mother Tongue, Vol.IX.
2. द्विवेदी हरिहर निवास, मध्यभारत का इतिहास, प्रथम खं.पृ.42
3. Dr. Grierson, W : L.S. of India, Vol.1, part I, p.172. and Antiquary (Indian), Apl, 1931, Supplement, p.12.
4. Ibid, p.171.
5. विद्यालंकार जयचंद्र, भारतभूमि और उसके निवासी, पृ.219 ।
6. वही , पृ. 220 ।
7. डा. श्यामसुंदर दास : हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 86 ।
8. डा. माहेश्वरी हीरालाल : राजस्थानी भाषा और साहित्य,पृ.31
9. सीता. मनोहर प्रभाकर : राजस्थानी साहित्य और संस्कृति,पृ.10

इस पश्चिमी राजस्थानी का संबंध हिंदी भाषा से है ।[1] इसलिए बंजारी बोली राजस्थानी हिंदी की एक उपबोली मानी जानी चाहिए ।

राजस्थानी उपबोलियों का उल्लेख डा. गोवर्धन शर्मा ने इस प्रकार किया है -- " राजस्थान की कतिपय और भाषाएँ हैं, जैसे भीली - उपभाषा समूह, पहाड़ी वर्ग की भाषाएँ, खानाबदोश जातियों की बोलियाँ आदि जिन्हें राजस्थानी में गृहीत किया जाता है । इनमें से ये प्रमुख हैं -- बंजारी - यह राजस्थान के बाहर रहने वाले बंजारों की भाषा है । स्थानानुसार इसके कई भेद हैं । ये राजस्थान के मूल निवासी थे और व्यापार के सिलसिले में माल लादकर दूर दूर पहुँचते थे"।[2] डा. भोलानाथ तिवारी भी इसे राजस्थानी मालवी की एक उपबोली मानते हुए लिखते हैं -- "बंजारी को लमानी, लबानी, लमाणी तथा लम्बाडी भी कहा जाता है ।"[3] अन्यत्र वे लिखते हैं -- " बंजारी राजस्थान की एक बोली है - बंजारी संपूर्ण भारत में विविध नामों से कई बंजारा जातियों द्वारा बोली जाती है । इसका एक नाम लमानी भी है ।"[4]

डा. ग्रियर्सन द्वारा किए गए वर्गीकरण में राजस्थानी उपभाषाएँ 9 हैं । इनमें लमानी या बंजारी का क्रम 7 वाँ है । इसे ग्रियर्सन राजस्थानी की विभाषा के रूप में स्वीकार करते हुए कहते हैं -- " लमानी या बंजारी पूरे भारत के पश्चिमी और दक्षिणी प्रदेश में

---

1. Dr. Chatterji, S.K. : Origin & Development of Bengali Language, p.29-31.
2. डा. शर्मा गोवर्धन : डिंगल साहित्य, पृ. 128 ।
3. डा. तिवारी भोलानाथ : भाषा शब्द कोश, पृ. 206
4. - वही - , पृ. 208 ।

संचार करने वाले भ्रमणशील जाति की भाषा है । ये लमान के नाम से भी जाने जाते हैं । भारत के विभिन्न क्षेत्रों में, जहाँ निवास करना पड़ता है, उसी प्रदेश की भाषा का प्रयोग करते हैं, लेकिन विदर्भ, बंबई, मध्यप्रांत, पंजाब, उत्तर प्रदेश और मध्यभारत एजेन्सी में इनकी अपनी निजी भाषा है, जिसका रूप स्थानीय प्रभावों के कारण बदलता रहता है ।" 1. डा. ग्रियर्सन के अनुसार इनकी बोली पर प्रादेशिक तथा स्थानीय बोली-भाषाओं का प्रभाव है, लेकिन अपनी निजी बोली इन्होंने सुरक्षित एवं परंपरागत बना रखी है । वस्तुतः बंजारी बोली पर राजस्थानी हिंदी के अतिरिक्त अरबी, फारसी, दक्खिनी-हिंदी, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं का प्रभाव पड़ा है । राजस्थानी और गुजराती में अंतर बहुत ही कम है । टैसीटरी के मतानुसार - " प्राकृत राजस्थानी और गुजराती एक ही भाषा थी ।" 2. इसलिए बंजारी बोली पर गुजराती भाषा का प्रभाव होना स्वाभाविक ही है । सैयद हसन ने भी बंजारी को हिंदी गुजराती मिश्रित बोली माना है ।[3]

कैनेडी ने बंजारी को मारवाड़ी से मिलती हुई एवं हिंदुस्तानी तथा मराठी शब्दों से युक्त बोली माना है ।[4]

---

1. "Labhani or Banjari is the language of the Banjaras, a wellknown tribe of carriers who are found all over western and southern India. They are also called Labhans. In many parts of India, they use the language of the people of the country in which they happen to dwell, but in Berar, Bombay, the Central Provinces, the Punjab, United Provinces and the Central Indian Agency, they have a language of their own, the name of which varies according to borrowings from the speech of the locality where the members of the tribe happen to be found."
-- Dr. Grierson, W.: Linguistic Survey of India, Vol.I, part 1, Calcutta, 1927, p.172.
2. Dr. Tessitory : Indian Antiquary, 1914-16.
3. "They speak a dialect which is a mixture of Hindi and Gujrathi" - Hassan, S.S.:The Castes and tribes of H.E.H. The Nizam's Dominion, Vol. I, p.19.
4. "They have a peculiar dialect called 'Banjari' which resembles Marwadi and contains some Hindustani and Marathi words'.--Kennedy, M.: Criminal Classes in the Bombay Presidency, 1908, p.5.

1.5. बंजारा जनसंख्या

भारत के विभिन्न प्रदेशों के बंजारा समाज को सरकार ने 6 सूचियों में वर्गीकृत किया है -- 1. आदिम जाति 2. अनुसूचित जाति 3. विमुक्त जाति 4. घुमक्कड़ जाति 5. अर्द्ध घुमक्कड़ जाति और 6. अन्य पिछड़ी जाति । [1.]

इन सूचियों तथा भारतीय जनगणना रिपोर्ट के अनुसार [2.] पूर्व बंगाल, हिमाचल प्रदेश और गोवा में अन्य राज्यों की अपेक्षा बंजारों की आबादी अपेक्षाकृत कम है । पूरे देश में 27 उपनामों एवं 17 उपजातियों से युक्त बंजारों की संख्या करीब 50-60 लाख तक होने का अनुमान है ।[3.] यदि बंजारा और जिप्सी में कोई अंतर नहीं है तो पूरे विश्व में बंजारा जनसंख्या 20 करोड़ के करीब होगी । [4]

---

1. Govt. of India : The Scheduled Castes and Scheduled Tribes, Lists of Notification Order, 1956, and Census Report of India, 1961.

2. Ibid.

3. All India Banjara Study Team, 1966, p.49 and the Report of the Advisory Committee on the Revision of Scheduled Caste s and Scheudled Tribes, 1965, by Shri B.N.Lokur.

4. "The present total population of the Gypsies in different parts of the world is 20,00000."

   -- Shersing Sher : The Sikligars of Punjab, p.80.

1.6. बंजारों का दक्षिण-गमन

अकबर ने जब राजपूत राज्य उदयपुर पर आक्रमण किया तो परिस्थिति प्रतिकूल देखकर राणा-प्रताप अपने साथियों के साथ जंगलों में चले गए । कालांतर में चित्तौड़ का पतन हुआ । राजपूतों का शासन डाँवाडोल हो गया तब बंजारे मुगलों की चाकरी करने लगे । ये मुगल फौजों को रसद तथा युद्ध-सामग्री पहुँचाने का काम करने लगे ।[1] यह काम उन्होंने सम्मानपूर्वक किया ।[2] शाहजहाँ के काल में उनके वजीर आसफजहाँ के नेतृत्व में दक्षिण में बीजापुर की आदिलशाही पर आक्रमण करने के लिए मुगल फौजों के साथ सन् 1630 ई. के लगभग ये बंजारे दक्षिण की ओर आये और कालांतर में वहीं बस गए ।[3;4;5]

इस काल में बंजारों के नेता जंगी और भंगी ने अपने 18 लाख बैलों की सहायता से निजाम के दरबार में बड़ा कार्य किया । आसफजहाँ ने खुश होकर उन्हें ताँबे के सिक्के पर स्वर्णाक्षरों में लिखी हुई अधिकार-मुद्रा दी थी ।[6]

---

1. Sher Sing Sher : The Sikligars of Punjab, p.6.

2. Baines, A.:Athnography, p.60.

3. Thurston, E.: Castes and Tribes of Southern India, Madras, 1909, Vol.IV, p.213.

4. March of India, Vol.9 No.3, 1957, p.35.

5. "निश्चय ही चारण बनजारा दक्षिण में आसफजहाँ के साथ, जो आसदखान भी कहलाता था, आए ।" — इलियट, एम.एच.

6. अधिकार पत्र पर इस आशय के वाक्य अंकित हैं –

    "राजन का पानी
    छप्पर की घास
    दिन के तीन खून माफ
    और जहाँ आसफजा के घोड़े
    वहाँ जंगी-भंगी के बैल ।

यह मुद्रा आज भी हैदराबाद कोर्ट के प्रवेश द्वार पर " खिलात " - अधिकार - पत्र के रूप में मौजूद है ।[1,2,3;4]

इलियट[5] और लायल[6] ने आसफजहाँ के सदले आसदखान और हसनखान नामक सरदारों का उल्लेख किया है । कंबरलेग[7] के अनुसार मुगलों के साथ बंजारे दक्षिण में 17 वीं शताब्दी में नहीं बल्कि 7वीं शताब्दी में आए । किंतु 7 वीं शताब्दी में मुगलों का राज्य ही भारत में स्थापित नहीं हुआ था, अतएव उनका कथन हास्यास्पद तथा अनैतिहासिक है । मन्डेल्सो[8] ने 1638 ई. तथा सैयद हसन[9] वैलेजली[10] अबदुबोज[11] एवं मैकेन्जी[12] आदि ने इनका दक्षिण प्रवेश 17 वीं शताब्दी में ही माना है । टैंपल[13] के अनुसार ये

---

1. Hassan, S.S. : The Castes and Tribes of H.E.H.,p.20.
2. Nanjundayya and Iyer : The Castes and Tribes of Mysore, p.140.
3. Briggs, J., Berar Gazetteer.
4. Cumberlege, Monograph on Banjara, p.40.
5. Elliot. H.M. : The Races of the N.W.P. of India, Vol.I, p.319.
6. Lyall, Alfred : Asiatic Studies, p.165.
7. Cumberlege, H.R. : Monograph on Bunjarah, 1802, p.42.
8. Mandelso : Mandelso in Haris, p.130.
9. Hassan, S.S. : The castes and Tribes of H.E.H., 1920. Vol.I. p.20.
10. Wellesly : Note on Dekkan, p.20.
11. Abb Dubb'ois : Abb Dubb'ois Notes, p.451.
12. Col. Mackenzie : Berar Census Report, 1881, p.152.
13. Sir Richard Temple : Men and Events of My time, p.67.

सन् 1803 से 1813 के बीच के काल-खंड में निजाम राज्य में आए ।[1] लेकिन यह कथन भी अग्राह्य है क्योंकि आसफजहाँ द्वारा दिए गए अधिकार पत्र में 17 वीं शताब्दी का स्पष्ट उल्लेख है ।[2] ब्रिग्ज ने फरिश्ता के आधार पर सन् 1417 ई. का उल्लेख किया है ।[3]

आगे चलकर मैसूर के अंग्रेज - टीपू सुल्तान के बीच के तृतीय (सन् 1789 - 1793 ई.) एवं चतुर्थ (सन् 1799 ई.) युद्धों में इन बंजारों ने अंग्रेजों के विरुद्ध अपनी बहादुरी दिखाई ।[4,5,6,7] दक्षिण भारत में मुगलों के साथ ही मराठों के यहाँ भी ये लोग काम करते थे ।[8,9]

---

1. काले, यादव माधव : व -हाडचा इतिहास, 1924, पृ.234 ।
2. Hassen, S.S. : The Castes and Tribes of H.E.H., p.42.
3. Briggs, J. : Monograph on Banjarrah, p.192.
4. Wilks : South of India, Vol. II. p.209.
5. Buchaman : Mysore War, Vol.1, p.180 -82.
6. Nanjundayya and Iyyer : The Castes and Tribes of Mysore, 1928, p.140.
7. Briggs, J., Monograph, p.193.
8. Col. Tod, J. : Letters on the Mahrattas, 1798, Indian Office Tracts, p.67.
9. Mr. Invine : Army of Indian Mughals, p.192.

••

1·7. बंजारा और जिप्सी :

संसार के विभिन्न देशों में विभिन्न व्यवसाय हेतु बिखरे हुए बीस करोड़ जिप्सी लोगों का संबंध भारतीय आर्य-जन एवं बंजारों से है।

सदियों से " अपराधी जाति " [1] का कलंक अपने माथे पर लगाए हुए उत्तर भारत तथा संसार के जिप्सी अपने परंपरागत सामाजिक, राजनैतिक, तथा आर्थिक उत्थान से विलग होकर दर दर की ठोकरें खाते रहे हैं। इन्हें निकट से पहचानने की क्षमता आँग्ल काल के म्युल्ये[2] लेमार चाण्ड [3] केनेडी [4] गुन्थ्रोप,[5] हलिन्स,[6] डली,[7] नायडू,[8] कोल [9] टामकिन्स [10] और भार्गव [11] आदि देशी-विदेशी विद्वानों की तरह निहारा करते थे।

- -

1. Criminal Tribes Act, 1871, by British Rulers.
2. Mullaly, E.S.: Notes on Criminal Tribes of the Madras Presidency, Madras, 1882.
3. Lemmarchand, A.W.M. : A guide of Criminal Tribes, Nagpur, 1908.
4. Kennedy, M., Criminal classes of Bombay Presidency, Bombay, 1908.
5. Gunthrorpe, E.J., Notes on Criminal Tribes, Bombay 1882.
6. Hollins, S.T. : Criminal Tribes of U.P., 1914.
7. Daly, F.C. : Criminal classes operating in Bengal, 1916.
8. Naidu, M.P.R., The Criminal Tribes of India, Madras, 1907.
9. Kaul H.K. and Tomkins, L.L. : Report on the Questions relating to wandering and criminal tribes of Punjab Simla, 1914.
10. Ibid.
11. Bhargawa, B.S., Criminal Tribes of India, Lucknow, 1949.

शेरसिंग शेर [1] तथा डा॰ मुजुमदार [2] ने जिप्सियों को भारतीय आर्य वंश से संबंधित माना है । दोनों के बीच बड़ा घनिष्ट संबंध - रक्त और मांस का संबंध है ।[3]

शेरसिंग शेर के मतानुसार जिप्सी भारतीय आर्यों के वंशज हैं जो प्राचीन काल में उत्तर - पश्चिम से भारत में प्रविष्ट हुए । आगे वे इस तथ्य को भी स्वीकार करते हैं कि मुसलमान आक्रमणों, पारस्परिक संघर्षों तथा अकाल आदि के कारण पंजाब और राजस्थान से निष्कासित लोग भी जिप्सी बनने के लिए बाध्य हुए ।[4] विदेशी आक्रमणकारियों के उत्थान से, विशेषत: चित्तौड़-पतन के बाद भारतीय जिप्सी (बंजारे) पूरे देश के विविध भागों में बिखर गए ।[5] अंग्रेज शासक भी इन बंजारों को जिप्सी का अभिधान प्रयुक्त करते रहे हैं ।[6] नृत्य-संगीत प्रियता तथा शारीरिक सुंदरता के कारण ये विदेशियों से [7] विशेषत: हंगेरियन जिप्सी[8] से एकरूप हो गए ।[9]

---

1. Shersing Sher : The Sikligars of Punjab, p.67.
2. Dr. Mujumdar, D.N.: Races and Culture of India, Bombay, 1958, p.366.
3. Shersing Sher : The sikligars of Punjab, Preface, p.7.
4. " The Gypsies are the descendents of the Indo-Aryans, who entered North-west India in ancient times ... It also seems to be true that some of the settled Aryan people joined their wandering fold after being expelled from their homelands in the Punjab and Rajasthan, due to the Muslim invasions, mutual fights and famines." -- Shersing Sher : The Sikligars of Punjab, p.43.
5. Baines, Athlestane : Athnography, Strassburg, 1912, p.60.
6. March of India, Vol.9, No.3, March 1957, p.35.
7. K.Iyer, L.A. & Balratnam : Anthropology in India, Bombay, 1961, p.56.
8. Ibid, quoted in Foot -note, p.56.
9. Baines, Athlestane :Athnography, Strassburg, 1912, p.60.

1.४. <u>बंजारा : वंशोद्भव :</u>

स्मिथ का कहना है कि वर्णवाचक " राजपूत " शब्द इतिहास में हम पहली बार आठवीं शताब्दी में देखते हैं ।[1]

कर्नल टॉड इन्हें सीथियन वंशज मानते हैं । उनके मतानुसार "राजपूतों और वैदिक क्षत्रियों में इतनी भिन्नता है कि उनमें पारस्परिक संबंध स्थापित हो नहीं कर सकते ।"[2] डा. भांडारकर इन्हें अनार्य गुर्जर जाति का वंशज सिद्ध करते हैं ।[3] आधुनिक काल के विद्वान भी गुरे[4] तथा सिन्हा[5] ने भी इसी मत को ग्राह्य माना है । इस प्रकार कर्नल टॉड[6], स्मिथ, सर विलियम क्रुक,[7] डा. भांडारकर, गुरे, सिन्हा आदि देशी विदेशी विद्वान राजपूतों को

---

1. " This is how this word ' Rajput' appears only for the first time in the 8th Century A.D., ---" - Smith, V.A., India, Vol.III - p.173-74.
2. Col. Tod, James, Annals and Antiquities of Rajasthan, Vol. I, Introduction, p.31.
3. Dr. Bhandarkar, D.R., Wilson Philological lectures, p.95.
4. "The general thesis that some of the noble Rajput depts are descended from Gurjars or other gujers while others are closely connected with the autoch-throrous races, may be definitely proved.". Gurey, G.S. : Races and Castes of India, p.97.
5. Sinha, N.K., History of India, p.176.
6. "विदेशियों की शुद्धि करके राजपूत जातियों का जन्म हुआ है ।" Col. Tod,James : Annals and Antiquities of Rajasthan, Vol. I, Introduction, p.31.
7. Crooke, W. : Castes and Tribes of the N.W. Provinces and Outh, Vol. IV, 1896, p.167.

विदेशी हूणों का बीज मानते हैं, आर्य वंशीय क्षत्रिय नहीं । लेकिन यह धारणा आगे चलकर भ्रमपूर्ण सिद्ध हुई है ।

महाभारत में " राजपूत " शब्द क्षत्रियवाचक है --

" पतेहस्म रथा नाम राजपुत्रा महारथा ।
रथेषु शास्त्रेषु निपुणानागेषु परांपते ।" [1]

पाणिनी-सूत्र में भी यही बात मिलती है --

" गो त्रोक्षोष्ट्रोरभ्र राजराजन्य राजपुत्र
वत्स मनुष्याजाद्वुञ् ।" [2]

सम्राट हर्षवर्धन के शिलालेख में शाहमानों (चौहानों) का -- " तन्मुत्कार्थं उपागतो रघुकुले मूलकुलर्सिस्तयम् " [3] तथा कन्नौज के प्रतिहारों की वंशावली का निर्देश -- " तस्मी प्रतिहार केतन भृति त्रैलोक्य रक्षास्पदे " [4] सूर्यवंश में किया गया है । "पृथ्वीविजय"[5] काव्यग्रंथ में पृथ्वीराज को " सूर्यवंशोत्पन्न " तथा बाणभट्टकृत "हर्षचरितम् " [6] में " राजपूत " का अर्थ " शुद्ध क्षत्रिय वंशी " ही लिया गया है ।

डा. भार्गव [7] तथा पंडित गोरीशंकर ओझा [8] आदि विद्वानों के मतों से भी इसकी पुष्टि होती है ।

---

1. महाभारत
2. पाणिनि - सूत्र - 4-2-41
3. Epic India, Vol.II, p.119.
4. Ibid - P. 120.
5. Royal Asiatic Society's Journal, 1903.
6. हर्ष चरितम् , बाण उच्छ्वास ।
7. डा. भार्गव व्ही.एस्. : मध्यकालीन राजस्थान का इतिहास, पृ.18 ।
8. ओझा, गोरीशंकर हीराशंकर : राजपूतों का इतिहास, पृ. 29 ।

डा. ग्रियर्सन,[1] नंजुदय्या [2] और अय्यर [3] ने इन्हें क्षत्रियवंशी राजपूतों का उत्तराधिकारी माना है। इब्बेटसन [4] ने इनका उल्लेख " राजपुताना के हिंदु " के रूप में किया है। कोवेल [5] ने ब्राह्मण और राजपूत वंशों का माना है। बरार की जनगणना रिपोर्ट में किट्स [6] ने इन्हें " क्षत्रियवंशी " कहा है। 1961 की भारत जनगणना रिपोर्ट में भी यही बात कही गई है। एपिग्राफिका इंडिका[7] में इन्हें " आर्यवंशी " कहा गया है। नर्मदेश्वर प्रसाद [8] और क्रुक्स [9] ने इन्हें राजपुताना के चारण या भाटवंशी कहा है।

---

1. Dr. Grierson, Linguistic Survey of India, Vol.I, Part I, p.169.
2. Nanjundayya, H.V., Mysore Tribes and Castes, Vol.II, Mysore, 1928, p.136.
3. Ibid.
4. Ibbetson, D.J., The Punjab Castes and Tribes, Vol.II, Page 62.
5. Cowell, Academy, 14th May 1870.
6. " They are a race of Kshatriya Origin, belonging to the caste of India" Kilts, E.J., Report on the census of Bearar, 1881, p.115.
7. Census of India, 1961, Report on the population estimate of India, p.98.
8. Epigraphica Indica, Vol. XI, p.145.
9. " Banjara are derived from the Charan or Bhat caste of Rajputana." Prasad Narmadeshwar : Land and people of Tribal Bihar and Ranchi, p.146.

इलियट [1] ने " दशकुमार चरितम " के आधार पर इन्हें " आर्यन " या " आर्यवंशी " कहा है । डा॰ मुजुमदार [2] का भी यही मत है । शेरसिंग [3] ने उन्हें " राजस्थान के राजपूत वंशी" माना है ।

कर्नल टाड ने बंजारों को राजस्थान के चारण या भाट, व्यवसाय से वणिक् और जन्म से कवि माना है [4]-- Murkhis an excellent township inhabited by a community of Charans of the tribe cucholia (Kackoli), who are banjaras or Carriers by profession, though poets by birth." कंबरलेज ने इस जाति को बहुत ही रुचिकर जाति कहा है ।[5] इस प्रकार बंजारों की उत्पत्ति राजस्थान के राजपूत वंश से सम्बन्धित होती है, लेकिन सैयद हसन के अनुसार उत्तर भारत की विभिन्न जातियों के मेल से इनकी उत्पत्ति हुई है ।[6]

---

1. Elliot, H.M. : The races of the N.W.P. of India, Vol.I, London, 1869, p.229.
2. Dr. Mujumdar, D.N., Races and Culture of India, Bombay, 1958, p.366.
3. " Originally they were the Rajputs of Rajasthan" -- and "They are known to be very brave people being the descendents of martial race of Rajputs and have not lost their instinctive martial spirit."
   -- Shersing Sher, The Sikligars of Punjab, Preface,p.9, and p.73.
4. Col. Tod, James : Annals and Antiquities of Rajasthan, Vol.I, (1873), p.573.
5. Cumberledge, H.R., Monograph on Banjarrah class,1882,p.8
6. "The account, ascribing to the Banjaras as a mixed parantage, appears to have been founded on fact. There can be no doubt that these people so varied in their characteristics, were recruited from different races of Northern India and bound together by ties of common occupation". --Hassan, S.S., The Castes and Tribes of H.E.H. The Nizam's Dominion,Vol.I, Bombay-1920,p.17.

इसी प्रकार सर मालकाम,[1] शेरिंग,[1अ] अल्फ्रेड लायल,[2] प्लोडन,[3] हेस्टिंग्ज,[4] स्टुअर्ट[5] तथा राबर्टसन[6] आदि ने इन्हें भिन्न जातीय माना है।

- -

1. Sir Malcolm, J., Central India, Vol.II, p.152.

1.अ Sherring, MA.: Hindu Tribes and Castes as represented in Benjaras, Calcutta, 1872, Vol.I, p.298.

2. Sir Lyall, Alfred : Asiatic Studies, Vol.I,p.165.

3. Plowden, W.C. : Report on the Census of British India, 1881, Vol.I, p.292.

4. Hastings, Warren : Census of India, 1891, Vol.VI, Berar of Hyderabad assigned districts, Calcutta, 1892, p.c.

5. Stuart, H.A., Census of India, 1891, Vol.XIII, Madras, 1893, p.197.

6. Robertson, B. : Census of India, 1891, Vol.XI The Central Provinces and Fendatories, Part I, Calcutta 1893, p.197.

[illegible] यह पशु चराते/पालन करने वाली जाति थी । इन्हें "सुगाली" इसी आधार पर कहा गया है । *

[illegible] यह लोगों में से चन्द लोग चटाई बुनने का काम करते थे,[2] चन्द लोग कंघी बनाकर बेचने का काम करते थे ।[3]

.... **2 राजपूत और बनजारा गोत्र** ....

§क§ बनजारा अपने आप को राजपूत कहते हैं । इस बात का प्रमाण उनके गोत्रों से मिलता है । राजपूतों के ऐतिहासिक अस्तित्व का ज्ञान कई स्रोतों से होता है । इनमें से एक चारण साहित्य है । चारण कवि चन्दबरदाई ने राजपूतों के वंशों का प्रमाण पृथ्वीराज रासो में दिया है ।[4] वह इस प्रकार है ।

§ख§ श्री वेंकटाचार ने बनजारा जाति को राजपूतों से सम्बद्ध प्रश्न बताते हुए रिपोर्ट दी :-

"बनजारा:- ये लोग बैलों की पीठ पर माल लादकर ले जाने वाले भ्रमणशील मानव हैं । मध्य भारत के समस्त पश्चिमी राज्यों में ये बनजारे बसे हुए हैं । मालवा में इनकी मुख्य उपजातियाँ हैं - §1§ लबाना §2§ बामनिया भाट और §3§ राजपूत बनजारा । इनके कई गोत्र - §कछवाह, राठोड, चौहान आदि§ राजपूतों के समान हैं, अत: अतीत में

---

* अच्छे गाय पालने वाली जाति ।

2 सिंगाड़िया

3 कांगशिया

4 पृथ्वीराज रासो भाग-1 पृष्ठ संख्या - 14

ये राजपूतों के वंशज हैं तथा जाति पंचायत का इनके ऊपर विशेष अनुशासन रहता है। *

रवि शशि जादव वंस ।
ककुत्स्थ परमार सदावर ।
चाहुवान चालुक्क ।
छंद सिलार अभीयर ।।
दोयमत मकवान ।
गरुअ गोहिल गोहिल पुत ।
चापोत्कट परिहार ।।
राव राठोड रोसजुत ।।
टाक सैन्धव अनिग भौतिक प्रतिहार दधिपट ।।
कारटपाल कोटपाल हुल हरि पर गोट कमात्माकमट ।।
धन्य [धान्य] पालक निकुंभर राजपा कार्यनोसो ।
वसने वस छत्तीस ।

---

* रिपोर्ट जनगणना भारत 1931 जिल्द 20
सेन्ट्रल इण्डिया एजेन्सी, भाग-1, पृ.सं. 228-229

[ग] कर्नल टाड के अनुसार राजपूतों के 36 वंश माने गये है ।* वह इस प्रकार है ।

1. सूर्य - सूर्यवंश	2. सोम या चन्द्र - चन्द्र वंश
3. ग्रहिलोत या गहिलोत - 24 शाखाएं	4 यादु - 18 शाखाएं
5 तोवार - 17 शाखाएं	6 राठोर - 13 शाखाएं
7 काशवा या कछवा	8 प्रमारा या परमार - 35 शाखाएं
9 चहुमान या चौहान - 26 शाखाएं	10 चालुक या सोलंक - 16 शाखाएं
11 परिहारा	12 चावारा
13 टाक या टक्षक	14 जिट, जेट या जाठ
15 हान या हुन	16 कट्टी
17 बल्ला	18 जाहला - 2 शाखाएं
19 जेतवा या कमारी	20 गोहिल
21 सरविया	22 सीलार
23 डाबी	24 गोर - 5 शाखाएं
25 डोडा या डोट	26 गहरवाल
27 बीर या गूजर - 3 शाखाएं	28 सेंगर
29 सकरवाल	30 बैस
31 दाहिया	32 जोहया
33 मोहिल	34 निकुम्पा
35 राजपाली	36 दहिमा

---

* राजस्थान भाग -1 लेखक : कर्नल टाड : पृ.सं. 80

[घ] बळीराम हीरामण पाटील के अनुसार बनजारा और राजपूत के गोत्र/कौ समान/अलग/ मिलते जुलते है । वह इस प्रकार है ।*

	बनजारा कौ/गोत्र	समान कौ/गोत्र	अलग कौ/गोत्र	मिलते-जुलते कौ/गोत्र
1	आबावत	x	x	✓
2	उधावत	✓	x	x
3	उडावत	x	x	✓
4	कान्हावत	x	x	✓
5	कुरावत	x	x	✓
6	कडावत	x	x	✓
7	कुंभावत	x	x	✓
8	कानावत	✓	x	x
9	कीतावत	x	✓	x
10	करडावत	x	✓	x
11	खेतावत	✓	x	x
12	खानावत	x	x	✓
13	खमावत	x	x	✓
14	खोला	x	✓	x
15	गागावत	x	x	✓
16	गालावत	x	x	✓

---

* गोर-बंजारे लोकांचा इतिहास, पृ.सं.97, 98, 99, 100, 101, 102, 103

लेखक : के. बळीराम हीरामण पाटील, मांडवी

17 गीदावत	×	×	
18 चांडावत	×	×	×
19 चूड़ावत	✓	×	×
20 चीनावत	×	✓	×
21 चीटावत	×	✓	×
22 चादावत	✓	×	×
23 जम्मावत	✓	×	×
24 जोधावत	✓	×	×
25 छाजावत	✓	×	×
26 जैतावत	×	✓	×
27 जैतमालोत	✓	×	×
28 जाजवत	×	✓	×
29 जाडावत	×	×	✓
30 जोगावत	×	×	✓
31 डूंगरोत	✓	×	×
32 उदावत	×	×	✓
33 डूमावत	×	×	✓
34 देवावत	×	×	✓
35 देपावत	✓	×	×
36 देदावत	✓	×	×
37 देलावत	×	×	✓
38 दूधावत	✓	×	×
39 दूकावत	✓	×	×
40 तारावत	×	✓	×
41 तेजावत	×	×	✓
42 धानावत	×	✓	×

43 धाबावत	✓	×	×
44 धारावत	✓	×	×
45 धीरावत	✓	×	×
46 नैणावत	×	×	✓
47 नालावत	×	×	✓
48 नागावत	×	×	✓
49 पैपावत	×	×	✓
50 पोवावत	×	×	✓
51 पीपावत	✓	×	×
52 पंवणावत	×	×	✓
53 पाचावत	✓	×	×
54 पुणावत	✓	×	×
55 फुलावत	×	✓	×
56 बालावत	✓	×	×
57 बोधावत	×	×	✓
58 बाठावत	✓	×	×
59 बुवावत	×	✓	×
60 बाधावत	×	✓	×
61 बरमावत	×	✓	×
62 भोजावत	×	×	✓
63 भरतावत	✓	×	×
64 भीचावत	×	×	✓
65 भेगावत	✓	×	×
66 भागावत	×	×	✓
67 मूलावत	×	✓	×
68 मेघावत	✓	×	×

69 मोकावत	×	×	✓
70 मांगावत	×	×	✓
71 मोरावत	✓	×	×
72 माहेपावत	✓	×	×
73 मालवत	✓	×	×
74 मुणावत	×	✓	×
75 मेणावत	✓	×	×
76 मुंडावत	×	×	✓
77 रातड़ा	×	×	✓
78 राणावत	✓	×	×
79 रूपावत	✓	×	×
80 राणावत	×	✓	×
81 राजावत	×	×	✓
82 लामावत	×	×	✓
83 लोटावत	✓	×	×
84 लुखावत	×	×	✓
85 लगावत	✓	×	×
86 लुणखावत	✓	×	×
87 लाखावत	✓	×	×
88 विसनावत	×	✓	×
89 विजरावत	×	×	✓
90 सांगावत	✓	×	×
91 सेवावत	×	✓	×
92 सकतावत	✓	×	×
93 सोमावत	×	✓	×
94 सदावत	✓	×	×

95 सालावत	×	✓	×
96 राजावत	✓	×	×
97 रापावत	✓	×	×
98 राठावत	✓	×	×
99 रासावत	✓	×	×
100 रामावत	✓	×	×
101 करमसीपोत	✓	×	×
102 रत्नसीपोत	✓	×	×
103 माल्पोत	✓	×	×
104 छार्यपोत	×	×	✓
105 दार्यपोत	×	✓	×
106 सीमापोत	×	✓	×
107 माणकपोत	×	✓	×
108 हीरापोत	×	✓	×
109 खाटरोत	×	×	✓
110 सागरोत	×	×	✓
111 भरोत	×	×	✓
112 जसरोत	×	×	✓
113 गुजरोत	✓	×	×
114 विजरोत	✓	×	×
115 वारसोत	✓	×	×
116 भगसोत	×	×	✓
117 देवसोत	✓	×	×
118 धर्मसोत	✓	×	×
119 सदासोत	✓	×	×
120 फुलसोत	×	×	✓

121 पातलोत	✗	✗	✓
122 वासलोत	✗	✗	✓
123 वालोत	✓	✗	✗
124 रायमलोत	✓	✗	✗
125 कादलोत	✓	✗	✗
126 धुलोत	✓	✗	✗
127 मोकलोत	✓	✗	✗
128 मालोत	✓	✗	✗
129 माणोत	✓	✗	✗
130 पंवायनोत	✓	✗	✗
131 बाल्नोत	✓	✗	✗
132 बोधडोत	✓	✗	✗
133 वाडोत	✓	✗	✗
134 चांडोत	✗	✗	✓
135 वांकडोत	✓	✗	✗
136 पाम्कोत	✓	✗	✗
137 वाम्गोत	✗	✓	✗
138 वाम्कोत	✗	✓	✗
139 कलोत	✓	✗	✗
140 जाटोत	✗	✗	✓
141 वाघ्योत	✗	✗	✓
142 छाय्योत	✗	✗	✓
143 सीराया	✗	✓	✗
144 फुलाया	✗	✓	✗
145 भैरतीया	✓	✗	✗
146 राम्णीया	✗	✗	✓

147 पालतीया	✓	×	×
148 लावडीया	×	×	✓
149 घाडीया	×	×	✓
150 मोतीवाळो	×	×	✓
151 कौतावळी	×	✓	×
152 जोधावाळी	✓	×	×
153 कंठीवाळी	×	✓	×
154 जीनावाळो	×	✓	×
155 पतरवाळ	×	×	✓
156 मुडाळ	×	✓	×
157 माड्री च्या	×	×	✓
158 कुकरी च्या	✓	×	×
159 गोर	✓	×	×
160 संडोल	×	×	✓
161 वोजगार	×	×	✓
162 पेराजात	×	×	✓
163 माला	×	×	✓
164 उरपला	×	×	✓
165 गोधाम	×	✓	×
166 मूड	×	×	✓
167 कम्हा	×	×	✓
168 वोडा	×	✓	×
169 तेम्सोड	×	×	✓
170 बारोड	×	✓	×
171 धसाडी	×	×	✓
172 वाणी	×	×	✓

173 तरवाणी	✗	✓	✗
174 पेमाणी	✗	✗	✓
175 केकूत	✗	✓	✗
176 हरदेव	✗	✗	✓
177 अजमेरा	✗	✗	✓
178 सदारत	✓	✗	✗
179 पालासीया	✗	✗	✓
180 डालवान	✗	✗	✓
181 ऊपलान	✗	✗	✓
182 सकरा	✗	✗	✓
183 ठाकरान	✓	✗	✗
184 मौलान	✗	✗	✓
185 भूक्या	✗	✗	✓
186 बाणोत	✓	✗	✗
187 वडतिया	✗	✗	✓
188 तुवर	✓	✗	✗
189 चव्हाण	✓	✗	✗
190 काकावत	✗	✗	✓
191 कूपावत	✓	✗	✗
192 कमावत	✓	✗	✗
193 कर्णावत	✓	✗	✗
194 तेजावत	✓	✗	✗

3 गोर बनजारा

3.1 जातीय स्तर :

यह खाद्य सामग्री को लादकर ले जाने वाली जाती है । सन् 1911 में मध्य भारत में इनकी संख्या लगभग 56,000 थी और बेरार में इनकी संख्या 80,000 थी, हेदराबाद में इनकी संख्या लगभग 174000 थी इस जाती के लोग दक्षिण में अधिक थे । इस जाति के नामकरण के विषय में अलग-अलग ढंग से समझाया गया है । संस्कृत क में वानीजियाकरा अर्थात व्यापारी के रूप से बताया गया है ।* सर हेच. यम. इलियट के कथनानुसार बनजारा नाम अधिक पुराना है ।[2]

इनके ही बनजारा, बंजारा, बनजारे, बनजारी, ब्रिंजारी, बृजवासी, लमान, लामानी, लम्बानी, लम्बाडा, लम्बाडी, लबान, लबाना, लभान, लभानी, लभाना, लोभाना, लदेनिया, सुगाली, गवार, गोरिया, गवारिया, गमालिया, गवरा, कांगिया, कांगाशिया, फानाडा,

---

* वन-वन घूमा बनजारा
लेखक श्रीचन्द जैन
पृ. सं 11.

2 वन वन घूमा बनजारा, लेखक श्रीचन्द जैन, पृ. सं. 12

शिरकीबन्द, शिरकीवाला, शिगाडे और बनजारी * आदि नामों से अलग-अलग राज्यों में पुकारा जाता है । बनजारों में इनकी तादाद ज्यादा है । इनके टाँडे[2] सुदूर पहाड़ी क्षेत्रों में अथवा जंगलों में होते हैं । वे सामान्य समाज में घुल मिलकर नहीं रहते । यही कारण इनका रहन-सहन का विशेष ढंग है । बलीराम पाटील के अनुसार इनके पाँच गोत्र हैं[2] (1) राठोर (2) चव्हाण (3) पवार (4) जाधव और (5) तुरी ।

3.11 राठोर (भुक्या) गोत्र :

राठोर के सात उपगोत्र हैं -

(1) बाला (2) मुचाल (3) मुरहावत (4) धरमसोत
(5) जाठोड (6) आलोद (7) बाणोद ।

बाला उपगोत्र के चार उपगोत्र हो जाते हैं -

(1) मेरसी (राथा) (2) मोलासी (खोला)
(3) डेढा (मेधावत) (4) अमदर (खामोद्रोद)

इन चारों में से प्रत्येक के अलग-अलग उपगोत्र हैं । वह यह है -

(1) मेरसी (राथा) 1) कनावत 2) फून्या 3) खाटोड
4) मोद्रीधा 5) हजावत 6) सळावात
7) कोकरिया 8) कुमावत 9) मुलावत 10) केतावत

---

* रिपोर्ट आफ दि आल इण्डिया बनजारा स्टडी टीम, 210 हिन्द राजस्थान बिल्डिंग, दादर, बम्बई-14, पृ.सं. 9

2 टाँडा = बनजारों की बस्ती ।

(2) भोनासी (जोगा) - 1) सुदारत 2) रामध्या 3) दालवान
4) जाल्पोड ।

(3) ठेठा (मेघावत) - 1) मेघावत 2) हापावत 3) जोग्शी
4) बोग्शी 5) आसलोद 6) उमनावत ।

(4) उमदर (जामोड्रोद) - 1) रामावत 2) करमटोत 3) खेतावत
4) घेगावत 5) पातलोत 6) नेणावत
7) देवसोत ।

बाणोत गोत्र को भुकिया भी कहा जाता है । इस शब्द की व्युत्पत्ति इनके किसी पूर्वज भी का के नाम से जोडी जाती है । इस गोत्र का विकास महान राठोर से हुआ है । इसके तेरह उपगोत्र माने गये हैं - 1) पानमाड 2) रुपावत 3) भानवत 4) कुरणावत 5) सदासोड 6) धारावत 7) जानावत 8) लब्धोड 9) लाहोरी 10) पेपावत 11) डूमावत 12) कुम्भावत 13) बंदावत ।

बाणोद और भुक्या गोत्र में लग्न सम्बन्ध नहीं होते हैं ।

3.12 पवार गोत्र :

पवार गोत्र के अन्तर्गत बारह ह उपगोत्र माने गये हैं ।

1) अरपना 2) विसावत 3) गुरहाम 4) लोणासावत 5) विठ्ठावत 6) आमगोत 7) वाड्रोड 8) चावजड 9) लोकावत 10) लोव्यत 11) वाणी 12) तरवानो ।

---

* बनजारे लोकांचा इतिहास, के. बळीराम हीरामण पाटील, यवतमाळ, पृ. सं. 139

आन्ध्र प्रदेश और महाराष्ट्र के कई प्रान्तों में पंवार गोत्र के लोग अधिक बसे हुए हैं। अन्य राज्यों में इनकी संख्या कम है। इनके गोत्र के नाम से टाण्डे भी बस गये हैं। *

3.13 चव्हाण गोत्र :

इस गोत्र के अन्तर्गत छः उपगोत्र हैं।

1) कलोद 2) पालथ्या 3) काकट 4) लावड्या 5) सबावट
6) मूड।

मूड और सबावट उपगोत्र वाले चव्हाण अधिक संख्या में पाये जाते हैं। इनके टांडों को मुडेर टांडो, हकरार टांडो, सबावटेर टांडो, कलोदेर टांडो, पालथ्यार टांडो के नाम से पुकारा जाता है।[2]

3.14 तुरी गोत्र :

तुरी गोत्र बनजारे आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र में कम हैं। इस गोत्र के टांडे भी नहीं हैं। दूसरे गोत्र के टांडों में इस गोत्र के लोग बसे हुए हैं। इस गोत्र का नायक भी कहीं पर नहीं है। इस गोत्र के चार उपगोत्र हैं -

1) जलावत 2) राजावत 3) तेजावत 4) विजोत।[3]

3.15 वडत्या या जाधव गोत्र :[4]

आन्ध्र प्रदेश और महाराष्ट्र राज्य में इस गोत्र के बनजारे अधिक पाये जाते हैं। इस गोत्र के लोग अपने नाम के साथ जाधव शब्द को जोड

---

* बनजारे लोकांचा इतिहास, लेखक - के. बळीराम हीरामन पाटील, यवतमाळ - पृ. सं. 139
2 वही 3 वही 4 वही

लेते है । इसके बारह ब उपगोत्र माने गये है -

1§ बादावत 2§ बोडी 3§ लाखावत * 4§ लाधावत 5§ तेजावत 6§ धारावत 7§ घुगलोत 8§ हालावत[2] 9§ कुपासाद 10§ माळोद 11§ अजमेरा 12§ जेठोड ।

राठोर और पवार भूकिया की लड़की से शादी नहीं कर सकते और अपनी लड़की को भी ~~यह~~ इन्हें नहीं दे सकते । केवरलेज कहते है - राठोर गोत्र की उपशाखा वाले भूकिया या बाणोद गोत्र वाले भी अपनी गोत्र वाली लड़की से विवाह नहीं कर सकते । यह नियम अन्य गोत्र वालों के लिए भी इसी प्रकार है । राठोर और चव्हान गोत्र के लोग आपस में विवाह कर सकते है । यह नियम बनजारा जाति में कठिन सा प्रतीत होता गया ।[5]

3.2 व्यवसायिक प्रवृत्ति :

प्राचीन काल में ये साहसी बनजारे अपने बैलों के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान को खाद्य सामग्री, सोना चान्दी, रत्नादि कर व्यापार करते थे ।[3] उनका यह - व्यापार "बनजारे की बलद" के नाम से प्रसिद्ध था । अकाल पीड़ितों को मुनाफाखोरों से सामान्य जनता को बचाने वाले बनजारों की सेवाओं से प्रसन्न होकर तत्कालीन शासकों ने इन्हें चुंगी कर आदि की छूट दी थी ।

---

* भीमानायक लाखावत के थे । 2 भावानदास हालावत गोत्र के थे ।

5

3 बन-बन घूमा बनजारा - लेखक श्रीचन्द्र जैन, पृ. सं. 11

कर्नल टाड

कर्नल टाड के अनुसार इनका सम्बन्ध महाराणा प्रताप, पृथ्वीराज चव्हाण, जगदेव पवार आदि से मिलता-जुलता है । आशफ खाँ ने जब 17 वीं सदी में दक्खन पर हमला किया तब भगवानदास वडतिया [जाधव] और जंगी भुकिया [राठोर] की सेवाओं से प्रसन्न होकर उन्हें निम्नलिखित सनद दी थी ।

रंजन का पानी, छप्पर का घास दिन के तीन खून माफ ।
जहाँ आसफ खाँ के घोडे, वहाँ जंगी भंगी के बैल खडे ।।

सारांश : यदि तुम्हें पानी नहीं मिला तो तुम मेरे लोगों से पानी ले सकते हो । बैलों के लिये घास नहीं मिला तो किसी भी झोपडी के छप्पर से घास ले सकते हो । तुम दिन में तीन खून करने पर भी माफ कर दिया जायगा । मेरे घोडे जहाँ पर रहते हैं वहाँ जंगी और भंगी के घोडे रह सकते ।

आन्तरिक व्यापार :
<u>[इन्टरनल ट्रेड]</u>

प्राचीन काल से चली आ रही व्यापारिक परम्परा के अनुसार वैश्य ही इस काल के प्रमुख व्यापारी थे । उत्तर में व्यापार गुजरातियों या मारवाड़ियों तथा दक्षिण में चेट्टियों के द्वारा होता था । इसके अतिरिक्त राजपुताने के बनजारे अपने बैलों के द्वारा अनाज का व्यापार करते थे ।

---

* मोनोग्राफ पृ. 14 और बेरार सेन्सेस रिपोर्ट [1881], पृष्ठ संख्या 151, 152 लेखक - कलनल मैकेन्जी
2 मध्यकालीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति - लेखक - उमाशंकर मेहरा - पृ.सं.97

कर्नल टाड के अनुसार कभी-कभी इन व्यापारियों के काफिलों में 40,000 तक बैल होते थे । छोटी-छोटी वस्तुओं का व्यापार गाँव में होता था । कुछ दुकाने चलती-फिरते हुई होती थी जो कि घोड़े के पीठ पर लगाई जाती थी । महत्वपूर्ण वस्तुओं का व्यापार शहर की मण्डियों में होता था । बड़े पैमाने का व्यापार कुछ विशेष वर्ग तक ही सीमित था । भारत के महत्वपूर्ण व्यापारी में गुजराती और मुल्तानी थे । विदेशी मुसलमान व्यापारियों को खुरासानी कहकर पुकारा जाता था । ये देश के समस्त भागों में अपना व्यापार करते थे । बड़े उद्योगों पर दलालों का प्रभाव था जिसे खत्म करने के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने अथक प्रयास किया । गाँवों में मण्डियाँ तथा शहर में बाजार व्यापार केन्द्र थे । कपड़ा अनाज तथा अन्य खाद्य-पदार्थों का आंतरिक व्यापार होता था ।

4. चारण बनजारे :

व्युत्पत्ति के अनुसार चारण भी घुमंतु जाति ही सिद्ध होती है ।* दूसरा अर्थ यह भी संभावित होता है कि चारण जाति पशु चारण से संबंधित होने के कारण इस नाम से विख्यात हुई ।[2] राजस्थान के

---

* सम्भवत: चर से हुआ है ।

2. In the article on Bhot it has been explained howthe charans or bards, owing to their readiness to kill them selves rather than given up the property entrusted to their care, become the best safe conduct for the passage of goods in Rajasthan. The name Charan is generally held to mean 'Wandere, and in their capacity of bards the Charanswere accustomed to travel from Court to Court of the different chiefs in quest of patronage. By R.V.Russell and Hiralal, Tribes andCastes of the Central Province of India Page No.164

इतिहास में चारण जाति सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रही । राजपूत और चारण का संबंध चोली दामन का सा रहा । यह जाति किसी राज्य की थाती और परम्परा का संरक्षण - करती है ।

चारण और भाट संभवत: जातीय दृष्टि से और व्यवसायिक दृष्टि से एक ही है ।

4.1 जातीय स्तर :

राजस्थान में निश्चित ही चारण जाति राजपूतों से अलग है । राजपूत और चारण के बीच रोटी बेटी का संबंध भी नहीं है । टाड ने राजपूत और चारण की जातिगत भिन्नता की ओर संकेत किया है ।*
किन्तु यह अवश्य है कि क्षत्रियों की सेवाओं में चारण जाति संलग्न हुई।[2]

जहाँ तक बनजारा और चारण जाति के संबंध का प्रश्न है, यह बात कही जा सकती है कि बनजारा जाति मुख्य रूप से राजपूत थी । उनके गोत्र भी राजपूत गोत्रों से मिलते-जुलते हैं । अपने व्यवसायिक दृष्टि के कारण इन चारणों की गिनती संभवत: बनजारों में भी होने लगी थी । बनजारों के साथ चारणों के रोटी बेटी का संबंध नहीं है ।

TOD, RAJASTHAN . P. 602

साथ ही चारणों का और बनजारों का आज भी वह संबंध दिखलाई पड़ता है जो कभी राजपूतों और चारणों का था । आज भी चारण आकर बनजारों के टांडों में प्रशस्त गायन और वंशावली का व्याख्यान करते हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि जब राजपूत बनजारे अपने व्यापार के कारण समृद्ध हो गये तो उनके साथ भी कुछ चारण घुमन्तु होकर रहने लगे । आज भी राजपूत बनजारों के टांडों में चारण मिल जाते हैं ।* कुछ शुद्ध चारण जाति के टांडे बहुत कम ही हैं ।[2] इस व्याख्या से यह स्पष्ट होता है कि चारण और बन्जारे जातीय दृष्टि से कुछ भिन्न हैं और व्यवसायिक दृष्टि से समान हो गये । इसीलिए कम्बरलेज ने बनजारों का वर्गीकरण करते समय चारण वर्ग का उल्लेख किया । सम्भवत: अपने को राजपूत होने के गौरव से युक्त होना चाहते हैं । इसलिए वे भी अपने गोत्र राजपूतों के समान ही बतलाते हैं । एक विद्वान उनके पांच राजपूत गोत्रों का उल्लेख किया है - 1. राठोर 2. तुरी 3. पवार 4. चौहार और 5. जाधव । किन्तु वास्तविक बात यह है कि चारण बनजारे राजपूत या गोर बनजारों से भिन्न ही हैं ।

---

* आदिलाबाद जिला [आन्ध्र प्रदेश] की टांडों की संरचना में चारण हैं ।

2 महाराष्ट्र के गंगाखेड [नांदेड] नामक स्थान में चारणों के स्वतंत्र टांडे भी हैं किन्तु आन्ध्र प्रदेश में इनकी स्थिति नहीं है ।

3. The start which the Charans then acquired they retain among Banjaras to this day, though in very much diminished splendour andposition. As they themselves relate, they were originally five Rustha brethren, Rathor, Turi, Panwar, Chauhan, and Jadon. By R.V. Russell and Hiralal, Tribes and Castes of the Central Provinces of India 4 P. 166

4.2 चारण और राज्याश्रय :

राजस्थान में चारण जाति को राज्याश्रय प्राप्त हुआ । राज्याश्रित चारण के प्राय: दो कार्य होते थे - राज्य प्रशस्ति का गायन और युद्ध के लिए सेना और प्रजा में वीर भाव जागृत करना । अपने आश्रयदाता के साथ चारण की स्थिति युद्धों में भी देखी जा सकती है । राज्याश्रित चारण ने प्रचुर प्रशस्तिपरक साहित्य लिखा जो आज भी उपलब्ध है ।* हिन्दी साहित्य के आदि काल का नाम डॉ राम-कुमार वर्मा ने चारण काल नाम से अभिव्यक्त किया है ।[2]

चारण जाति का चरित्र सांस्कृतिक दृष्टि से महान् था । इनके उच्च चरित्र से संबंधी अनेक कथाएं राजस्थान में प्रचलित है । कोल, भील तथा राजपूत जाति के शासक इस जाति के चरित्र से प्रभावित थे और इस रूप में उन्हें प्रोत्साहन भी देते थे ।[3]

इनके चरित्र में सबसे बड़ी विशेषता ईमानदारी की थी जो शासक इनसे व्यवसायिक सेवा लेते थे, वे इस जाति पर पूर्ण विश्वास करते थे ।

---

* अधिकतर रासो साहित्य चारण रचित ही माना जाता है ।

2 द्रष्टव्य : हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास

3 The Charans andbhats are bards and Geneologists are the chief carriers of these regions (Marwar); their sacred Character overawes the lawless Rajput Chiefs and even the savage Koli and Bhil and the plundering Saharai of the desert dread. The anathema of these singular races, who conduct the carvans through the wildest and most desolte regions - Tod, Rajasthan, P.602

4.3 व्यवसायिक प्रवृत्ति :

कुछ विद्वानों ने इस प्रशस्त गायक प्रशास्तत जाति के व्यवसायों की ओर भी संकेत किया है । टाड ने इनकी दो व्यवसायों की ओर संकेत किया है : पशुपालन और बैलों के पीठ पर लादकर खाद्य सामग्री को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना ।* आरंभ में इनका लदणी का कारोबार संभवतः राजस्थान तक ही सीमित था । इनके आने जाने पर शासकीय रूप से कोई रोक-थाम नहीं ।

ऐसा भी प्रतीत होता है कि इनका परवाह-न व्यापार राजवर्ग से भी संबंधित था । एक राजा के यहाँ से दूसरे राजा के यहाँ खाद्य सामग्री पहुँचाने का कार्य भी वे करते थे ।[2] यह भी प्रतीत होता है कि अंत में इनका व्यवसाय खाद्य सामग्री के परिवहन तक ही सीमित नहीं रहा, अन्य मूल्यवान वस्तुओं का यातायात भी इनके द्वारा होता था ।

रेगिस्तान और पहाड़ी प्रदेश में परिवहन का व्यापार बड़ी जोखिम का था । इसके लिए चारणों को अपनी जान पर भी खेलना पड़ता था । इनके अंतराष्ट्रीय व्यवसाय की ओर लेखकों ने संकेत

---

* Tod, Rajasthan, P.602

2. One may suppose that the Charans having acted as carries for the Rajput chiefs and courts, both in time of peace and in their continuous intestinal feuds, were pressed into service when the Mughal armies entered Rajputana and passed through it to Gujarat and the Deccan - By R.V. Russell and Hiralal, Tribes and Castes of the Central Provinces of India,P.168

किया है ।* विशेष रूप से इनके व्यापार क्षेत्र में सातारा, पूना और निजाम के सूबों का उल्लेख किया गया है ।

इनकी व्यापार सेवा से शासक भी प्रसन्न था और प्रजा भी प्रसन्न थी । प्रजा इसलिए प्रसन्न थी कि कभी-कभी दुर्भिक्ष के समय इनकी व्यावसायिक सेवाएँ भुखमरी से प्रजा की रक्षा करती थी । चारणों का दक्षिण प्रवेश का भी प्रमाण मिलता है । शाहजहाँ के सेना नायक आसफखान के साथ सम्भवत: इनका दक्षिण में प्रवेश हुआ

5. ढाडी बनजारे

5.1 जातीय स्तर :

जिस प्रकार चारण राजपूत नहीं होते इसी प्रकार ढाडी भी राजपूत नहीं होते । ढाडियों के तेरह गोत्र होते हैं जो इस प्रकार है :

1 ताकनाथ	2 पोखला	3 रत्ना	4 कुराथ
5 शारा	6 रुसा	7 बाजी	8 सग्रावत
9 भग्रावत	10 भाणावत	11 रामदास	12 भीमला और

13 देहावत ।*

इन गोत्रों को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इनके गोत्र राजपूतों से मिलते-जुलते नहीं जब कि चारणों के कुछ गोत्र अवश्य बतलाये जाते हैं जो राजपूतों से मिलते जुलते हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि मुस्लिम काल में ढाडी मुसलमान भी हो गये थे । इसके संबंध में एक किंवदंती प्रचलित है । एक बार मुगल सम्राट हुमायूं ने इनके किसी पूर्वज को भोज

---

* बळीराम पाटील : मांडवी : महाराष्ट्र – गोर बंजारा लोकांचा इतिहास पृ.44

पर आमन्त्रित किया । उस जश्न में वह गाय या भैंस का मांस खा गया फलत: वह मुसलमान हो गया । साथ ही उसको मुगल दरबार में संगीतकार के रूप में आश्रय भी मिला ।

एक और बात कही जाती है कि ढाढ़ी बनजारे का पूर्वज गुरु नानक का भक्त बन गया और उसने सिक्ख धर्म स्वीकार कर लिया । इस प्रकार इनकी जाति परिवर्तन के उपर्युक्त दो रूप मिल जाते है ।*

तीसरा जाति परिवर्तन का रूप यह भी है कि ढाढी लोग चारण बनजारों के साथ भी मिल गये और इन्होंने चारण बनजारों की वृत्ति भी अपना ली । यह भी उल्लेख मिलता है ढाढी चारणों के प्रशस्त गायक भी थे । जो ढाढी मुसलमान भी बन गये थे वे भी कुछ हिन्दु परम्पराओं को अपनाये रहे । उनमें सरस्वती पूजा अब तक प्रचलित है ।

कहा जाता है कि गंधा और गाजी नाम के पूर्वज मुसलमान हुए थे उनके लिए ये बकरे की बलि भी देते है । इनकी समाधियों के पास फातिया {प्रार्थना} पढ़ने के लिए फकीर को बुलाया जाता है ।

---

* देस्या ढाढी, आयु 80 वर्ष, टाँडा - बोलारंडा, हैदराबाद

2 भीमला भाणावत, आयु 70 वर्ष, टाँडा - खम्मम, आन्ध्र प्रदेश ।

5.2 गायक-वादक :

जिस प्रकार चारण जाति मुख्यत: वीर काव्य और वीर भावना से राजस्थान में सम्बद्ध रही उसी प्रकार ढाढी जाति संगीत गायन से सम्बद्ध रही । * दोनों ही जातियाँ घुमंतू प्रकृति की थी किन्तु एक अन्तर प्रतीत होता है । चारण जाति राज्याश्रित होकर वीर काव्य के प्रणयन में संलग्न होती थी और कभी-कभी छोटे राव राजाओं से भी अधिक रहती थी । जनता से उनका सम्बन्ध था अवश्य किन्तु बहुत कम उसके विपरीत ढाढी जाति केवल राजघरानों से ही संबद्ध नहीं थी । सामान्य जनता के साथ भी इसका सम्बन्ध था । जहाँ कहीं कोई पुत्र जन्म या विवाह, समारोह होते थे प्राय: इस जाति के पुरुष और स्त्रियाँ भी वहाँ जाकर गायन वादन करते थे और पुरस्कार पाते थे । जिस प्रकार चारण जाति व्यवसायिक वृत्ति को अपनाकर बनजारों में परिगणित होने लगे थे । सम्भवत: ये लोग भी बनजारे बन गये थे ।

कम्बरलेज ने लिखा है कि त्योहारों के अवसर पर वे ढपली बजाकर चारणों के टाँडों में पुरस्कार याचना के लिए जाते थे । चारणों से इन्हें पर्याप्त पुरस्कार भी मिलता था-कभी पैसों के रूप में और कभी पशुओं के रूप में भी ।

बनजारों के टाँडे में पुत्र जन्म या विवाह, समारोह के अवसर पर पुरस्कार याचना के लिए ढाढी यह गीत गाता है -[3]

---

* कम्बरलेज - मोनोग्राफ - पृ. सं. 28, 29
2 वही
3 लालसिंह, बापूनगर टाँडा, आयु 50 वर्ष, तहसील, हिमायतनगर, जिला हैदराबाद ।

राधा मीठी धोळ्ळी, रण मीठी तलवार ।
सेज मीठी कामिनी, सूरा मीठी साग ।
दरदेमा वेराजो प्रभु, आप क्या दे दा ।
घट्टे-घट्टे मा प्रभु, रोवन तु वेदो ।
जीव जन्त तीन धाव, भोग लाग पेरा ।
सरी जगतीरो प्रभु, आज साई वेरो है ।
जगती पर मोरो, पेदा कीदोचो धरम ।
देका देकी लोक कर, पार करम ।
नर नारी छोड दीने, लाजन सरम ।
मुंडो देकन वाते करा, धरमा धरम ।
ये पोटेरी बीरे वेगी, थारी बाताखानी ।
घरेवाली न मारी सोटा, धाना केसर कानी ।
लोकोती मलाजो भादी, चलीगी से बानी ।
सरम लाज काई छेनी, वतारोच जानी ।
गोरमा तो वेगी बापू, केसी-दूना-सत्ती ।
पाप कार्य कोनी कीदो, जेमा कत्ती ।
सोते ती सुआगी वेगी, वो असी रुपवती ।
सोते ही सुआगी वेगी, अस्सी गुणवती ।

ढाडी जाति की वृत्ति का परिचय सूरदास जी के साहित्य से मिलता है । जब नंद के घर में कृष्ण का जन्मोत्सव हुआ गाने बजाने के लिए ढाडी और ढाडिन आई । उस अवसर पर यह पद गाये गये ।

• दुःख गयो, सुख आयो सब निको, देव पितर भल मान्यो ।
तुम्हारे पुत्र प्रान सब हि निको, भुवन चतुर्दस जान्यो ।
हौं तो तुम्हारे घर को ढाढी, नाद सुनै सब पाऊं ।
गिरि गोवर्धन वास हमारो, घर तजि अनत न जाई ।

ढाढिन मेरी नाचे - गावे, हौ हूं दाद बजाई ।
हमारो चोरयो भयो तुम्हारे, जो मांगो सो पाई ।
अब तुम मोको करहु अजाचो, जो कहूं करन पसारो ।
दारे रहो, देह इक मंदिर, स्याय, सूरज निहारो ।
इसि ढाढिनि दादी सौ बोलो, अब तु बरनी बधाई ।
ऐ सो दियो न देहि, सूर कोउ, जसुमति हो पहिराई ।।36।।
655

दादी दान मान के भाई
नंद उदार भक पहिरावत, बहुत भयी बनि आई
जब जब नाम धरो दादी को, जनम करम गुन गाई ।
अर्थ-कामना-मुक्ति-फल-चरि पदारथ पाई ।
लै दादिने कांचन-मनि-मुक्ता, नाना बसन अनूप ।
हीरा-रतन-परबर हमको दीन्हे ब्रज के भूप ।
अब तो भली भई, नारायन-दरस निरखि, निधि-पाई ।
जहं तहं बंदनवार बिराजित, घर-घर बजति बधाई ।
भयित देहु, पालने, झुलाऊं, सूरदास बलिजाई ।। 38 ।। 656*

5.3 टांडा :

जिस प्रकार बनजारो के टांडे सारे भारत वर्ष मे मिलते है उसी प्रकार ढाढी बनजारो के टांडे भी है पर संख्या मे बहुत कम । अन्य बनजारो के टांडो मे भी इनकी स्थिति दिखाई देती है । उदाहरण के लिए आन्ध्र प्रदेश के खम्मम और रंगारड्डी जिले मे बोडावंडा नामक स्थान पर ढाढी बनजारो के टांडे है ।

---

* सूरसागर, सूरदास, पृ. सं. 655, 656

6 मथुरा बनजारे

6.1 जातीय स्तर :

मथुरा बनजारे अपने आप को ब्राह्मण कहते है । ये लोग ब्राह्मणों की भांति जनेऊ भी पहनते हैं । मांस और मदिरा से भी इन्हें परहेज है । * कम्बरलेज मथुरा बनजारों को चार भागों में विभक्त किया है - 1) पाण्डे 2) दूबे 3) चौबे और 4) तिवारी

ये सब ब्राह्मणों के गोत्र है । इनके लिए चार वेदों का पठन करना अनिवार्य कहा जाता है ।[2]

6.2 व्यवसायिक प्रकृति :

अन्य बनजारों की भांति मथुरा बनजारे भी बैलों और गायों पर अन्न लादकर जगह-जगह बेचनेवाले व्यापारी थे । किन्तु बैलों और

---

* The Mathuria Banjaras take their name from Mathura or Muttra and appear to be Brahmans. They wear the secred thread', know the Gayatri Mantra and to the present day abstair from meat and liquor subsisting entirely on grain and vegetables. They always had a sufficiency a Charans and servants (Jangar) in their villages to perform all necessary manual work, and would not themselves work for a remunderation otherwise than by carrying grain, which was and still is their legitimate occupation. BY - R.V.Russell and Hiralal, Tribes and Castes of the Central Provinces of India, P.171

2. The Mathurias are divided according to Mr.Cumberlege into four Groups called Pande, Dube, Tiwari and Chaube all of which one common titles of Hindustan Brahmans and signify a man learned in one, two, three and four vedas respetively.
By - R.V.Russell and Hiralal, Tribes and Castes of the Central Provinces of India, P.171

गायों पर सामान लादना ब्राह्मणोचित कार्य नहीं है । * मथुरा बनजारों का गाय बैल से व्यवसायिक सम्बन्ध रहा है । इस व्यवसायिकता के साथ धार्मिकता भी संबद्ध हो गई । प्रत्येक परिवार अपने आंगन में कम से कम एक गाय खूंटे से बंधी देखना चाहेगा । इस जाति के लोग गो हत्या को सबसे बड़ा पाप समझते है ।

7 मुसलमान बनजारा

ऊपर कुछ हिन्दू बनजारों का परिचय दिया गया है । इनके अतिरिक्त कुछ बनजारे मुसलमान भी होते हैं । इनके दो वर्ग माने जाते हैं : तुरकिया और मुकेरिया ।[2] मुकेरिया बनजारों का कहना है कि - उनका सम्बन्ध मक्का से है ।[3] दूसरी उत्पत्ति के अनुसार ये लोग "मक्का" का व्यापार करते थे, इसलिए मक्केरी हो गये । कुछ भी हो ये लोग अपने को मुसलमान ही कहते हैं । तुरकिया शब्द तो इनके मुसलमान होने को प्रमाणित करता ही है ।

शुद्ध बनजारे इनको बनजारा मानते ही नहीं किन्तु कम्बरलेज ने इनको बनजारा माना है ।[4]

---

* Elliots Races, quoted by Mr. Crooke, Ibidem

2 -do-

3 HINDUS Hindu's of Gujrath, P.No.214 By - Comberlage

4. Sir H.M. Elliot's SupplementalGlossory

यह भी अनुश्रुति है कि ये लोग औरंगजेब की सेना के साथ दक्षिण में आ गये थे । यह भी अनुमान लगाया जाता है कि ये राजपूत बनजारे ही रहे होंगे ।* परन्तु किसी दबाव में आकर इन लोगों को बलात् मुसलमान बना लिया हो ।[2]

8 सुनार बनजारा

बनजारों के कबीले के साथ सुनार भी रहते थे । सुनार एक स्वतंत्र जाति है । बनजारों के सम्पर्क में आने पर इन्होंने बनजारों की बोली सीख ली । इस वर्ग की कोई दूसरी बोली नहीं है ।[3] आज भी बनजारों के सभी टाँडों में सुनार का एक परिवार होता है, आज भी उनका व्यवसाय गहने बनाना ही है । इनकी संस्कृति[4] बनजारों से मिलती-जुलती है, परन्तु वेश-भूषा अलग है । किन्तु सुनारों को बनजारों का दरजा प्राप्त नहीं होता । इनके साथ कोई रोटी बेटी का सम्बन्ध नहीं बनता ।

मोतीलाल सुनार कहता है - हमारे दादा, परदादा भी बनजारों के टाँडों में रहते थे, वे भी बनजारों को गहने बनाकर देते थे । हमारी औरतें साड़ी-चोली पहनती हैं । हमारा धर्म हिन्दू है, हम लोग बाबाजी की पूजा करते हैं । हिन्दू धर्म के सभी देवी-देवताओं की पूजा भी करते हैं । टाँडों से निकट वाले हाट में हम लोग बनजारों के गहनों को बेचते हैं ।[5]

---

* 2

3 इनकी अपनी एक कोड भाषा भी है, जिसको केवल वे ही समझ सकते हैं ।

4 यद्यपि बनजारों की अनुकरण इनके त्योहार पर्व होते हैं, फिर भी इनका कोई अपना वैशिष्ट्य रहता है ।

5 मोतीलाल सुनार, आयु 70 वर्ष, पालासतांडा, खोरेकडी जिला, आ.प्र.

१ जांगड बनजारा

बनजारे कभी-कभी अपने पशुओं की देखभाल के लिए नौकर रख लेते थे। जितने ही अधिक गाय और बैल होते थे उतने ही नौकरों की आवश्यकता होती थी। यदि कोई गरीब आदमी अपने बच्चों को बेचने पर वे लोग खरीद लेते थे। उस खरीदे हुए बच्चे को ही जांगड * कहते हैं। क्यों कि इनकी स्थिति गुलामों जैसी ही होती है, यहाँ तक कि इनका क्रय-विक्रय भी किया जा सकता।

जांगड बनजारा के खाने-पीने के बर्तन भी अलग रहते हैं। वह बनजारों की पंक्ति में बैठकर भोजन नहीं कर सकता। यदि जांगड किसी काम से दूसरे टांडे को जाता है तो उसे पानी भी ऊपर से डालकर पिलाया जाता है।

१.१. जांगडेन भेळनो (जांगड को बनजारा बनाना) :

सात पीढ़ियों के पश्चात् जांगड को बनजारे के रूप में मान लेते हैं।[2] उसका गोत्र मालिक बनजारे के साथ हो जाता है। उसे बनजारे के रूप में मानने के लिए एक अनुष्ठान होता है। इस अवसर पर जांगड का पालक टांडे के नायक और कारभारी को आमंत्रित करता है। आस-पास के टांडों के प्रतिष्ठित नायकों को भी इस अनुष्ठान में सम्मिलित किया जाता है। टांडे के लोग जांगड के पालक के घर के सामने बैठ जाते हैं। जांगड को

---

* जांगड का अर्थ गुलाम होता है।

2 इसको प्रमाणित करने के लिए कोई बुजुर्ग बनजारा प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

एक उचित स्थान पर बिठाया जाता है । टांडे का नायक अन्य नायकों के सम्मुख सोना गरम करता है और गरम सोने से जांगड की जीभ को दाग देता है । तब से जांगड बनजारा बन जाता है । *

इस अनुष्ठान को धूम-धाम से खान-पान के साथ मनाया जाता है । जांगड की बोली, वेश-भूषा, रहन-सहन, धर्म और देवी देवता बनजारों के समान होते हैं । इस अनुष्ठान को जांगडेन भेळनो (जांगड को बनजारा बनाना) कहते हैं । तब से जांगड को बनजारों की पंक्ति में बैठकर भोजन करने की अनुमति प्रदान की जाती है । वह अपनी बेटी दूसरे बनजारों को दे सकता है और ले सकता है । इस प्रकार से बेटी और रोटी की अनुमति प्राप्त होती है ।[2]

...

---

* चन्द्रुनायक, आयु 85 वर्ष, नरसापूर टांडा, मेदक जिला, आन्ध्र प्रदेश ।

2 कौसल्या नायक, आयु 60 वर्ष, धारूर टांडा, रंगारेड्डी जिला, आन्ध्र प्रदेश ।

द्वितीय अध्याय : .. ..

बनजारा : सांस्कृतिक परिचय

1. टाँडा :

बनजारा की बस्ती को टाँडा कहते हैं । टाँडों का चुनाव इस दृष्टि से किया जाता है कि वहाँ कीचड़ न हो पाये और पशु चरने के लिए सुविधायें हों । इनके टाँड़े पर्वत की गोदी या जंगल के आंचल में, और नदियों के किनारे बस जाते हैं । प्रकृति के गोद में स्थिर टाँडे मन को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं । वे लोग अपने मकान को खाडा कहते हैं और महाराष्ट्र के बनजारे कुड़ कहते हैं । इनका मकान लकड़ी और घास से बनाया जाता है । पक्के मकान बहुत कम पाये जाते हैं । मकान का आंगन पूर्व दिशा की ओर रहता है । टाँड़े के सामने हनुमान जी का मन्दिर रहता है जिनको बनजारे भक्ति के साथ पूजते हैं ।

2. नायक :

टाँडे के इस मुखिया को नायक कहते हैं । नायक एक प्रतिष्ठित परिवार का व्यक्ति होता है । वह न्यायी एवं धर्मात्मा होता है । नायक की नियुक्ति वंश परम्परागत होती है । पिता की मृत्यु के पश्चात् उसके बड़े बेटे को टाँडे का नायक बना दिया जाता है । नायक के सहायक व्यक्ति ये हैं - कारभारी, डाव, सोनार, [illegible],दाल्या, नाई और ढाड़ी आदि । कारभारी और डाव दोनों क्रमशः नायक की सहायता करते रहते हैं । नायक की अध्यक्षता में टाँडे के सभी त्योहार, अनुष्ठान, शुभकार्य, जन्म और मृत्यु सम्बन्धी कार्य सम्पन्न होते हैं । किसी त्योहार विशेष पर टाँडे में कोई दुर्घटना घट गई तो टाँडे वाले उस त्योहार को मनाने या न मनाने का सुझाव

नायक से लेते हैं और नायक के निर्णय को स्वीकार करते हैं । प्राचीन काल से लेकर आज तक में भी टाँडे का सामूहिक कार्य चलता आ रहा है । आज भी बनजारा समाज में नायक को सम्मान दिया जाता है । टाँडे के कुँवारी-कुँवारे के हाथ पीले करने का कार्य नायक के द्वारा ही सम्पन्न होता है । सगाई के अवसर पर उसकी उपस्थिति अनिवार्य समझी जाती है । गुड़ खाने के अनुष्ठान में नायक के बिना कार्य आगे नहीं बढ़ता । इस अवसर पर नायक को एक रुपया भेंट में देते हैं । इस रुपये को साकेर* रुपया कहते हैं । इसी प्रकार से विवाह में सगाई से लेकर कन्या की विदाई तक नायक का घनिष्ट सम्बन्ध रहता है । टाँडे में बकरा काटने पर नायक को "घुड़ीवालो हड़का" देने की प्रथा है ।

3. नसाब (बनजारों की पंचायत) :

बनजारों की पंचायत[2] प्रथा आज भी अपना अनूठा स्थान रखती है । सामाजिक कार्यों में जब भी कोई मतभेद खड़ा हो जाता है तो टाँडे से दूर वृक्ष के नीचे इनकी पंचायत बैठती है । पंचायत में प्राय: आस-पास के सभी टाँडों के नायक सम्मिलित होते हैं । हर एक टाँडे के नागरिक[3] को भी उसमें उपस्थित होने का अधिकार रहता है । वे सब अपने नायक के साथ क्रमबद्ध बैठते हैं । भिन्न-भिन्न टाँडों की कतारों को लेकर एक घेरा बना लिया जाता है । तत्पश्चात् दल का नायक बात शुरू करता है । एक व्यक्ति की बात जब तक समाप्त नहीं

---

* साक्ष

2 बनजारा जाति में पंचायत को "नसाब" कहते हैं ।

3 बनजारे नागरिक को "कस्ता आदमी" कहते हैं ।

हो जाती, तबतक दूसरा नहीं बोलता । जिस किसी व्यक्ति को कुछ बोलना हो तो उसे नायक से पहले अनुमति लेना पड़ता है ।

यद्यपि बनजारों की पंचायत चार-पांच दिन तक भी चलती है । वादी और प्रतिवादी दल के लोग अपने घर का खाना खाते हैं । उपस्थित प्रश्न का निर्णय होने पर पंचायत समाप्त होती हैं । अपराधी को पंचायत दंड * देती है । दंड के रूप में प्राप्त रुपयों से पंचायत को दारू पिलाई जाती है ।

4. बनजारा जाति में पारिवारिक जीवन का चित्रण :

संसार के प्राय: सभी देशों का समाज छोटे-छोटे परिवारों में बंटा हुआ है । परन्तु इसके विपरीत भारतीय समाज की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां संयुक्त परिवार अधिक होते हैं । लोक-साहित्य समाज स्वरूप का सच्चा प्रतिनिधि होता है, यही कारण है कि पारिवारिक जीवन के जो विशद चित्र जैसे भारतीय लोक-साहित्य में उपलब्ध होते हैं । वैसे भारतीय भाषाओं में प्राप्त होनेवाले लोक-साहित्य की भांति ही बनजारा लोक साहित्य में वर्णित परिवारों में सदस्यों की दीर्घ सूची मिलती है ।

परिवार के सभी सदस्य परस्पर प्रेमपूर्वक सुख-दु:ख दोनों में

---

* बनजारा बोली में दंड को " दांड " कहते हैं ।

समान रूप से साथ देते हैं - एक सदस्य सुख सभी का सुख और एक का दुःख सभी का दुःख बन जाता है । साथ साथ रहने से कभी कभी परस्पर कलह का हो जाना अस्वाभाविक नहीं है । स्वभाव-भेद और अवस्था भेद से कलह के दो ही कारण होते हैं । कभी-कभी सामाजिक मर्यादा का उल्लंघन भी परस्पर कलह-द्वेष उत्पन्न कर देता है । परिवार में कुछ सम्बन्ध ऐसे होते हैं जो स्नेह, प्रेम, बलिदान तथा करुणा जैसे सद्गुणों को सहज प्रकट कर देते हैं और कुछ ऐसे भी होते हैं जिनसे ऐसा प्रतीत होता है कि स्वाभाविक वैर हो । कुछ सम्बन्ध सामान्यतः तो आदर-श्रद्धा से युक्त दिखाये जाते हैं, परन्तु परिस्थिति विशेष में परस्पर घृणा उत्पन्न करनेवाले हो जाते हैं । जैसे देवर-भाभी, ससुर-बहू, एवं जेठ-बहू । इन सभी सम्बन्धों को तीन उपशीर्षकों में विभक्त किया जा सकता है - वात्सल्य, मित्रता और प्रेम उत्पन्न करनेवाले सम्बन्ध । वे इस प्रकार है -

१. अ) माता और पुत्री
- आ) पिता और पुत्री
- इ) माता और पुत्र
- ई) पुत्र और पिता
- उ) भाई और बहन
- ऊ) पति और पत्नी
- ए) देवर और भौभी
- ऐ) भाई-भाई
- ओ) बहन-बहन

<u>गर्भ संस्कार एवं प्रसव</u>

बंजारा स्त्री के गर्भाधान के बाद जो गीत गाया जाता है, उसमें नारी सुलभ आशा-आकांक्षाएं एवं हार्दिक प्रसन्नता के भाव मुखरित हो उठते हैं --

सासूजी मेरे सायबजी को कहीजो,
कुंवर का डास-धा मंगा दे जो ।
अबक तो दाँत नहीं है ।।
दूध बताशा पोलो,
बागों का बन्फल खा लो ।
अबर तो दाँत नहीं है ।।
पीयर पूरी को लजना लागे,
जेठानी मेरे जेठजी सायर को कहो जे -
कुंवर का डास-धा मंगा दे जो ।
अबक तो दाँत नहीं छ ।।
जयपुर का गेवर खा लो,
अबर तो दाँत नहीं है ।।

प्रसूति के बाद गीत गाते हुए जच्चा को प्रसूति-गृह के बाहर निकाला जाता है -

इस जच्चा ने जुलम किया,
बीबीजी जापा शुरू किया ।
दाई को बुलाना छोड़ दिया
नर्सों को बुलाना शुरू किया । इस जच्चा ...।।
सास को बुलाना छोड़ दिया,
मास को बुलाना शुरू किया ।। इस जच्चा .. ।।

..

मेंढल को झुलाना छोड़ दिया,
बहन को झुलाना शुरु किया ।। ऐस उच्चा·· ।।

<u>मातृत्व भाव</u>

प्रसूति के पश्चात माता अपने अपने रोम रोम से शिशु की कल्याण-कामना करती रहती है । बच्चा यदि हृष्ट-पुष्ट हो तो चिंता कम रहती है, लेकिन दुर्बल अथवा अपंग शिशु के कारण माँ की व्याकुलता एवं बैचेनी का ओर-छोर नहीं रहता । अपनी अंधी कन्या के लिए माता की तड़प का यह चित्र कितना महान है -

मारो आंधळोरो लकुडी गमाई,
ओरो गत्तो काय थाई ।
यमुना नदीमा किरण्णा डुबगो,
ओरो गत्तो कोन खाई ।
ताकिककुडिम् नागपद्मिनी···
वेरस कुडिम् दाना गुत्तेव ।
दानान् मारन् माती फोडो ।
मात फोडो, बैनो काढो ···
बैनेरो सिरा कळाई कवारा ।।

कन्या का विवाह माता के लिए मिश्रित भावनाओं का जनक है । उसे कन्या को विदा करते समय उसकी अन्तरात्मा में टीस उठती है --

थाको मातेरो गोदी छोडो चालो ।
थाषिरे छीन दोडी आई ।
बापूरो मेल छोडी चालो ।
चालो छोडो गराळया छोर आगीमं ।

··

छालो कोरण बांधल छैर आंगण ।
खालो थाळीन बसाचल छैर आंगण ।
बालो लोकी पुराल छैर आंगण ।
छालो लोकीया लाराव गैर आंगण ।।

<u>सौतेली माता</u>

सौतेली माँ का व्यवहार कटु एवं निष्ठुर रहा करता है । एक बंजारा लोकगीत में पुत्र इस दुर्व्यवहार का वर्णन करते हुए कहता है -

मारी मारी मासीय तैगो कन्दासीय
बार मिना तैगो मासी मरारोमूं भैलोय ।
तारे बैटान मिलाए वैलोय ।
बार मिना तैगो मासो सरारोसो भैलोय ।
तारे बैटान काटेन मौलोय । बार मिना. ।।

<u>पितृत्व भाव</u>

बंजारा लोकगीतों में पिता का पुत्री के प्रति असीम प्रेम दिखाई देता है । योग्य वर की खोज की चिंता पिता के पूरे व्यक्तित्व को मथ डालती है । बंजारों में भी कन्या का विवाह पिता के लिए एक समस्या खडी कर देता है --

पंच भैलो राम रामिए बाईए ।
हमतो आई परमक वैतो ...
हमारो रामोर कुंवार कन्या ।
परकमन काचको तोराए ...
हमारा रै बाई दलैव तुमारो ।

सप्तपदी के बाद जब कन्या पराई हो जाती है, तब माता

ही नहीं पिता का हृदय भी दुखित हो जाता है । इस अवसर का गीत इस प्रकार है --

> आगो बजारो, लोकीनी, बेरी मोलो मैं कूटक ।
> कोयलबाई सोद भाभी, छोडी दादाजी रो आंगनो ।।
> छोडी दादारी देस, छोडी काकाजी को आंगनो ।
> छोडी काकरा को घर् , कोयलबाई सोद सखी ।

<u>भाई-बहन का स्नेह</u>

बंजारा लोकगीतों में बहन भाई के लिए " वीर " शब्द का प्रयोग करती है । बहन की आकांक्षाओं का सम्मान करते हुए उसके गौरव, सतीत्व एवं मर्यादा की रक्षा के लिए सन्नद्ध होकर अपनी सुदृढ़ कलाई पर " राखी " रक्षासूत्र बंधवाकर कर्तव्य के बंधन की रक्षा का दायित्व ग्रहण करने वाले पुरुषों को "वीर " शब्द से संबोधित कर सकते हैं ।[1]

बहन भाई के शत्रुओं की असफलता की कामना करते हुए उन्हें पुचकारती है --

> छम छम गंदाव भिया केवडोर ।
> रिमझिम गंदाव भिया केवडोर ।
> भियारे छो आंग केवडो रे ,
> वीर् तोड मत लिजो ।
> बूंदो बूंदारो भिया केवडोरे,
> वीर तोड मत लिजो ।

भाई-बहन के संबंधों को देखकर भाभी के मन में ईर्ष्या न उत्पन्न हो, उसके लिए बहन एक मनोवैज्ञानिक उपाय काम में लाती है --

---

1. उपाध्याय : डा॰चिन्तामणि मालवी लोकगीत,पृ॰351॰

बारो पर बारो, बारो बारो मोतो ।
बारो मते हुं मोती सकाई लो ।
गोरा नोस मार्ड्यो मोतो ।
हाम्लेम् घालु मोती माकाल्ड ।
तोनरोम् देनुं मोतो सकाल्ड ।
उबना मैं देनुं मोतो सकाल्यो ।
रमणामु देनुं मोतो सकाल्यो ।

एक बहन अपने भाई को स्नेहयुक्त उलाहना देती है कि अब वह भाभी के प्रेम में ही खो जाएगा --

भाया तारो चिना पटाना रो देस ।
मोजीरो फूल भाया ।
भाया तारो कानेन कन्या ठकरो,
मोजीरो फूल भाया ।
भाया तारो देवेन गाडी - ठकरो,
दानेन थाडो ठकरो,
घोडे चर छयो ठकरो ।
भाया तोरो हातो ठीवाल ठकरो,
चिनापटन देस । माजारो फूल भाया ।

ससुराल जाते समय बहन भाई के वियोग की वेदना से व्यथित हो कह उठती है --

साबूरो स्नारो, घोरोरो घरायाँ --
पातळोया वीरा ।
कागदेरो पुडी ठका लिखेमा
वातेर देखाई भीया ।

..

मुर्गी पालनी सावली रखी ।
मारे देमाई छोरा ।

<u>दाम्पत्य-जीवन</u>

दाम्पत्य-जीवन की सफलता प्रेम एवं सहयोग की भावना पर निर्भर रहती है । आदर्श गृहस्थ-जीवन का यही रहस्य है । बंजारा लोकगीतों में दाम्पत्य जीवन की विविध मनोदशाओं की सुंदर व्याख्या हुई है ।

एक गीत में दम्पत्ति के पारस्परिक हास-परिहास की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है जो इस प्रकार है -

आणाव् ना रहो दाँडी झकझोर ।
झणकाठी जो लूटारे --
पायो सोनारको रे छोरो ।
पकडापनारे काडे बासरिया ।
माडी गर्दों वसाडी जवैया ।

खेत में पति पत्नी मिलकर घास काट रहे हैं । पति कहता है कि घास के चक्कर में बना रहा हूँ -- माथे पर दोपहर का प्रचंड सूर्य है । ऐसे में प्यार की बातें करो -

घांस काटकर पुलिया बांधीर ।
दिल मेरा को ठंडिये दोपेर पडी लावडी ।
तारो काई मर्जी रे बनाई मुंडाई ।
छडी वोलके साथ चलो तो ।

पति की प्रेमाकुल अवस्था देख पत्नी धीरे से कहती है आस पास इतने लोग हैं। पर चलो तो गुड़ की मिठाई भी दूंगी और झूला भी झुलाऊंगी -

घर साथ चलो तो, कण कण खाना खासी।
सैन सजार, मठाई का पुड़ा, मजा करो।
सैन मठाई का सारी रात।
डफेजाली तो साथ चलो तो का सोना सोतो।
गादी गलीचा नर्म - बिछाना -
पलंग झुले सारी रात।

परकीया प्रेम के श्रृंगार गीत बहुत थोड़े हैं। पति-पत्नी की श्रृंगार भावनाओं की मधुर अभिव्यक्ति से ये गीत ओत-प्रोत हैं। एक पत्नी के उद्गार हैं -- चोरों को जैसे घोड़ी प्रिय होती है, युद्ध-भूमि पर सैनिकों को जैसे तलवार प्रिय होती है, उसी प्रकार पुरुष को अपनी कामिनी शय्या पर प्रिय होती है -

राधा मोठी घोड़ली,
रण मोठी तलवार।
सूरा मोठी मांग
सेज मोठी कामणी।

पति किसी बात पर पत्नी से रूठ जाता है। पत्नी पति को मनाने के लिए विभिन्न प्रयत्न करती है --

साय करगो पैसा भरगो।
साय कोणी पिदु। साय कोणी पिदु।
राजवीरो वा नौ तलवार --
तारी को आई।
तारीख चालो वाई राजवीर वा ॥

सास-बहू का संबंध

प्रायः सभी प्रांतों में सास का चरित्र कर्कशा, तानाशाह, कठोर एवं अधिकारी चित्रित किया गया है। यह धारणा इतनी बद्धमूल हो गई है कि ससुराल जाने वाली बहुएँ आतंक से भर जाया करती हैं।

बंजारा लोकगीतों में सास कठोर, निर्दयी, झगड़ालू तथा ईर्ष्यालु के रूप में चित्रित हुई है।

सासू दप गाळी काळेला लाग ।
ससद प मुदलो गाळी करेला लाग ।
सासून पर हकम चालोनो समारोप ।
सासरेन पर हकम लेक समारोप ।
गाळी दप लागियो सोनेरो लाग ।
नणंदे दप गाळी करेला लाग ।
मत दप कको गाळी करे सा लाग ।
देवरेन पर हकम चालोनो समारोप ।
बापू दप बाल्दा सोनेरो लाग ।
मत दरे मुझा गाळी करेला लाग ।

ननद - भौजाई

लोकगीतों में ननद की मूर्ति भी सास की तरह ही ईर्ष्या, द्वेष, कठोर, निर्दयता आदि के गुणों से बनाई गई है। ननद-भौजाई के कलहपूर्ण संबंधों की पुरातनता की पुष्टि संस्कृत

साहित्य से भी होती है ।[1]

ननद की खरी खोटी बातें सुनकर एक वधू अपनी वेदना को निम्न शब्दों में व्यक्त करती है --

जदूटाणी दरवाजी काई बोली लगिस ।
जे टेरी मार मन लागीच ।
भोळी मारवू वेसीच ।

एक लंबोड ननद अपनी भाभी से कहती है - हे भाभी मेरा भाई रेल चलाता है और उस रेल में मेरे काका-काकी बैठे हुए हैं । उस गाडी में मेरी सोने की गठरी छूट गई है । मेरा भाई मेरी प्यारी भाभी को भूल आया है --

मारो वीरा रेलगाडी दावो मनेदवाई ।
ओ गाडीम काका-काकी भुल आई ।
सोनेरो गठरोये, मारो वीरा रेलगाडी ।
नणंद बाई भुल आई, सोनेरो गठडी ।
ओ गठरीम भाई भोजाई भुल आई --
सोनेरो गठडी, मारो वीरा ॥

---

1. श्वश्रू पश्यति नैव पश्यति यदि भ्रू-भंग कोटया मनाक् पद् पुत्तिका कर्णो नूनं ननान्दा वधः ॥ अन्या ना मपि किं ब्रवीमि चरितं स्नुषा मैनेशिष्यते कान्ताः स्निग्ध दृशा विलोकयसि मामे राघवागः सखि: ।
-- डा॰ उपाध्याय कृष्णदेव : " भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन" पृ॰ 272 से उद्धृत ।

<u>देवर भाभी</u>

बंजारा समाज में पति-भ्राता विवाह की प्रथा प्रचलित है। क्योंकि इनके पूर्वज सुग्रीव ने अपनी भाभी तारा के साथ विवाह कर लिया था, लेकिन अब यह प्रथा कुछ कम हो रही है।

बंजारा समाज में देवर-भाभी पारस्परिक हास-परिहास से दिन भर की थकान को दूर करते हैं। राम-सीता की जीवन गाथाओं का आश्रय लेकर देवर- भाभी अपने हृदय की भावनाओं को सामूहिक रूप से झूमकर प्रकट करते हैं -

राम लाछो लोळो, लछमन लाठो दाडोर ।
हनुमान भूला मारोरे तुकारो, राजा दशरथ भाई भार्डर ।
रामेर सालेमा रंगो चौरी दखिया ।
काई सीतारे सालेमा लाखीदोरो जोगिरे ।
जाभा सामोर .....

इस गीत में राधा-कृष्ण के माध्यम से देवर भाभी के निश्छल प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है --

घाट जरा मारो फोळळन छाडर मारो फोळी राम ।
छोळो रो खाळा, छोळी में रोगा,
मन भळ दीध राम ।। घाट जरा ...
तू राधा गोरो म छाबु किसन,
म्हारो भारो जोडा छेमोराम ।। घाट जरा...

देवर-भाभी के पारिवारिक निश्छल प्रेम की सरल, सरस और स्वाभाविक अभिव्यक्ति देखते ही बनती है --

कोळे पर लाडे कसोरो बोय ।
कोळे पर लाडे जार्द दे बोय ।

झाडेन फाटा कोरो लोय ।
झाडेन फाटा जार्दर लोय ।
फाटान फूल कोरो लोय ।
फाटान फूल जार्दर लोय ।

देवरानी और जेठानी

बंजारों के संयुक्त परिवार में सब भाई एवं परिवार के अन्य लोग एक साथ मिलकर रहते हैं । सामान्यतः उनमें मेल-जोल रहता है । कभी-कभी स्वार्थवश कलह का वातावरण भी उत्पन्न होता है । ऐसे कलहों का वर्णन बंजारा लोकगीतों में किया गया है । देवरानी और जेठानी के बीच प्रेम की झलक सदा दिखाई देती है -

लाल जट्टाणीबाई छाटेन जामा,
रबीयानो पलडीया भरोच् ।
जामा काचि कुडी लामा,
घर आई पामणोरो जोडी ।
जाटणाई बैठ कारो जोडी,
आमज वाक्दोन कोडी ।

दोनों में कभी-कभी हास - परिहास भी होता है जो निश्चल प्रेम की अभिव्यक्ति का माध्यम है --

नको नको करतातु कमाणी विकती
राजारो राणी पाणी लोटा लाई ।
राजारो राणी मिली भाई बेटा बेटी ।
नको नको करतातु ---
राजारो राणी जोला भाई बेटी ।

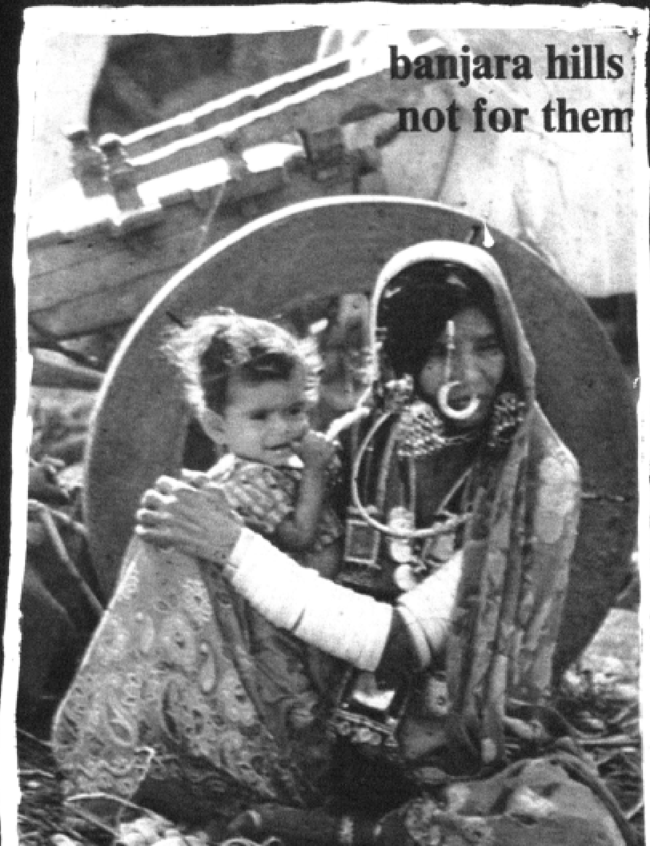
banjara hills
not for them

2. स्वाभाविक बैरवाले सम्बन्ध
3. सामाजिक मर्यादा के उल्लंघन होने पर घृणा उत्पन्न करनेवाले सम्बन्ध इस प्रकार है -

सौत और सौत, सास और बहू, ननद और भाभी
ससुर और बहू, जेठ और छोटे भाई की पत्नी (बोडी)

5. बनजारों की वेश-भूषा : .. .. ..

86
3/5/84

बनजारों की वेशभूषा में राजस्थान की संस्कृति झलकती है । आज के युग में भी भारत के सभी बनजारे एक ही प्रकार के कपड़े पहनते हैं । वेश-भूषा की दृष्टि से पुरुष धोती, कुरता * और फैंटा बांधते हैं । वे सिर पर साठ हाथ की पगड़ी [2] पहनते हैं । पगड़ी प्राय: लाल या केसरिया रंग की होती है ।

बनजारा स्त्रियों की वेश-भूषा विशेष आकर्षक होती है । वे बारह हाथ का घाघरा [3] पहनती है जिस पर कांच के टुकड़े टके हुए होते हैं और रंग बिरंगे धागों की कशीदाकारी होती है । उनके ओढनी [4] लाल, पीली, हरी या नीले रंग की होती है जिसके छोर पर छोटे-छोटे घुंघरू टके रहते हैं । ओढनी के बीच में घूंघट [5] रहता है । घूंघट का नमूना आकर्षित और सुंदर होता है । वे स्त्रियां

---

* झगला 2. पागडी
3. फेटिया 4. छाटिया या पामडी 5. घुंघटो

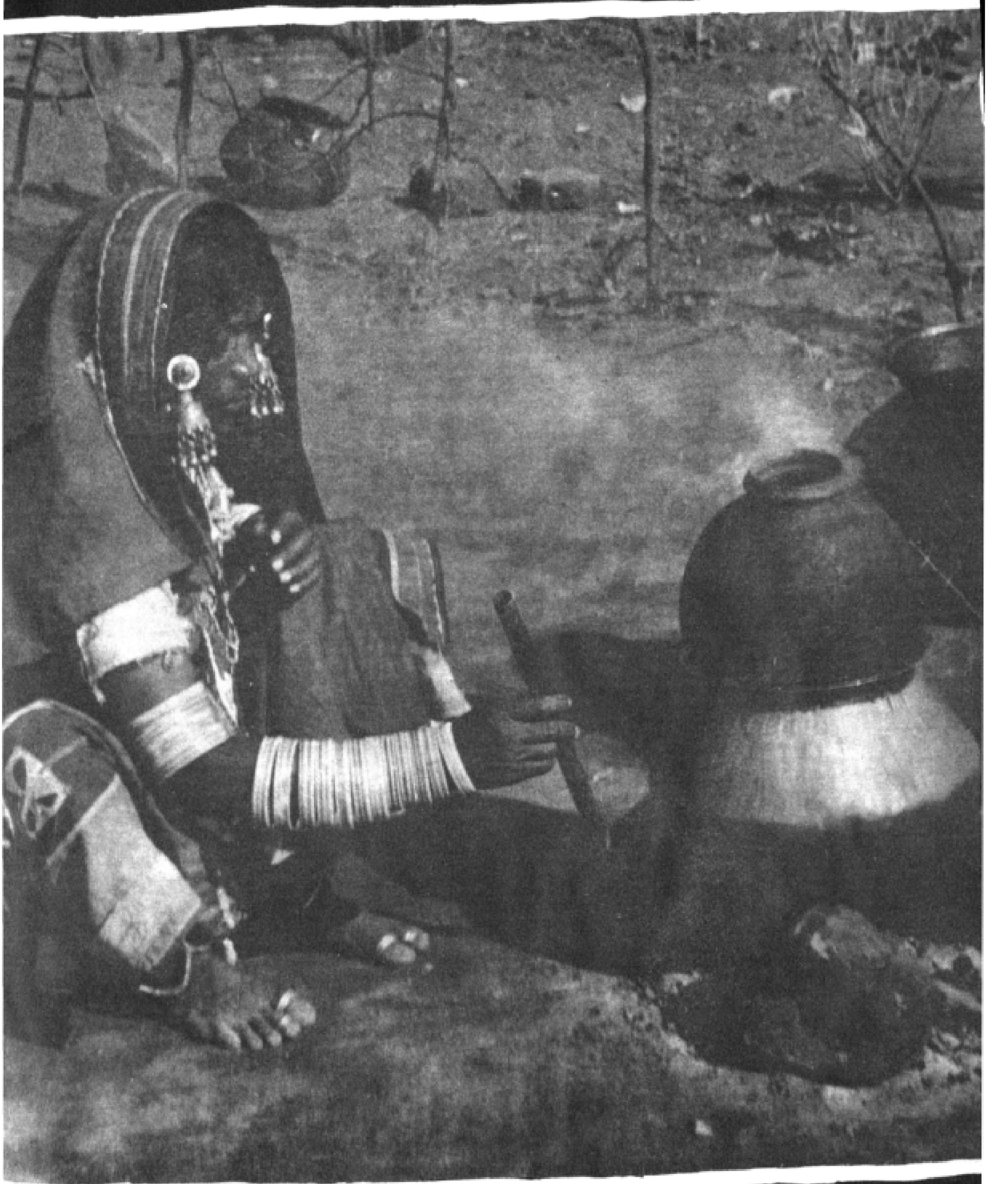

घूंघट में काँच टाकती है । विधवा स्त्री की ओढनी में घूंघट नहीं रहता । इनकी चोली * भी सुन्दर ढंग से बनी होती है, जिस पर काँच[2] टकी होती है ।

मथुरा बनजारों की स्त्रियाँ घेरेदार रंगीन घाघरे को पहनती हैं । विवाहित महिला के सिर पर छः इंच लम्बी डेर की लकड़ी [3] रहती है उस पर रंगीन ओढ़नी झूमती हुई बड़ी सुहावनी लगती है । इन महिलाओं को दूर से देखने से ऐसा लगता है कि चलते फिरते डेरे हैं । विधवा स्त्री के लिए लकड़ी का उपयोग वर्जित है ।

6. बनजारों के आभूषण : .. . ..

प्राचीन काल से आजतक बनजारों के आभूषण नहीं बदले । वे सोना, चाँदी, पीतल और ताम्बे के आभूषण पहनते हैं । इनका विवरण इस प्रकार है :

1. पुरुष के आभूषण :

पुरुष कानों में सोने की बालियाँ, हाथ में चाँदी का कड़ा, उंगली में सोना, चाँदी और ताम्बे की अँगूठियाँ, कमर में चाँदी की करधनी और पुराने चाँदी के सिक्कों से बनी हार को पहनते हैं ।

---

* काँचळी 2. काँच

3 इस लकड़ी को सिगोड़ी कहते हैं

2. स्त्रियों के आभूषण :

(क) कुंवारी लड़कियों के आभूषण :

1. चांदी के : माथेपर बिंदिया और आड़ काट, कान में कण्या, गले में हंसली, उंगलियों में अंगूठियां, हाथ में कड़ा, पायल, कानों तक झुके हुए टोपली आदि चांदी के गहने पहनती हैं ।

2. पीतल के आभूषण : नुपुर और अंगूठियां आदि पीतल के आभूषण पहनती है ।

(ख) विवाहित स्त्रियों के आभूषण :

1. चांदी के आभूषण - माथे पर बिंदिया और आड़ काट, कान में कण्या, गले में हंसली, चांदी के सिक्के का हार, उंगलियों में फूला और अंगूठियां, हाथ में कड़ा, पैर में पायल, बालों में कानों तक झुके हुए गुच्छेदार टोपली आदि चांदी के गहने पहनती है।

2. सोने के आभूषण - नाककी नथ, फुल्ली और घुघरी मुख्य है ।

3. पीतल के आभूषण - हाथ में गजरा, पैरों में वाकड़ी और कस, पैर के अंगूठे में अंगूठा आदि पीतल के आभूषण मुख्य हैं ।

4. वे स्त्रियां उक्त आभूषणों के अतिरिक्त हाथी दांत की चूड़ियां, भुजा पर कांच का बेगर और चूड़ियों के आगे लकड़ी की चूड़ी (बोदलू) भी पहनती है ।

विधवा स्त्री हाथ में चूड़ियां और बालों में टोपली पहन सकती

है । वह अन्य आभूषण नहीं पहन सकती ।

उक्त आभूषणों के अतिरिक्त बनजारे शीशे और सिक्कों के भी कई प्रकार के गहने पहनते हैं । कौड़ी, मूंगा और नकली मोती इन महिलाओं के लिए आकर्षणोत्पादक हैं । इनकी ओढनी के छोर पर चांदी के छोटे छोटे घुंघरू टके होते हैं ।

7. <u>बनजारों के लोक विश्वास :</u> .. ..

बनजारों के लोक विश्वास विचित्र हैं । इनके यात्रा सम्बन्धी लोक विश्वास अपेक्षाकृत अधिक हैं । कहा जाता है कि वे लोग यात्रा से पूर्व बलि दिया करते थे । कभी-कभी वे अपने पुत्र को घर ही में गर्दन तक गाड़कर उस पर से बैलों की लदणी चलाते थे । उनका विश्वास था कि इस प्रकार मरा हुआ उनका पुत्र भूत बनकर सहायक बनेगा । अब यह प्रथा नहीं है ।

इनका विश्वास है कि गाय, बैल, कुत्ता, बिल्ली, और गिलहरी को मारनेवाला व्यक्ति कई हजार वर्षों तक नरकवासी हो जाता है । आत्म हत्या करनेवाला व्यक्ति भूत बनकर भटकता है और स्त्री भूतड़ी बनकर बच्चों को सताती है । इनका कहना है कि भूत और भूतड़ी के हाथ, पैर उल्टे होते हैं । इनको भगाने के लिए आग में लाल मिर्च डाला जाता है । उनका विश्वास है कि मिर्च के धुएं से भूत भाग जाते हैं ।

प्राचीन काल में बनजारे व्यापार को जाते समय कुल देवता के सामने दीपक जलाते, दीपक की लौ जिस दिशा में झुकती वे उसी दिशा में xxxxxx/वे/ व्यापार के लिए जाते थे ।

बनजारे किसी भी अनुष्ठान में पानी से भरा घर फूटने पर अशुभ मानते हैं । वे लोग मंगलवार और शनिवार के दिन किसी भी शुभ कार्य का आरम्भ नहीं करते हैं ।

प्रथम वर्षा ऋतु में वधु का मायके में आना शुभ माना जाता है । बनजारों का विश्वास है कि वर्षा धरती को फसलों से अन्नपूर्णा बना देती है उसी प्रकार से गर्भवती कन्या माता का आशीर्वाद पाकर पुत्रवती बनती है ।

कहा जाता है कि पूर्वकाल में व्यापारी बनजारे लुटेरों के भय से धन को धरती में गाड़ देते थे और उसी स्थान पर नर बलि देकर वन्य देवता को प्रसन्न करते थे । इनका विश्वास था कि बलि के रूप में समर्पित मनुष्य दानो* बनकर धन की रक्षा करेगा । आज के युग में यह प्रथा समाप्त हो गई है ।

सिर के बाल मुण्डाना अशुभ माना जाता है । यात्रा के समय छूटे बाल वाली स्त्री सामने आने पर, पानी का खाली घड़ा लेकर सामने से जाने पर, बिल्ली के सामने आने पर, कुत्तेन का कान पड़ फड़ाने पर, छींकने पर, सांप का बाईं ओर से दाईं ओर जाना, बच्चों का बोमड़ी मारना, बाये पैर को ठोकर लगना, अशुभ माना जाता है । बनजारे गीदड़ या लोयार की आवाज को शुभ मानते हैं ।

जिस व्यक्ति की छाती पर बाल नहीं होते उसे वे कुटिल मानते हैं । उन्नत ललाटवाला व्यक्ति ईमानदार और धनवाला होता है ।

---

* निष्ठुर

इनका विश्वास है कि गंजा व्यक्ति दरिद्र और कपटी होता है। मटक-मटक कर चलनेवाली का चरित्र ठीक नहीं रहता। नुकीले अंगूठे वाला व्यक्ति चतुर और निपुण माना जाता है। ज्यादा हँसनेवाला और पीठ पर घनेबाल रहनेवाला मनुष्य कुटिल माना जाता है। लम्बी नाक वाले चरित्र उज्ज्वल होते हैं और बिल्ली की जैसे आँखें वाला व्यक्ति मायावी समझा जाता है। इनका विश्वास है कि बिल्ली जैसे आँखवालेक व्यक्ति को भूत पिशाच दिखाई देते हैं।

बनजारे अपने कल्याण के लिए नदी-नालों की, पीपल के पेड़ की, भूत प्रेतों की, पौराणिक देवताओं की, कुल गुरुओं की, और सतियों की पूजा करते हैं। टाँडेवाले उनकी रक्षा के लिए हर वर्ष बकरे की बली देते हैं। बकरे की बलि भिन्न-भिन्न अवसरों पर भिन्न नामों से पुकारा जाता है - ओरी, समनकेर बकरा, गेट आदि।

..

8. बनजारा लोककलाएं

मानव जीवन के साथ ही कला का जन्म हुआ है । संसार की सृष्टि ही कलामय है । मानव है । मानव हृदय भावों से प्रेरित होकर इन भावों को दूसरे तक पहुँचाना चाहता है । यही वस्तुतः कला है ।

8.1. बनजारा लोक कला के विविध पहलू

बनजारा लोक कला को तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है - (1) लोक संगीत (2) लोक नृत्य और (3) लोक चित्रकला ।

लोककला के यह तीन पहलू लोकमानस के जीवन के अंग है । इनके माध्यम से वह गाता है, नाचता है और रंग-बिरंगी सपने देखता है ।

8.1.1 बनजारा लोक संगीत

बनजारा गीतों के भावों में सहज सरलता, जीवन की गहराई है । इन गीतों में जादू भरा हुआ है । बेटी की विदाई पर नयनों से आंसू उमड़ पड़ते हैं । गीत इस प्रकार है -

गाडी ऐ जे - या - हिया
मारे बापूरो जे मळगो या - हिया
मारे मायड़ बापूरो न्यारो छूट चालो-या -हिया
गाडी ऐ जे - या - हिया
मारो मोळतपूरो न्यारो छूट चालो - या - हिया

8.1.1.1 स्वर रचना

बनजारा गीतों में ताल का कोई नियम नहीं है । गीतों की लय ही उसकी आत्मा है । बनजारा गीतों में ताल के लिए

कांसे की थाली, झांझर, ढोलक, ढोल, डफ, नगारा आदि वाद्यों का उपयोग किया जाता है ।

बनजारा लोकगीतों में निम्न तालों का प्रयोग होता है -

दादरा - 6 मात्राएँ - धा धिन ना । धा तिन ना

झपताल - 7 मात्राएँ - धाक धिन धा धिन ।
धाक तिन धा तिन

कहरवा - 8 मात्राएँ - धा तिन तिन कधिता

8.1.2 बनजारा लोक नृत्य

बनजारे पर्वोत्सवों के अवसर पर विविध प्रकार के नृत्यों का आयोजन करते हैं । पुरुषों के नृत्यों में युद्ध प्रेम, पौरुष तथा वीरत्व का परिचय मिलता है और नारियों के नृत्य में कोमलता, श्रृंगारिकता भाव मिश्रित रहता है ।

8.1.2.1 बनजारा लोक नृत्यों की विशेषताएँ

बनजारा लोक नृत्यों की विशेषताएँ इस प्रकार हैं ।

1. बनजारा लोकनृत्यों में शारीरिक प्रक्रिया की प्रधानता रहती है।
2. यह नृत्य श्रृंगारिकता प्रधान होते हैं ।
3. पुरुषों के नृत्य जोशीले होते हैं ।
4. नृत्य के समय इनकी वेश-भूषा कलापूर्ण होती है ।
5. बनजारा लोकनृत्य की विविध छटाएँ मुख्यतः पर्वोत्सव पर देखी जा सकती है ।

8.1.2.2 बनजारा लोकनृत्यों की विविध छटाएँ

बनजारा जाति के 16 लोक नृत्य सारे भारत में प्रचलित है । लोक नृत्य अपनी संस्कृति का परिचय कराते हैं । इनका परिचय

इस प्रकार
कराते हैं । जैसे -- तलवार नृत्य, लड़ी नाच, लाठी नृत्य, उपरेरो नृत्य, ढोलो नगारा नृत्य, मजीरा नृत्य, पीर नृत्य, विवाह नृत्य, राधा नृत्य, पनिहारिन नृत्य, लावड़ी पायो नृत्य, रास नृत्य, कुंवारो कन्यार नृत्य, मटकी नृत्य, ढेका जोड़ेरो नृत्य और टिपरो पायो नृत्य आदि ।

<u>तलवार नृत्य</u> - इस नृत्य में युवक तलवार लेकर ढोल के स्वरों के अनुसार कलात्मक ढंग से तलवारों को घुमाते हुए युद्ध का दृश्य उपस्थित करते हैं । वृत्ताकार में खड़े हुए युवक सहसा दो पंक्तियों में विभक्त होकर नाचते हुए आक्रमण के रूप को दिखाते हैं । नृत्य करने वाले वीर रस पूर्ण गीत भी गाते हैं ।

अरे चक - चक चक्का मार तलवार ।
कहाँ मैं लो पर वार ।
एक गोटे माँ वार गुदड़ी पार ।
एक मारे माँ पड़ी सम वार ।
हांको वार सिपाही वार ।

<u>लड़ी नाच</u> - इस नृत्य में स्त्रियाँ गोलाकार लड़ियाँ बनाकर नाचती है । यह नृत्य तीज-त्यौहार के अवसर पर होता है । कुंवारो कन्याओं के साथ अन्य टाँडे की स्त्रियाँ इस नाच में भाग लेती हैं । इसमें चार - चार के समूह बन जाते हैं । समूह बनने के पश्चात नृत्य किया जाता है । इस अवसर पर तीज त्यौहार के गीत गाये जाते हैं । गीत इस प्रकार है --

बाई ये तीज बोई सम देवोज वासू ।
देवोज वासू गंगा देवोज वासू ।
लड़ीम लड़ो कणगी बाई देवोज वासू ।

देवोज वासू गंगा देवोज वासू ।
आज नाचे लाल बाई हम देवोज वासू ।
देवोज वासू गंगा देवोज वासू ।

<u>लाठीनृत्य</u> - ढोल के या डफ के स्वरों के अनुसार यह नृत्य किया जाता है । युवक लाठियों को लेकर घेरे में नाचते हैं । धीरे-धीरे गीत को गाते हुए नर्तक जोड़े में बँट जाते हैं । उसके पश्चात् लाठी को अनेक रूपों में घुमाकर शत्रु पर टूट पड़ते हैं ।

फर रा - रा - फर - रा - रा ।
लाठी फर - रा - रा ।
सम्भाल तोड़ लोट समाल ।
थाम वीर लोट समाल ।

<u>उपरेरो नृत्य</u> - इस नृत्य में भी डफ या नगारे की ताल पर टाँडे की नर्तकियाँ घूम-घूम कर नृत्य करती हैं । यह नृत्य होली और तीज त्योहार के अवसर पर होता है । इस नृत्य का गीत इस प्रकार है --

नाच बाई नाच, ऊपरेरो नाच ।
काले कोडी पालन उपरेरो नाच ।
छमको पड़ो बाई गोदेना नाच ।
नाच बाई नाच, ऊपरेरा नाच ।

<u>कोडी नगारा नृत्य</u> - इस नृत्य में केवल पाँच स्त्रियाँ भाग लेती है । यह नृत्य होली और तीज त्योहार के अवसर पर होता है । स्त्रियों के सिर पर एक के उपर एक कलश पात्र रखे जाते हैं । नर्तकियाँ लकड़ी के पट्टों पर खड़ी होकर नृत्य का आरंभ करती है । वे नर्तकियाँ सिर पर के कलश को गिरने से बचाते हुए गीत गाती

हुई नृत्य करती हैं। नृत्य करते समय नर्तकियाँ हस्त - संचालन के साथ पट्टे बदलती है। इस नृत्य का आयोजन चाँदनी रात में होता है। इस अवसर का गीत इस प्रकार है -

देखकेमा नगोरा तोरो ।
हमार लाम्हर बोले ।
हम नाचारे भाया तारे देखकेमा ।
तारे देखकेमा , गाडो लारे देखकेमा ।

<u>मंजीरा नृत्य</u> - यह निमाड़ में रहने वाले बनजारों का लोकप्रिय नृत्य है। नर्तक घेरे में खड़े हो जाते हैं। सभी नर्तकों के हाथों में लम्बी रंगीन पतली फुन्दियों से अलंकृत मंजीरों की जोड़ी होती हैं। बीच में खड़ा हुआ वादक नगाड़े को बजाता है और एक नर्तक गीत को गाने लगता है।

टप - टपोयार - हमार मंजीरिया ।
नाच - नाचिया - हमार मंजीरिया ।
बाज - बजिया - हमार मंजीरिया ।
बोल - बोलियार - हमार मंजीरिया ।

<u>पीर नृत्य</u> - इस नृत्य में तीन या चार स्त्रियाँ भाग लेती है। नगारा या डफ के ताल पर भाव भंगिमाओं के साथ इस नृत्य को करती हैं। यह नृत्य विविध त्यौहारों के अवसर पर किया जाता है। इस अवसर पर कई गीत गाये जाते हैं। उनमें से एक गीत इस प्रकार है -

छम - छम छक्को पायलोर धूलिया ।
धम - धम बाजा बाजेर बजिया ।
हमनाचा बाई पीर माथ आज ।
हम नाचा बाई मस्तीमा आज ।

विवाह नृत्य

बनजारे विवाह के अवसर पर मस्ती में झूमकर गाते हैं और नाचते भी है। वह वर-वधू के सम्बंधी उल्लास में इतने तल्लीन हो जाते हैं कि उनके पायल नाचने लगते हैं। टाँडे की स्त्रियाँ मण्डप के नीचे बैठे वर-वधू को आशीर्वाद देती हुई, हाथ घुमा-घुमा कर नाचती है। नाचते समय ढ़ालिया (ढ़प बजाने वाला) ताल के साथ ढ़प बजाता है। टाँडे के युवक भी नृत्य में सम्मिलित होते हैं। विवाह नृत्य के अवसर पर कई गीत गाये जाते हैं। उनमें से एक गीत इस प्रकार है -

> लान्दीणी माँ लाद वीरारोये।
> आज हमार लालोरो मळिवड़े पर।
> लालोर मळिवड़े पर - हमार लाडेर मळिवडे पर।
> लादकेमाँ तारा लक्करोये।
> आज हार लाडेर मळिवडे पर।
> लाडेर मळि वड़े पर, हमार लाडेर मळिवड़े पर।

राधा नृत्य - स्त्रियाँ टाँडे के मैदान में गोलाकार घेरा बनाकर आमने-सामने दो-दो की जोड़ियों में खड़ी हो जाती है। घेरे के बीच में से मिलाकर नर्तकियाँ नृत्य करती हैं। बीच-बीच में जवारा की टोकरियों को हथेलियों पर रखकर भी वे नृत्य करती हैं। यह नृत्य तीज के अवसर पर किया जाता है। इस अवसर का गीत इस प्रकार है --

> कसना - कसना कोमा गो कसना।
> राधा ढूंढरो तार वासु कसना।

भूनाड़ी पकड़ी , राधा अड़बीमां ।
दूकमारे ओन, भंगवान असना ।

<u>पुनिहारिन नृत्य</u>

टाँडे की स्त्रियाँ सिर पर टोकणी (विशेष प्रकार का घड़ा) पनघट की ओर ठुमक-ठुमक कर जाती हैं । पनघट पर एक घेरे में खड़ी होकर पानी भरने का अभिनय करती हुई नाचती है । नाचते समय गीत भी गाती हैं । गीत इस प्रकार है --

लाड़्ये लाली पाणी भरेना हम ।
पाणी भरेना , तलावडीर पाणी भरेना ।
सोवळण हपार म्हार जायनाक छ ।
आज गंगायाड़ी ओन आज देदा आसीस ।
सोवळण वाई मत भूल हमारी वाटे ।

<u>लेंगड़ी - पायी नृत्य</u> - इस नृत्य में टाँडे की युवतियाँ एक कतार में खड़ी हो जाती हैं,। नर्तकियाँ ढफ के ताल से पद गति साधकर आगे बढ़ती हैं और आगे से पीछे हटती हुई नृत्य करती हैं । इस नृत्य में कई स्त्रियाँ भाग ले सकती हैं । विविध त्यौहारों के अवसर पर इस नृत्य का आयोजन किया जाता है । इस नृत्य का गीत इस प्रकार है -

नाच बाई नाच लेंगडी नाच ।
दुवना - दूं - दुवना - दूं ।
जोव ढीलो छोड़न नाच ।
दुवना दूं - दुवना दूं ।
वेरी मारन नाच, दुवना दूं - दुवना दूं ।

<u>रास नृत्य</u> -

इस नृत्य में टाँडे की स्त्रियाँ एक घेरे में खड़ी हो जाती है । रमणियों के बीच में एक युवती कृष्ण बनकर मुरली बजाती है । ढोलक बजते ही रमणियों का चक्र घूमने लगता है । नर्तकियाँ कभी धरती की ओर झुकती है तो कभी मुंह को गगन की ओर करने लगती है । नर्तकियाँ शरीर को घुमाती हुई कृष्ण की ओर झांकती है । इस नृत्य के अवसर पर राधा-कृष्ण की लीलाओं से सम्बन्धित गीत गाये जाते हैं । गीत इस प्रकार है -

धरती याडी हमेन दोमोव जनम ।
दोनो जनम को दो हमेन मोट ।
आसमान बापू दोनो हमेन आसोस ।
दोनो हमेन असोस बापू ।
हातो जोडो रामो रामो करलये ।
धरती याडीन ।
हाता जोड़ो रामो रामो करलये ।
आसमान बापून ।

<u>कँवार कन्यार नृत्य</u> - दीवाली के अवसर पर इस नृत्य का आयोजन होता है । टाँडे की अविवाहित लड़कियों द्वारा यह नृत्य किया जाता है । लड़कियाँ हथेलियों में दीपक लेकर एक कतार में खड़ी हो जाती है । दीपावली के गीत गाती हुई नृत्य करती है । इस अवसर का गीत इस प्रकार है --

कोट दाड़ेरो बलाको याडी, मेरा ।
कोट दाड़ेरो लक्ष्मी याड़ी देदा आसीस ।
कोट दाड़ेरो हमारो याड़ी सोक रकाड़ हमार भैरोन ।
कोट दाड़ेरो बलाको याड़ी हमेन अक्क रकाड ।

<u>मटकी नृत्य</u> - टाँडे की स्त्रियाँ रंग-बिरंगी वस्त्रों से सुसज्जित होकर एक पंक्ति में खड़ी हो जाती हैं । वे सिर पर पीतल का टोकणी (पीतल का बड़ा घड़ा) रखकर सुमधुर स्वरों से गीत गाती हैं । ढोलक या डफ के ताल के साथ मोरनियों की तरह नाचती है । इस नाचने में स्त्रियाँ टोकणी को थाम कर घूमती है । इस नृत्य का गीत इस प्रकार है -

> छक - छक छलकी टोकणी ।
> छन - छन वाजो मार वांकडी ।
> छुम-छुम वाजा मार घुंगरा ।
> खट-खट वाजा मार बोंटी अगूठा ।
> छमको बोला वाई वकिया ।

<u>डंडा -जोडेरो नृत्य -</u>

इस नृत्य में केवल पुरुष भाग लेते हैं। इस नृत्य का आयोजन होली के अवसर पर होता है । पुरुष हाथों में दो-दो डांड लेकर घेरा बना लेते हैं । डफ के साथ ताल मिलाकर डांड बजाकर नृत्य करते हैं । इस नृत्य में शृंगार से पूर्ण गीत गाये जाते हैं । इस अवसर पर नर्तक को भांग या मदिरा पिलाई जाती है । इस नृत्य के अवसर पर गीत गाये जाते हैं । उनमें से एक इस प्रकार है --

> आयो धरती पर रामन, लछमन लेलागे ।
> उनके बीच हैवारा सब दुनियो ।
> उफ वाजेदा, भाई - भाई र।
> उफ वाजेदा, मतरेती ।
> उफ बाजे दा , छमकेती ।

(टिपरी)

<u>खिरी - पाई नृत्य -</u> इस नृत्य में चार पुरुष हाथ में डंडा लेकर डुफ की ताल के अनुसार उछल - उछलकर नृत्य करते हैं। नृत्य में डांड को मिलाकर और बजाकर श्रृंगारिक गीत गाये जाते हैं। यह नृत्य होली के अवसर पर होता है। इस अवसर का गीत इस प्रकार है --

> ओरे डुफे साकेरी लाम्बे - लाम्बे जागिया
> ओर जागियान देस लवम भोसळो
> डुफ चाले दा, भाई - भाई र
> डुफ वालेदा, म्हारेतो
> डुफे वालेदा, ठमकेतो

8.12.3 <u>लोक वाद्य</u>

बनजारा लोक संगीत में प्रयुक्त होने वाले वाद्यों में ढोल डुफ, नगारा, ढोलक, डांफ, कांसे की थाली, डांठ आदि प्रमुख वाद्य है। भजन गाते समय करताल, नगारा, झांझी और एक तार का प्रयोग करते हैं।

8.1.3 <u>चित्रकला</u>

प्रत्येक त्योहार तथा उत्सव के अवसर पर मेंहदी लगाई जाती है। मेंहदी के कई नमूने वाले चित्र बनाये जाते हैं। बनजारा समाज में लोक पूरने की प्रथा है। इसके अतिरिक्त पशुओं के पीठ पर पंजे का छापा मारते हैं। पशुओं के सींग को रंग या गेरु से रंग देते हैं। लोक कला में पशुओं का चित्रण मांगलिक दृष्टि से किया गया है।

8.1.3.1 <u>कसीदाकारी कला</u>

बनजारा स्त्रियां अपने कपड़ों को कलात्मक ढंग से कसीदाकारी

से तैयार करती है। काँच के टुकड़ों को, कौड़ियों को रंग-बिरंगी धागों से सीकर कपड़ों को सजाती है। पेटिया (घाघरा), काचळी (चोली), पामडी (चुनरी), घूंघटो (घूंघट) की कशीदाकारी कला महत्वपूर्ण होती है।

४.1.3.2 गोदाना कृतियाँ

संसार की सभी जन-जातियों में गोदने की प्रथा है। बनजारा जाति में भी यह प्रथा है। बनजारा स्त्रियाँ और कन्याएं निम्नलिखित अंगों पर यह गोदनांकन करती हैं --

1. कनपटी के दोनों ओर पांच बिंदु
2. नाक के दाएं बाजू पर एक बिंदु
3. कपोल पर एक बिन्दु
4. ठोड़ी पर पांच बिन्दु
5. भुजा पर तीन रेखाएं
6. कलाई पर बेल
7. टांगों की पिण्डलियों पर पेड़ के चिन्ह
8. हाथ की उंगलियों पर और चन्द्र, अर्ध चन्द्र आदि।

द्वितीय खण्ड : .. ..

भाषा

तृतीय अध्याय : .. ..

ध्वनि विचार

.. .. **ध्वनि-विचार**

भाषा की उप व्यवस्थाओं में ध्वनि व्यवस्था का ध्यान आधारभूत है । बंजारी बोली मूलत: हिन्दी की राजस्थानी बोलियों में से ही एक है । किन्तु बनजारों की यायावरी प्रवृत्ति के कारण इस बोली का सम्पर्क हिन्दी क्षेत्र की अन्य बोलियों और हिन्दीतर क्षेत्र की अन्य भाषाओं के साथ हुआ है । फलत: इसकी संरचना में आगत तत्वों का सहज समावेश हुआ है । किन्तु इस बोली की ध्वनि व्यवस्था अपेक्षाकृत अप्रभावित रही । बनजारी की ध्वनि व्यवस्था का प्रस्तुत अध्याय में विचार किया गया है ।

0. <u>प्रस्ताविक :</u> .. ..

इस व्यवस्था में बनजारी बोली की ध्वनियों, ध्वनिग्रामों, संस्वरों और ध्वनि संयोगों का विवरणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है ।

1. <u>बनजारी के ध्वनिग्राम :</u>

1.1. <u>स्वर ध्वनिग्राम</u>

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ

स्वर दो वर्गों में विभक्त किये जा सकते है : दीर्घ तथा ह्रस्व । इन दोनों वर्गो के स्वरों की कुछ सामान्य विशेषताएं है । उच्चारण के आरंभ में प्रयुक्त स्वरों के पूर्व स्वर यंत्रीय-स्पर्श {GLOTTEL CATCH} का स्वल्पाभास मिलता है । साथ ही मूर्धन्य व्यंजनों से पूर्व प्रयुक्त होने पर कुछ मूर्धन्य-भाव {RETROFLEXION} भी उत्पन्न होता है, जो स्वरों के उच्चारण के उत्तरांश के रूप में संलग्न रहता है । नासिक्य व्यंजनों, विशेषत: {म} तथा नासिक्य व्यंजन द्वित्वों से पूर्व और दो नासिक्य ध्वनियों के मध्यवर्ती होने पर स्वरों का कुछ नासिक्यीभवन {NASOLIZATION} हो जाता है । यह नासिक्यीभवन संस्वनात्मक है जो ध्वनिग्रामात्मक अनुनासिक /ँ/ से दुर्बलतर होता है । नीचे दीर्घ तथा ह्रस्व स्वरों के स्वल्पान्तर युग्म दिये गये है :

{अ}	/अस/	पैसी	{आ}	/आस/	आशा
	/लत/	आदत		/लात/	लात
				/मात/	गौरव
	/मन/	मन		/सात/	सात
	/सत/	सत्य		/आब/	मान
	/अब/	अब		/कात/	कातना
	/कत/	[illegible]			

{इ}	{सिढी}	सीढी	{ई}	{सीढी}	सिलाई की
	{पित}	पित्त		{पीत}	पीला
	{नित}	प्रतिदिन		{नीत}	पेशाब
{उ}	{मुई}	गिल्ली		{मूई}	मरी हुई
	{पुन}	पुन		{पून}	फूल
	{पुछ}	गीला		{पूछ}	पूछना
	{चुंधा}	लूला		{चूंधा}	कान पकड़कर खींचने का खेल
{ए}	{ ए या}	हे माँ	{ऐ}	{ऐया}	आई माँ
	{मेल}	मैला		{मैल}	मील
	{जेठ}	जेठ		{जैठ}	ज्येष्ठ मास
	{पेट}	पेट		{पैट}	चुनरी
{ओ}			{औ}		
	{ओर}	उसका		{और}	और
	{मोठ}	मोड़		{मौठी}	मोसवे का वृक्ष
	{कोढ़ी}	कुष्ठ रोगवाली		{कौढी}	कौढी
	{गोर}	बनजारा		{गौर}	ध्यान से

1.1.1. संस्वनात्मक विवरण :

1.1.1.1. ह्रस्व स्वर :

ह्रस्व स्वर तीन है /इ/, /अ/, /उ/, इनके संस्वनात्मक वैविध्य और उसके आधारों का विवरण नीचे प्रस्तुत किया गया है -

क- दीर्घता के आधार पर - इन ह्रस्व स्वरों को दो संस्वनात्मक कोटियाँ प्राप्त होती हैं - सामान्य दीर्घतायुक्त तथा ह्रसित - दीर्घतायुक्त । पहली श्रेणी को इस विवरण में किसी चिह्न विशेष से चिह्नित नहीं किया गया है । ह्रासित दीर्घता - वाले संस्वनों को इस प्रकार लिखा गया है -

{इ} {अ} {उ}

ख- घोष के आधार पर - उक्त स्वर सघोष और अघोष - दोनों ही रूपों में प्राप्त होते हैं । अघोषता का आधार प्रयोग की व्यंजनात्मक परिस्थिति और बोलने की गति है ।

ग- अर्द्धस्वर - अर्द्धस्वर {य} {व} के स्वतन्त्र ध्वनिग्राम नहीं माना गया है । उनको क्रमशः {इ} तथा {उ} के संस्वनों के रूप में ही स्वीकार किया गया है । इसके दो कारण है - ध्वन्यात्मक तथा दूसरा पद वैज्ञानिक । ध्वनि-वैज्ञानिक दृष्टि से दोनों के प्रयोग की परिस्थितियों में पूरक बंटन मिलता है ।

दूसरा कारण पद वैज्ञानिक विवरण की सरलता और सुविधा है । इस प्रकार दो ध्वनिग्रामों के सूची से हटा देना सुविधाजनक रहता है ।

1.1.1.2.1.1. ह्रस्व स्वरों का संस्वनात्मक विवरण -

/ इ / - निम्नतर उच्च अग्र अगोलीकृत स्वर है ।
= { इ } { इ^{य} }. { य }

{ इ } अघोष व्यंजन के पश्चात् पदान्त प्रयुक्त होने पर यह अघोष संस्वर प्राप्त होता है -
जैसे -

/ गति / = { ग्अति } कुछ नहीं
/ लाइ / = { ल्आइ } ले आई
/ काइ / = { क् औ इ } क्या
/ साइ / = { स् आ इ } सत्य

{ इ^{य} } इस संस्वन का प्रयोग व्यंजन तथा दीर्घ स्वरों के पूर्व होता है :
जैसे -

/ हाइया / = { ह् आ इ ^{य}आ } दुःख

{ य } -का प्रयोग -अ, औ तथा दो दीर्घ स्वरों के बीच मिलता है ।
जैसे - / माया / = { म् आ य् आ } " माया "

/ अ / मध्य अगोलीकृत स्वर है ।

[अ] अपनी प्रकृत दीर्घता से युक्त इस संस्वन का प्रयोग पद के आरंभ में तथा पद के मध्य में होता है ।

जैसे -

/ अद् / = [अद् अ] इधर
/ अद्रा / = [अद्अरआ] इतना
/ अक्कल / = [अक्कअलअ] अकल

[उ] निम्नतर - उच्च पश्च गोलीकृत स्वर है ।

= [उ] [उ^व] [व]

= [उ] - अपनी प्रकृत दीर्घता से युक्त इस संस्वन का प्रयोग पद के आदि में अथवा पद के अंत में मिलता है ।

जैसे -

/ उगडी / = [उगअडइ] चरित्रहीन औरत

/ गउ / = [गअउ] गाय

= [उ^व] - श्रुति-युक्त इस संस्वन का प्रयोग, व्यंजन तथा अग्रदीर्घ स्वरों के बीच में होता है । जैसे -

/ सुई / = [स् उ^व ई] सुई

= [व] - का प्रयोग व्यंजन तथा / आ / के बीच में होता है जैसे -

/ कुआंर / = [क्वआं रअ] कुंआरा

1.112 दीर्घता पर आधारित संस्वन -

/ई/, /ए/, /ऐ/, /ऊ/, /ओ/ तथा /औ/ दीर्घ स्वर है। इन स्वरों की दीर्घता में ध्वन्यात्मक परिस्थितिजन्य संस्वनात्मक वैविध्य प्राप्त होता है। /औ/ तथा /ऐ/ के उच्चारण में स्वतंत्र वैविध्य मिलता है। कभी ये मूल स्वर के रूप में सुनाई देते हैं और कभी संयुक्त स्वर के रूप में /अ उ/ /अ इ/।

/ई/ = यह दीर्घतम संस्वन है। इसका प्रयोग /ड/, /ढ/, /ठ/ अथवा इन पर आधारित अक्षरों से पूर्व होता है। जैसे

/ईंडा/ = "अंडा"

/ए/ = उच्चतर मध्य, अग्र, अगोलीकृत स्वर है। इसका प्रयोग ह्रस्व स्वरों से अथवा अनेक रचित अक्षरों से पूर्व होता है।

जैसे -

/एक/ = /एक/ "एक"
/एवडी/ = /एवुअडई/ "इधर"
/एडी/ = /एडई/

/ आ / - निम्न, मध्य अगोलीकृत स्वर है।

/आ/ = इस दीर्घतम स्वनग्राम का प्रयोग ह्रस्व स्वर तथा इन पर आधारित अक्षरों से पूर्व होता है। जैसे -

/अम्बा/ = /आमबुआ/ "आम"
/आट/ = /आटअ/ "आवाज"
/आरसी/ = /आरअसई/ "दर्पण"

{आमलो} = {आम्‌अलई} "इमली"

{आदमो} = {अदअम्‌इ} "आदमी"

{ऊ} - उच्चतर पश्च, गोलोकृत स्वर है ।

इस दीर्घतम संस्वन का प्रयोग ह्रस्व स्वरों या ह्रस्व स्वरों पर आधारित अक्षरों से पूर्व होता है -

जैसे -

/ऊंट/ = {ऊन्ट्‌अ} "ऊंट"

/पूर/ = {प्‌ ऊ र्‌ अ} "पूर्ण"

/कूट/ = {क्‌ ऊ ट्‌ अ} "कूटना"

/पूटो/ = {प्‌ ऊ ट्‌ ओ} "पोट"

/सूट/ = {स्‌ ऊ ट्‌ अ} "सूअर"

/ओ/ = {उच्चतर मध्य पश्च गोलोकृत स्वर है । /ऊ/ से कुछ अधिक दृढ़ है}

/ओ/ = दीर्घतम संस्वन है । इसका प्रयोग ह्रस्व स्वरों या उनसे बने अक्षरों से पूर्व होता है ।

जैसे -

/ओल्ड़ा/ = {ओ ल्‌ अ ड्‌ आ} "टोकरी"

/ओरी/ = {ओ र्‌ ई} "बकरा काटना"

/ओर/ = {ओ र्‌ अ} "उसका"

/ओस/ = {ओस्‌अ} "शबनम"

/ओरपो/ = {ओ र्‌ अ प ओ} "बारिश कम होना"

1.113 श्रुति पर आधारित संस्वन :

जब /ई/ तथा /ऊ/ अन्य स्वरों के पूर्व प्रयुक्त होते हैं, तो संस्वनात्मक ध्वनि खण्ड क्रमशः {य} तथा {व} उत्पन्न होते हैं। इनको क्रमशः /ई/ /ऊ/ /ओ/ के उच्चारण का उत्तरांश ही माना गया है। इस प्रकार {यई} {वऊ} {वओव} संस्वन प्राप्त होते हैं।

जैसे -

/बाईप/ = {बा ई य प} "बहन"
/घीया/ = {घ् ई य आ} "घी"
/भीया/ = {भ ई य आ} " बड़ा भाई"
/सुआ/ = {स् ऊ व आ} "सीधा"
/सुओ/ = {स् ऊ व ओ} " बोरे सीने की बड़ी सुई
/बकुआ/ = {ब् क ऊ व आ} "बकवाज"

{व} का एक स्थल और है जहाँ इसकी मुखरता यद्यपि कम रहती है, फिर भी अस्तित्व अवश्य रहता है। /ओ/ का प्रयोग जब /आ/ से पूर्व होता है, तो {ओ व} संस्वन प्राप्त होता है।

जैसे -

/धोया/ = {ध् ओ व आ} "धोकर आओ"
/सोया/ = {स् ओ व आ} "सोकर आओ"
/बोया/ = {ब् ओ व आ} "लगाकर आओ"
/रोया/ = {र् ओ व आ} "रोकर आओ"
/गोया/ = {ख् ओ व आ} "गुमाकर आओ"

1.114 नासिकीयकरण-जन्य संस्वन :

(क) ध्वनिग्रामात्मक /˜/ से युक्त होने पर निम्नतर मध्य-अग्र-अगोलीकृत /ऐ/ तथा निम्नतर मध्य-पश्च-गोलीकृत /औ/, निम्नतर स्थिति से कुछ ऊपर उठ जाते हैं। इन संस्वनों को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है - /ऐ/ तथा /औ/

जैसे -

/लौंग/ = (ल् औ ˜ ग् अ) "लौंग"
/ऐंया/ = (ऐ ˜ य् आ) "है मा"

(ख) संस्वनात्मक नासिक्यी करण -

1) दो नासिक्य व्यन्जनों के बीच प्रयुक्त होने पर, दीर्घ स्वरों के साथ अर्द्धस्फुट नासिक्योकरण श्रव्य होता है। यह स्वर के सम्पूर्ण उच्चारण पर नहीं, उसके उत्तरांश पर रहता है।

2) उच्चारान्त या पदान्त नासिक्य व्यन्जन के पश्चात् आने वाला दीर्घस्वर भी संस्वनात्मक नासिक्योकरण ग्रहण करता है।

जैसे -

/मीना/ = (म् ई न् आ) "महीना"
/नानी/ = (न् आ न् ई) "नानी"
/पाणी/ = (प् आ ण् ई) "पानी"

3] नासिक्य दीर्घ स्वरों के पूर्व प्रयुक्त होने पर भी उक्त नासिक्यीकरण श्रव्य होता है ।

जैसे -

/साईं/ = [स् आ ईं] "भात"
/धुआं/ = [ध् उ आं] "धुआं"
/अईं/ = [अ ईं] "अउंगा"

1.1.1.5 <u>अनुनासिक्य :</u>

स्वर ध्वनि ग्रामों के पूर्ण उच्चारण पर स्थित पूर्ण मुखर अनुनासिकता छाई रहती है । इसकी स्थिति ध्वनिग्रामात्मक है । इसको सिद्ध करने के लिए नीचे कुछ स्वल्पान्तर युग्म दिए जा रहे हैं :-

[ओ] [ओं]

/कुडो/	"कड़वो"	/कुंडो/	"लड़को"
/मुडो/	"चोटी"	/मुंडो/	"सिट"
/टूटो/	"टूटो"	/टूंटो/	"लूलो"
/भाजी/	"भाजी"	/भांजी/	"भंजी"

[ए] [एँ]

/फेपरा/	"एक प्रकार का - जंगली फल"	/पेंमरा/	"पेमड़ा"
/तेड़ा/	"टेढ़ा"	/तेंठा/	"ठूंक"

[आ]   [आँ]

/आक/ "ऊँगनी पौधा"   /आँक/ "आँख"
/आट/ "आठ"   /आँट/ "चूड़ामणि"
/गाट/ "गाठ"   /गाँट/ "सिलाई"
/वाट/ "रास्ता"   /वाँट/ "घोंसला"

[ऊ]   [ऊँ]

/ऊमर/ "वो-दूर"   /ऊँमर/ "उमर"

[उ] /ऊटरो/ "उठरतो है"   [ऊँ] /ऊँटरो/ " पीसरतो है"

दीर्घ अनुनासिक स्वर पद के आरम्भ, मध्य, तथा अन्त में आ सकते हैं - /आँ/ का प्रयोग आरम्भ और अन्त में अन्य अनुनासिक दीर्घ व्यन्जनों की अपेक्षा कम होता है ।

1.1.1.6 <u>स्वर संयोग :</u>

बनजारा बोली में दो और तीन स्वरों का संयोग मिलता है । दो स्वरों का संयोग इस प्रकार है :-

	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ
अ					x					
आ				x			x		x	
इ		x								
ई			x	x						
उ			x	x						
ऊ								x		
ए									x	
ऐ		x								
ओ				x						
औ					x					

क - <u>दो स्वरों का संयोग :</u>

/अ उ/	/ अ उ डो/	"इतनी"
/आ ई/	/ आ ई/	"सीतला माता"
/ आ ए/	/ आ एच/	"आये है"
/आ ओ/	/आ ओ/	"आ ओ"
/इ आ/	/इ आ ड़ी/	"मा"
/ई ई/	/ई ई ज/	"यही"
/उ इ/	/सुई/	"सुई"

/उ ई/	/मुइ/	"मरी हुई"
/इ ऐ/	/ऊ ऐ/	"हाय"
/ ए औ/	/ए औ डौ/	"इधर"
/ओ ई/	/ओ ई/	"अरे"
/ औ उ/	/औउडा	"इतना"

ख - <u>तीन स्वरों का संयोग :</u>

/ आ इ ए/	/आ इ ए/	"आई"
/ आ इ उ/	/आ इ उ/	"वह आई"
/आ इ आ/	/आ इ आ/	"आयेंगे"
/ई इ ए/	/पी इ ए/	"पीओ"
/ई इ आ/	/पी इ आ/	"पीले"
/ई इ अ/	/पी इ अ/	"पीयेंगे"
/उ इ ए/	/लू इ ए/	"मैं पोंछो"
/ऊ इ उ/	/लूइउ/	"वह पोंछो -
/ ऐ इ आ/	/लू इ आ/	"पोंछडालो"
/ ओ इ ए/	/ सो इ ए/	"सो गई"
/ ओ इ ऊ/	/ सो इ ऊ/	"वह सो गई"
/ओ ई ओ/	/ सो यो/	"सो गया"
/ओ इ अ/	/ सो या/	"सोयेंगे"

...

व्यञ्जन ध्वनिग्राम को सिद्ध करने के लिए बंजारी भाषा के स्वल्पान्तर युग्म नीचे दिये गये हैं :-

[क]		[ख]	
/कोटा/	"जानवर बाँधने की जगह	/खोटा/	"खोटा"
/काड़/	"निकालना"	/खाड़/	"खड्डा"
/कोर/	"लकीर"	/खोर/	"खीर"
/कान/	"कान"	/खान/	"खाकर"

[ग]		[घ]	
/गरलो/	"गिलहरी"	/घरलो/	"घर के पास वो"
/गोड़ी/	"घुटना"	/घोड़ी/	"घोड़ी"
/गोट/	"विवाह का एक अनुष्ठान्	/घोट/	"पीसना"
/गी/	"गई"	/घी/	"घी"

[ट]		[ड]	
/लट/	"केश"	/लड़/	"लड़ना"
/चोटी/	"चिड़िया"	/चोड़ी/	"चौड़ा"
/पेट/	"पेट"	/पेड़/	"लौटाना"
/कट/	"कटना"	/कड़/	"कमर"

[ल]		[ळ]	
/गटला/	"पहाड़"	/गळा/	"एक प्रकार की जड़ जिसे उबाल कर

/कोंटिया/	"एक प्रकार का जंगली फल	/कोंठिया/	"पुरुष का नाम"
/टाट/	" कोढ़ "	/ठाट/	" रोब "
/टकरी/	" रह रही है "	/ठकरी/	"बनजारों की एक देवी
/ड/		/ढ/	
/गड़/	"गाड़ना"	/गढ़/	"किला"
/डाडी/	"ठुड्डी"	/ढाडी/	भाट जाति का व्यक्ति
/डाव/	"बुजरुग"	/ढाव/	"विदाई या मिलन के समय रोना "
/डाकण/	" जादूवाली	/ढाकण/	" ढक्कन "
/त/		/द/	
/तीन/	"तीन"	/दोन/	"दोनो"
/ताना/	"छोटा "	/दाना/	"दाना"
/मतरा/	"नहीं/	/मदरा/	"लाल कपड़ा"
/सात/	"सात"	/साद/	"सन्यासी"
/त/		/थ/	
/तरी/	"तैरना"	/थरी/	"मलाई "
/तम/	"तुम"	/थम/	"रुक"
/तन/	"शरीर"	/थन/	"स्तन"
/तोता/	"तोता"	/थोता/	" थोथा "

/द/ /ध/

/दास/	"भक्त"	/धास/	"भाग"
/दरसन/	"दर्शन"	/धरसन/	"छूकर"
/दोरा/	"धागा"	/धोरा/	"धोता"
/दोई/	"दोनों"	/धोई/	"धो डालो"

/प/ /ब/

/परी/	"परी"	/बरी/	"विमुक्त"
/पळनो/	"पळना"	बढ़नो/	"आगे चलना"
/पोटी/	"उदर का भाग"	/बोटी/	"मांस"
/पाली/	"चार सेर"	/बाली/	"कान की बाली"

/प/ /फ/

/पाळनो/	"उठाना"	/फाळनो/	"फाड़ना"
/पाक/	"पवित्र"	/फाक/	"होली में रंग खेलना"
/पीका/	"शिशु"	/फीका/	"फीका"
/पाट/	"रेशम"	/फाट/	"फटी हुई"

/ब/ /भ/

/बारी/	"बारी"	/भारी/	"वजन"
/बाग/	"बगीचा"	/भाग/	"भाग"
/बाट/	"तौलने का बट"	/भाट/	"भाट जाति का व्यक्ति"
/बाडो/	"तिरछा देखनेवाला"	/भाड़ो/	"किराया"

/फ/		/भ/	
/फक/	"फल"	/भक/	"मिलो"
/फराणो/	"फिरना"	/भरणो/	"भरना"
/फाक/	"होली में रंग खेलना"	/भाग/	"भाग"
/थ/		/ध/	
/थान/	"थान"	/धान/	"पका हुआ चावल
/थन/	"स्तन"	/धन/	"धन"
/थूक/	"थूक"	/धूक/	"लोहार की धोकनी"
/थर/	"कम्पन"	/धर/	" दे दो "
/ठ/		/ढ/	
/ठाल/	"खाली"	/ढाल/	"ढाल"
/ठोर/	"धूप"	/ढोर/	"पशु"
/ठाकणी/	"एडी की हड्डी"	/ढाकणी/	"ढक्कन"
/ठपको/	"चुपके से "	/ढपको/	"ध्वनि के साथ"
/ ख /		/ घ /	
/खड/	"घास"	/घड/	"बनाना"
/खोडी/	"घटनी"	/घोडी/	"घोडी"
/खोड/	"दाग"	/ घोड /	"घोडे"
/खोकिया/	"खोलकर आओ"	/घोकिया/	"छाछ"

/च/		/ज/	
/ चणा /	"चना"	/जणा/	"लोग"
/चोर/	"चोर"	/जोर/	"ताकत"
/चोडी/	"चौडी"	/जोडी/	"जोडी"
/चरा/	"चराओ"	/जरा/	"थोड़ा"

/ च /		/छ/	
/चाल/	"चलन"	/छाल/	"पेड़ की छाल"
/चटो/	"डोमकुण्ड"	/छटो/	"छुरी"
/चणा/	"चना"	/छणा/	"गोबर की उपली"
/चाटिया/	"चाटकर आओ"	/छाटिया/	"एक प्रकार की चुनरी

/ज/		/झ/	
/जल/	"पानी"	/झल/	"पकड़"
/जारी/	" जा रही"	/झारी/	" लोटा "
/जट/	"सन्यासी के केश"	/झट/	"जल्दी"
/जड़/	"जड़"	/झड़/	"झड़ना"

/ छ /		/ झ /	
/छाल/	"पेड की छाल"	/झाल/	"पकड़"
/छोल/	"छिलना"	/झोल/	"ताडी के पेड़ों का बगीचा"
/छपको/	"तुरन्त"	/झपको/	"भयानक"

/म्/		/न्/	
/मानी/	"मान गई"	/नानी/	"नानी"
/माता/	"माँ"	/नाता/	"नाता"
/मासो/	"मौसी"	/नासो/	"खराब"
/मातो/	"सिर"	/नातो/	"रिश्ता"

/ल्/		/र्/	
/लाडो/	"लाडली"	/राडो/	"रस्सी"
/लोई/	"रक्त"	/रोई/	"रोई"
/पालो/	"चार सेर"	/पारो/	"पारा"
/लपटो/	"लीट"	/रपटो/	"फिसल गई"

/ह्/		/स्/	
/हाडो/	"शरीरी"	/साडो/	"साड़ी"
/हात/	"हाथ"	/सात/	"सात"
/हक/	"अधिकार"	/सक/	"सुख"
/हटो/	"हटो"	/सटो/	"सत्यवान"

1·21· व्यंजन ध्वनिग्राम तथा उनके संस्वन -

{क} <u>स्पर्श व्यंजन</u> :

/प/ - द्वयोष्ठ्य, अघोष, अल्पप्राण, स्पर्श व्यंजन । इसके रेचन पर महाप्राण का अत्यल्प रंजन बचे रहता है ।

= { प }, {प॰ }, { प> }

= {प } - अपने स्वाभाविक रेचन और स्फोट से युक्त यह - स्वनग्राम पद के आरम्भ में प्रयुक्त होता है ।

जैसे - / पीला / " कच्चा "

/ पाट / "पार "

/ पातको / " पतला "

= { प॰ } - अन्त्य अघोष { अ. } से पूर्व प्रयुक्त होने पर अन्य ह्रस्व स्वरों तथा / अ / के पूर्व अन्यत्र प्रयुक्त होने से, / प / अधिक आतत होता है { प॰ } जैसे -

{ म आ प अ. } / माप / "नाप"

{ स आ प अ. } /साप/ "साप"

= { प> } - यह / प / का अरेचक संस्वन है । ओष्ठ दृढ़ता से बन्द होते हैं, पर रेचन नहीं होता । इसका प्रयोग उच्चारान्त होता है जैसे

/ चप / = { च अ प } " चुप "

- द्वयोष्ठ्य, अघोष, महाप्राण, स्पर्श व्यंजन ।

= [फ] [फ]

= स्वाभाविक महाप्राणत्व से युक्त है और ओष्ठ स्वाभाविक दृढ़ता से बन्द होते हैं । इसका प्रयोग पद के आरम्भ में होता है । जैसे -

/ फूल / = [फ ऊ ल ऽ] " फूल

= [फूल] - स्वर मध्यवर्ती होने पर / फ / में दो विकार उत्पन्न होग जाते हैं, ओष्ठ पूर्ण रीत्या बन्द नहीं होते ; फलत: कुछ घर्षण श्रव्य होता है । दूसरे महाप्राणत्व की मात्रा कम हो जाती है अथवा यह अघोष महाप्राणत्व से युक्त होता है ।

जैसे - [गो फण] [ग ओ फ ऽ ण ऽ] " किसान के द्वारा चिड़िया उड़ाने की रस्सी से बनी एक गिलोल

/ तोफ / [त ओ फ ऽ] " तोप "

/ ब / - द्वयोष्ठ्य, सघोष, अल्पप्राण स्पर्श व्यंजन है । यह / प / की अपेक्षा शिथिल है । इसका स्फोट या रेचन भी / प / के समान महाप्राण रंजित नहीं है ।

= ब् [ब]

= [ब] पद के आरम्भ में, स्वर मध्यवर्ती होने पर ओष्ठ दृढ़ता से स्पर्श की स्थिति में रहते हैं । इन स्थितियों में / ब् / अपने स्वाभाविक रूप में रहता है । जैसे -

/ बाती / = [ब् आ त इ] " बत्ती "

/ कूबडो / = [क ऊ ब ड ओ] " कूबड़ा "

/ लाम्बो / = [ल् आ म् ब ओ] " लम्बा "

- [व] ऊपर के स्थितियों के अतिरिक्त स्वर मध्यवर्ती होने पर /ब/ अपने ऊष्मीकृत, घर्षयुक्त संस्वन [व] के रूप में रहता है। जैसे -

/सबर/ = [स अ ब र अ] "बर्दाश्त"
/आब/ = [आ ब अ] "मान"

/भ/ द्वयोष्ठ्य, सघोष, महाप्राण स्पर्श व्यंजन है।

= [भ्], [भ̆]

= [भ्] का प्रयोग पद के प्रारंभ में तथा /म/ के पश्चात होता है, जब कि ओष्ठ दृढ़ता के साथ बन्द होकर स्पष्ट रहते हैं। इसका महाप्राणत्व सघोष और दृढ़ होता है। जैसे -

/भूत/ = [भ ऊ त अ] "भूत"
/जीभ/ = [ज ई भ अ] "जिह्वा"

= [भ्] अन्य परिस्थितियों में स्पर्श पूर्ण नहीं होता। फलत: ऊष्मीभवन तथा घर्षण अवश्य होता है, पर इसकी मात्रा [व] की अपेक्षा कम रहती है।

जैसे - /गोभी/ = [ग् ओ भ ई] "गोभी"

इसका महाप्राणत्व शिथिल होता हुआ अघोषवत् सा हो जाता है।

/त/ यह जिह्वानोकीय, दन्त्य, अघोष, अल्पप्राण व्यंजन है। इसका रेचन भी कुछ महाप्राण रंजित है। जैसा कि ऊपर देखा जा चुका है, पद के आदि में प्रयुक्त होने पर इसका तनाव, स्वर मध्यवर्ती स्थिति से अधिक होता है।

= [त], [त̚], [त]

= ॥ त ॥ यह /त/ का अग्र दन्तीय संस्वन है । इसके उच्चारण में जीभ ऊपर के दाँतों की नोक का इस प्रकार स्पर्श करती है कि कुछ भाग उससे आगे भी निकल जाता है । इस स्थिति में रहने के कारण जीभ दाँतों के पृष्ठ भाग को पूर्णतः आवृत नहीं करती । इस संस्वन का प्रयोग स्वर मध्यवर्ती /त्/ के द्वित्व में तथा /थ/ के संयुक्त होने पर होता है । जैसे -

/पत्तो/ = ॥ प अ त त ओ / " पत्ता "

/कात्तो/ = ॥ क आ त त ओ ॥ " कत्ता "

= ॥ त ॥ यह /त/ का पश्चदन्त्य या पश्चमुख संस्वन है । इसके उच्चारण में जीभ की नोक दान्तों के पृष्ठभाग को पूर्णतः आवृत नहीं करती ही है, मसूड़ों के कुछ भाग पर भी जीभ की नोक का दबाव अनुभव किया ठिक जाता है । इन संस्वन के प्रयोग स्थितियाँ इस प्रकार है -

/आ/	—	/उ/
/ओ/		/इ/
/अ/		/ओ/
		/आ/

जैसे - /खातु/ = ॥ ख् आँ त् उ ॥ " तुम खाकर "

/सांति/ = ॥ स् आँ त् इ ॥ " शान्ति "

/मौत/ ॥ म औ त अ ॥ " " मृत्यु "

/कौंति = ॥ क औं त इ ॥ " नहीं "

{त्} अपने सामान्य रूप में {त} उक्त की स्थितियों से भिन्न स्थितियों में प्रयुक्त होता है । इसके उच्चारण में जीभ की नोक सामान्य ढंग से मसूढ़ों से ऊपर के दांतों की नोकों तक दांतों के पृष्ठांश को ढकती हुई स्पर्श करती है । जैसे -

/ तलावडी / = {त अ ल आ व् अ ड ई} "तालाब"
/ तेर / = {त् ए र अ} "रथ"

/ द / यह जिह्वा नोकीय दन्त्य {APICO DENTAL} अघोष, अल्पप्राण स्पर्श व्यंजन है । इसका समस्त विवरण तथा संस्वनात्मक वैविध्य {त्} के समान है । कुछ उदाहरण इस प्रकार है --

= {द} {द्} {,द}

= {द} अग्रदन्तीय संस्वन है : प्रयोग स्थितियां { } के समान है जैसे -

/ गद्दा / = {ग् अ द् द् आ} "गधा"
/ लाद्दा / = {ल् आ द् द् आ} "लादना"

= {द} पश्च दन्त्य संस्वन है । इसकी प्रयोग स्थितियां भी {त} के समान हैं । जैसे -

/ लादु / = {ल् आँ द उ} "लाकर दूं"
/ चादि / = {च् आँ द इ} "चांदी"
/ छादों / = {छ आ द ओ} "छाया"
/ पादों / = {प् आ, द ओं} "पादा"
/ कान्दा / = {क् आ न्, द आ} "प्याज"
/ चान्दा / = {च् आ न्, द आ} "चांद"
/ बादा / = {ब आ द आ} "कण्ठी"

[द] का प्रयोग अन्यत्र होता है । जैसे -

/ दब / = [द ब ब ब] " दबना "
/ देस / = [द ए स ब] " देश "

/ थ / और / ध / क्रमश: अघोष और सघोष जिह्वालोकीय दन्त्य महाप्राण स्पर्श ध्वनियां हैं । / त / एवं / द / की भांति अग्र, पश्च तथा सामान्य संस्वन हैं । पर / त् /, / द् / के संस्वनों से इन संस्वनों की प्रयोग स्थितियां कुछ भिन्न हैं । / थ / और / ध/ के अग्रदन्त्य संस्वनों [थ], [ध] का प्रयोग / त् /, / द् / तथा / न् / के पश्चात् / आ / के पूर्व होता है । पर जैसा कि पहले देखा जा चुका है, / न् / के पश्चात् / त /, / द/ के पश्च-दन्त्य संस्वनों [त्], [द्र] द का प्रयोग होता है, न कि अग्र संस्वनों का । पश्च संस्वनों का प्रयोग / आँ /, / औं / के पश्चात् / आ /, / उ/ के पूर्व होता है ।

/ आँ /] —————— [/ आ /
/ औं /] [/ उ /

अन्यत्र सामान्य संस्वन प्रयुक्त होते हैं । इन संस्वनों की प्रयोग स्थितियों के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये गये हैं -

= [थ] - [थ] [थ] तथा [.थ]

= [थ] का प्रयोग / त/, तथा / न् / के पश्चात् / आ / के पूर्व होता है। जैसे -

/ लत्था / = [ल् अ त थ आ] " कपड़े "
/ कन्था / = [क् अँ न् थ आ] " सैाट "

= / थ / का प्रयोग / आँ/, / औं / - / आ /, / उ/ परिस्थिति में होता है। जैसे -

/धोंधा/ = {ध् औं ध आ̭} "धेला"

/चोंधु/ = {च औं ध ड़̥} "चोथा"

= {ध} का प्रयोग अन्यत्र होता है।

जैसे -

/धोतो/ = {ध् ओ त् ओ̭} "धोता"

/हाथ/ = {ह् आ थ अ} "हाथ"

/ध/ = {ध}, {ध̺} {ध}

= {ध̺} का प्रयोग /द/ तथा /न्/ के पश्चात्, /आ/ के पूर्व होता है। जैसे -

/जिद्द/ = {ज् इ द ध उ} "जिद्द"

/कान्धो/ = {क आ̃ न ध ओ} "कान्धा"

= {ध̺} का प्रयोग {आ}, /ओ/ - /औ/, /उ/ परिस्थितियों में होता है।

जैसे -

/सोधा/ = {स औ, ध आ} "सुगन्धवाला", "सोधा"

/धोधो/ = {द ओ ध ओ} "रोकर धोओ"

/बोधु/ = {ब् औ ध ड} "मोट"

/बांधु/ = {ब् आ ध उ} "बांधता हूं"

ऑ और औ के बीच [घ] का प्रयोग नहीं मिलता । साथ ही / ऑ / और / आ / के बीच [घ] प्रयोग का उदाहरण नहीं मिलता ।

= [घ] का प्रयोग अन्यत्र होता है ।

जैसे -

/ घी / = [घ ई] " घी "

/ दुधारी / = [द उ ध आ र ई] " दूध देनेवाली "

/ सिंधी / = [स ई ं ध ई] " ताड़ी "

/ ट / यह जिह्वानोकीय, पश्चवर्त्स्य, अघोष, अल्पप्राण स्पर्श ध्वनि है [APIDCOPOST LEO -LAR STOP] इस स्फोट या रेचन महाप्राण रंजित होता है । पद के आरम्भ में यह विशेष अतत [TENSE] श्रव्य होता है । स्वर मध्यवर्ती होने पर कुछ शिथिल हो जाता है । अन्त्य अघोष स्वर के पूर्व यह कुछ अधिक कठोर सुन पड़ता है । इसके तीन संस्वन हैं -

= [ट], [ट̪] [ट̣]

[ट] इस संस्वन के उच्चारण में जीभ की नोंक ऊपर के दान्तों के मूल संलग्न अग्रवर्त्स्य का स्पर्श करती है । अतः इसे अग्रीभूत [ ] संस्वन कहना चाहिए । इसका प्रयोग / स् / के पश्चात् होता है । जैसे -

= / कस्टो / = [क अ स् ट̪ ई] " मेहनती "

[ट] यह पश्चीभूत [BACKED] संस्वन है । इसके उच्चारण में जीभ की नोक ऊपर की ओर मुड़ती है और प्राय: मूर्धा के अग्र भाग का स्पर्श करती है । अत: इसे मूर्धन्य संस्वन कहना उचित होगा । इसका प्रयोग पद के आरम्भ में [आ] के पूर्व, अनुनासिक स्वरों और / ण / के पश्चात् तथा द्वित्व होने पर होता है ।

जैसे - / काटा / = [क आ>ट आ] " काटा "

/ वाट्‌ / = [व आ>ट ए] " कूदेगा "

/ घाटो / = [घ आ>ट ओ] " भागो "

/ गाट / = [ग आ>ट ए] " गाठ "

/ बाटी / = [ब आ>ट ई] " एक गाली "

/ बाटू / = [ब आ>ट ऊ] " एक गाली

/ वाटै / = [व आ>ट ऐ] " कूद

/ खूंटा / = [ख ऊं>ट आ] " खूंटा "

/ ठंट / = [ठ ड़>ट अ] " बिना पत्तों का सूखा पेड "

/ छींट / = [छ ईं>ट अ] " एक प्रकार का रंगीन कपडा "

/ टूंटी / = [टऊं>ट ई] " औरत जिसका हाथ टूटा हो "

/ घंटा / = [घ अं>ट आ] " घंटी "

/ आंटी / = [आ ण्>ट ई] " वेणी की रस्सी "

[ट] - यह [ट] का सामान्य रूप है । इसका प्रयोग अन्यत्र होता है । जैसे -

/ टोटी / = [ट ओ ट ई] " लोहे की टोकरी "

/ टोपली / = [टओ प ल् ई] "वेणी में पहनने का गहना"

{ ठ } - यह जिह्वानोकीय पश्चवर्त्स्य अघोष अल्पप्राण स्पर्श है । इसके दो प्रमुख संस्वन हैं । एक पश्चोभूत मूर्धन्य { ठ } जिसके उच्चारण में जीभ की नोक पीछे को मुड़ी रहती है तथा एक पश्च-वर्त्स्य संस्वन जिसके उच्चारण में जीभ मुड़ती नहीं है { ठ }

{ ठ } का प्रयोग नासिक्य स्वरों के पश्चात् होता है

जैसे - / गांठ / = { ग् आँ>ठ् ऊ् } " गाठ "
/ सांठा / = { स आँ>ठ आ } " ईख "
/ सूंठ / = { स ई>ठ ऊ् } " सौंठ "

{ ठ } का प्रयोग अन्यत्र होता है :

जैसे - / ठीक / = { ठ ई क ऊ् } " ठीक "
/ जठाणी / = { ज् ठ अ ण ई } " जेठानी "

{ड } - यह जिह्वालोकीय पश्चवर्त्स्य, सघोष, अल्पप्राण स्पर्श है । इसके प्रमुख तीन संस्वन है - पहला, पश्चोभूत मूर्धन्य पश्चवर्त्स्य स्पर्श, दूसरी सीधी जिह्वा नोक के साथ सामान्य पश्चवर्त्स्य स्पर्श, तथा तीसरा, उत्क्षिप्त - { ड } { ड } { ड } उत्क्षिप्त { }ड } को इसका संस्वन मानना ही ठीक है । { ड } का प्रयोग { ण } के पश्चात् होता है ।

जैसे - / कूंडं / = { क ऊ ण>ड आ } बनजारेतर लड़का
/ ईंडा / = { ई ण>ड आ } " अण्डा "
/ कण्डा / = { क अँ ण> ड आ } " मांस-पेशियां "
/ गण्डा / = { ग अँ ण>ड आ } " पैसे "
/ डाण्डी / = { ड आँ ण>ड ई }
यह प्रयोग केवल पद के मध्य में होता है ।

[ड़] का प्रयोग आरम्भ में द्वित्व रूप में तथा / ढ / के पूर्व होता है ।

जैसे -

/ डली / = [ड अ ल ई] " बोटी "

/ लड्डू / = = [ल अ ड ड ऊ] " लड्डू "

/ वड्डू / = [व अ ड ड ऊ] " मूर्ख "

इस संस्वन का प्रयोग पद के आरम्भ में तथा पद के मध्य में द्वित्व, संयुक्त या बलाघात से युक्त होने पर ही हो सकता है ।

[ड़] का प्रयोग [ड] या [ड] को प्रयोग स्थितियों में कभी नहीं होता । अर्थात इसका प्रयोग केवल पद के मध्य या अन्त में ही होता है । मध्य में प्रयुक्त होते पर यह बलाघात युक्त नहीं हो सकता ।

जैसे :

/ सांड / = [स् आ ड़ अ] " सांड "

/ रांड / = [र आ ड़ अ] " विधवा "

/ लाड़ी / = [ल् आ ड़ ई] " लाडली "

/ आड़ / = [आ ड़ अ] " रुकावट "

/ ढ / - जिह्वानोकीय पश्चवर्त्स्य, सघोष महाप्राण स्पर्श ध्वनि है । इसके दो प्रमुख संस्वन है - एक सामान्य [ढ] तथा दूसरा - उत्क्षिप्त [ढ़] इसके प्रयोग स्थितियां इस प्रकार है -

[ढ] का प्रयोग पद के आरम्भ में, / ड / के पश्चात् तथा बलाघात -युक्त होने पर पद को मध्य में होता है ।

जैसे - / ढाल / = [ढ आ ल अ] " ढाल "

/ ढोर / = [ढ ओ र अ] " पशु "

/ बेढंगा / = [ब ए ढ अ ङ ग आ] " बेढंगा "

[ढ़] का प्रयोग पद के मध्य में बलाघात रहित रूप में होता है ।

जैसे -

/ बूढ़ो / = [ब ऊ ढ़ ओ] " बुड्ढा "

/ क / जिह्वा पश्च - कंठस्थ [DORSORELAR] अघोष, अल्पप्राण, स्पर्श ध्वनि है । इसका स्फोट कुछ महाप्राण रंजित रहता है । अघोष स्वरों के पूर्व, अन्त में प्रयुक्त होने पर महाप्राणत्व की मात्रा कुछ बढ़ जाती है । इस संस्वनात्मक वैविध्य के अतिरिक्त दो संस्वन और है -- पद के आरम्भ में प्रयुक्त होने पर यह अधिक आतत रहता है और स्वर मध्यवर्ती होने पर तनाव कुछ कम हो जाता है । इनके अतिरिक्त और कोई वैविध्य प्राप्त नहीं होता । इस प्रकार [क] सामान्य महाप्राण स्फोटवाला, [क] विशेष महाप्राण स्फोटयुक्त, ये दो संस्वन हो सकते हैं --

[क] - का यह पद के आरम्भ में होता है ।

जैसे -

/ काचो / = [क आ च ओ] " कच्चा "

/ काल / = [क् आ ल् अ] " कल "

यह आतत होता है ।

[क॰] - का प्रयोग पद के अन्त में अघोष स्वरों से पूर्व होता है ।

जैसे -

/ ताकली / = [त आ क ल् ई] " चोली पर का एक अंश "

/ ताकड़ी / = [त आ क ड़ ई] " तोलने की डण्डी "

/ फांक / = | फ आं क अ | "मिर्च जलने की बू "

/ ख / - " जिह्वापश्च कंठ्य, अघोष, महाप्राण स्पर्शध्वनि है । पद के आरम्भ स्वर मध्यवर्ती तथा अन्त में इसका प्रयोग होता है । अन्त्य दीर्घ अथवा अघोष व्यंजनों से पूर्व उसका प्रयोग होता है ।

जैसे :

/ खरो / = | ख अ र ओ | " सच्चा "
/ दख / = | द अ ख अ̥ | " दुःख "
/ सख / = | स् अ ख अ̥ | " सुख "

/ ग / - जिह्वा पश्च कंठ्य, सघोष , महाप्राण, स्पर्श ध्वनि है । इसका प्रयोग पद के आदि, मध्य, अन्त में होता है ।

जैसे -

/ गोत / = | ग ओ त अ̥ | " गोत्र "
/ बगल / = | ब ग अ ल अ̥ | " बाजू "
/ आग / = | अ आ ग अ̥ | " आग "

/ घ / - जिह्वा पश्च कंठ्य, सघोष, महाप्राण, स्पर्श ध्वनि है । इसका प्रयोग पद के आदि और मध्य में हो सकता है ।

जैसे -

/ घोड़ो / = | घ ओ ड़ ओ | " घोड़ा "
/ घोटा / = | घ ओ ट आ | " विवाह का एक अनुष्ठान
/ बाघ / = | ब आ घ अ̥ | " बाघ "

{ ख } स्पर्श संघर्षी - च, छ, ज, झ तथा झ अघोष तथा सघोष, अल्पप्राण तथा महाप्राण जिह्वाग्र - तालव्य } ध्वनियाँ है । / च / तथा / ज / द्वित्व होने पर तथा /छ/ तथा / झ / के पूर्व प्रयुक्त होने पर प्रथमांश स्पर्श ध्वनि रूप में - उच्चारित होते है । जिह्वाग्र - तालव्य स्पर्श ध्वनियों में परिवर्तन हो जाते हैं । अन्यथ इनके रूपों मैं अन्तर उपस्थित नहीं होता ।

/ च / = / च / /च /

= { च } जिह्वाग्र - तालव्य स्पर्श है जिसका प्रयोग / च / अथवा / छ / के पूर्व होता है ।

जैसे - / बच्चा / = { ब अ च च आ } " बच्चा "

= { च } का प्रयोग अन्यत्र होता है ।

जैसे :

/ चार / = { च आ र अ } " चार "

/ चोर / = { च ओ र अ } " चोर "

/ कीच / = { क् ई च अ } " कीचड "

/ ज / - = { ज } { ज }

= { ज } का प्रयोग { ज } तथा { झ } से पूर्व होता है

जैसे -

/ धज्जा / = { ध अ ज ज् आ } " एक नाम "

= { ज } का प्रयोग अन्यत्र होता है ।

जैसे -

/ जाडो / = { ज आ ड ओ } " मोटा "

/ गाजर / = { ग आ ज र अ } " गाजर "

/ छ / - इसका प्रयोग केवल पद के आदि और मध्य में होता है ।

जैसे -

/ छैंळी / = { छ ऍं ळ ई } " छाया "
/ पाछा / = { प् आ छ् आ } " पीछे "

/ झ / - का प्रयोग भी पद के आदि और मध्य में होता है ।

जैसे -

/ झोल / = { झ ओ ल् अ } " ताडी के पेड "
/ सांझ / = { स आं झ अ } " संध्या "
/ भांझ / = { भ आँ झ अ } " तोड "

/ ग / ऊष्म व्यंजन :

/ स / - यह जिह्वाग्रीय, पश्च - दन्त्य उष्म व्यंजन है । जीभ का अग्रभाग ऊपर के मसूडे के विरुद्ध क्रियाशील रहती है । इसका प्रयोग पद के आदि में स्वर और व्यंजन के मध्य में, दो स्वरों के बीच तथा एक ही शब्द के पृथक उच्चारण में, बलाघात हीन रूप में पद के अन्त में होता है ।

जैसे -

/ साकी / = { स आ क ई } " कथा "
/ फसगी / = { फ अ स ग ई } " फस गई "
/ मस्ती / = { म अ स त ई } " मस्ती "

/ ह / - यह कंठ्द्वारीय संघर्षी ध्वनि है । इसके दो संस्वनात्मक वैकल्प पाए जाते हैं । अपने सघोष रूप में यह पद के आदि में और स्वर मध्यवर्ती होने पर प्रयुक्त होता है - और उच्चारान्त होने पर इसका घोषत्व लुप्त होकर अघोष हो जाता है । =

{ ह }   { ह }

{ ह् } यह कंठ्द्वारीय अघोष स्वनग्राम उच्चारान्त प्रयुक्त होता है ।

जैसे -

/ काह / = { क् आ ह } " क्यों "

{ ह } यह कंठ्द्वारीय सघोष स्वनग्राम - पद के आदि या स्वर मध्यवर्ती होने पर होता है ।

जैसे -

/ हाती / = { ह आ त ई } " हाथी "
/ साहू / = { स आ ह उ } " निर्दोष "

{ ङ } नासिक्य व्यंजन :

/ म / यह द्वयोष्ठ्य नासिक्य व्यंजन है । यह पद के आदि और मध्य में प्रयुक्त हो सकता है ।

जैसे -

/ मैला / = { म् ऐ ल आ } " मैल "
/ माल / = { म् आ ल् अ॒ } " माल "
/ नाम / = { न् आ म् अ॒ } " नाम "

/ न् / यह दन्त्य नासिक्य है । इसके चार संस्वनात्मक वैविध्य माने जा सकते हैं - { न } दन्त्य नासिक्य है । इसके उच्चारण में जिह्वा की क्रिया और स्थिति / त / के समान रहती है । / ण् / पश्च - वर्त्स्य नासिक्य है । जीभ की स्थिति / ट / के ट के उच्चारण जैसी रहती है । { ञ } तालव्य - नासिक्य है । { ङ कण्ठ्य नासिक्य है । इनका प्रयोग इस प्रकार है ।

{ न } का प्रयोग पद के आरम्भ में, स्वर मध्यवर्ती होने पर तथा स्वर के पश्चात् /ट /, / द /, / ध /, / घ / के पूर्व होता है । जैसे -

/ नर / = { न अ र अ } " आदमी "
/ नारू / = { न आ रु ऊ } " एक प्रकार का रोग "
/ तणका / = { त् अ ण क आ } " तिनका "
/ वान्दर / = { व अ न द र अ } " बन्दर "
/ कान्धो / = { क् आ ध ओ } " कन्धा "

{ ण } का प्रयोग केवल स्वर और मूर्धन्य व्यंजनों के पूर्व होता है । जैसे -

/ काण्टा / = { क आ ण ट् आ } " केश में पहनने का एक गहना"

{ } का प्रयोग स्वर और तालव्य स्पर्श संघर्षियों के बीच में होता है । जैसे -

/ च चला / = { च अं च ल आ } " चैंचु जाति का "

{ङ् } का प्रयोग स्वर और कण्ठ्य स्पर्श व्यंजनों के बीच में होता है ।

{ण} का प्रयोग केवल स्वर और मूर्धन्य व्यन्जनों को के पूर्व होता है ।

जैसे -

/काण्टा/ = { क् आ ण ट् आ } "कान में पहनने का एक गहना"

{ } का प्रयोग स्वर और तालव्य स्पर्श संघर्षियों के बीच में होता है ।

जैसे -

/चन्चल/ = { च अं ञ् च ल् आ } "चैचु जाति का"

{ङ•} का प्रयोग स्वर और कण्ठ्य स्पर्श व्यन्जनों के बीच में होता है ।

जैसे -

/गंगा/ = { ग् अं ङ ग् आ }

/म्ह/ तथा /न्ह/ महाप्राण रूप है ।

जैसे -

/कम्ह/ = { क् अ म्ह ए } "पास

/तम्हारो/ = { त् अ म्ह आ र ओ } "तुम्हारा"

...

1.23 व्यन्जन संयोग :

/पत/	/लपुती/	"सीढी"
/पड़/	/कपुड़ा/	"कपड़ा"
/ पन /	सपुनो /	"सपना "
/ पल /	/ चेपुलू /	" चप्पल "
/ पर /	/ टोपुरो /	" खोपरा "
/ पय /	/ रपुया /	" रुपया "
/ टप /	/ चट्पट /	" तुरन्त "
/ टट /	/ कट्टू /	" दाल का पानी "
/ तत /	/ सत्ती /	" सती "
/ टक /	/ वतकुडी /	" हाथकडी "
/ टड़ /	/ वेटुड़ /	" दूल्हा "
/ तम /	/ अतमार /	" पत्थर मारो "
/ तन /	/ जीतनो /	" जीतना "
/ टल /	/ कोटुली /	" थैली "
/ टरो /	/ कटरा /	" मछली "
/ तव /	/ दीतवार /	" रविवार "
/ तय /	/ तयार /	" तैयार "
/ टत /	/ कटनो /	" कटना "
/ टल /	/ गट्ला /	" पहाड "
/ चत /	/ सोचताणी /	" सोचकर "
/ चच /	/ कच्ची /	" छाती "
/ चक /	/ चचकड /	" उछलना "

/ चठ /	/ पूचठी /	"पूंछ "
/ चम /	/ लचमण /	" लक्ष्मण "
/ चन /	/ वेचणो /	" बेचना "
/ चड़ /	/ कचोड़ी /	" कटोरी "
/ चय /	/ लुच्या /	" बदमाश "
/ कत /	/वकत /	" समय "
/ चल /	/ काचली /	" नारियल का आधा भाग"
/ क्क /	/ मक्का /	" मक्का "
/ कड़ /	/ हेकेडाइ /	" गर्व "
/ कस /	/ नुकसाण /	" " नष्ट "
/ कल /	/ एकलो /	" अकेला "
/ नक /	/ मनक्या /	" आदमी "
/ कण /	/ टोकणी /	" गगरी "
/ कळ /	/ साकळी /	" " जंजीर "
/ कर /	/ डोकरी /	" बूढ़ी "
/क्ष /	/ लक्षा /	" अक्षांश "
/ क्य /	/ भूक्या /	" भूकिया गोत्र "
/ बत /	/ बाबताणी /	" बाबकर "
/ डूक /	/लाडूकी /	" तेल डालने का फूम"
/ डुन /	/ गाडुणो /	" गढ़ना "
/ डर /	/ कडरो /	" निकालना "
/ जत /	/ भोजतो /	" भोगता "
/ जम /	/ अजुनो /	" अजवान ?
/ जव /	/ वज्जो /	" ओर "

/ गट /	/ घूंघटो /	* घूंघट *
/ गल /	/ कागला /	* कौआ *
/ टँगर /	/ टुकरी /	* चुनरी *
/ गव /	/ भगुवान /	* भगवान *
/ गथ /	/ अध्यारकूटा /	* जुगनू *
/ स्ट /	/ कस्टा /	* कष्ट *
/ स्क /	/ मस्करी /	* मज़ाक *
/ स्स /	/ कस्सो /	* कैसी *
/ स्म /	/ किस्मत /	* किस्मत *
/ स्न /	/ मिस्नी /	* मशीन *
/ स्ल /	/ फैस्ला /	* फैसला *
/ न्ठ /	/ तान्डो /	* बनजारों की बस्ती *
/ ण्ग /	/ गोण्णी /	* पत्नी *
/ न्ग /	/ अन्गार /	* अंगार *
/ ल्त /	/ गल्ती /	* गलती *
/ ल्द /	/ जल्दी /	* तुरन्त *
/ ल्म /	/ गल्मा /	* ज्वार *
/ ल्ग /	/ अल्गु /	* झोपडे की एक लकड़ी *
/ ल्न /	/ लाल्नो /	* परोसना *
/ ल्ल /	/ तल्ली /	* तिल *
/ ल्र /	/ बोल्रो /	* बोलना *
/ ल्प /	/ सल्पा	* पतला पत्थर *
/ ल्त /	/ घाल्ताणी /	* डालकर *

/ ल्ट /	/उल्टो /	"उल्टा "
/ ल्ल /	/ छल्लो /	" रोटी बांधने का कपड़ा "
/ छ्ड़ /	/ पछ्ड़ /	" सांप "
/ ल्ल /	/ छल्ला /	" अंगूठी "
/ ग्न /	/ चक्ग्नो /	" चुगना "
/ क्र /	/ बकरो /	" जलना "
/ क्व /	/ तक्वा /	" तलवा "
/ र्च /	/ खर्चो /	" खर्चा "
/ र्क /	/ / पर्को /	" पारको "
/ र्ब /	/ कारबारी /	" कार्य करनेवाला "
/ र्द /	/ मर्दा /	" शव "
/ र्ज /	/ मर्जी /	" इच्छा "
/ र्ग /	/ कर्गो /	" कर दिया "
/ र्स /	/ आर्सो /	" दर्पण "
/ र्म /	/ गर्मी /	" गर्मी "
/ र्न /	/ ओर्नाई /	" उसके जैसा "
/ र्ल /	/ गर्लो /	" गिलहरी "
/ र्र /	/ गर्रो /	" गलरहा "
/ व्त /	/पाव्तो /	" प्रमाण-पत्र "
/ व्ड़ /	/ ताव्ड़ो /	" धूप "
/ व्ण /	/ आव्णो /	" आना "
/ च्च /	/ नच्चद /	" बच्चे "
/ व्य /	/ व्यापार /	" व्यापार "
/ यक /	/ नायक /	" मुखिया "

/ सब /	/ कसूरो /	* कोसना *
/ सव /	/ पर्सवाडी /	* पसली *
/ सय /	/ कसया /	* कैसी *
/ मत /	/ समताणी /	* बरदाश करके *
/ मध /	/ चमधा /	* चमदा *
/ मक /	/ चक्मक /	* चमकदार *
/ मद /	/ नामूदार /	* नामवाला *
/ [illegible] मब /	/ उम्बा /	* धाम *
/ मड़ /	/ गुमड़ी /	* फुन्सी *
/ मज /	/ समूजात /	* समझाकर *
/ मस /	/ समूसार /	* गृहस्थी *
/ मन /	/ समूनक /	* सामने *
/ मल /	/ हेमूला /	* एक नाम *
/ मर /	/ धमूरा /	* चुप *
/ मय /	/ रमूया /	* खेलेंगे *
/ नत /	/ आन्तर /	* अंतड़ी *
/ नद /	/ उनूदर /	* चूहा *
/ नज /	/ पोनूजन /	* पायल *
/ नन /	/ कनूना /	* कब *
/ नय /	/ चोनूया /	* एक नाम *
/ नक /	/ आनूको /	* आंखे *
/ तद /	/ कतदोरी	* करधनी *
/ यथ /	/ पयूथा /	* चक्र *
/ णकुब /	रणुकुबा /	* भीरू *
/ मपल /	/ पीम्पलेरो /	* पीपल का *

/ नतर /	/ सनूवरा /	" संतरा "
/ तड़र /	/ तानूड़री /	" औरत "
/ नक्य /	/ मनूक्या /	" आदमी "
/ नक्य / / गूतक्या /		" अन्य जाति का व्यक्ति"
/ पक्य /	/ चोपक्या /	" लगाना "
/ टक्य /	/ खटक्या /	" बकरा या बकरी काटनेवाला"
/ हमय /	/ पटलूया /	"गाँव का मुखिया "
/ कक्य /	/ ढोक्स्या /	" एक प्रकार की मछली "
/ रसर /	/ घट्सूरो /	" बरदाश कर रहा है "

ऊपर के विवरण से यह स्पष्ट होता है कि परिनिष्ठित हिन्दी के निम्नलिखित ध्वनि ग्राम नहीं मिलते ।

{ ङ. } { } { ण } {ष }

कुछ ऐसे ध्वनिग्राम है जो परिनिष्ठित हिन्दी में नहीं मिलते : { क } { न्ह } { रह } शेष ध्वनिग्राम हिन्दी के समान ही है । { क } ध्वनि राजस्थानी के समान है । महाप्राण ध्वनिग्राम बनाजारी में दुर्बल है ।

: :

चतुर्थ अध्याय : .. ..

पद विचार

0. <u>पद-विचार :</u> ....

प्रस्तुत अध्याय में "नाम" की संरचना और उसके व्युत्पादन पर विचार किया गया है । व्याकरणिक दृष्टि से बनजारा बोली के "नाम" के अन्तर्गत संज्ञा, विशेषण, कृदन्त सम्मिलित किये जा सकते हैं । संज्ञा के स्थानापन्न सर्वनामों तथा क्रियार्थक संज्ञा पर भी यहाँ विचार किया गया है । अध्याय के अन्त में परसर्गों का विवरण प्रस्तुत किया गया है ।

इस अध्याय में पदग्रामात्मक लेख के लिए तथा मौन के लिए चिह्न का प्रयोग किया गया है । =व्यंजन; =स्वर । अन्य शब्द स्थानापन्न स्वतन्त्र वैविध्य ।

1. <u>संज्ञा की प्रत्यायात्मक संरचना :</u>

संज्ञा की संरचना में पूर्व प्रत्यय अन्त्य प्रत्ययों का प्रयोग होता है ।

1.1. <u>पूर्व प्रत्यय या उपसर्ग :</u>

पूर्व प्रत्ययों का प्रयोग केवल संज्ञा के साथ होता है । संज्ञा के साथ प्रयुक्त होनेवाले पूर्व प्रत्यय अर्थ की दृष्टि से हीनार्थक, श्लाघार्थक, निरोधार्थक, स्वार्थक, परार्थक और संख्यार्थक हो सकते हैं ।

1.1.1. हीनार्थक पूर्व प्रत्यय ये हैं - {-अ} {-बे}

/अकाळ/ अकाल
/अपचार/ अपशकुन
/बेदाड़/ बुरे दिन
/बेटेम/ बुरा टाइम
/बेजाग/ बुरा स्थान
/बेगण/ बुरा गुण
/बे हेवा/ बुरी आदत

1.1.2. श्लाघार्थक पूर्व प्रत्यय - {स-}

/सपूत/ सुपुत्र
/सकरम/ सकर्म
/सकाळ/ अच्छा समय

1.1.3. निरोधार्थक पूर्व प्रत्यय - {अ-}

/अधरम/ अधर्म
/अन्याय/ अन्याय

1.1.4. स्वार्थकपूर्व प्रत्यय - {अप-}

/अपकाज/ "स्वकार्य"
/अपड़र/ आत्म-भय

/अपव्यास/ स्वच्छा

/अपघात/ आत्म हत्या

1.1.5. परार्थक पूर्व प्रत्यय – { पर- }

/परलो/ "दूसरे का"

/परदेस/ "पराया देश"

/परकाज/ "दूसरों का घर"

/परघोर/ "दूसरे की औरत"

/परधन/ "दूसरे का धन"

/परबात/ "दूसरे की बात"

1.1.6 संख्यार्थक पूर्व प्रत्यय :

ये प्रत्यय संख्यावाचक शब्दों के ही विकृत रूप है : /अक/, /दु/, /ति/, /चो/, /पंच/, /सत/ । उदाहरण इस प्रकार है –

/अक्कोस/ "एककोस"

/दुगुणा/ "दुगना"

/तिगुणा/ "तिगुना"

/चोगुणा/ "चोगुना"

/पंचमेळ/ "पांच प्रकार के अन्नाओं अनाजों का मिश्रित रूप"

/सतरंग/ "सात रंग"

/सतबात/ "सत्य वचन"

छ: और नो शब्द ज्यों के त्यों प्रत्यय के रूप में आते हैं । जैसे –

/छोवणा/ "छः गुना"
/नोवणा/ "नौ गुना"

1.2. अन्त्य प्रत्यय :

इनमें प्रमुख लिंग और वचन के प्रत्यय हैं। इनका प्रयोग संज्ञा, विशेषण, तथा कृदन्त के साथ होता है। कुछ प्रत्यय शुद्ध लिंग या जातिबोधक है तथा कुछ शुद्ध वचन। कुछ प्रत्यय उभयार्थ बोधक है, जिनमें लिंग और वचन दोनों की ही सूचना मिलती है। इनके अतिरिक्त अन्य प्रत्यय है, जिनसे विभिन्न अर्थों का बोध होता है।

1.2.1. लिंग प्रत्यय :

संज्ञा और विशेषणों के साथ प्रयुक्त होने पर ये लिंग का ही बोध करते हैं और कृदन्त के साथ प्रयुक्त होने पर स्त्री लिंग की सूचना देते हैं। तथापि वचन द्योतक प्रत्यय भी इनके पश्चात् संयुक्त हो जाते हैं।

1.2.11 पुलिंग अन्त्य प्रत्यय :

/-अ/, /-आ/, /-उ/, /-ओ/, /-ई/, /-वाड़िया/, /-दार/, /-खोर/। इनके प्रयोग के उदाहरण निम्नलिखित है :-

क – अन्त्य प्रत्यय : |-अ|

/राज्-/ + |-अ| = /राज/ "राजा" सं.पु. एक. |
/वाग्-/ + |-आ| = /वाग/ "बाघ" सं. पु. एक. |
/जेठ्-/ + |-अ| = /जेठ/ "जेठ" सं.पु. एक. |
/पकड्-/ + |-अ| = /पकड/ "साँप" सं.पु.एक. |

/रींछ्-/ + ।-अ। = /रींछ/ "भालू" सं. पु. एक. ।

/वांदर्-/+ । -अ।= /वांदर/ "बंदर" सं.पु.एक. ।

/वणूत्-/ + । - अ । = / वणूत / "लंगूर" सं.पु. एक. ।

/ऊंदर्-/ + । -अ । = / ऊंदर / "चूहा" सं.पु.एक. ।

ख अन्त्य प्रत्यय ।-आ । -

/काक्- /+ ।-आ । = /काका/ " चाचा" सं.पु.एक. ।

/ छोट्-/+ । -आ । = / छोरा / "लड़का" सं.पु.एक. ।

/ससय् / + ।-आ । = / ससया / " खरगोश" सं.पु.एक. ।

/ केल्ड्-/ + ।-आ । = / केल्ड़ा / " बछड़ा" सं.पु.एक. ।

/मिटक्-/ + ।-आ। = / मिटका / " मेंढक" सं.पु.एक. ।

/ पौल्- / + ।-आ । = / पौला/ " बच्चा " सं.पु.एक.।

/ माम्- / + ।- आ । = / मामा / " मामा" सं.पु.एक. ।

/राम्-/ + ।-आ । = / रामा / "राम" सं.पु.एक. ।

/ भीम-/ + ।-आ । = / भीमा / "भीमा" सं.पु.एक. ।

ग <u>अन्त्य प्रत्यय । - ई ।</u>

/साथ-/ + । -ई । ≠ साथी/"साथी" सं.पु.एक. ।

/पुजार् -/ + ।-ई। = /पुजारी/ " पुजारी " सं.पु.एक. ।

/ धोब्- / + । -ई । = / धोबी / " धोबी " सं.पु.एक. ।

/मोच्- / + । -ई। = / मोची / "मोची " सं.पु.एक. ।

/ पाप् -/ + ।-ई। = /पापी / " पापी " सं. पु. एक. ।

/ धरम्- / + ।-ई । = / धरमी / " दानी " सं.पु.एक. ।

/नाव्-/ + । -ई । = / नावी / " नाई" सं.पु.एक. ।

/ दरज्- / + ।-ई। = / दरजी / " दर्जी" सं.पु.एक. ।

घ- अन्त्य प्रत्यय । -ऊ ।

/आंसु -/ + । -ऊ । = / आंसू / " आंसू " सं.पु.एक. ।

/चाकू- / + ।- ऊ । = / चाकू / " चाकू " सं.पु.एक. ।

/बट् - / + ।-ऊ । = /बटू / " अँगूठी " सं.पु.एक. ।

/ साधु- / + । -ऊ । = / साधू / "साधु" सं.पु. एक. ।

/रामू- / + । -ऊ । = / रामू / " राम " सं.पु.एक. ।

/ लालू - / + ।-ऊ । = / लालू / " लालू " सं.पु.एक. ।

/काळु -/ + ।-ऊ । = / काळू / " कालू " सं.पु.एक. ।

/ साडु- । + । -ऊ । = / साडू / " साडू " सं.पु.एक. ।

ङ. अन्त्य प्रत्यय । - वो ।

/ ब्यान्- / + ।-वाड्या । = / ब्यान वाड्या/ "बाजेवाला सं.पु.एक।

/मेहतर-/ +।-वाड्या। = /मेहतरवाड्या/ "भंगी" सं.पु.एक. ।

/मोची-/ + । -वाड्या।= /मोचो वाड्या/"चमार" स.पु.एक.।

/गाम-/ + ।-वाड्या। = /गामवाड्या/ " गाँववाला" सं.पु.एक.

/पोलिस-/ + ।-वाड्या। = / पोलिस वाड्या/ "पुलिसवाला" सं.पु.एक

/गोला-/ + ।-वाड्या। = /गोलावाड्या/"गड़रिया" सं.पु.एक.।

छ. अन्त्य प्रत्यय । -दार ।

/काम-/ + ।-दार। = /कामदार/ "कामवाला" सं.पु. एक. ।

/दोस्ती-/ + ।-दार । = /दोस्तीदार/ "मित्र" सं.पु.एक. ।

/~~चौकी-/~~ + । -दार । = /दकानदार/ "दुकानवाला" सं.पु.एक. ।

/दकान-/

/चौकी-/ + । -दार । = /चौकीदार/ "पहरेदार" सं.पु. एक. ।

/नेकी-/ + ।-दार। = /नेकीदार/ "अच्छा आदमी" सं.पु. एक. ।

ज <u>अन्त्य प्रत्यय । -खोर ।</u>

/जादू-/ + ।-खोर । = /जादूखोर/ "जादूवाला"

/हराम-/ + ।-खोर । = /हरामखोर/ "हरामखोर"

1.212 <u>स्त्री लिंग अन्त्य प्रत्यय :</u>

स्त्रीलिंग अन्त्य प्रत्यय छः है । वे इस प्रकार है -

/-ई/, /-णी/, /-ण/, /-डी/, /-टी/,

पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग में परिवर्तन करने के लिए उपयुक्त प्रत्ययों को काम में लाया जाता है। इसके उदाहरण इस प्रकार है -

<u>अन्त्य प्रत्यय ।-ई ।</u>

/छोर-/ + । -ई । = /छोरी/ "लड़की" सं. स्त्री. एक. ।

/काक्-/ + । -ई । = /काकी/ "चाची" सं. स्त्री. एक. ।

/माम-/ + । -ई । = /मामी/ "मामी" सं. स्त्री. एक. ।

/गोरल्-/ + ।-ई । = /गोरली/ "भेड़" सं. स्त्री. एक. ।

/वांदर-/ + ।-ई । = /वांदरी/ "बंदरिया" सं. स्त्री. एक. ।

/कुत्र-/ + ।-ई । = /कुत्री/ "कुतिया" सं. स्त्री. एक. ।

/कूकड़-/ + ।-ई । = /कूकड़ी/ "मुर्गी" सं. स्त्री. एक. ।

/मिटक्-/ + ।-ई। = /मिटकी/ "मेंढ्क" सं. स्त्री. एक. ।

/कचोळ्-/ + । -ई । = /कचोळी/ "कटोरी" सं. स्त्री. एक. ।

/झूंपड्-/ + ।-ई । = /झूंपड़ी/ "झोपड" सं. स्त्री.एक. ।

/सीस्-/ + । -ई । = /सीसी/ "शीशा" सं. स्त्री.एक. ।

/चूड्-/ + ।-ई । = /चूड़ी/ "चूड़ी" सं.स्त्री. एक. ।

ख. अन्त्य प्रत्यय । -आणि । :

/जेठ् - / + । -आणि । = /जेठाणी/ "जेठाणी" सं. स्त्री.एक. ।

/देवर्-/ + । -आणि । = /देवराणी/ "देवरानी" सं. स्त्री. एक. ।

अन्त्य प्रत्यय ।-णी ।

/बामण-/ + ।-णी । = /बामणी/ "ब्राह्मणी" सं. स्त्री.एक. ।

/सनार/ + ।-णी । = /सनारणी/ "सोनारनी" सं. स्त्री.एक. ।

/चोर-/ + । -णी । = /चोरणी/ "चोरनी" सं.स्त्री. एक. ।

/पाप-/ + 2-णी । = /पापणी/ "पापी" सं. स्त्री.एक. ।

ग. अन्त्य प्रत्यय ।-ण । :

/मोच-/ + ।-ण । = /मोचण/ "मोचिन" सं.स्त्री. एक. ।

/धोब-/ + ।-ण । = "धोबिन" सं. स्त्री. एक. ।

/नाव-/ + ।-ण । = ड /नावण/ "नाविन" सं. स्त्री. एक. ।

/सवत-/ + । -ण । = /सोवतण/ "सहेली" सं. स्त्री. एक. ।

/कोमट-/ + ।-ण । = /कोमटण/ "बनिया की औरत" सं.स्त्री.एक.

घ अन्य प्रत्यय ।-ड़ी । :

/रोंघ-/ + । -डी । = /रोंघडी/ "रोधनी" सं. स्त्री.एक. ।

/भूल-/ + ।-ड़ी । = /भूलड़ी/ "भूलनी" सं. स्त्री. एक. ।

ङ. अन्त्य प्रत्यय । -री । :

/तांड-/ + ।-री । = /तांडरी/ "औरत" सं. स्त्री.एक. ।

/पाद-/ + ।-री । = /पादरी/ "फल बेचनेवाली" स्त्री" सं.स्त्री. एक. ।

प्रयोग स्थितियाँ : उक्त स्त्री लिंग प्रत्ययों में । -आणी ।, । -णी ।, । -ण ।, ।-ड़ी । तथा ।-री । वाले रूपों का प्रयोग संज्ञा तथा विशेषणों तक सीमित है । कृदन्तों के साथ केवल । -ई । का प्रयोग होता है । जो विशेषण या संज्ञाएं इन स्त्री लिंग प्रत्ययों से रहित होने के कारण जाति का बोध नहीं कराते उनको जाति कृदन्त की स्थिति पर आने पर ही हो सकता है ।

2. वचन प्रत्यय :

वचन प्रत्य की दृष्टि से शब्दों को दो भागों में बांटा जा सकता है । एक तो वे शब्द जिनका मूल रूपों में भी बहुवचन प्रत्ययों का प्रयोग होता है और दूसरे वे जिनके साथ बहुवचन प्रत्यय केवल तिर्यक रूपों के साथ प्रयुक्त होता है ।

2.11 मूल रूपों के साथ बहुवचन प्रत्यय :

यदि संज्ञा शब्द - ओ प्रत्य है तो उसका मूल बहुवचन -ए प्रत्यय से युक्त होगा । जैसे :- / चीतो/ एक /चीते/

बहुवचन - ओ प्रत्यय पुल्लिंग एक वचन का होता है । इस प्रकार
- ए प्रत्यय पुल्लिंग बहुवचन का द्योतक हो जाता है ।

यह प्रत्यय व्यवस्था क्रिया के साथी मिलती है जैसे / गो / " गया " तथा / गे / " गये " इसपर यथा स्थान विचार किया गया है । तिर्यक बहुवचन संरचना में ओकारान्त शब्द एकारान्त ही हो जाते हैं । इस रूप रचना को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है । केवल तिर्यक रूपों के साथ प्रयुक्त बहुवचन प्रत्यय संज्ञा के तिर्यक रूप वे हैं जो कारक चिह्नों के पहले प्रयुक्त होते हैं ।

2.112 केवल तिर्यक रूपों में बहुवचन प्रत्यय है - ओ प्रत्यान्त संज्ञा पदों के अतिरिक्त जितनी भी संज्ञाएं है सभी के मूल एकवचन और मूल बहुवचन रूप रूप समान रहते हैं । केवल तिर्यक रूपों के साथ । - ऊं । प्रत्यय जोड़कर बहुवचन रूपों की रचना की जाती है ।साथ ही तिर्यक बहुवचन प्रत्यय । -ऊं । स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दोनों ही के साथ प्रयुक्त होता है । नीचे के उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो सकती है ।

मूल एक.	मूल बहु.	तिर्यक एक.	तिर्यक बहु.
/राज/ "राजा"	/राज/	/राज/	/राजूं/
/ गद्दा / "गधा"	/गद्दा/	/गद्दा/	/गद्दू/

। - ऊं । प्रत्यय ईकारान्त पुल्लिंग और स्त्री लिंग शब्दों के साथ यूं हो जाता है ।

3. कारक और विभक्ति :

बनजारा कारकों का विवरण इस प्रकार है :

कर्ता -	न	" ने "		
कर्म :	न - एक	" को "		
करण :	ती ~ एती - " से"			
सम्प्रदान	- न ~ वास्ता	को, के लिए "		
अपादान	तो ~ एती	" में " - पर	" पर "	।-एक पर।
अधिकरण	म ~ एम ~	" में" - पर	- पर	।-ए पर ।
सम्बन्ध	र ~ एर	" का "		

ऊपर की सूची से यह स्पष्ट होता है कि सम्बन्ध कारक की रचना विभक्ति मूलक है । जैसे -

/ काकार घर / " काका का घर ", / घरेर आदमी / " घर का आदमी, / हातोर पूछंडी / हाथी की पूंछ, / साधून् - चिमटा / " साधु का चिमटा, / घोडेर टांग / " घोडे के पैर " इस विभक्ति की रचना में एक संधि नियम दृष्टव्य है :

।-र । = /-र/, /-इर /

= / एर / का प्रयोग अकारान्त और - ओ प्रत्ययान्त संज्ञा शब्दों के साथ होता है । इस रचना में - ओ प्रत्यय का लोप हो जाता है ।

= /-र/ का प्रयोग अन्यत्र होता है ।

अन्य कारकों के प्रयोग से पूर्व संज्ञा शब्द अविकृत रहता है । केवल अकारान्त और - ओ प्रत्ययान्त संज्ञा शब्द कारकों के पहले एकारान्त हो जाते हैं । जैसे -

राज + - न = राजेन " राजाने " (कर्ता)
राज + - न = राजेन " राजा को " (कर्म)
राज + - ती = राजेती " राजा से " (करण)
राज + - न = राजेन " राजा को - (सम्प्रदान)
राज + - ती = राजेती " राजा से (अपादान)
घर + - ती = घरेती " घर से (अपादान)
घर + - म = घरेम " घर में (अधिकरण)
घर + - पर = घरे पर " घर पर (अधिकरण)
घोडो + - न = घोडेन " घोडे ने "(कर्ता)
घोडो + - न = घोडेन " घोडे ने " (कर्म)
घोडो + - तो = घोडेतो " घोडे से " (करण)
घोडो + - त = घोडेत " घोडे का (सम्प्रदान)
घोडो + - ती = घोडेती " घोडे से (अपादान)
घोडो + - म = घोडेम " घोडे में " (अधिकरण)
घोडो + - पर = घोडे पर " घोडे पर " (अधिकरण)

कर्ता, कर्म और सम्प्रदान में कारक चिह्न ध्वन्यात्मक रूप से समान है । अर्थात् इन सबमें / -न / का ही प्रयोग होता है । अर्थ का स्पष्टीकरण संदर्भ के अनुसार ही होताता है ।

4 सर्वनाम

यह वर्ग नाम के स्थानापन्न पदग्रामों का वर्ग है । " नाम " लिंग द्योतक प्रत्ययों से द्योतक होता है । सर्वनाम लिंग द्योतक में उदासीन रहता है । प्रयोग वितरण की दृष्टि से सर्वनाम दो भागों में विभक्त किये जा सकते हैं । संज्ञा के स्थानापन्न सर्वनाम तथा विशेषण के स्थानापन्न सर्वनाम ।

संज्ञा के स्थानापन्न सर्वनामों को रूप रचना की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है - एक / cv / तथा दो / cvc /

एकवचन संज्ञा का स्थानापन्न है तथा द्वितीय वर्ग बहुवचन संज्ञा का / क- /cv/ - के दो उपविभाग हो सकते है - म् - + स्वर तथा त् - + स्वर । इनमें से सर्वनामिक और म् - उत्तम पुरुष , त् मध्यम पुरुष का द्योतन करता है । इनके साथ संयुक्त स्वर ये हैं -

म् - + आँ
त् - + आ, ऊ, ओ

इस प्रकार म् - के साथ एक तथा त् के साथ तीन स्वरों का संयोग होता है । अत: सुषमा के लिए म के साथ एक शून्य की कल्पना करना समीचीन होगा । उनकी रूप रचना इस प्रकार होगी ।
। म् - । + / - ø/ - / म /
/ आँ / - / माँ /

। – तु – । + / – ई / – / तूं /
/–ओ / – / तो /

। – तु – । + /ऊ/ तथा । तु – । + / –ऊ / संज्ञा के मूल कारक के एक वचन रूप के स्थानापन्न है । इनकी स्थिति यह हो सकती है –
/+/ गो : जैसे

/मां गो/ "मैं गया"
/तु गो/ "तु गया"

शेष रूप संज्ञाओं के तिर्यक रूपों के स्थानापन्न हैं । इनका प्रयोग क्रम इस प्रकार है –

4.1. । म– ।, : – /+तो/ : /मातो/ "मैंने"
। तु –।, + :– /+ तो/ : /तूं तो/ "तूने"
। मु – । + अ : /+ म्न/ : /मम्न/ "मुझे"
। तु – । + ओ :/ + म्न/ : /तोम्न/ "तुझे"
। मु – । + अ :– /+म्नज/ : /मम्नज/ "मुझको"
। तु – । + ओ :– /+म्नज/ : /तोम्नज/ "तुझको"
। मु – । + ओ :– /–मां/ : /मोमां/ "मुझमें"
। तु – । + ओ :– /+मां/ : /तोमां। "तुझमें"
। मु – । + ओ :– /+ ती/ : /मोती/ "मुझसे"
। तु – । + ओ : /–तो/ : /तोतो/ "तुझसे"
। मु – । + आं :– /ऊ –रो/ : /मारो/ "मेरा"
। तु – । + आ : /–रो/ : तारो/ "तेरा"

इनमें से {1} कर्ता परसर्ग – तो {2}, {3}, {4}, {5} कर्म सम्प्रदान –म्न म्नज पूर्व, अधिकरण – मां तथा करण–अपादान – ती से पूर्व

पूर्व और {6} सम्बन्ध प्रत्यय - रो - के कुछ पूर्व प्रयुक्त होते हैं। सम्बन्ध सूचक प्रत्यय "नामक" के साथ प्रयुक्त होनेवाले लिंग वचन प्रत्यय ओ, ए तथा ई से युक्त होते हैं। अतः इन - रो, - रे, - री भिन्न विशेषणात्मक प्रत्ययों से युक्त, उक्त सार्वनामिक अंग विशेषणों के स्थानापन्न हो जाते हैं।

ख - /cvc/ - इस दृष्टि में प्रथम व्यन्जन ह - तथा त् - है। ह् - के साथ - अ, तथा त् के साथ ब स्वरों का प्रयोग होता है। अन्तिम व्यन्जन उभयनिष्ट है : - म्। इस विश्लेषण के आधार पर ह् - वाला रूप उत्तम पुरुष तथा त् - वाला रूप मध्यम पुरुष का वाचक माना जा सकता है। -म् बहुवचन का प्रतीक हो सकता है। पुरुष वाचक अंश के अंग माने जा सकते हैं। इन दोनों का अविकृत रूप से मूल तथा तिर्यक "नाम" के स्थानापन्न के रूप में प्रयोग होता है। पर सम्बन्ध सूचक - र से पूर्व इनके साथ आ का योग हो जाता है :

/हमा-/, /तमा-/ ऋ : जैसे
/हमारो/ "हमारा"
/तमारो/ "तुम्हारी" आदि।

इस रूप में यह वर्ग विशेषणों का स्थानापन्न हो जाता है। अन्य सभी रूपों में इनके प्रयोग के उदाहरण इस प्रकार है -

/हमतो/ "हमने"
/तुतो/ "तुमने"
/हमेन/ "हमको"
/तमने/ /तुको/ "तुमको"

/हमेती/ "हमसे"

/तमेती/ "तुमसे"

/हमूमा/ "हममें"

/तमूमा/ "ब "तुममें"

/हमपर/ "हम पर"

/तम/ "तुम पर"

आदरार्थक एकवचन में भी + "तम और हम का प्रयोग होता है ।

4.2. विशेषणों के स्थानापन्न – इस वर्ग के अन्तर्गत दो प्रकार के सर्वनाम मिलते हैं : प्रथम वर्ग उनका है जो वचन प्रत्ययों से संयुक्त होता है और दूसरे वर्ग में वे हैं जो वचन प्रत्यय से मुक्त रहते हैं ।

4.2.1. वचन प्रत्यय युक्त – वचन प्रत्यययुक्त सर्वनामों की रूप तालिका इस प्रकार है –

क – ज् – + – इ = /जि/ : समीपवर्ती एकवचन {मूल}

ज् – + – ए = /जे/ : समीपवर्ती बहुवचन {मूल}

ज् – + + – आ = /जा/ : समीपवर्ती एकवचन {तिर्यक}

ज् – + – ब इ + –न = /जिन्–/ : समीपवर्ती बहुवचन {तिर्यक}

ख – व – + – उ = /वु/ : दूरवर्ती एकवचन {मूल}

व – + – ए = /वे/ : दूरवर्ती बहुवचन {मूल}

व् – + – उ + आ = /वुआ/ = । व्या । : दूरवर्ती एकवचन {मूल}

व् – + – उ + न उ – + ø + न = /विन–/, /उन/ दूरवर्ती एकवचन {तिर्यक}

विवरणात्मक विश्लेषण की दृष्टि से । द् - । समीपता और । व् । दूरत्व बोधक हैं । । ज- । के साथ /-ई/ मूल एक. तथा /-ए/ मूल बहु. प्रत्ययों का योग होता है । । व्- । के साथ इन्हीं अर्थों के द्योतन क्रमशः /-उ/ तथा /-ए/ प्रयुक्त होते हैं । ये प्रत्यय तिर्यक एक. प्रत्यय /-उस/ तथा बहु. /-न/ के योग के समय सार्वनामिक अंगों के साथ संयुक्त रहकर प्रातिपदिक बनाते हैं । केवल /-आ/ से पूर्व शून्य और /-न/ से पूर्व - उ 7 - इ मिलता है । एक स्वतन्त्र वैविध्य /उन/ मिलता है । इस स्वतन्त्र वैविध्य की व्याख्या दो प्रकार से की जा सकती है :-

+ - उ + न् : । व् - ø ।
ø + + न् : १ -उ 7 ।

सूक्ष्मात्व की दृष्टि से यहाँ द्वितीय व्याख्या को ही अपनाया गया है । प्रयोग की दृष्टि से उक्त रूप संज्ञा के स्थानापन्न होने पर अन्य पुरुष एक. तथा बहु. का बोध कराते हैं । अन्य पुरुष के लिए बोली में अलावा सर्वनाम नहीं है । इस दृष्टि से इनका प्रयोग - गो की स्थिति में हो सकता है । विशेषणों के स्थानापन्न होने पर इनका प्रयोग संज्ञा से पूर्व विशेषणवत् हो सकता है : छोटा गो । इस स्थिति में "आयो" तथा /बु./ आदि दोनों ही प्रयुक्त हो सकते हैं । विशेषणों के समान संज्ञावत भी ये प्रयुक्त हो सकते हैं । आदरार्थक रूप में बहुवचन रूप प्रयुक्त होकर एकवचन आदरार्थक का बोध कराते हैं । तिर्यक रूपों का प्रयोग परसर्गों तथा कर्म - सम्प्रदान प्रत्यय इ से पूर्व होता है । जैसे - /व्याइ/ "उसको" /जाइ/ "इसको" /व्याने/ "उसने", /जाते/ "इसने आदि ।

15.2.2 वचन प्रत्यय युक्त - इनके भी दो वर्ग हो सकते हैं :

पूर्व प्रत्यय / क्- / से युक्त तथा अन्य । /क्-/ से युक्त रूपों की तालिका इस प्रकार है -

अ) /क्- / + - /उ-/ + /-ण् / = /कुण्-/ "कौन"

/क्-/ + -/ए-/ + /-न्/ = /केन-/ "किस"

आ) /क्-/ + /आँ/ + /ई/ = /काँई/ "क्या"

/क्-/ + /ए/ + /न्/ = केन "किस"

उक्त दोनों रूप रूप संरचना में समान है । दोनों का एक मूल रूप है तथा दूसरा तिर्यक रूप । दोनों में एक वैसादृश्य है :

(अ) के साथ /लो से सी / (स् - /+/ उसे ए ई /) संयुक्त होकर इस पद ग्राम को विशेषण बना सकते हैं, पर इस प्रकार की रचना (आ) की सम्भव नहीं है । दूसरा अन्तर की दृष्टि से है -

(अ) का प्रयोग व्यक्ति या सजीव के लिए होता है; केवल /-स्-/ - प्रत्यय से युक्त होकर सजीव तथा निर्जीव दोनों के लिए प्रयुक्त हो सकता है । (आ) का प्रयोग व्यक्ति या सजीव के लिए नहीं हो सकता : किसी वस्तु या निर्जीव तक इसका प्रयोग सीमित है ।

अर्थ द्योतन की दृष्टि से । क् - । प्रश्नवाचक /-ओ/ "व्यक्ति सूचक है जो /-ण/ से पूर्व /-ओ-/ हो जाता है । /-ण/ तिर्यक विधायक पदांश है । (आ) में प्रश्नवाचक पदांश समान है । वस्तुवाचक /-अा/ है जो तिर्यक विधायक /-ए/ से पूर्व /-आ/ हो जाता है । इसके साथ तिर्यक विधायक /-ए/ प्रयुक्त होता है । तिर्यक रूपों का प्रयोग परसर्गों से पूर्व होता है । /कुण/ "कौन", /केनां/ "किसको", /केती/ "किससे", /के पर/ "किस पर", आदि । इसी प्रकार /कुणतो/ "किसने"

/केना/ "किसको", /केती/ "किसने", /के मां/ "किसमें" आदि ।

वचन प्रत्यय युक्त अन्य सर्वनामों को रूप रचना की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है - मूल तथा तिर्यक दो रूप ग्रहण करनेवाले तथा अव्यय रहने वाले । अव्ययक सर्वनामों का प्रयोग इस स्थिति में होता है : जो - सो /वु-/ इस स्थिति में प्रथम वर्ग के सर्वनाम प्रयुक्त नहीं हो सकते । यह द्वितीय वर्ग सम्बन्धी या नित्य सम्बन्धी रूप है । । जो । तथा । सो । का प्रयोग संज्ञा तथा विशेषण दोनों के स्थानापन्न के रूप में हो सकता है :

जैसे - आदमी की स्थिति में विशेषण और । - जो । एक दूसरे के स्थानापन्न हैं : /आछो आदमी/ "अच्छा आदमी" /जो आदमी/ "जो आदमी" । इसके अतिरिक्त - गो की स्थिति में प्रयुक्त होकर संज्ञा का स्थानापन्न हो सकता है :

/आदमी गो/ "आदमी गया था"
/जो गो/ "जो गया था"
/ सो / तथा /वु/ में स्वतन्त्र वैविध्य मिलता है ।

दो रूप ग्रहण करनेवाले सर्वनाम ध्वन्यात्मक रूप से दो विभागों में विभक्त हो सकते हैं । /क्-/ पर आधारित रूप और /व्-/ पर आधारित रूप । /क्-/ पर आधारित सर्वनामों का गठन दो प्रकार का है : {1} /cvv/ तथा {2} /cvcv/ । /cvv/ की रूप-तालिका इस प्रकार है -

/कोई/ मूल कारक रूप "कोई"
/के / तिर्यक रूप "किसी"

तिर्यक रूप का प्रयोग परसर्ग के पूर्व होता है : /केन/ "किसी को"

/केती/ "किस से", /के मां/ "किस में", /के पर/" किस पर ।

प्रयोग वितरण की दृष्टि से यह रूप व्यक्ति वाचक संज्ञा का स्थानापन्न हो सकता है :- बोधी की स्थिति में /आदमी/ तथा /कोई/ दोनों ही आ सकते हैं । /आदमी बोलो/ "आदमी बोला" /कोई बोलो/ "कोई बोला" । आदमी कि की स्थिति में प्रयुक्त होने से यह विशेषण का स्थानापन्न हो सकता है । अर्थ की दृष्टि से यह सर्वनाम अनिश्चय के हो द्योतक है । अर्थ की दृष्टि से एक बात विशेष रूप से द्रष्टव्य है : /कोई/ का प्रयोग जब संज्ञा के स्थान पर होता है, तो एक. तथा बहु. दोनों में हो सकता है : /कोई बोलो/ "कोई बोला" /कोई बोले/ "कोई बोले"

विशेषण के स्थान पर यह सर्वनाम केवल एक वचन के रूप में प्रयुक्त हो सकता है :

/कोई आदमी बोलो/ "कोई आदमी बोला"

बहुवचन के द्योतन के लिए /थोडा/ का प्रयोग किया जाता है, जिसका विवरण आगे दिया जा रहा है । तिर्यक रूप सदा ही एक वचन है ।/कोई/ के स्थान पर /कोई न/ बहु., /कोई/ एक., तथा /के तो/ [तिर्यक बहु.] का भी प्रयोग हो सकता है । यह रूप व्यक्ति सूचक संज्ञा के एक. तथा बहु. दोनों रूपों में प्रयुक्त हो सकते हैं । /cvcv/ की रूप रचना क एक वचन तथा बहु वचन की है । यह पदग्राम /थोड़ा/ "कुछ" है । इसका बहुवचन रूप /-सेक/ बहुवचन प्रत्यय के योग से सम्पन्न होता है : /थोड़ सेक/ "कुछ लोग" । पदग्राम का मूल रूप का प्रयोग एक वचन रूप में भी हो सकता है और बहुवचन के रूप में भी । पर एक वचन में यह व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का स्थानापन्न न होकर वस्तु या निर्जीव पदार्थ वाचक संज्ञाओं का ही स्थानापन्न हो सकता है । बहुवचन रूप में यह व्यक्तिवाचक संज्ञा के

बहुवचन रूप का ही स्थानापन्न हो सकता है । जैसे - /थोडा बोले/ {उनमें से} "कुछ बोले" । तिर्यक बहुवचन रूप /थोडसेक/ पदार्थवाची संज्ञाओं का स्थानापन्न होता है; कभी व्यक्तिवाचक का बोध भी कराता है: / थोड सेक बोले/ "कुछ ने कहा" । /थोड़ा/ के स्थान पर /थोड़ास/ "कुछ" तथा /थोडासस्सेक/ "कुछ" {तिर्यक बहुवचन} का प्रयोग भी होता है । इन बहुवचन मूल और तिर्यक रूपों का प्रयोग व्यक्तिवाचक बहुवचन तथा वस्तुवाचक बहुवचन दोनों के लिए सम्भव है: /थोड़ास बोले/ "कुछ बोले" /थोड़ास ई घटे माँ मेले चा/ "कुछ इस घर में रखे हैं" । पर /-स/ से युक्त एकवचन रूप /थोड़ास/ "कुछ" केवल वस्तुवाची संज्ञा का स्थानापन्न हो सकता है । अर्थ की दृष्टि से यह भी अनिश्चयार्थक ही है । इन अनिश्चयार्थक सर्वनामों की रूप रचना की संक्षिप्ति नीचे दी जा रही है ।

। कोई 1 - व्यक्ति. एक. मूल. ।

। के । - व्यक्ति. वस्तु. एक. तिर्यक.

। कोई - । + /-त्-/ + /-ओ/ = /कोई तो/ व्यक्ति. वस्तु. एक. पु. मूल.

+ /-ए/ = /कोई ते/ व्यक्ति.वस्तु.बहु.पु.मूल.

+ /-ई/ = / कोई ती/ व्यक्ति. वस्तु. x स्त्री.मूल.

। के - । + /त् / + /औ/ = /केतौ / व्यक्ति.वस्तु.एक.पु.तिर्यक

+ /ए/ = /केते/ व्यक्ति. वस्तु. बहु.पु. तिर्यक

+/ई/ = /केती/ व्यक्ति. वस्तु. एक.स्त्री. तिर्यक ।

।थोडा । - वस्तु. मूल. {वचन का द्योतन नहीं}

1 थोडा । - व्यक्ति. बहु. मूल. ।

। थोडा- । + /-स् / = /थोड़ास-/ - वस्तु. व्यक्ति. बहु. तिर्यक ।

। घोडा- । + /-स-/ +/ -ओ/ /घोडा सेक/ -वस्तु. एक.पु.मूल.
+ /-ए-/ + /-क/ = /घोडा सेक/ - वस्तु.व्यक्ति.
बहु.पु. मूल.।
+ /-ई/ = /घोडासी/ - वस्तु. व्यक्ति.
स्त्री. मूल. ।

। घोडा - । + /-स-/ + /-ए/ + /-क/ = /घोडा सेक-/
व्यक्ति. वस्तु बहु. पु. तिर्यक ।
+ /-ई-/ + /-क/ = /घोडासीक-/ - व्यक्ति.
वस्तु. बहु. स्त्री. तिर्यक.

/स/ पर आधारित सर्वनाम /से/ है । इसके केवल दो रूप प्रयुक्त होते हैं : मूल रूप एक. बहु. /से/ मूल. तथा /स-/ तिर्यक. । तिर्यक का एक स्वतन्त्र वैविध्य बहुवचन प्रत्यय /-नू/ से युक्त होकर {सेनू-} भी तिर्यक रूप में प्रयुक्त होता है । प्रयोग वितरण की दृष्टि से यह संज्ञा तथा विशेषण दोनों का स्थानापन्न हो सकता है । यह अपने मूल एकवचन रूप में वस्तुवाची संज्ञा तथा वस्तुवाची विशेष्य के विशेषण के स्थान पर प्रयुक्त हो सकता है : /से गो/ "साराग्या", {सारा गया} /से धन गो/ "सारा धन गया" । बहुवचन रूप में यह व्यक्तिवाची तथा वस्तुवाची संज्ञाओं के बहुवचन रूपों का स्थानापन्न हो सकता है: / से गे/ "सब गये", /से आदमी गे/ "सब आदमी गये", /से रुपया गे/ "से रुपये गये" । इसका प्रयोग अधिकृत रूप से दोनों लिंगों के साथ हो सकता है ।

तिर्यक रूप /से-/ /सेतो/ का प्रयोग केवल बहुवचन में होता है । इस सर्वनाम का तिर्यक एकवचन प्राप्त नहीं होता । तिर्यक बहुवचन रूप व्यक्ति तथा वस्तु दोनों के लिए प्रयुक्त हो सकता है: /सेतो/ "सबने" /सेमां/ "सब में" आदि । अर्थ की दृष्टि से यह सर्ववाची है ।

5.परसर्ग – बनजारा बोली के परसर्ग दो भागों में विभाजित किए जा सकते हैं – एक रूप वाले तथा एक से अधिक रूप वाला । एक रूप वाले परसर्ग ये हैं – कर्तृवाचक परसर्ग /तो/ "ने" कर्म सम्प्रदाय /–न/ अधिकरण /–मं/, /पर/, /केट/, /ताणी/, /जू/ करण–अपादान /–सौ/ – "से" । इन सबका प्रयोग संज्ञा अथवा उसके स्थानापन्नों के तिर्यक रूपों के साथ होता है । सम्बन्धवाचक परसर्ग रूपान्तरित होता है ।

5.1. /तो/ इसका प्रयोग सकर्मक भूतकालिक कृदन्तों के कर्ताओं के साथ होता है । उदाहरण ये हैं :-

/वूतो वात को/ "उसने बात कही" ।
/मं तो बाटी खा दो/ "मैंने रोटी खाई" ।
/गोपाल तो काम बिगाड़ो/ "गोपाल ने काम बिगाड़ा" ।
/छोटी तो काम को दी/ "लड़की तो काम की"
/छेली तो पान खादो/ "बकरी ने पत्ते खाई" ।

5.2. /–न/ कर्म ओर सम्प्रदान दोनों के लिए इस चिह्न का प्रयोग होता है । इस अर्थ में कर्म सम्प्रदान–प्रत्यय का स्थानापन्न : /रामेर बलाओ/ "राम को बुलाओ" के स्थान पर – /रामेन बलाओ/ भी हो सकता है । ये दोनों रूप ही चल रहे हैं; पर प्रमुखता प्रत्यय – युक्त संरचना की है । कर्म सम्प्रदाय अर्थ में इसके प्रयोग के उदाहरण इस प्रकार है –

कर्म – /भीमलान बलाओ/ "भीमला को बुलाओ" । (एक.)
/छोटाउन बलाओ/ "लड़कों को बुलाओ" । (बहु.)
/वूतो छोटाऊ न बलायो । " उसने लड़कों को बुलाया" ।
/ वू छोटाऊ न बलायो/ "वह लड़कों को बुलाया" ।

सम्प्रदान - /आदमी न परसाद दो/ "आदमी को प्रसाद दो" ।

/ आदमीयून परसाद देदो / "आदमियों को प्रसाद दे दो"।

स्थानवाचक कर्म के साथ भी इसका प्रयोग होता है :

/वू घरे न गो / "वह घर को गया" पर इस स्थान पर बिना चिह्न/ परसर्ग का रूप भी चलता है : /वू घर गो/ इस स्थिति में कर्म रूप संज्ञा तिर्यक रूप में भी रहती है । बहुवचन कर्म के साथ /न/ का प्रयोग अनिवार्य है । स्थानावाचक कर्म के साथ भी इसका प्रयोग होता है ।/राते न गो / "रात को गया" । उद्देश्य सूचक सम्प्रदान के अर्थ में यह क्रियार्थक संज्ञाओं के तिर्यक रूप के साथ प्रयुक्त होता है : /वू खेयेन गो/ "वह खाने के लिए गया" । इस स्थिति में भी परसर्ग रहित रूप प्रचलित है । /वू खायेवाम् गो/ "वह खाने गया" ।

5.3. /मे/, /पर/, /हेट/, /ताणी/, /जूं/ - संज्ञाओं के साथ इन सभी का प्रयोग हो सकता है । संज्ञा के अतिरिक्त स्थानवाचक क्रियाविशेषणों के साथ /ताणी/, /जूं/ का तथा कालवाचकों के साथ /मे/, /ताणी/, ~~[illegible]~~ का प्रयोग सामान्यतः पाया जाता है । इनके उदाहरण इस प्रकार है -

/घरे मं बेठो छे/ "घर में बैठा है" ।

/हाटेमं फररो छे/ "हाट में घूम रहा है" ।

/झाडेर हेट बेसेम / "पेड़ के नीचे बैठना" ।

/घरेताणीजो/ "घर तक जा"

स्थानवाचक क्रिया - विशेषणों के पश्चात् - केवल /-ताणी/, /-जूं/ का प्रयोग होता है । जैसे -

/वताणी गो/ "वहाँ तक गया" ।

/येताणी आयो/ "यहाँ तक आया" ।

/ऊपर जूं धोळो कर/ "ऊपर तक सफेद कर" ।

/हेट जूं मत जो / "नीचे तक मत जा" ।

कालवाचक क्रिया विशेषणों के साथ - केवल /-मं/ तथा /-ताणी/, /जूं/ का प्रयोग होता है । जैसे -

/वेळा मं जायूं / "समय से जाऊँगा" ।

/सवारे ताणी- / / सवारे जूं आजायूं / "कल तक आ जाऊँगा"

/आज सवारे मं तमार रुपया दे दियूं/ "आज कल में तुम्हारे रुपये दे दूँगा ।

कुछ विशिष्ट अर्थों में भी ये चिन्ह प्रयुक्त होते हैं :

/घरेमं/ "घर के भीतर" ।

/मां बेटी मं परेम छ / "मां बेटी में प्रेम है" ।

/एक अधना मं दो आम्बा/ "एक आने में दो आम" ।

/एक घंटा मं फर आयूं / "एक घण्टा में फिर आऊँगा ।

इसी प्रकार /पर/ के भी कुछ विशिष्टार्थक प्रयोग मिलते हैं । जैसे -

/घर पर/ "घर पर" ।

/ये वाते पर/ "इस बात पर" ।

/अतरा काम करे पर भी लढ़ेवी/ "इतना काम करने पर भी लड़ती है" ।

5.4. /-ती/ "से" का प्रयोग करण के रूप में संज्ञाओं के साथ तथा अपादान के रूप में संज्ञा तथा क्रिया विशेषण के साथ होता है ।

उदाहरण :-

/मं ई काम मार हाते ती कीदो/ "मैंने यह कार्य अपने हाथ से किया" ।

/मं हाटेती निकळो/ "मैं हाट से निकला" ।

/तू तार गामे ती आयेस/" तू तेरे गाँव से आना" ।

/तू आगी ती पाछ आ/ "तू आगे अरे से पीछे आ" ।

/तू उपरे ती हेट आ/ "तू ऊपर से नीचे आ" ।

/वू हेटेती उपर गो/ "वह नीचे से ऊपर गया" ।

/ओते ती येते ताणी चाल/" वहाँ से यहाँ तक चल" ।

/येती ती ओते ताणी जो/ "यहाँ से वहाँ तक जा" ।

अर्थ की दृष्टि से यह क्रिया विशेषणात्मक परसर्ग है । इसके कुछ विशिष्टार्थक प्रयोग भी है :

/मं तो ई काम मने ती कीदो/ "मैंने यह कार्य मन से किया" ।

/वू उपरे ती आचो छ, पण मांई ती काळो छ/ "वह ऊपर से अच्छा है, पर भीतर से काला है" ।

/वू दलेती आचो छ/ "वह हृदय से अच्छा है ।

/ई छोटी ओती आच छ/ "यह लड़की उससे अच्छी है" ।

[तुलनात्मक विशेषणों के साथ प्रयुक्त]

/मोती पूछ/ "मुझ से पूछो" ।

/से ती आचो रेस/ "सब से अच्छा रहो" [साथ] ।

/घण खे दाड़े ती/ "बहुत दिनों से" ।

/मन बलायेती काय फायदो/ "मुझे बुलाने से क्या फायदा" ।

कुछ क्रियाओं के कर्म के साथ यह कर्मवाचक रूप में भी प्रयुक्त होता है । /तु तों मोती को, मं समझो/ "तू तो मुझ से कहो, मैंने समझी" । संज्ञा अथवा सर्वनाम के बीच में प्रयुक्त होकर यह तुलनात्मक विशेषण घटित करता है :

/वू माती आयो छ/ "वह मुझ से अच्छा है" ।

/-ती/ तथा विशेषण के बीच आकर तमवन्त विशेषण बनाता है । /सेती आयो/ "सब से अच्छा" ।

5.5. /-र-/ सम्बन्धवाचक परसर्ग का चिह्न है । यह लिंग-वचन प्रत्ययों से युक्त होकर होता है । इसकी रूप रचना इस प्रकार है :-

। -र- । + /-ओ/ =/रो/ "पु. एक. ।
+ /ब-ए/ =/रे/ "पु.बहु.; तिर्यक एक. ।
+ /-ई/ = /री/ स्त्री. एक. बहु. ।

उदाहरण :

/रामे रो बळद/ "राम का बैल" ।
/ओरो घर/ " उसका घर" ।
/तारो खेत/ "तेरा खेत" ।
/वो रे घर/ " उसके घर" ।
/सीता री सीख/ "सीता की सीख" ।

इसका लिंग भेद सम्बन्धित वस्तु के लिंग पर निर्भर करता है । अर्थ की दृष्टि से यह विशेषणात्मक परसर्ग है । यह विशेषण के स्थानापन्नों की

संरचना कर सकता है :- छोरा इस स्थिति में विशेषण तथा सम्बन्धवाचक परसर्ग से विरचित संज्ञा रूप आ सकते हैं । जैसे - /आचो छोरा/ तथा /सोमला रो छोरा/ "अच्छा लड़का तथा राम का लड़का" । सम्बन्धवाचक परसर्ग से अनेक अर्थों का द्योतन होता है । कतिपय उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जायेगी : /लोयेरो कन्द/ "लोहे का केन"

[विशेषणात्मक] ।

/तलगाण्यिा रो आदमी/ "तेलंगाना का आदमी"

[निवास का द्योतन]

सजीव वस्तुओं के साथ प्रयुक्त होकर यह "अधिकार" का द्योतन करता है :

/ गावडी रो केल्डा/ "गाय का बछड़ा" ।

मूल्यात्मक सम्बन्ध की अभिव्यक्ति भी होती है :

/दो टक्कर रो आदमो/ "दो टके का आदमी" ।

कालात्मक सम्बन्ध / दो दाडे रो पामण / " दो दिन का मेहमान।/

करणार्थक प्रयोग भी मिलता है :

/ कष्टा रो मारो / " कष्ट का मारा "

अवस्था का द्योतन : / चार बरसे रो / " चार वर्ष का "

6.5 विशेषण :

विशेषण और संज्ञा की रचना और प्रयोग में कोई विशेष अन्तर नहीं मिलता। जिस प्रकार ओकारान्त संज्ञा की रचना विविध व्याकरणिक स्थितियों में बदलती है उसी प्रकार ओकारान्त विशेषणों की भी रचना बदलती है। नीचे आचो " अच्छा " तथा मोटो " बड़ा " की रूप रचना दी गई है।

क. मूल रूप पुंल्लिंग :

एक वचन : मोटो घोड़ो " बड़ा घोड़ा "
आचो गाम " अच्छा गाँव "

बहुवचन : आच घोड " अच्छे घोडे "
आच गाम " अच्छे गाँव "

ख. मूल रूप स्त्री लिंग :

एकवचन मोट घोडी " बड़ी घोड़ी "
आच छोरी " अच्छी छोरी "

बहुवचन आच छोरी " अच्छी लड़कियाँ"
मोट घोड़ी " बड़ी घोड़ियाँ "

ग. तिर्यक पुल्लिंग रूप :

एक वचन	:	आचे घर में	:	अच्छे घर में
बहुवचन	:	मोटे घोडे पर	:	बडे घोडे पर
	:	आच घरमा	:	अच्छे घरों में
	:	मोट घोड़ु पर	:	बडे घोडोंपर

घ. तिर्यक स्त्रीलिंग :

एकवचन	:	आच छोरीन	:	अच्छी लड़की ने
		मोट छोरीन	:	बड़ी लड़की ने
बहुवचन	:	आच छोरयून	:	अच्छी लड़कियों ने
		मोट छोयून	:	बड़ी लड़कियोंने

ऊपर के उदाहरणों से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं :

1. पुल्लिंग एकवचन ओकारान्त विशेषण मूलरूप में प्रयुक्त होते हैं ।
2. पुल्लिंग बहुवचन मूलरूप में "ए" अकारान्त विशेषण एकारान्त हो जाते हैं ।

3 पुल्लिंग एकवचन तिर्यक रूप में ओकारान्त विशेषण एकारान्त हो जाते हैं ।

4. तिर्यक पुल्लिंग बहुवचन भी अकारान्त होते हैं ।

5. स्त्रीलिंग मूल और तिर्यक एकवचन और बहुवचन तिर्यक एक वचन और बहुवचन में निर्विवाद रूप से अकारान्त रूप रचना ही रहती है ।

अन्य प्रकार के विशेषणों में इस प्रकार की रूप रचना नहीं रहती । सभी रूप समान होते हैं । उदाहरण के लिए सुन्दर और गरीब जैसे अकारान्त विशेषणों को लिया जा सकता है । इनकी रचना में लिंग वचन के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं होता ।

पंचम अध्याय : .. ..

क्रिया विचार

0. क्रिया : ....

बनजारा बोली में क्रिया की धातुओं, उनके साथ प्रत्ययों के क्रम, इस क्रम से विभिन्न रूपों की संरचना, संयुक्त क्रिया रूपों, तथा अन्य पदग्रामों से क्रिया की व्युत्पत्ति पर विचार किया गया है ।

1. धातु :

क्रिया की धातु का प्रयोग वर्त. कृ. पदरूपाका ।-त। से अथवा क्रियार्थक संज्ञा प्रत्यय । - ब । अथवा । -ण । से पूर्व होता है । रूप गठन के अनुसार बनजारा बोली की मूल क्रिया-धातुओं का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है ।

1.1 एकाक्षरात्मक धातुएं :

√आ "आना"

√खा - "खाना"

√पी - "पीना"

√चू - "चूना"

√खो - "खोना"

√उठ - "उठना"

√ओढ़ - "ओढ़ना"

√ओट - "लुढ़कना"

√तक् - "देखना"

√लख - "लिखना"

1.2. द्व्यक्षरात्मक धातुएं :

ह ब /अ/ पड़ - "घूमना"

√उखड़ - "उखड़ना"

√पछल - "पिछलना"

√मुकट - "मुकटना"

1.3. रूप रचना :

मूलतः बनजारा बोली की धातुएं द्व्यक्षरात्मक से अधिक नहीं होती । इनमें तीन प्रकार के विकार किये जा सकते है -

क. स्वर परिवर्तन

ख. व्यन्जन परिवर्तन

ग. प्रेरणार्थक प्रत्यय

1.3.1 स्वर परिवर्तन :

कुछ मूल एकाक्षरात्मक धातुओं के मूल ह्रस्व स्वर को दीर्घ करके तथा द्वयक्षरात्मक धातुओं के द्वितीय ह्रस्व स्वर को दीर्घ करके नवीन धातु-रूप प्राप्त किये जाते हैं । अर्थ की दृष्टि से इस परिवर्तन के कारण दो अन्तर उपस्थित हो जाते हैं ।

1. मूल कर्मवाच्य धातु भाववाच्य हो जाते हैं और
2. मूल अकर्मक धातु सकर्मक हो जाती है ।

क - एकाक्षरात्मक धातुओं का स्वर परिवर्तन :

अ आ	√ गद् - "गद्ना"	√ गाद् - "गाद्ना"
	√ थम - "रुकना"	√ थाम - "रोकना"
	√ दब - "दबना"	√ दाब - "दबाना"
	√ पळ - "पलना"	√ पाळ - "पालना"
	√ फड़ - "फटना"	√ फाड़ - "फाड़ना"
	√ टळ - "अलग होना"	√ टाळ - "अलग करना"
ऊ ओ	√ फूट - "फूटना"	√ फोड़ - "फोड़ना"
	√ टूट - "टूटना"	√ तोड -
	√ छूट - "छूटना"	√ छोड़ना - "छोड़ना"
उ ऊ ऊँ	√ फुंक - "फुंकना"	√ फूंक - "फूंकना"
	√ पुर - "पुरना"	√ पूरना - "पूरना"

इ ए √सिक - "सिकना" √ सेक - "सेकना"

√ चिर - "चिरना" √ चीर - चिरना"

उ ओ √ ठुक - "ठुकना" √ ठोक - "ठोकना"

√ घट - "घिसना" √ घोट - "घोटना"

इ ई √ लिप -"लिपना" √ लीप - लीपना

√ पिस - "पिसना" √ पीस - "पीसना"

ह्रस्व स्वर के दीर्घकरण के अतिरिक्त एक और परिवर्तन मिलता है । उच्च स्वर /इ/ निम्नस्वर /ए/ में परिवर्तित हो जाता है और उच्च /उ/ निम्नतर ओ में परिवर्तित हो जाता है । जैसे -

इ ए √ दीख - "दीखना" √ देख - "देखना"

ब. <u>द्वयक्षरात्मक धातुओं का स्वर परिवर्तन :</u>

बनजारा बोली में मूलत: द्वयक्षरात्मक धातुओं में दोनों स्वर ह्रस्व ही होते हैं । इनमें से प्रथम स्वर सुरक्षित रहता है । केवल द्वितीय स्वर दीर्घ कर दिया जाता है । द्वितीय स्वर सदा ही - अ- होता है । प्रथम स्वर कोई ह्रस्व स्वर हो सकता है । -अ- आ - के उदाहरण ये हैं -

√ निकल - "निकलना" - √ निकाल - "निकालना"

√ बिगड़ - "बिगड़ना" - √ बिगाड़ - "बिगाड़ना"

✓ सम्हर - काटना - ✓ सम्हार - "कटवाना"

✓ सम्हळ - सँभलना - ✓ सम्हाळ - "सँभालना"

1.3.2. <u>व्यन्जन परिवर्तन :</u>

व्यन्जन परिवर्तन में केवल एक प्रवृत्ति मिलती है - ट - ड़ र । इस परिवर्तन के साथ - ऊ - -ओ - संलग्न रहता है । उदाहरण -

✓ टूट - "टूटना" + [- ओ ऊ -] + [ड़ -ट] =
✓ तोड़ - "तोड़ना"

✓ छूट - "छूटना" + [-ओ ऊ] + [-ड़ ट] = छोड़ -
"छोड़ना"

✓ फूट - "फूटना" + [-ओ ऊ] + [-ड़ ट] ✓ फोड़ -
"फोड़ना"

इस प्रकार स्वर परिवर्तन के साथ व्यन्जन परिवर्तन भी उक्त धातुओं की रूप रचना में सहायक होता है ।

एक व्यन्जन परिवर्तन और मिलता है, जिसका कारण पद वैज्ञानिक परिस्थितियाँ है ।

✓ जा - "जाना" ग-

इनमें से द्वितीय का प्रयोग भूतकालीन कृदन्त प्रत्यय के साथ होता है और प्रथम का अन्यत्र होता है ।

1.4. <u>धातुओं के साथ प्रत्ययों का योग :</u>

धातुओं के साथ प्रत्ययों का योग करके प्रेरणार्थकों, क्रियार्थक संज्ञाओं, वर्त. कृदन्तों, भूतकालीन कृदन्तों, पूर्वकालीन कृदन्तों, आज्ञार्थक

तथा मूल कालों की संरचना होती है । इन पर नीचे विचार किया गया है -

4.1. प्रेरणार्थक रूपों की संरचना :

बनजारा बोली में दो प्रेरणार्थक प्रत्यय मिलते है :
प्रथम प्रेरणार्थक : [-आ] तथा द्वितीय प्रेरणार्थक [-वा] ।
इन प्रत्ययों का संयोग धातुओं के साथ होता है : √ + [-आ] = प्रथम प्रेरणार्थक √ + [-वा] = द्वितीय प्रेरणार्थक । इनसे रचित रूपों के उदाहरण -

क - एकाक्षरात्मक धातुएँ

√ बण - "बनना" √ बण् + [-आ] = √बणा - "बनाना"
√ बन + [-वा] = √ बनवा - "बनवाना"

√ पेल - "पेलना" √ पेल + [-आ]= √ पेला "पेलाना
√ पेल + [-वा] = √ पेलवा - "पेलाना"

ख - द्वयाक्षरात्मक धातुएँ :

√ लटक् - "लटकना" √ लटक + [-आ] √ लटका - "लटकाना"
√ लटक + [-वा] = √ लटक्वा - "लटकना"

√पघळ - "पिघल" √ परघळ + [-आ] = √परघळा -
"पिघलना" √ परघळ + [-वा] = परघळ्वा,
"पिघलना"

एकाक्षरात्मक धातुएँ व्यन्जनान्त होने पर ऊपर वाले रूप ग्रहण करती है । कुछ द्वयक्षरात्मक रूपों में द्वितीय प्रेरणार्थक प्रत्यय के साथ प्रथम प्रेरणार्थक का संकुचित रूप चिपका रहता है ।

जैसे -

/परधक्वा/ = √ + ह ।व । + [-वा] ।

कुछ क्रियाओं की धातुओं के तो रूप भी प्राप्त होते हैं ।

जैसे - विशेष -

√ दीख - + । -ए - ई - √ = √ देखु - "देखना"

√ दीख - + [-आ] = दिखा -] "दिखाना"

दीख - + [वाद]

एक तीसरा रूप और मिलता है । दीर्घ स्वरान्त एकाक्षरात्मक धातुओं के प्रथम प्रेरणार्थक रूप नहीं मिलते, केवल द्वितीय प्रेरणार्थक रूप ही प्राप्त होते हैं । जैसे -

/ गा - "गाता" + √-अ- - आ- √ + [-वा] =

√ गवा - "गवाना"

1.4.2. <u>वर्तमान कालीन कृदन्त :</u>

क्रि. धा. + [-त-] = व. कृ.] इसके पश्चात् - लि.वच. प्रत्ययों का योग किया जाता है : [-आ] = पु. एक., [-ए] = पु. बहु.; । -ई । = स्त्री एक. [ई] = स्त्री. बहु. इस प्रकार है -

क्रि. धा. + [-त-] + [-ओ] = पु. एक.

[-ए] = पु. बहु.

[- ई] = स्त्री. एक.

[- ईं] = स्त्री. बहु.

उदाहरण - / देखता/ √ देख + [-त-] + [-ओ] "देखता"
/ देखते/ √ देख + [-त-] + [-ए] " देखते"
/ देखती / √ देख + । + त- । + [-ई] - देखती"
/ देखती / √ देख + [-त् -] + [ईं]

ये बहुवचन स्त्रीलिंग का प्रयोग सामान्यत: काल रचना में नहीं होता । इसी प्रकार अन्य क्रियाओं के रूप घटित हो सकते हैं ।

1.4.3. भूत कृदन्त :

धातु के साथ लिंगवचन प्रत्ययों की ओर से भूतकालीन कृदन्त की रचना की जाती है । लिंग वचन प्रत्यय ये हैं :-

पु. एक. = [ओ], पु. बहु. = [ए],

स्त्री. एक. = [इ], स्त्री. बहु. = [ईं]

। -ओ । प्रत्यय ग्रहण करने से पूर्व एकाक्षरात्मक धातु प्रातिपदिक के साथ - इ जुड़ जाता है और ओ प्रत्यय संधि नियम से यो हो जाता है : जैसे -

√ आ - आयो
√ पी - पीयो
√ ले - लीयो
√ खो - खोया

द्व्यक्षरात्मक धातु इस प्रत्यय से ग्रहण कर लेने से पूर्व अविकृत रहती है । जैसे -

पकड़ + ओ = पकड़ो, जकड़ + ओ = जकड़ो ।

अन्य प्रत्ययों के पूर्व भी धातु अविकृत ही रहती है । जैसे -

एकाक्षरात्मक :

√ + [-ए] = पु. बहु. / चले / "चले"

+ [-ई] = स्त्री. एक/चली/ "चली"

+ [-ई] + ‿ = स्त्री. बहु. /चलीं/ "चली"

‿ए और [-ई] के संयोग से पूर्व धातु अविकृत भी रहता है ।

1.4.4. पूर्व कालिक कृदन्त :

इसकी रचना धातु के साथ प्रत्यय रूप का योग करके होती है । यह प्रत्यय [- न] है । इसका एक रूपान्तर । लेन । है । पहले रूप का प्रयोग स्वरान्त धातुओं के साथ होता है । जैसे -

/ आनगो / "आकर गया"

/ खानगो / "खाकर गया"

/ पीनगो / "पीकर गया"

दूसरे रूप । - लेन । का प्रयोग व्यन्जनान्त धातुओं के साथ होता है । जैसे / कर लेन गो/ "कर कर गया", / देख लेन गो / "देखकर गया" ।

1.4.5. आज्ञार्थक :

धातुओं के साथ आज्ञार्थक प्रत्ययों का योग करके आज्ञार्थक रूपों की रचना की जाती है । मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष के आज्ञार्थक रूप ही मिलते हैं । -

क्रि. धा. + [आज्ञा.] = आज्ञार्थक

क्रि. धा. + [- ६] = मध्य. एक. ≠ / तू देखा /
+ [ओ] = मध्य. बहु. / तम देखो /
+ [-ए] = अन्य. एक. / राम देखे /
+ [-एँ] = अन्य. बहु. । देखे ।

उत्तम पुरुष का आज्ञार्थक रूप नहीं होता । केवल अभिप्राय भाव होता है । इसका प्रत्यय । - ६ । उत्तम. एक. बहु. । -ऐ । तथा पुरुष के द्योतक नहीं है; केवल वचन के द्योतक है ।

1.4.6. भविष्य आज्ञार्थक रूप :

मध्यम पुरुष एक. बहु. के भविष्य आज्ञार्थक रूप होते हैं । इस प्रकार हैं -

√ + [-न-] + [ओ] = एक वचन

/ -न / = क्रियार्थक संज्ञा
/ - आ / = आज्ञार्थक

उदाहरण :

/ तु सवार करनो / " तू कल करना"
/ तम सवार आने / "तुम कल आना"

1.4.7. अभिप्रायार्थ रूप :

उत्तम पुरुष एक. बहु. के अभिप्रायार्थक रूप क्रमशः /ऊँ/ तथा /ए/ के संयोग से सम्पादित किये जाते हैं । इनमें से [-ई] उत्तम पुरुष एक. प्रत्यय है । क्योंकि इसका प्रयोग अन्य पुरुष बहुवचन में भी होता है ।

उदाहरण :-

/ बेस - /बेसूं/ "बैठूं" / बैसे / "बैठे"

/ लख - / लखूं / "लिखूं" / लखौ / "लिखो"

इनमें /-ऊं/ वर्त. उत्तम. एक. तथा /ऐ/ वर्त. बहु. सहायक क्रियाएं हैं ।

1.5. काल रचना :

1.5.1. निश्चयार्थ :

1.5.1.1 वर्त. निश्चयार्थ रूप इस प्रकार घटित होता है :

{क} √ + पुरुष वच. प्रत्यय = वर्तमान निश्चयार्थ {

जैसे :- √ चाल् + [-ओ] = /चालो/ "चलो" {~~मध्यम/बहु/~~} {उत्तम.बहु. एक.}

√चाल् [2-ओ] = /चालो/ चलो" { मध्य. बहु.}

{ख} √ + वचन प्रत्यय = वर्तमान निश्चयार्थ

जैसे :- √चाल् + [-ए] = /चाले/ "चले" {मध्य.अन्य.एक.}

√चाल् + [-एँ] = /चालें/ "चलें" {मध्य.अन्य.बहु.}

यह प्रत्ययों के आधार पर घटित काल है ।

1.5.1.2. भविष्य निश्चयार्थ - भविष्य निश्चयार्थ की रचना का सूत्र इस प्रकार है :- √ + [-इ-] + [ऊं] उत्तम. एक.

[-आ] उत्तम.बहु.

[-स] मध्यम.एक., [-ओ] मध्यम.बहु., [-ऐ] अन्य. एक. तथा बहु.

उदाहरण :

/मं चाल्यूं / "मै चलूंगा",/हम चाल्या/ "हम चलेंगे",/तू चालीस/"तुम चलेगा"/ /तम चाल्यो/ /"तुम चलोगे"/, /वू चाल्यो/ /"वह चलेगा"/ /वे चाल्ये/ /"वे चलेंगे"/

इस रचना में विशेष रूप से दृष्टव्य यह है कि {1} लिंग का द्योतन नहीं होता है {2} वचन का द्योतन केवल अन्य पुरुष की रचना में नहीं होता है । {3} भविष्य वाचक प्रत्यय ।-इ-। हैं, जो सभी रूपों में मिलता है ।

1.5.1.3. **भूतनिश्चयार्थ की रचना :** इसका सूत्र इस प्रकार है ।

√ + [-ओ-] पु. एक., [-ए-] पु.बहु., [-ई-] स्त्री.एक.
[-ई-] स्त्री.बहु.

उदाहरण :

/मं चालो//"मैं चला"/ /हम चाले/ /"हम चले"/
/तू चलो/ /"तू चला"/ ~~/तू चला/~~ /तम चाले/ /"तुम चले"/
/वू चाले/ /"वह चले"/ /वे चाले/ /"वे चाले"/
/मं चाली/ /"मैं चली"/ /हम चालीं/ /"हम चले"/
/तू चाली/ /"तू चली"/ /तम चालीं/ /"तुम चलीं"/
/वू चाली/ /"वह चली"/

इस सम्बन्ध में यह बातें द्रष्टव्य हैं :- (1) पुरूष का द्योतन किसी रूप में नहीं होता । (2) केवल वचन और लिंग का द्योतन होता है । (3) लिंगवचन प्रत्यय धातु के साथ संलग्न किये जाते हैं ।

1.6. **कृदन्तीय रचना :**

1.6.1 **वर्तमान कालीक रचना :** इसका सूत्र यह है :-

/+ लिंग वचन या पुरूष प्रत्यय + वर्तमानकालीक सहायक क्रियाएँ =
वर्त. कृदन्तीय रचना

√ चाल + ऊँ + छूँ = /चालूछूं/ (मैं) चलता हूँ"
√ चाल + औ + चां = /चालायों/ (हम) "चलते हैं"
√चाल + ए + चो = /चाले चो/ (तू) "चलता है"
√चालू + औ + चा= /चालाचो/ (तुम) "चलते हो"
√चाल + आ + चो = /चालाचे/ (वह) "चलता है" ।

/चाल + आ + चे = /चालाचे/ (वे) "चलते हैं" ।

द्रष्टव्य यह है कि सहायक क्रियायें भी लिंग वचन प्रत्यय ~~ों~~ से युक्त होती हैं ।

1.6.2. <u>भूतकालीक कृदन्त रचना</u> : इसकी सूत्र रचना प्रकार हैं :-

√ + लिंग वचन प्रत्यय + भूतकालीक सहायक क्रिया = भूत.कृदन्तीय रचना

उदाहरण इस प्रकार हैं :-

√चाल + ओ + तो = /चालोतो/ (मैं, तू, वह) "चला था" ।

√चाल + ए + ते = /चालेते/ (हम, तुम, वे) "चले थे" ।

√चाल + ई + ती = /चलीथी/ (मैं, तू, वे) "चली थी" ।

√चाल + ई + तीं = /चली थी/ (हम, तुम, वे) "चली थी" ।

द्रष्टव्य यह है कि सहायक क्रियाएँ भी लिंग वचन प्रत्ययों से युक्त होती हैं ।

1.7. <u>वर्तमान पूर्ण निश्चयार्थ</u> : इसकी सूत्र रचना इस प्रकार है :-

√ + भूतकालीक कृदन्तीय रचना + सहायक क्रिया

जैसे :- √मैं चालोछूं/ "मै चला हूँ", /हम चाले चां/ "हम चले हैं"

/तुम चाले चो/ "तुम चले हैं" /वू चाले धा/ "वह चला है"

/वे चाले धा/ /"वे चले हैं"/

1.8 <u>भूतकालीक पूर्ण निश्चयार्थ</u> : संरचना का सूत्र इस प्रकार है :-

भूतकालीक कृदन्तीय रचना + सहायक क्रिया उदाहरण इस प्रकार है:-

/मैं चालोतो//"मैं चला था" /, /हम चालेते/(/"हम चले थे"/

/तम चालेते/ /"तुम चले थे"/, /वू चालोतो//"वह चला था"/

/वे चालेते/ /"वे चले थे"/

1.9 क्रियार्थक संज्ञा के साथ साथ रचना :

क्रियार्थक संज्ञा की रचना इस प्रकार होती है -

/ + णु व्यन्जनान्त धातुओं के साथ अथवा वण {केवल स्वरान्त धातुओं के साथ} + । -ओं । = क्रियार्थक संज्ञा जैसे - /करणो/ "करना", /आवणो/ "आना"

इस क्रियार्थक संज्ञा रूप के साथ वर्तमान कालीक सहायक क्रिया जोड़ कर वर्तमान रूप की और भूतकालीक सहायक क्रिया जोड़कर भूतकालीक की रचना की जाती है । जैसे -

/मन करणो छ/ "मुझे करना है"
/हमेन रणो छा/ "हमे करना है"
/तोन पढ़नो छ/ "तुझको पढ़ना है
/तोन पढ़ना छ/
/वोन आवणो छ/ "उसको आना है"
/उंदेन जावणो छ/ "उनको जाना है"

भूतकालीक रचना :

/मन लखणो वेतोतो/ "मुझको लिखना था"
/हमेन लखणो वेतोतो/"हमेन लख

/तोन खावणो वेतोतो/ "तुझको खाना था"
/तोन खावणो वेतोतो/ "तुम को खाना था"
/तोन सोवणो वेतोतो/ "उसको सोना था"
/वोन सोवणो वेतोतो/ "उनको सोना था"

जब यह रूप रचना सकर्मक धातुओं के साथ होती है तो क्रियार्थक

संज्ञा की संरचना बदल पाती है जैसे :- ✓ + [घर] । इसके साथ सहायक क्रियाओं का संयोग होता है । उदाहरण के लिए :-

/मन एक गीदलोलेर वेतोतो/ "मुझ को एक गाना गाना था
/हमेन तीन पत्ररख़ लखेर वेतोतो/ "हमको तीन पत्र लिखने थे"

/तीन दो आम्बा खायेर वेतोतो/ "तुझको दो आम खाने थे"
/तोन एक लाकीकेर वेतीती/ "तुम को एक कहानी कहनी थी"
/वोन एक घर बनायेर वेतोता / "उसको एक घर बनाना था"
/ओन चार कोस जायेर वेतोतो/ "उसको चार कोस जाना था"

2. संयुक्त क्रियाएं : दो प्रधान क्रियाएं :

संयुक्त क्रिया एक से अधिक क्रियाओं के संयोग से व्युत्पन्न होती है । यह संयोग एक मुख्य क्रिया तथा दूसरी सहायक क्रिया का भी हो सकता है और दो मुख्य क्रियाओं का भी हो सकता है । सहायक क्रियाओं के साथ रहनेवाले रूपों के पर पहले विचार किया जा चुका है । यहां दो मुख्य क्रियाओं के संयुक्त रूपों पर विचार किया गया है ।

एक प्रधान क्रिया के पूर्वकालिक कृदन्तों वर्तमान कालिक कृदन्तों, भूतकालिक कृदन्तों, तथा क्रियार्थक संज्ञाओं के साथ अन्य क्रियाओं का संयोग करके विभिन्न अर्थों को व्यक्त किया जाता है । क्रिया धातु के साथ अन्य क्रिया का संयोग नहीं होता । सन्धि नियम के अनुसार किसी प्रत्यय के लुप्त होने पर ही धातु और संयुक्त क्रिया निकट आ सकती है । सहायक क्रियाओं का अन्त में योग हो सकता है ।

2.1. पूर्वकालिक कृदन्तों के साथ अन्य क्रियाओं का संयोग :

पूर्वकालिक कृदन्त प्रत्यय । -र । है । इस प्रत्यय रूप के साथ

दूसरी मुख्य क्रिया जुड़ती है ।

(क) पूर्वकालिक कृदन्त + /आ - पूर्णता द्योतन । इसमें / आ- के वर्त. भूत. तथा भविष्य तीनों रूपों का संयोग हो सकता है ।

/देख्या/ "देखआ" = /दख् + इ + /आ -

/लख्या/ "लिखआ" = /लख + इ + /आ -

/खाया/ "खाऊ" = /खा + ई + /आ -

/पीया/ "पीआ" = /पी + इ + /आ -

/दिया/ "देआ" = /दे + इ + /आ -

/लिया/ "लेआ" = /ले + इ + /आ -

अन्य कालों के उदाहरण यह है - /तु देख्यावच/ "वह देख आता है" /वु देख्यायोतो/ "वह देख आया था", /वु लख्यावेच/ "वह लिख आयेगा" ।

(ख) पूर्वकालिक कृदन्त + ए + लाग + लिंगवचन प्रत्यय । इसमें लिंग का अर्थ अचानक कार्य होता है ।

/वु अब दारू पीय लागा / "वह अब दारू पीने लगा है"

/वु ओन मर मारे लागो/ "वह उसे मारने लगा"

/मं छोरार वडी देखे लागो/ "मैं लड़के की ओर देखने लगा हूँ"

(ग) पूर्व. कृद. + उतर - "उतरना" कठिनाई के साथ कार्य की पूर्णता ।

/वु के उतरो / "वह कब उतरा" /तु तार काम कर उतर/ "तु तेरे काम को कर उतर"

इसके प्रयोग अत्यन्त विरल है ।

(घ) पूर्व. कृद. + √खा "खाना" खाने की पूर्णता का भाव होता है । जैसे - /कुत्रा छोरीन पकड़ खादो/ "कुत्ते ने लड़की पकड़ खाई" ।

/दकाने मायली वू काय ले आया/ "दुकान में से वह कुछ ले आवेगी ।
/वू सारी जार पीस खाय/ "उसने सारी ज्वार पीस खाई"

(ङ.) पूर्व. कृद.+ √चढ़ - ऊपर आकर सवार हो जाने का भाव इस रूप से व्यक्त होता है -

/वू मार ऊपर आचढ़ो / "वह मेरे ऊपर आ चढ़ा"।
/ई छोरा मार ऊपर आ चढ़ो/ "यह लड़का मेरे ऊपर आ चढ़ा"
/वू तावेर नाई मापर आ चढ़ो/ "वह भुखार सा मेरे ऊपर चढ़ आया"

(च) पर्व कृद.+ √चाल् - पूर्णता वाचन - जैसे -

/बाटी खा चालो/ "रोटी खा चला" /मन कत छोड़ चालो/ "मुझे कहां छोड़ चला,
/पाणी पी चाल/ "पानी पी चला"
/दूध पी चालो/ "दूध पी चला", /मर चालो/ "मर चला"

(छ) पूर्व. कृद. + √ चल - "चलाना" बलपूर्वक कार्य-सम्पन्नता व्यक्त होती है । जैसे -

/वू मोटर चालो/ "वह मोटर चला", /तू रुपया दे. चल/ "तू रुपया दे चला"
/मैं का कर चालो/ "मैं काम कर चला"

(ज) पूर्व. कृद. + √नाक : पूर्ण वाचन । जैसे -

/ मैं मार काम कर नाको/ "मैं अपना काम कर चुका"
/मैं लकड़ी काट नाको/ "मैं लकड़ी काट चुका"
/वू एक दाड़े मां काम कर नाको/ "वह एक दिन में काम कर चुका"
/काट नाक/ "काट डाल"

(झ) पूर्व. कृ.+ √जो = पूर्णता वाचन :/ काम कर जो/ "काम कर जा"
/बाटी खाई जो/ "रोटी खाई जा", /मत एक रुपया दे जो/ "मुझे एक रुपया दे जा"

/समाजो/ "समा जा"

§ञ.§ पूर्व. कृ. + √द=पूर्णता- वाचन - जैसे -

/मार वासु हंसली लाद/ "मेरे लिए हंसली ला दे"
/मार वासु एक आम्बा लाद/ "मेरे लिए एक आम लादे"
/तु आचोसो एक गीद बोलद/ "तु एक अच्छा सा गीत गादे"
/घामड़ी रंग दा/ "चुनरी रंग दे/, /खीसे माँकती रुपया काड़दा/
"जेब में ?? से रुपया निकाल दे", /मन बे से दा/ "मुझे बैठने दे"

§ट§ पूर्व. कृ.मक +√ पड़ - "पड़ना" = पूर्णता वाचन तथा अचानक घटना ।

/घोडे पर छी उतर पड़ो/ "घोडे पर से उतर पड़ा" ।
/वु बावडी माँ उतर पड़ो/ "वह कुआँ में उतर पड़ा"।
/वु छोरीन दकन हँस पड़ो/ "वह लड़की को देखकर हँस पड़ा ।"

/वु वोपर पड़ो/ "वह उस पर गिर पड़ा"।

§ठ§ पूर्व. कृ. + √ पी : - इसका प्रयोग क्रिया विशेषणात्मक होता है ।

/तार तुं भरन पी/ "अपने आप पानी भर कर पी"
/सासुर टांग धोन पी/ "सास के पैरों को धोकर पी"
/गुरुर टांग धोन पी/ "गुरु के चरण धोकर पी"
इस रूप का प्रयोग भी विरल है ।

§ड§ पूर्व. कृ. + √पूंच : पहुंचक= "पहुंचना" किसी बात पर बल देने के लिए

इसका प्रयोग होता है । प्रयोग क्रिया विशेषणात्मक है ।
/मं घर जातेई वु घर आ पूचरे/ मैं घर जाते ही वह आ पहुँचा ।
/वु दाड़ी मटाई खायेन आ पूंच / "वह रोज मिठाई खाने आ पहुँचता है ।

{ढ} पूर्व. कृ. + √पसे - क्रिया विशेषणात्मक प्रयोग ।

/ एक कत आन पसी / "यहाँ कहाँ आ फँसे"
/हण्णी जाळे माँ आ फँसी/ "हिरण जाल में आ फँसी"

{ण} पूर्व. कृ. + √ बेट - "बैठ" - अप्रत्याशित कार्य-पूर्णता । जैसे -

/तु भिया मांद काम कर बेटो/ "तु भाई बुरा काम कर बैठा"
/तु मार घर आ बेटो/ "वह मेरे घर आ बैठा"

{त} पर्वू. कृ. + √मर - क्रिया विशेषणात्मक प्रयोग । घृणा या क्रोध कर भाव इसमें सम्मिहित रहता है । जैसे -

/कति जान मर/ "कहीं और जा मर"
/येत कोन आमरो/ "यहाँ क्यों आ मरा"
/तार याडी रो मरिया/ "तेरी माँ रो मरेगी
/जादा खो मरो/ "ज्यादा खा मरा"

{थ} पूर्व. कृ.द. + √ मेल "रखना" पूर्णता वाचक होता है ।

/मँ आऊं जेतुणी काम कर मेल/ "मैं आऊँ जब तक काम को कर रखना"
/मँ तोन आगिल के मेली/ "मैंने तुझे से पहले ही कह रखी थी"
{द} पूर्व. कृ. + √ला "लाना" इसमें भी कार्य की पूर्णता का भाव निहित रहता है । जैसे -
/ई काम करला/ "इस काम को कर ला" /लड़-बड़ करला/ "जल्दी कर ले"
/छद के सी पानी भरना/ "चटनी पीसकर ला"
/बाटी कर ला/ "रोटी बनाकर ला"
{ध} पू.कृ.+ √ सकु = "सकना" क्षमता वाचक

/मै जा सको/ "मैं जा सका", /मै आ सको/ "मैं आ सकता"

/वू वोती रपया कोनी ले सको/ "वू उससे रुपया नहीं ले सका" ।

उक्त सभी उदाहरणोंमें मूल क्रिया पहले आती है और विशेषता द्योतक क्रिया पीछे ।

2.2. वर्त. कृद. के साथ अन्य मुख्य क्रियाओं का संयोग – वर्त. कृद. के साथ मुख्य क्रिया तथा किसी सहायक क्रिया का योग होता है ;

2.2.1 वर्त. कृद. + / आ – "आना" इसमें निरन्तरता का भाव निहित रहता है । जैसे –

/काम करतो आ/ "काम को करता आ"
/पाणी पीतो आ/ "पानी पीते आ"
/गावडी चरातो आ/ "गाय को चराते आ"
/हंसतो आ/ "हंसता आ"
/आंकी मीचन आ/ "आंख बन्द कर आ"

2.2.2. वर्त. कृद.+ √खा इसका प्रयोग क्रिया विशेषणात्मक है । जैसे – /वू हनूज मारच खावच/ "वह तो पैसे ही मारता खाता है । इसके आज्ञार्थक और भूतकालिक रूप नहीं बनते ।

2.2.3. वर्त.कृद.+ √ चाल् – इसमें निरन्तरता और पूर्णता का भाव निहित रहता है । क्रिया विशेषणात्मक रूप में भी इसका प्रयोग होता है । जैसे – /ई कामेन करतो चाल/ "इस काम को करता चल"
(पूर्णता)

/वू वाटे पर आम्बा खातो चालो/ "वह रास्ते में आम खाता चलता है
(क्रिया विशेषणात्मक)

/वू वाटी खाती चालेची, वजी वाते करीं चालेची/ "वू रोटी खाती चलती है और बात करती चलती है । (निरन्तरता)

2.2.4. वर्त. कृद. + √ जो - "जा" - पूर्णता, निरंतरता का भाव निहित रहता है क्रिया विशेषणात्मक प्रयोग भी होता है । जैसे -

/बाटी वाटे परज खान जो/ "रोटी रास्ते में ही खाता जा"
/तू ई लोटा भिभर घर देतो जो/ "तू यह लोटा भाई के घर देते जाना"
/तू षचारतो जो/ "तू बोलता जा" /तू तार काम करतो जो/ "तू अपना काम करता जा"

2.2.5 वर्त. कृद. + √ फर "फिर" - इसमें निरन्तरता का भाव निहित रहता है । जैसे - /तू केतो फर, तार केमेती कांय वोया/ "तू कहता फिर तेरे" कहने से क्या होता है"
/काम काई करेलनी, येवडी -वोवडी फर करेचो/ काम कुछ करता नहीं, इधर-उधर घूमता फिरता है"।
/एक धापडेती रोतो फरीस/ "एक थप्पड़ के मारे रोता फिरेगा"
/रोतो फर काय करलीस/ "रोता फिर क्या कर लेगा"

2.2.6 वर्त. कृद. + / रह् - इसमें निरन्तरता का भाव निहित रहता है । जैसे -

/ तू आपणो काम करतो रह् / "तू अपना काम करता रहे"
/तू जातो रह् / "तू जाता रहे" /वू हमेशा जातो रहच/ वह अपनी बात कहता रहता है ।
/वू जा रहोच/ "वह जा रहा है"

2.3. <u>भूतकालिक कृदन्तों के साथ क्रियाओं का संयोग :</u>

निम्नलिखित धातुओं के भूतकालिक कृदन्तों के साथ √ आ-क्रिया का संयोग हो सकता है ।

2.3.1. भू. कृ. + √ चल

/मैं आम्बा खायेन चलो आयो/ "मैं आम खाने चला आया"

/मैं सामळतेई चलो आयो/ "मै सुनते ही चला आया"

/तू मार दाई कसेन चलो आयो/ "तुम मेरे पास क्यों चला आया"

/वू तार दाई दाड़ी चली आय/ "वह तुम्हारे पास रोज चली आयेगी

यह प्रयोग भी क्रिया-विशेषणात्मक है ।

2.3.2. भू. कृ. + √लाग "लग" :

/मार लारज लागन आवछ/ "मेरे साथ ही लगा आता है"

/छोरी तार लारज लागन आई/ "लड़की तेरे साथ ही लगी आई"

/वू ओर भाईर लार लागन आई/ "वह उसके भाई के साथ लगी आई"

2.3.3. भू.कृ. + √ फास "दौड"

/वू तार नाम सामळन धासन आय/ "वह तो तेरा नाम सुनकर दौड़कर आयेगा ।

/पीसा लेखतो धासन आ/ "पैसे लेना हो तो दौड़ा आ"

2.3.4. प्रयोग क्रिया विशेषणात्मक है ।

2.3.4. भू.कृ. + √ बंध - "बाँधना" -

/बळद राडीमैंस में बंध आयो/ "बैल रस्से में बंध आया"

/वू वेतडूर लार बंध आयो/ "वह दुल्हा के साथ बंध आयो"

2.3.5. भू. कृ. + √ दब - "दबना" -

/ई कूकडी कतेती दब आई छ/ "यह मुर्गी कहीं से दब आई है"

/ई छोरी बोझा ती दबगी छ/ "यह लड़की बोझ से दब गई है"

यह प्रयोग अत्यन्त विरल है ।

2.3.6. प्रत्येक क्रिया के भूतकालीक कृदन्त के साथ / कर् का संयोग किया जा सकता है । इसका संयुक्त रूप में निरन्तरता का भाव निहित रहता है । जैसे - /वू दाढ़ी ईज वाते ना करच/ "वह रोजाना इसी बात को कहता है" /तु हमेशा मांदी वातेज करेची/ "तु हमेशा बुरी बात ही कहा करता है ।

2.3.7 प्रत्येक क्रिया के भूतकालिक कृदन्त के साथ / क जा का संयोग करके क्षमता सूचक कर्मवाच्य रूप बनाए जाते हैं । जैसे - /वोपर बाटी खाय जायेनी/ "उस पर रोटी नहीं खाई जायेगी",

2.3.8. भूतकालिक कृदन्त + / रह् - "रहना" : इसमें भी निरन्तरता का भाव निहित रहता है । जैसे -

/ते इतेज बैसन रह/ "तू यहीं बैठा रह"

/तु आपण करे कामेम लागो रह/ "तु अपने काम में लगा रह"

2.4. क्रियार्थक संज्ञाओं के साथ क्रियाओं का संयोग :

2.4.1. क्रियार्थक संज्ञा + / चाह् - "इच्छा चाह" इन रूपों में क्रियार्थक संज्ञा कर्म रूप में रहती है । अर्थ में इच्छा वाचकता रहती है । जैसे - /मं आवणो चाउवूं / "मैं आना चाहता हूं " /हम बाटी खानो चाहरेच/ "हम रोटी खाना चाहते हैं" 2

2.4.2. क्रियार्थक संज्ञा + / दा: "दो" ये रूप अनुमत्यर्थक होते हैं । जैसे - /मन जायदा/ "मुझे जाने दो", /वोन चाले दा/ "उसे चलने दो" /येन बोलेदा/ "इसे बोलने दो"

2.4.3. क्रियार्थक संज्ञा + / पड़ - "पड़ना" । इसमें बलात् या अनिवार्य का भाव निहित रहता है ।जैसे - /मन ई काम करनो पड़ो/ "मुझे यह काम करना पड़ा", /तोन वाया मां आणो पड़्या/ "तुझे ब्याह में आना पड़ेगा ।

उपर के विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि बनजारा क्रियाओं की संरचना प्राय: हिन्दी की राजस्थानी और ब्रजी दो बोलियों के समान ही होती है । ब्रजी की भान्ति औ/आ/उ ओकारान्त प्रत्यय भी काम में आते हैं और राजस्थानी की भान्ति अकारान्त प्रत्यय भी । ब्रजी और राजस्थानी के भान्ति बनजारा बोली में भी संयुक्त क्रियाओं को बहुविध प्रयोग होता है । किसी अन्य भाषा का प्रभाव क्रिया की संरचना पर नहीं पड़ा है । बनजारी क्रियाओं की रचना में अपना कुछ वैशिष्ट्य मिलता है ।

....

तृतीय खण्ड : .. .. ..

लोक साहित्य

षष्ठम अध्याय :

लोक साहित्य : सामान्य परिचय

○ **लोक :**

"लोक", संस्कृत की लोक-दर्शने धातु में " घञ् " प्रत्यय लगाने से बना है। इस धातु का अर्थ है देखना और " लोक " शब्द का अर्थ है देखने वाला, अतः वह समस्त जन समुदाय जो इस कार्य को करता है, "लोक " कहलाता है।[1]

"लोक" शब्द अनेक रूपों एवं अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। इसकी परंपरा अत्यंत प्राचीन है। जन सामान्य के अर्थ में[2] तथा लोक-व्यवहार, जीव तथा स्थान के अर्थ में अनेक स्थानों पर ऋग्वेद में इसका प्रयोग हुआ है।[3] वेदों से लेकर उपनिषदों, महाभारत, गीता आदि ग्रंथों में लोक शब्द उपलब्ध है। ऐतरेयोपनिषद में भी इसका प्रयोग भुवन के अर्थ में हुआ है।[4]

आर्यों में " लोक " शब्द का प्रयोग " वेदेतर " अथवा "शास्त्रेतर" के अर्थ में होता था, किंतु आगे चलकर लोक शब्द वेदेतर संस्कृति की संकुचित सीमा तोड़कर ऊँचा उठ गया। गीता में लोकशास्त्र तथा लौकिक नियमाचारों के कोश में इसका उल्लेख हुआ है।[5]

---

1. सिद्धांत कौमुदी, पृ. 417, वेंकटेश प्रेस, बंबई।
2. ऋग्वेद, 3-53-12 ।
3. " नाभ्या आसीदंतरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
   पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्॥ "
   -- ऋग्वेद - 10-90-14 ।
4. ऐतरेयोपनिषद - 1-1-2 ।
5. "अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः ।"
   -- श्रीमद्भगवद्गीता -- 15-18 ।

सम्राट अशोक के शिलालेखों में लोक का प्रयोग समस्त प्रजाजनों के लिए हुआ है ।[1] बौद्धों के धर्म विकास में लोक शब्द मानवीय भावों का बोधक बन गया । प्राकृत एवं अपभ्रंश में प्रयुक्त "लोकजता" [लोक यात्रा] एवं " लोकप्रवाद " [लोक प्रवाद] शब्द लौकिक आचारों का भाव प्रकट करने के रूप में प्रयुक्त हुए । आगे चलकर हिंदी में तुलसीदास जी ने भी लोक और वेद की विरोधात्मक स्थिति प्रकट की है ।[2] लेकिन उपनिषद काल में वेद और वेदेतर संस्कृति की भेदात्मक स्थिति लुप्त हो गई तथा दोनों के समन्वय से एक विशद सांस्कृतिक चेतना प्रकट हुई ।[3] लोक की परंपरा का अनुशीलन मनुष्य को सर्वदर्शी बनाने की सामर्थ्य रखता है ।[4] अतः लोक शब्द संसार के अनेक रूपों, मानव-समूहों, मानवीय क्रिया कलापों तथा विचार परंपराओं को अपने आप में समाहित करता है ।

" लोक " की व्यापकता व्यक्त करने के लिए भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र के चौदहवें अध्याय में अनेक नाट्यधर्मों, लोकधर्मों प्रवृत्तियों का उल्लेख किया है । महर्षि व्यास ने अपनी शतसहस्री संहिता की विशेषताओं का वर्णन करते हुए यह लिखा है कि यह महाभारत ग्रंथ अज्ञान रूपी अंधकार से अंधे एवं व्यथित लोक की आँखों को ज्ञानरूपी

---

1. " अनुवत रासव लोकहिताय गिरिनार वतटवेयत हि मे सर्वलोकहितं । "
-- अशोक के शिलालेख, पृ. 174

2. " लोक कि वेद बड़ेरो । "
-- तुलसीदास, विनय-पत्रिका, पद 172 ।

3. " बहु व्याहितो वा अयं बहुतो लोकः ।
क एतद् अस्य पुनरो ग्रहीता अयात् ।। "
-- जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण -3-28 ।

4. "प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सर्वदर्शी भवेन्नरः ।"
-- महाभारत - आदि पर्व -1-101 ।

अंजन की शलाका लगाकर खोल देता है ।[1]

लोक का अभिव्यक्त स्वरूप सामान्य जनसमूह है । डा॰कुंज बिहारीदास ने लोकगीतों की परिभाषा बतलाते हुए " लोक " शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है -- " लोकगीत उन लोगों के जीवन की अनायास प्रवाहात्मक अभिव्यक्ति है जो सुसंस्कृत तथा सुसभ्य प्रवाहों से बाहर रहकर कम या अधिक रूप से आदिम अवस्था में निवास करते हैं ।"[2] इस प्रकार लोक का अर्थ सरल, स्वाभाविक मानव समाज है, जिसकी भावनाओं, परंपराओं, क्रियाओं, मान्यताओं एवं विचारों से लोक कल्याणमयी संस्कृति का अविर्भाव सिद्ध होता है ।

आधुनिक साहित्य की नवीन प्रवृत्तियों में " लोक " का प्रयोग गीत, वार्ता, कथा, संगीत, साहित्य आदि से युक्त होकर साधारण जन-समाज के रूप में होता है, जिसमें पूर्व संचित परंपराएँ, भावनाएँ, विश्वास और आदर्श सुरक्षित हैं ।[3]

वर्तमान काल में लोक शब्द की व्याख्या विविध रूपों में की गई है । पाश्चात्य भाषाओं में लोक शब्द का समानार्थी " फोक " शब्द प्रचलित है । सर्व प्रथम थॉमसन ने सन् 1846 ई॰ में फोकलोर

---

1. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, षोडश भाग,
   प्रस्तावना पृ॰ 2 ।
2. 'The people that live in more or less primitive conditions outside the sphere of sophisticated influences.'. Dr. Kunj Biharidas; A study of Orissan Folklore,

   Introduction, pate 1.
3. श्री श्याम परमार : भारतीय लोक-साहित्य, पृ॰ 11 ।

शब्द का प्रयोग सार्वजनिक पुरावृत्त (Public antiquities) के लिए किया था ।[1] आगे चलकर यही शब्द सर्वमान्य हुआ । थामसन का मत है कि प्राचीन असभ्य और पिछड़ी जातियों के अंधविश्वास, उनके रीतिरिवाज, उनकी प्रथाएँ आदि के अवशिष्ट अंश ही आगे सभ्य कहलाने वाली जातियों में प्राप्त हैं ।[2]

अंग्रेजी के फोक शब्द की व्युत्पत्ति जर्मन भाषा के वोक शब्द से हुई है, जो एक ओर असंस्कृत जाति और समाज के लिए प्रयुक्त किया गया है तो दूसरी ओर सर्वसाधारण के लिए भी प्रचलित है । इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में " फोक " से आशय आदिम जातियों के कार्य व्यापारों से है । व्यापक अर्थ में यह शब्द सभ्य राष्ट्र की समग्र जनसंख्या के लिए भी प्रयुक्त हो सकता है । इसका साधारण अर्थ (फोक लोर, फोक म्यूजिक, फोक सांग) लोक-कथा, लोक-संगीत तथा लोकगीत आदि के संकुचित रूप में उन लोगों के लिए प्रयुक्त होता है, जो नागर संस्कृति तथा शिक्षा के बाहर पड जाते हैं, जो निरक्षर हैं अथवा जो ग्रामों और जनपदों में निवास करते हैं ।[3]

" लोर " शब्द की उत्पत्ति एँग्लो सेक्सन शब्द Lare से हुई है, जिसका अर्थ है -- " जो सीखा जाय । " अत: "फोकलोर" का शाब्दिक अर्थ " असंस्कृत लोगों का ज्ञान" हुआ । इस प्रकार निम्न वर्ग के व्यक्तियों से संबंधित समस्त विचार व्यापारों को "फोकलोर " शब्द में समाहित किया गया है ।

---

1. Leach Maria : Dictionary of Folklore, Vol.I, p.403.
2. Encyclopeadia of Social Sciences, Vol.5, p.288.
3. Encyclopeadia Britanica, Vol.9, p.518.

1. ग्राम, जन तथा लोक

हिंदी में ग्राम, जन तथा लोक " फोक " के पर्यायवाची हैं । पं० राम नरेश त्रिपाठी " फोक " के लिए " ग्राम " शब्द को उचित मानते हैं । इसी आधार पर उन्होंने " ग्राम-गीत " को "फोक सांग " का पर्यायवाची बनाया है । उनका कथन है -- " मैंने गीतों का नामकरण ग्रामगीत शब्द से किया है क्योंकि गीत तो ग्रामों की संपत्ति हैं । शहरों में तो वे गए हैं, जन्मे नहीं, इससे मैं उचित समझता हूँ कि ग्रामों की यह यादगार ग्रामगीत शब्द द्वारा स्थायी हो जाय ।[1]

" जन " शब्द " जनि " धातु से निकलता है, जिसका अर्थ है -- "उत्पन्न होना । " अतः " जन " शब्द में " लोक " शब्द की व्यापकता समाविष्ट नहीं होती । डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी की लोक शब्द की व्याख्या दृष्टव्य है -- " लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम नहीं बल्कि नगरों और गावों में फैली हुई समूची जनता है, जिसके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं है ।[2] जन साहित्य के पीछे प्रायः व्यक्ति की कार्य - प्रेरणा होती है । जनसाहित्य और लोक-साहित्य में फर्क बताते हुए डा०नामवर सिंह का कथन है कि -- " जन साहित्य औद्योगिक क्रांति से उत्पन्न समाज -व्यवस्था की भूमिका में प्रवेश करने वाले सामान्य जन का साहित्य है । लोक साहित्य जनता के लिए जनता द्वारा रचित साहित्य है ।[3]

---

1. पं० त्रिपाठी रामनरेश : जनपद, अंक 1, पृ० 11
2. डा० द्विवेदी हजारीप्रसाद : जनपद - त्रैमासिक, अंक 1, पृ०66
3. डा० नामवर सिंह : जनपद त्रैमासिक, खंड-1, अंक 2, पृ०63-64

इस प्रकार समस्त भारतवासियों को ग्रामों या जनपदों की सीमा में बांधना उचित नहीं है । लोक की सीमा बड़ी व्यापक है, उसमें ग्राम, नगर और जनपद का अविच्छिन्न समन्वय है । अतः " लोक " शब्द ही " फोक " का सम्यक् पर्यायवाची शब्द हो सकता है । डा॰ सत्येन्द्र लोक की व्याख्या करते हुए कहते हैं -- "लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो अभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना अथवा अहंकार से शून्य है और जो एक परंपरा के प्रवाह में जीवित रहता है ।[1]" वस्तुतः " लोक " मानव जीवन का विशाल सागर है । मानव संस्कृति का उत्स भी लोक ही है । डा॰ वासुदेवशरण अग्रवाल के शब्दों में -- " लोक हमारे जीवन का महा समुद्र है । उसमें भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है । लोक राष्ट्र का अमर स्वरूप है । लोक कृत्स्न, ज्ञान और संपूर्ण अध्ययन में सब शास्त्रों का पर्यवसान है । अर्वाचीन मानव के लिए लोक सर्वोच्च प्रजापति है । लोक, लोक की धात्री सर्व भूत माता, पृथ्वी और लोक का व्यक्त रूप मानव - यही हमारे नए जीवन का अध्यात्मशास्त्र है ।"[2]

हिंदी में सर्वप्रथम ग्रामगीत की अपेक्षा लोकगीत शब्द का प्रयोग करने में स्वर्गीय सूर्यकरण पारीक का उदार दृष्टिकोण ही व्यक्त होता है ।[3] इस प्रकार " लोक " में सर्व समाहित है । " लोक " में " लोके वेदे च " से लेकर " लोक कि वेद बलैरी " तक शुद्ध फोक की भावना मिलती है ।[4]

---

1. डा॰ सत्येंद्र : लोक साहित्य विज्ञान, पृ॰ 3
2. डा॰ अग्रवाल वासुदेवशरण : सम्मेलन पत्रिका [लोक संस्कृति विशेषांक] सं॰ 2010, पृ॰ 65 ।
3. पारीक सूर्यकरण : राजस्थानी लोकगीत, पृ॰ 1, पाद टिप्पणी
4. डा॰यादव शंकरलाल : हरियाणा प्रदेश का लोकसाहित्य, पृ॰25 ।

2. लोक-संस्कृति, लोक-वार्ता तथा फोक लोर

लोक संस्कृति को यूरोप के देशों में " फोक लोर " का नाम दिया गया है । सोफिया बर्न ने इसकी वैज्ञानिक व्याख्या देते हुए लिखा है -- " यह एक जातिबोधक शब्द की भांति प्रतिष्ठित हो गया है, जिसके अंतर्गत पिछड़ी जातियों में प्रचलित अथवा अपेक्षाकृत समुन्नत जातियों के असंस्कृत समुदायों में अवशिष्ट विश्वास, रीतिरिवाज, कहानियाँ, गीत तथा कहावतें आती हैं । प्रकृति के चेतन तथा जड़-जगत के संबंध में, मानवी स्वभाव तथा मनुष्य कृत पदार्थों के संबंध में, भूत प्रेतों की दुनिया तथा उसके साथ मनुष्यों के संबंध के विषय में जादू, टोना, सम्मोहन, वशीकरण, तावीज, भाग्य, शकुन, रोग तथा मृत्यु के संबंध में आदिम तथा असभ्य विश्वास इसके क्षेत्र में आते हैं । ... इसमें विवाह, उत्तराधिकार, बाल्यकाल तथा प्रौढ़ जीवन के रीतिरिवाज, अनुष्ठान और त्योहार, युद्ध आखेट, मत्स्य-व्यवसाय, पशुपालन आदि विषयों के भी रीतिरिवाज और अनुष्ठान इसमें आते हैं । धर्मगाथाएं, लोक कथाएं, लोकगीत, किंवदंतियां, पहेलियाँ तथा लोरियां भी इसके विषय है । संक्षेप में, लोक की मानसिक संपन्नता के अंतर्गत जो भी वस्तु आ सकती है, वह सभी इसके क्षेत्र में है ।[1]"

हिंदी में " फोक लोर " के पर्यायवाची शब्द के संबंध में विद्वानों में बड़ा मतभेद रहा है । फोकलोर के पर्यायवाचक "लोक वार्ता" शब्द के अतिरिक्त कतिपय अन्य नवीनतम संज्ञाओं का भी आविर्भाव हुआ है । " फोकलोर" के वाच्यार्थ को लेकर किसी ने " लोकविद्या " शब्द सुझाया तो किसी ने " लोकायन " ।

---

1. डा. सत्येन्द्र : ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, पृ. 4-5 से शार्लोट सोफिया बर्न के विचार उद्धृत ।

डा० भोलानाथ तिवारी ने " फोक लोर " के लिए " लोकशास्त्र ", " लोक-विज्ञान ", " लोक परंपरा " , " लोक - प्रतिभा " , "लोक प्रवाह" "लोक पथ ", " लोक विज्ञान " , " लोक संग्रह " " लोक अयन " आदि शब्दों की ओर संकेत किया है । 1.

लोकवार्ता को ग्रहण करने में अनेक आपत्तियाँ उपस्थित हुई हैं । डा० कृष्णदेव उपाध्याय ने " लोक वार्ता " शब्द को अव्यापक तथा अव्याप्ति दोषों से ग्रस्त होने के कारण " फोक लोर " के पर्यायवाची के रूप में रखना अस्वीकार किया है । लोक वार्ता शब्द के अन्दर अधिक से अधिक गाथा या लोक चर्चा का भाव वहन करने की क्षमता है । उनके अनुसार लोक वार्ता की अपेक्षा लोक -संस्कृति शब्द अधिक उपयुक्त एवं समीचीन है ।[2] डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी भी "फोकलोर " के अर्थ में " लोक संस्कृति " शब्द के पक्ष में हैं । [3]

डा० भोलानाथ तिवारी ने " लोक वार्ता " शब्द को अस्वीकार करते हुए कहा है कि लोकवार्ता में अधिक से अधिक लोककथा का भाव वहन करने की क्षमता है । डिंगल में " वारता " या " वारता " का प्रयोग कथा के अर्थ में ही होता है । उन्होंने " लोकयान " शब्द में लोक जीवन की कुछ विकास-शीलता का निर्वाह करते हुए उसे सर्वथा " फोकलोर " के लिए उपयुक्त बताया है और " लोकयान " से सहमत होते हुए भी व्यक्तिगत रूप से " लोकयान " शब्द का सुझाव उपस्थित किया है । [5] डा० सुनीतिकुमार चटर्जी ने भी

---

1. डा० भोलानाथ तिवारी : भारतीय लोक -साहित्य, पृ० 15 ।
2. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, षोडश भाग, प्रस्तावना, पृ० 11
3. डा० द्विवेदी हजारीप्रसाद : सम्मेलन पत्रिका { लोक संस्कृति अंक } सं० 2010, पृ० 66 ।

" लोकयान " शब्द के पक्ष में मत व्यक्त करते हुए उसे " फोकलोर " का समानार्थी बताया है ।[1] डा॰ सत्येन्द्र ने " लोकाभिव्यक्ति " और " लोक तत्त्व " ऐसे दो शब्द प्रस्तुत किए हैं, किंतु इनमें संकीर्णार्थ की व्यंजना होने के कारण इनको " फोकलोर " के समकक्ष रखना उपयुक्त नहीं है । लोकाभिव्यक्ति केवल लोककला और साहित्य का बोधक है और लोकतत्त्व " फोक एलिमेंट " के लिए प्रयुक्त होना चाहिए ।[2]

यद्यपि " फोक " के लिए " लोक " शब्द के ग्रहण के समान ही " लोर " के पर्यायवाची हिंदी शब्द के ग्रहण के लिए विद्वानों में मतैक्य नहीं है और नित्य नवीन शब्दों की उद्भावना की जा रही है, तथापि भाषा शास्त्र की दृष्टि से रूढ़ प्रयोगों द्वारा विशिष्ट अर्थ एवं महत्त्व प्राप्त कर लेने के कारण " लोकवार्ता " को " फोकलोर " की समानार्थक महत्ता प्राप्त हो गई तथा हिंदी में उसका प्रयोग स्वीकृत हो गया ।[3] अतः " फोकलोर " के अभीष्ट अर्थ की व्यंजना के लिए " लोकवार्ता " शब्द का प्रयोग ही उपयुक्त है ।

लोक जीवन में परिव्याप्त समस्त विचार-आचार, रीति रिवाज, रहन सहन, राग द्वेष, विश्वास - मनोभावों आदि का समन्वित अध्ययन लोक वार्ता शास्त्र का उद्देश्य है । लोक जीवन की गंगा की लहरों से इन लोक वार्ता के तत्त्व उद्भूत होते हैं और अपने चेतन अस्तित्व का आभास अंकित करते हैं । इसी तत्त्व को

1॰ डा॰ चटर्जी सुनीतिकुमार : राजस्थानी कहावतें -भाग 1-भूमिका ।

2॰ डा॰तिवारी भोलानाथ : " लोकायन और लोक साहित्य" शीर्षक निबंध , सम्मेलन पत्रिका [लोक संस्कृति अंक] पृ॰ 436 ।

3॰ श्री अवस्थी सत्यव्रत : लोक साहित्य की भूमिका , पृ॰ 8

ध्यान में रखते हुए बेटकिन ने कहा है कि लोकवार्ता दूर और अत्यंत प्राचीन जैसी कोई वस्तु नहीं है । यह तो हमारे बीच सत्य और सजीव है ।[1] पाश्चात्य विद्वानों के परस्पर विरोधी मतों के बावजूद लोकवार्ता संबंधी एक सामान्य धारणा निर्मित होती है, जिसके प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं -- साहित्य, मौखिक आधार अनुभवजन्य संस्कृति, परंपरा तथा सौंदर्यात्मकता ।

बेयार्ड ने धारणाओं के आधार पर लोकवार्ता के अंतर्गत ब्रह्मांड, जीव की उत्पत्ति, प्रकृति और नियमन संबंधी धारणाएं, देवी तथा अपौरुषेय (Super-natural) शक्तियों का मनुष्य से संबंध आदि की धारणाएं, जाति के बौद्धिक विकास और उनके मूल स्रोत की धारणाएं, पराक्रम, सौंदर्य, सामाजिक व्यवहार संबंधी समस्त स्वच्छ एवं भद्दी धारणाएं समाविष्ट कर दी हैं ।[2] डा. वासुदेवशरण अग्रवाल ने भी लोकवार्ता के इसी तत्व को स्पष्ट करते हुए कहा है कि -- " लोक वार्ता एक जीवित शास्त्र है । लोक का जितना, जीवन है, उतना ही लोकवार्ता का विस्तार है । लोक में बसनेवाला जन, जन की भूमि और भौतिक जीवन तथा तीसरे स्थान में उस जीवन की संस्कृति इन तीन क्षेत्रों में लोक के पूरे ज्ञान का अंतर्भाव होता है और लोकवार्ता का संबंध भी इन्हीं के साथ है ।"[3]

---

1. ' Folklore is not something for away and long ago, but real and living among us." - Batkin, B.A., Introduction to American Folklore, p.8.

2. Beyard Samuel P. : The Materials of Folklore, p.8.

3. डा. अग्रवाल वासुदेव शरण : पृथ्वीपुत्र, पृ. 82 ।

लोक वार्ता का क्षेत्र व्यापक होने के कारण उसे किसी बंधी बंधाई लीक से चलाना या उसे किन्हीं सीमाओं से बांधना असंभव है । सोफिया बर्न के मतानुसार लोकवार्ता एक जातिबोधक पारिभाषिक रूप में अंकित है, जिसके अंतर्गत पिछड़ी जातियों में प्रचलित या उन्नत जातियों के असभ्य वर्गों में अवशिष्ट विश्वास, रीतिरिवाज, कहानियाँ, गीत और कहावतें आदि आती है । [1]

यद्यपि लोक वार्ता का दायरा विस्तृत है तथापि सोफिया बर्न द्वारा किए गए विषय विभाजन की तालिका डा॰ सत्येन्द्र ने इस प्रकार की है -- [2]

1. वे विश्वास और आचरण - अभ्यास जो संबंधित हैं -- पृथ्वी और आकाश से, वनस्पति जगत से, पशु जगत से, मानव से, मनुष्य निर्मित वस्तुओं से, आत्मा और दूसरे जीवन से, परामानवी व्यक्तियों से, शकुन अपशकुन भविष्यवाणियों और आकाशवाणियों से, जादू टोना से और रोगों तथा स्थानों की कला से ।

2. <u>रीतिरिवाज</u>

   सामाजिक तथा राजनैतिक संस्थाएं, व्यक्तिगत जीवन के अधिकार, व्यवसाय धंधे तथा उद्योग, तिथियाँ व्रत तथा त्योहार, खेल कूद तथा मनोरंजन ।

3. <u>कहानियाँ</u>

   (अ) जो सच्ची मानकर कही जाती हैं ।

   (आ) जो मनोरंजन के लिए होती हैं, सभी प्रकार के गीत, कहावतें तथा पहेलियाँ, पद्यबद्ध कहावतें तथा स्थानीय कहावतें ।

---

1. "It has established itself as the generic term under which the traditional beliefs, customs, stories, songs and sayings current ~~Bayard Samuel P. The Materials of Folklore, p.~~ among ~~in~~ backward peoples or retained by the uncultured classes of more advanced peoples, are comprehended and included." -Sophia Burn : A handbook of Folklore, p.1-2.

2. डा॰ सत्येन्द्र : ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन , पृ॰ 5 ।

उपर्युक्त विषय तालिका से यह स्पष्ट है कि " लोकवार्ता " शब्द " फोकलोर " के व्यापक एवं विस्तृत अर्थ को अभिव्यक्त करने में पूर्ण समर्थ है । लोकवार्ता के पक्ष में " लोक संस्कृति " शब्द का प्रचलन हो जाय तो लोकसंस्कृति शब्द " फोक कल्चर " का पर्यायवाची शब्द हो सकता है । वस्तुतः फोक कल्चर और फोकलोर में कोई विशेष अंतर नहीं है । दोनों की सीमाएं एक दूसरे के छोर को छूती हुई दिखाई पड़ती हैं ।[1]

3. लोक साहित्य

" लोक " और " लोक वार्ता " का स्वरूप स्पष्ट होने के पश्चात अब लोक साहित्य पर दृष्टिपात करना समीचीन होगा । लोक साहित्य लोकवार्ता का ही एक महत्वपूर्ण अंग है । सोफिया बर्न द्वारा प्रस्तुत लोकवार्ता सामग्री के उपर्युक्त तीन वर्गों में से तीसरे वर्ग की सामग्री लोक साहित्य है । वैसे तो लोक साहित्य और लोकवार्ता में अभिन्न संबंध है, जैसे फूल और उसकी सुगंध का ।

लोक साहित्य का लोकवार्ता - लोक संस्कृति से अटूट एवं अभिन्न संबंध दिखाते हुए डा. कृष्णदेव उपाध्याय लिखते हैं कि — " लोक साहित्य लोक संस्कृति का एक भाग है, उसका एक अंग है, यदि लोक संस्कृति की उपमा किसी विशाल वटवृक्ष से दी जाय तो लोक साहित्य को उसकी एक शाखा मात्र समझना चाहिए । यदि लोक-संस्कृति शरीर है तो लोक साहित्य उसका एक अवयव है । लोक संस्कृति का क्षेत्र-विस्तार अत्यंत व्यापक है, परंतु लोक साहित्य का विस्तार संकुचित है । लोक-संस्कृति की व्यापकता जन-जीवन के समस्त व्यापारों में उपलब्ध होती है, परंतु लोक-साहित्य जनता

---

1. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, षोडश भाग, पृ. 12

है गीतों, कथाओं, गाथाओं, मुहावरों और कहावतों तक ही सीमित है। एक का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है तो दूसरे का सीमित तथा संकुचित। लोक साहित्य अंग है तो लोक संस्कृति अंगी है। लोक संस्कृति में लोक साहित्य का अन्तर्भाव होता है परंतु लोक साहित्य में लोक संस्कृति का समावेश होना संभव नहीं है।[1]

वस्तुतः लोक साहित्य की क्षेत्र परिधि अत्यंत विस्तृत है। यदि लोकवार्ता लोक-संस्कृति महासागर है तो लोक साहित्य उसमें समाहित होने वाला एक महानद। लोक साहित्य की व्यापकता मनुष्य के जन्म से लेकर उसकी मृत्यु तक है। मनुष्य के शाश्वत मन का स्पष्ट प्रतिबिम्ब लोक साहित्य में प्राप्त होता है। विश्व लोक साहित्य का प्रवाह इसी छोर से प्रवहमान है। देश-विदेश की विभिन्न भाषाएँ, विभिन्न समाज, विभिन्न संस्कृतियाँ अनेक शरीरों की तरह हैं, उनकी आत्मा एक है। शाखाएँ अनेक मूल एक है। इसकी अन्तर्बाह्य वृत्ति भी स्वाभाविक और सरल है। " सुसंस्कृत मनुष्य का साहित्य अनेक रूढ़ियों से जकड़ा हुआ है। कविता पिंगल शास्त्र की नपी तुली नालियों से प्रवाहित होती है, अलंकार के भार से शिल्पविधान को ध्यान में रखना पड़ता है। नाटकों की रचना में अनेक नाटकीय नियमों का पालन करना पड़ता है। इसके विपरीत लोक साहित्य का महान और प्रधान गुण है स्वाभाविकता, स्वच्छंदता तथा सरलता। यह साहित्य उतना ही स्वाभाविक है, जितना आकाश में उड़नेवाला पक्षी। सभ्यता के प्रवाह से दूर रहने वाली अपनी सहजावस्था में वर्तमान जो निरक्षर जनता है, उसकी आशा-निराशा, हर्ष-विषाद, जीवन-मरण, लाभ हानि, सुख-दुःख आदि की अभिव्यंजना लोक साहित्य में प्राप्त होती है।

---

1. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, सोलह भाग, पृ. 14.

इस प्रकार लोक साहित्य वह साहित्य है जो जनता द्वारा जनता के लिए रचा गया हो ।[1]

लोक-साहित्य की परिभाषा देते हुए डा॰ सत्येन्द्र ने कहा है कि लोक साहित्य के अन्तर्गत वह समस्त बोली या भाषागत अभिव्यक्ति आती है, जिसमें —

[अ] आदिम मानस के अवशेष उपलब्ध हों ।

[आ] परंपरागत मौखिक क्रम से उपलब्ध बोली या भाषागत अभिव्यक्ति हो, जिसे किसी की कृति न कहा जा सके, जिसे श्रुति ही माना जाता हो और जो लोकमानस की प्रवृत्ति में समाई हुई हो ।

[इ] कृतित्व हो, किंतु वह लोक मानस के सामान्य तत्वों से युक्त हो, कि उसके किसी व्यक्तित्व के साथ सम्बंध न रहते हुए भी, लोक उसे अपने ही व्यक्तित्व की कृति स्वीकार करें ।[2]

लोक साहित्य लोक की मौखिक परंपरा का ही अनुसरण करता है जिसमें विषयों का समावेश श्रुति की सीमा में ही समाहित होता है । लैटकिन ने भी लोक की मौखिक भावाभिव्यक्ति को लोक-साहित्य का आवश्यक तत्व प्रतिपादित किया है ।[3] अतः लोक साहित्य मौखिक होता है तथा परंपरा गत रूप से चला आता है । यह साहित्य जब तक मौखिक रहता है, तभी तक इसमें ताजगी और जीवन पाया जाता है, लिपि की धारा में जाते ही इसकी संजीवनी शक्ति नष्ट हो जाती है ।

---

1. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास : षोडश भाग, पृ॰ 15 ।
2. डा॰ सत्येन्द्र, लोक साहित्य विज्ञान, पृष्ठ 4.
3. लैटकिन, ए॰डी॰ : फोकलोर डिक्शनरी, पृ॰ 399.

4. परंपरा

भारत में लोक-साहित्य की परंपरा बहुत प्राचीन है । लोक-साहित्य की विधा - लोकगीतों का बीज प्राचीन ऋग्वेद में पाया जाता है । गीत के अर्थ में " गाथा " शब्द का प्रयोग ऋग्वेद के अनेक मंत्रों में प्राप्त होता है ।[1] वेदों में आध्यात्मिक अनुभूतियों के साथ भौतिक विषयों से सम्बद्ध ऐसे अनेक सूक्त हैं, जिनमें विशद लोक व्यवहार स्थापित हुआ है । वैदिक साहित्य तत्कालीन जनसाधारण की भाषा का साहित्य - लोकसाहित्य है । वह प्राकृतिक शक्तियों से सम्बद्ध दिव्य साहित्य है । वह आर्यों के उस सामाजिक जीवन का साहित्य है, जब वे मुख्यतः पशु पालन कर जीवन-यापन करते थे, पर घुमक्कड़पन छोड़ ग्राम्य सभ्यता की ओर बढ़ चले थे । पशु चारण वृत्ति के साथ कृषि का विकास हो चला था । वैदिक साहित्य लोक गीतों-सा स्वाभाविक साहित्य है ।[2]

वैदिक गाथाओं की परंपरा रामायण - महाभारत काल में भी अक्षुण्ण दिखाई पड़ती है । रामायण - महाभारत में तत्कालीन समाज की लौकिक भावभूमि अंकित हुई है, जिसमें लोक-मानव का यथार्थ रूप प्राप्त होता है । महाभारत में युद्ध के साथ लोक-संस्कृति की सजीव अभिव्यक्ति हुई है । राजा हाल द्वारा रचित "गाथा सप्तशती " से पता चलता है कि उस समय लोकगीत बनाने तथा गाने की बहुत बड़ी प्रथा थी । लोक संस्कृति का पाली जातकों में भी सजीव चित्र मिलता है । बावेरु - जातक में तत्कालीन व्यापारिक दशा का पता चलता है तो अन्य जातकों से तत्कालीन साधारण जनता के रहन सहन, खानपान और रीतिरिवाजों का

---

1. " प्रकृत्यान्यूजीषिणः कण्वा इन्द्रस्य गाथया । " -- ऋग्वेद 8-32-1
2. डा.पाण्डेय राजबली [संपा.] हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास प्रथम भाग. पृ.196 ।

पता चलता है । [1]

जातक कथाएं भारतीय कथा-साहित्य के महत्वपूर्ण अंग हैं, जिनसे विक्रम पूर्व तीसरी शताब्दी से चौथी शताब्दी तक के भारत की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक अवस्था का पता चलता है । जैन पुराणों में भी लोक साहित्य के विपुल बीज वर्तमान है । लोक साहित्य की कतिपय प्रवृत्तियों का आभास सिद्धों के चर्यापदों में भी प्राप्त होता है ।[2] इन सिद्धों की धर्म साधना जनसाधारण में व्याप्त थी । इस प्रकार लोक साहित्य का अक्षुण्ण प्रवाह अत्यंत प्राचीन काल से लेकर आज तक अबाधित गति से प्रवहमान है ।

5. साहित्य और लोक साहित्य

जीवन का सार सौंदर्य लोक साहित्य में विभिन्न रूपों में प्रस्फुटित होता है । मानव की हंसी-मुस्कान, आह-कराहट, आंसु-रुदन लोक साहित्य में प्रकट होते हैं । लोकसाहित्य मूलतः मानव की कहानी है और मानव का संगीत है । लोक साहित्य मानव का ही मूर्त अभिव्यक्त रूप है । लोक साहित्यकार की यह अभिव्यक्ति सहज, सरल एवं निश्छल होती है । डा॰ नगेंद्र के मतानुसार - " अभिव्यक्ति की निश्छलता ही साहित्य का पहला और अनिवार्य लक्षण है ।"[3]

इसी तरह साहित्य और लोकसाहित्य में मौलिक भेद है । लोक साहित्य नाम से ही स्पष्ट है - लोक का, साधारण अशिक्षित जनता का साहित्य होता है । साहित्य सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत जनता की कृति होता है । " पोषण, तोषण और मोदन की लोक अभिव्यक्तियों का वाणी रूप लोक साहित्य के अन्तर्गत आता है ।

---

1. प्रो॰ शर्मा बटुकनाथ : पालि जातकावली, पृ॰ 17
2. डा॰ भारती धर्मवीर, : सिद्ध साहित्य , पृ॰ 237 ।
3. अनुवाद भारतभूषण [सं॰] डा॰ नगेंद्र के सर्वश्रेष्ठ निबंध, पृ॰ 48 ।

... इस साहित्य की ऊपरी सीमा शिष्ट साहित्य को स्पर्श करती है और निचली सीमा जंगली अभिव्यक्ति को ।[46] एक में लोक जीवन के विविध चित्र मिलते हैं, तो दूसरा सीमित शिष्ट समाज का दर्पण है किंतु जहाँ साहित्य अपने क्षेत्र की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है, वहाँ लोकसाहित्य भी अपने वातावरण और अपने सीमा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है ।

यद्यपि साहित्य और लोक - साहित्य दोनों ही लोकानुवर्ती हैं, तथापि दोनों में मौलिक भेद एवं सैद्धांतिक अंतर है । साहित्य अपने मस्तिष्क से लोक जीवन के धरातल से ऊँचा उठता है तो लोक साहित्य इस धरातल को कभी छोड़ नहीं पाता । लोक जीवन के सांस्कृतिक तत्व साहित्य में गृहीत होते हैं किंतु लोक साहित्य में वे समाहित रहते हैं । लोक साहित्य का सबल और कलात्मक पक्ष भावों की कोमलता और प्राणों का स्पंदन है जबकि साहित्य का तर्कनिष्ठ मस्तिष्क और मेधाशक्ति । लोक साहित्य की अंतरंग अनुभूतियाँ उन्मुक्त होती हैं, जबकि साहित्य में वे सीमाबद्ध होती हैं । लोक साहित्य नित्य नूतन जीवन का अमूल्य प्रतिबिम्ब है तो साहित्य में वैयक्तिकता का प्राधान्य रहता है । व्यक्ति का विकसित आत्म तत्व और व्यक्ति द्वारा प्रकट होने वाली सामाजिक अभिव्यक्ति साहित्य में होती है । लोक साहित्य समाज की ही व्यापक अभिव्यक्ति है ।

6. लोक साहित्य की विधाएँ

लोक गीत, लोकगाथा, लोक कथा, लोकोक्ति, लोकसंगीत, लोकनृत्य तथा लोककला आदि लोकसाहित्य की विभिन्न विधाएँ हैं ।

---

46. डा. सत्येन्द्र, लोक साहित्य विज्ञान, पृ. 6 ।

6.1. लोकगीत

लोकगीत "लोक" के भावुक तथा संवेदनशील हृदय के स्वाभाविक उद्गार हैं। लोकगीत का मूल स्रोत लोक-मानस है। यह लोकमानस अनुभूत बहुश्रुत ज्ञान की परंपरा को अपनाकर मनोभावों की स्वर-सरिता बहा देता है।

लोकगीतों में लोक जीवन की सच्ची झाँकी निहित है और भारतीय संस्कृति का सजीव इतिहास संगृहित है। "लोक गीत किसी संस्कृति के मुँहबोले चित्र हैं।"[1] अतः "लोकगीतों में धरती गाती है, पहाड़ गाते हैं, नदियाँ गाती हैं, फसलें गाती हैं, उत्सव, मेले, ऋतुएँ एवं परम्पराएँ गाती हैं।"[2] लोकगीतों की यह परंपरा अत्यंत प्राचीन है। पंडितों की बँधी-बँधाई प्रणाली पर चलने वाली काव्यधारा के साथ-साथ सामान्य अनपढ़ जनता के बीच एक स्वच्छंद और प्राकृतिक भावधारा भी गीतों के रूप में चलती रहती है।[3] लोकगीतों की यह भावधारा अबाधित प्रवहमान है। वस्तुतः "लोकगीत न तो पुराना होता है न नया। वह एक जंगली वृक्ष की भाँति है जिसकी जड़ें सुदूर अतीत की गहराई में दृढ़ हैं, किंतु जिससे निरंतर नई शाखाएँ - पुष्पशाखाएँ पत्ते और नए फल विकसित होते रहते हैं।[4] सामान्य जनभाषा में अवश्य परिवर्तन होता जाता है, गीतों की भाषा भी बदलती जाती है, पर उनके प्राणतत्त्व में कोई अंतर नहीं आता क्योंकि लोकगीत आदि मानव का उल्लासमय संगीत है। यह संगीत की अपरिवर्तनीय धारा युगों से प्रवहमान है।"

---

1. सत्यार्थी देवेंद्र : आजकल, सं. 7, नवम्बर, 1951।
2. सीता देवी : धूलि धूसरित मणियाँ, भूमिका में उद्धृत गांधीजी के उद्गार।
3. पं. शुक्ल रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 724
4. 'A Folksong is neither new nor old, it is like a forest tree, with its roots deeply buried in the past but which continually puts forth new branches, new leaves, new fruits'-P.Williams, Encyclopaedia Britanica,vo.9,p.445

खेतों में, नदियों, पहाड़ों , मैदानों, रास्तों या घरों में, विरह, वेदना, हँसी मजाक में यह संगीत गीत बनकर कण्ठों से फूट पड़ता है। नए गीतों के साथ पिछले गीत घुल जाते हैं। नई पीढ़ी, नए भाव, यही गीतों की परंपरा है। गीतों की यह परंपरा तब तक विद्यमान रहेगी जब तक मानव का अस्तित्व रहेगा। मानव मन की विभिन्न स्थितियों ने इसमें अपने ताने बाने बुने हैं। स्त्री - पुरुषों ने थककर इसके माधुर्य में अपनी थकान मिटाई है। इसकी ध्वनि में बालक सोए हैं, जवानों में प्रेम की मस्ती आई है, बूढ़ों ने मन बहलाए हैं, वैरागियों ने उपदेश पान किया है। विरही-युवकों ने मन की कसक मिटाई है, विधवाओं ने अपने एकांगी जीवन में रस पाया है, पथिकों ने थकावट दूर की है, किसानों ने अपने खेत जोते हैं। "[1]

लोकगीतों की मूल प्रेरणा मानव हृदय की रसात्मक अनुभूति है, अतः लोकगीतों को 'मानव हृदय का उद्वेलित एवं स्वयंस्फूर्त संगीत' कहा गया है।[2] ये गीत किसी कवि की नहीं, व्यक्ति विशेष की नहीं, अपितु सामान्य जन मानस की अज्ञात सृष्टि हैं। " कहाँ से आते हैं इतने गीत ! स्मरण विस्मरण की आँखमिचौनी से, कुछ अट्टहास से और कुछ उदास हृदय से। जीवन के खेत में ये गीत उगते हैं -- कल्पना भी अपना काम करती है, राग वृत्ति भी, भावना भी और नृत्य का हिलोरा भी। "[3] लोकगीतों के उद्गम अज्ञात हैं। " जैसे कोई नदी किसी घोर अंधकारमयी गुफा से बहकर आती हो और किसी को उसके उद्गम का पता न हो, ठीक यही

---

1. डा. परमार श्याम : भारतीय लोक साहित्य, पृ. 52-53 ।
2. ' The primitive spontaneous music has been called folk songs,' : Encyclopaedia Britanica, Vol.9, p.447.
3. सत्यार्थी देवेंद्र : धरती गाती है, पृ. 178 ।

दशा गीतों की है । "[1] लोकगीतों की उत्पत्ति किसी व्यक्ति विशेष की काव्य-प्रतिभा से नहीं हुई, बल्कि इनके निर्माण का श्रेय एक समुदाय को है ।[2] समूह का मानव हृदय जब कभी भी सहानुभूति से प्रेरित सुख-संवेदनाओं से आन्दोलित हुआ होगा, गीतों के अज्ञात स्वर मनुष्य के अधरों पर गूंज उठे होंगे । मानव-हृदय की रसात्मक आनंदोपलब्धि का उद्वेलन हृदय की संकुचित सीमा में न समाकर जब वाणी द्वारा मुखरित होने की स्थिति में पहुंच जाता है, तभी लोकगीतों का स्रोत उमड पड़ता है ।[3] समय के घात-प्रतिघातों में उनका बाह्यस्वरूप बदलता रहता है किंतु गीतों की परंपरा कभी खंडित नहीं होती । इनकी परंपरा पूर्णतः मौखिक होने से केवल श्रुति के माध्यम से प्रत्येक नवीन पीढी अपनी प्राचीन पीढ़ी से गीतों की निधि प्राप्त कर लेती है । इसी आधार पर डा. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इन्हें " सभ्यता के वेद "[4] की संज्ञा से अभिहित किया है ।

लोकगीतों का सौंदर्य अमिट है । इनमें जीवन का सरल एवं नैसर्गिक आनंद अन्तर्निहित है । जटिलता, दुरूहता, आडम्बरहीनता, वैभव की चमक दमक और कृत्रिम समाज-सज्जा का लोकगीतों में नितान्त अभाव रहता है । ये कंठ से गाने के लिए और हृदय से आनंद लेने के लिए होते हैं । " इनमें अलंकार नहीं केवल रस है । छंद नहीं केवल लय है, लालित्य नहीं, केवल माधुर्य है । "[5] अलंकारहीन होते

---

1. पं. त्रिपाठी रामनरेश : कविता कौमुदी, भाग 5, पृ. 11,
   स्व. कुबेरचंद मेघावी के गुजराती विचारों का हिंदी भावानुवाद ।
2. English and popular Ballads, Introduction, p.18.
3. डा. उपाध्याय, चिन्तामणि : लोकायन, पृ. 6 ।
4. डा. दुबे श्यामाचरण कृत " छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का परिचय " की भूमिका में, पृ. 5
5. पं. त्रिपाठी रामनरेश : कविता कौमुदी, भाग 5, प्रस्तावना, पृ. 1-2

हुए भी लोकगीत अपने आप में परिपूर्ण एवं रसमय होते हैं । इसी गुण पर मुग्ध होकर डा॰ हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कहा है कि " लोकगीतों की एक एक बहू के चित्रण पर रीतिकाल की सौ सौ मुग्धाएं, खंडिताएं और धीराएं न्यौछावर की जा सकती हैं ।" 1.

लोकगीत साहित्य की अमूल्य एवं अनुपम निधि है । इनका क्षेत्र बहुत व्यापक है । मानव जीवन का वास्तविक चित्रण जितना इन गीतों में मिलता है, उतना अन्यत्र नहीं । प्रकृति के इन उद्गारों को प्रस्फुटित करने में और सजाने में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों ने अधिक हाथ बँटाया है । नारी हृदय की विशालता, पिता का वात्सल्य, प्रिय का प्रेम, नववधू की तड़पन, कन्या की दुखद विदाई, पति पत्नी के मिलन विरह की कथा-व्यथा सब हमें इन गीतों में उपलब्ध होते हैं ।

लोकगीतों में संगीत तथा लय के साथ रस-सृष्टि का भी अपार वैभव है । उनमें रस की मात्रा व्यास, वाल्मीकि, कालिदास और भवभूति तथा तुलसीदास, सूरदास से भी अधिक है ।2.

6.2. लोकगाथा

लोक साहित्य के अन्तर्गत लोकगीतों में पाई जाने वाली दीर्घ कथावस्तु की अभिव्यक्ति लोकगाथा कहलाती है । लोकगीतों में केवल गेयतत्व प्रधान होता है और कथानक गौण, लेकिन लोकगाथाओं में गेयतत्व के साथ - साथ सुदीर्घ कथानक भी होता है । अंग्रेजी में इन गीतों को " बैलेड्स " कहा गया है । डा॰ सत्येन्द्र इन्हें लोकगाथा की अपेक्षा वीर गाथाएं मानते हैं ।3. संस्कृत साहित्य में "गाथा" शब्द का प्रयोग " गेयपद " के अर्थ में प्राचीन काल से होता चला आया है और इस अर्थ में इसका व्यवहार " ऋग्वेद " के अनेक मंत्रों में पाया

---

1. डा॰ द्विवेदी, हजारी प्रसाद : हिंदी साहित्य की भूमिका, पृ.130
2. पं॰ त्रिपाठी रामनरेश , ग्रामगीत, पृ॰ 31 ।
3. डा॰ सत्येन्द्र : ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, पृ॰ 381 ।

जाता है। गाथा शब्द में गेयता और कथात्मकता के तत्व विद्यमान हैं। अतः इन्हें अन्य संबोधन की अपेक्षा लोकगाथा कहना ही समीचीन है।[1]

विभिन्न विद्वानों ने लोकगाथा की विभिन्न परिभाषाएं दी है -- किट्रीज के अनुसार लोकगाथा कथात्मक गीत है।[2] डा. मरे ने कहा है कि छोटे छोटे पदों में रचित सीधा सादा जोशिला काव्य बेलेड है, जिसमें कोई लोकप्रिय कथा चित्रात्मक रूप में कही गई हो।[3] सिजविक ने लोकगाथा को वह सरल वर्णनात्मक गीत माना है, जो लोकमात्र की संपत्ति होती है और उसका प्रसार मौखिक रूप से होता है[4]।

इन परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि लोकगाथा में गेयता, कथानक, लोकप्रियता एवं मौखिक आधार होता है

---

1. डा. उपाध्याय कृष्णदेव : हिंदी साहित्य का बृहत इतिहास, षोडश भाग, प्रस्तावना, पृ. 73+3=76

2. ' Ballad is a song that tells a story or to take the other point of view, a story told in song." --Kitteredge, G.L. (Edited) F.J. Childe's English & Scottish Popular Ballads, Introduction, p.11.

3. Murry, M.A. (Robert Graves Edited) The English Ballads, Introduction, p.8.

4. ' Simple narrative songs that belong to the people and handed on by word of mouth' - Sidgvick Frank : Old Ballads, p.3.

लोकगाथाओं का भारतीय उद्गम प्राचीन है किंतु इनके निर्माण के संबंध में पाश्चात्य विद्वानों में बड़ा मतभेद है। ग्रिम का समुदायवाद, एलेगल का व्यक्तिवाद, स्टेथल का जातिवाद, विशप पर्सी का चारणवाद, गाइल्ड का व्यक्तित्वहीन व्यक्तिवाद, डा॰ कृष्णदेव उपाध्याय का समन्वयवाद आदि विभिन्न सिद्धांत प्रचलित हैं। इन सिद्धांतों में आंशिक सत्य ही विद्यमान है।

इन पद्यबद्ध लोककथाओं को लिखने की परंपरा गुणाढ्य की "बृहत् कथा मंजरी" से प्रारंभ होती है।[1] किंतु मौखिक परंपरा में जन सामान्य की गेय लोककथाएं प्रत्येक युग की छाप लेकर इतिहास की कल्पना के धूमिल आवरण में छिपाकर न जाने कितने युगों से कंठ-कंठों में प्रवाहित होती चली आ रही हैं। इन गीत-कथाओं में युग का प्रभाव अवश्य वर्णित होता है किंतु उनकी मूल प्रवृत्तियों में किसी भी प्रकार का अंतर नहीं आने वाला।[2] इनमें जीवन-यापन करने की विधि एवं गौरवमय जीवन का निर्माण कर जीवित रहने का दिशा निर्देश भी रहता है।[3] लोकगाथाएं लोक संस्कृति के प्रहरी हैं।

6.3. <u>लोककथा</u>

लोक साहित्य के अंतर्गत लोक कथाओं का विशेष महत्व है। मानव मन की भावभूमि हमें लोक कथाओं के रूप में ही प्राप्त होती है। मानव एवं प्रकृति की घनिष्ठता का अनूठा चित्र भी लोककथाओं में हमें मिलता है।

---

1. डा॰ द्विवेदी हजारीप्रसाद : हिंदी साहित्य का आदि काल, पृ॰56
2. डा॰ उपाध्याय चिंतामणि : मालवी लोकगीत, पृ॰ 229 ।
3. Botkin : 'A Treasury of Western Folklore' Introduction, p.23.

भारत में लोककथा का उद्गम बहुत प्राचीन माना जाता है । लोक कथाओं के बीज सर्वप्रथम वेदों में प्राप्त होते हैं । विश्व के कथा - साहित्य का मूलाधार भारतीय लोककथा है । ऋग्वेद में शुनः शेप का प्रसिद्ध आख्यान मिलता है ।[1] अपाला - आत्रेयी की कथा [2] और च्यवन-सुकन्या [3] की कथा भी इसमें वर्णित है । ब्राह्मण ग्रंथों में भी अनेक कथाएँ प्राप्त होती हैं ।[4] उपनिषदों में अनेक कथाओं का समावेश है । संस्कृत साहित्य में लोक कथाओं का सर्वाधिक प्राचीन तथा विशाल कथा ग्रंथ गुणाढ्य का " बृहत्कथा " साहित्य है । इसके पश्चात द्वितीय महत्वपूर्ण कथा ग्रंथ विष्णु शर्मा रचित " पंच तंत्र " है । संसार के समस्त कथा - साहित्य पर इसने अत्यधिक प्रभाव डाला है और इसका अनुवाद यूरोप की अनेक भाषाओं में हो चुका है ।

6.4. लोकोक्ति

लोकोक्तियों की परंपरा अत्यंत प्राचीन है । वेदों और उपनिषदों में अनेक स्थलों पर इनकी उपलब्धि होती है । [5] त्रिपिटक तथा जातक कथाओं में भी इनका प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है । संस्कृत साहित्य में तो लोकोक्तियों का अनुपम भंडार भरा पड़ा है । हिंदी साहित्य में लोकोक्तियों का व्यापक प्रसार हुआ है ।

---

1. ऋग्वेद, 1 24-30 ।
2. -वही- , 8-9-1 ।
3. -वही- 10-39-4 ।
4. ऐतरेय ब्राह्मण - 7-3
   शाट्यायन ब्राह्मण, 14 -5-1 ।
5. " कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः । "
   -- अथर्ववेद - 7-52-8 ।
   अदीनाः स्याम शरदः शतम् - यजुर्वेद - 36-24 ।

6.5. **लोककला**

लोक-संगीत, लोक-नृत्य तथा लोक-चित्र कला ये लोक कला के तीन प्रमुख पहलू हैं। साथ ही साथ ये तीनों एक दूसरे से परस्पर संबंधित हैं।

6.5.1. **लोक संगीत**

भारतीय मान्यता के अनुसार संगीत के अंतर्गत गीत (Vocal Music) वाद्य (Instrumental music) एवं नृत्य (Dance) तीनों का समावेश होता है।[1] संगीत शास्त्र की दृष्टि से लोकगीतों का महत्त्व अत्यधिक है। यद्यपि लोकगीतों में संगीत का सर्वांगपूर्ण शास्त्रीय रूप नहीं पाया जाता परंतु लोकसंगीत शास्त्रीय संगीत से सर्वथा पृथक नहीं है।

मानव-हृदय के स्वाभाविक स्वर लयबद्ध भावाभिव्यक्ति से ही एक निश्चित एवं विशेष धुन का निर्माण होता है, जिसे लोकधुन कहते हैं। इन धुनों की संख्या अनंत है। भारत के जनपदों में प्रचलित लोकगीतों की विशेष धुनें हैं। इन्हीं लोकधुनों में भारतीय संगीत के सभी राग छिपे हुए हैं। इससे स्पष्ट है कि शास्त्रीय संगीत का विकास निश्चित रूप से लोकगीतों पर आधारित है। शास्त्रीय संगीत का आधार लोक-संगीत ही है।[2] शास्त्रीय संगीत के अनेक रागों का जन्म लोकधुनों से हुआ है। ये लोकधुनें बहुत ही सरल होती हैं।

---

1. " गीतं वाद्यं नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते। " - संगीत रत्नाकर, 1-26
2. डा. उपाध्याय चिन्तामणि : मालवी लोकगीत, पृ. 361 ।

6.5.2. लोक नृत्य :

आंगिक चेष्टाओं द्वारा हृदयगत भावनाओं की अभिव्यक्ति करना नृत्य है । आंगिक चेष्टा मात्र से ही भाव को व्यक्त करने की क्रिया के लिए संस्कृत में " नृत् " धातु का प्रयोग किया गया है ।[1] नृत्य जनसामान्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति का सूचक है ।[2]

विवाहादि मांगलिक प्रसंगों पर विनोद आदि हृदय रंजन के प्रसंगों पर, नृत्य की प्रवृत्ति सहज ही जाग्रत हो जाती है । प्राचीन भारत में नृत्य मनोरंजन का प्रमुख साधन था । नृत्य एवं नाट्क्रियाओं का उल्लेख ऋग्वेद में भी हुआ है ।[3] नृत्य अभिनय प्रधान है एवं उसकी अभिव्यक्ति ताल और रस पर आश्रित है ।[4]

6.5.3. लोक-चित्रकला :

आदिम मानव अपने जीवन के संपर्क में आने वाली वस्तुओं और जीवित प्राणियों की रेखाकृतियों को अपने घर की दीवालों पर उतारने की चेष्टा करता था । यही चेष्टा उस आनंद की कला का प्रारंभिक रूप है, जो चित्रकला के रूप में विकसित हुई ।

यह सौंदर्य भावना शरीर को विभिन्न रूपों में सजाने में भी दिखाई देती है । इसी कारण गोदना गुदाने की प्रथा प्रारंभ हुई ।

---

1. " गात्र विक्षेप मात्रं तु सर्वाभिनय वर्जितम् ।
आंगिकोक्तप्रकारेण नृत्तं नृत्य विदोविदु: ।।
- संगीत रत्नाकर - 7-29 ।

2. " प्रायेण सर्वलोकस्य नृत्तमिष्ट स्वभावत: । "
-- भरतमुनि : नाट्यशास्त्र - 4-244 (निर्णयसागर प्रेस)

3. ऋग्वेद - 10-18-3 तथा 10-29-2 ।

4. " भावाश्रयं तु नृत्तं नृत्यं तालनयाश्रयम् । "
- प्रतापरुद्रीय, पृ. 100-101 ।

सप्तम अध्याय :   ..   ..

बन्जारा लोकगीत

बनजारा लोकगीत : ....

0. प्रस्तावना

बनजारा यायावर जाति है । यायावर जाति के पास शिष्ट या परिनिष्ठित साहित्य प्राय: नहीं होता । वैसे बनजारे की जीवन में साहित्य का प्रमुख स्थान है । जीवन के सभी महत्त्वपूर्ण अवसरों पर उनका जीवन साहित्यमय ही हो जाता है । किन्तु यह साहित्य लोकसाहित्य के ही श्रेणी में आता है । यद्यपि लोक साहित्य के सभी पक्ष बनजारों मानस से नि:सृत होते हैं, तथापि इन सभी पक्षों में गीत का प्रमुख स्थान है । जन्म से लेकर मृत्यु तक के गीत उपलब्ध होते हैं । प्रस्तुत अध्याय में बनजारा गीत का ही अध्ययन किया गया है और इसके पीछे यह मान्यता है कि बनजारा जीवन उसके गीतों में समग्र रूप में प्रतिबिम्बित है । साहित्य के अन्य रूप प्राय: गौण है । इसीलिए केवल गीतों का ही विवेचन किया गया है ।

लोकगीतों की विशेषताएं : ....

गीतों और लोक गीतों का तुलनात्मक अध्ययन करके ऐसी विशेषताओं का परिचय देना आवश्यक होता है, जिनके आधार पर लोक गीतों को शिष्ट या परिनिष्ठित गीतियों से पृथक् रूप में जाना जा सके । लोकगीतों को इनकी नैसर्गिकता के लिए जाना जाता है, ऐसी मान्यता है । डा. श्याम परमार के अनुसार -

"गीतों में विज्ञान की तराश नहीं, मानव संस्कृति का सारतम्य और व्यापक भावों का उभार है । भावों की लड़ियां लम्बे-लम्बे खेतों से स्वच्छ, पेड़ों की नंगी डालों सी अनगढ़ और मिट्टी की भान्ति सत्य है ।" *

लोक कवि के कण्ठ से सहज रूप में स्फुटित होने के कारण छन्द, अलंकार, वक्रोक्ति, चमत्कार आदि के लिए लोकगीतों में कोई स्थान नहीं होता । इस सम्बन्ध में रामनरेश त्रिपाठी के निम्न वाक्य देखे जा सकते हैं -

"ग्राम गीत प्रकृति के उद्गार है । इनमें अलंकार नहीं, केवल रस है । छन्द नहीं, केवल लय है । लालित्य नहीं, केवल माधुर्य है । ग्रामीण मनुष्यों के, स्त्री पुरुषों के मध्य में हृदय नामक आसन पर बैठकर प्रकृति गान करती है । प्रकृति के वे ही गान ग्राम गीत है ।"[2]

---

* मालवी लोक साहित्य { हिन्दुस्तानी एकाडेमी, इलाहाबाद 1969 } पृष्ठ 29

2 कविता कौमुदी भाग-5, प्रस्तावना : पृ. 1-2

उपर्युक्त कथन में प्रयुक्त "ग्रामगीत" शब्द लोकगीत पर्याय रूप में ही गृहीत है । डा॰ वासुदेव शरण अग्रवाल ने भी लोकगीतों में प्राप्त रस कला की ओर मुग्ध होकर निम्न विचार व्यक्त किये हैं -
"गीत मानो कभी न छीजने वाले रस के सोते है ।" *

लोकगीतों में लोक संस्कृति का चित्रण भी अवश्यंभावी होता है । संस्कृति का उचित आख्यान करने की इसी प्रधान विशेषता पर बल देते हुए भी देवेन्द्र सत्यार्थी ने लोकगीतों के विषय में यह सारगर्भित वाक्य लिखा है - "लोक गीत किसी संस्कृति के मुँह बोलते चित्र है ।"[2]

लोकगीतों के रचयिता का पता नहीं होता । यह वह एक व्यक्ति की कृति न होकर सामूहिक कृति होती है । डा॰ श्याम परमार ने इस सम्बन्ध में निम्न विचार व्यक्त किये हैं -

लोकगीतों का सृजन संगीत के माध्यम से लोकरंजक होकर परम्परा में सम्मिलित होने के क्रम में व्यष्टि और समष्टि के भेद को नष्ट कर देता है । किसी व्यक्ति विशेष द्वारा निर्मित कोई गीत जन मानस को आन्दोलित कर उसके स्पन्दन के स्वरों में मेल खाने लगे और कालान्तर में उसी भाँति अथवा थोड़े परिवर्तन के साथ जीवित रहे तथा निरन्तर प्रयोग में आता रहे तो वह गीत लोकगीत ही कहलाएगा । उसे लोकगीत की संज्ञा इतिहास और प्रयोग के सहारे प्राप्त

---

* धीरे बहो ब गंगा { ले॰ देवेन्द्र सत्यार्थी, भूमिका भाग } पृ॰ 1

2 आजकल { संख्या - 7, नवम्बर 1951 } सम्पादकीय

होगी । मूल में कोई गीत लोकगीत नहीं कहा जायेगा । परिस्थितिवश समाज में अनुष्ठानिक तथा औपचारिक मूल्य पाकर विशेष संस्कृति की पृष्ठभूमि में ही वह लोकगीत बनता है । *

लोकगीतों में निजियन तो होता है परन्तु लोकमानस को पसन्द आनेवाले विषय के साथ सम्बन्धित होने के कारण उनमें साधारणीकरण की भावना साहित्यिक गीतों की अपेक्षा अधिक होती है ।[2]

लोकगीत ग्रामीण जगत की फुलवाड़ी है, इनका क्षेत्र इतना विस्तृत होता कहा जाता है कि वह समान भाषा और संस्कृति वाले शहरों को भी अपने में संजो लेता है ! डा॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी जी लोकगीतों को आर्येत्तर सभ्यता के वेद मानते हैं ।"[3]

लोकप्रियता लोकगीत का आवश्यक गुण है ।[4]

डा॰ कृष्ण बिहारीदास का यह कथन है कि "लोकगीत सुसंस्कृत तथा सभ्य प्रभावों से बाहर रहनेवाले लोगों की प्रवाहात्मक अभिव्यक्ति है, सर्वथा निराधार नहीं है"।[5] यह देखा जाता है कि अपेक्षाकृत आदिम जातियों में लोक नाट्यों तथा लोकगीतों का अन्य जातियों की अपेक्षा बाहुल्य रहता है तथा जाति का प्राय: प्रत्येक सदस्य उनमें सक्रिय सहयोग देता है । लोक गीतों के प्रचलन में वातावरण

---

* मालवी लोक साहित्य : पृ॰41-42

2 गुलाबराय - काव्य के रूप : पृ॰123

3 आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी - छत्तीसगढ़ी लोक गीतों का परिचय, भूमिका - पृ॰5।

4

का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है । जहाँ मनोरंजन के अन्य साधन कम प्रचलित हों वहाँ के समाज में मनुष्य अधिक स्वाभाविक अवस्था में देखा जा सकता है ।

इन सभी बातों पर विचार करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि -

1 लोकगीत अज्ञात कवि की रचना होती है । *
2 लोकगीत में साधारणीकरण की क्षमता होती है ।
3 लोकगीत की लय तथा धुन समाज को प्रिय लगनेवाली होती है ।
4 लोकगीत में सामूहिकता की भावना अधिक होती है ।
5 लोकगीतों का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन है ।
6 आदिम जातियों में लोकगीतों की संख्या अधिक पाई जाती है ।
7 लोकगीत सरल और सुबोध भाषा में होते हैं ।
8 लोकगीतों का प्रचार क्षेत्र किसी बोली या भाषा के बोलनेवालों पर निर्भर करता है ।

1.3 लोकगीतों का वर्गीकरण : ....

लोकगीतों के वर्गीकरण अनेक विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से किये हैं । {आरम्भ में "फ़ोक सांग" को ग्राम गीत ही माना गया था । बाद में लोकगीत शब्द का प्रचलन हुआ ।}[2] डा. सत्येन्द्र ने अपने

---

* डा. सत्येन्द्र - लोकसाहित्य विज्ञान, पृ.390

2 लोक साहित्य विज्ञान - डा. सत्येन्द्र - पृ.393

प्रसिद्ध ग्रंथ लोकसाहित्य विज्ञान* में लोकगीतों के अनेक भेद बताये हैं, जिनमें क्षेत्र की दृष्टि से, जातीय दृष्टि से, अवस्था भेद से, योनि भेद से, उपयोगिता की दृष्टि से, वस्तु भेद से, रूप भेद से और प्रकृति भेद से लोकगीतों के वर्गीकरण का सुझाव दिया गया है । उन्होंने लोकगीतों को दो प्रमुख भागों में बाँटा है -

1) अनुष्ठान-आधार सम्बन्धी तथा

2) मनोरंजन सम्बन्धी ।[2]

लोकगीतों का वे निम्नलिखित रूप से भी वर्गीकरण प्रस्तुत करते हैं -

1 जन्म के गीत 2 विवाह के गीत 3 मृत्यु के गीत

4 त्योहार-व्रत और देवी आदि के गीत

5 अन्य विविध गीत

6 प्रबन्ध गीत ।[3]

डा. रामनरेश त्रिपाठी[4] ने ग्रामगीतों का विभाजन निम्न प्रकार से किया है :-

1 संस्कार सम्बन्धी गीत 2 चक्की व चरखे के गीत 3 धर्म गीत 4 ऋतु सम्बन्धी गीत 5-7 खेती, भिखमंगे तथा मेले के गीत । 8 जाति गीत । 9 वीर गाथा 10 गीत कथा तथा 11 अनुभव के वचन ।

---

* लोक साहित्य विज्ञान, डा. सत्येन्द्र - पृ.393, 414 ।

2 ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन - पृ.106

3 वही - पृ.106-345 ।

4 कविता कौमुदी, भाग-5, पृ.45 तथा लोक साहित्य विज्ञान - पृ.397

बनजारा जाति के गीतों का विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है -

1 जन्म के गीत 2 विवाह के गीत

3 पर्व त्यौहारों के गीत

4 देवी-देवताओं के गीत,

5 श्रम तथा मृत्यु गीत ।

इन्हीं पर आगे विचार किया गया है -

..

1. जन्म के गीत : .. ..

1.1 गर्भवती का खाना-पीना :

अनुष्ठान की हर सामग्री और अनुष्ठान का प्रत्येक क्षण गीत के द्वारा अभिमंत्रित किया जाता है । चाहे वह सामग्री और चाहे धर्म से सम्बन्धित, कोई भी सामग्री गीत से अछूती नहीं रहती । जन्म के गीतों का आरम्भ गर्भ से होने के कुछ ही दिनों बाद हो जाता है । रूढ़ परम्परा के अनुसार भावी जननी विविध प्रकार की खाद्य सामग्री माँगती है । उसके इस मनोविज्ञान का परिचय निम्नलिखित गीत से पाया जाता है -

बाईए कसो को वेरोच मोर जीवडा ना, काई खान शामू बाई जीवडान ।

खटाई वासू जीवन खिवारो बाईए, आमली आम्बा ला देनी बाईए ।

बाईए कसो को वेरोच मारे जीवडा ना, काई खान शामू बाई जीवडान ।

मटाई वासू जीवन खिवात बाईए, गोळ-सकर ला देनी बाईए ।

बाईए कसो को वेरोच मारे जीवडान, कोई खान शामू बाई जीवडान ।

नींबू वासू जीव खिवाय बाईए, बागेती नीम्बू तोडला बाईए ।

बाईए कसो को वेरोच मारे जीवडाना, काई खान शामू बाई जीवडान ।

नारेळ वासू जीव खिवाय बाईए, बाडेती नारेळ तोडाला बाईए ।

बाईए कसोक घेरोच मारे जीवडा ना, काई छान यामू बाई जीवडान
नारेंगी वासू जीव खिंवावा बाइए, मोटी नारेंगी तोडाला बाईए ।
बाईए कसोक वेरोच मारे जीवडाना, कोई छान यामू बाई जीवडा ना ।
मक्का बासू जीव खिंवाव बाइए, तरमो मक्का भूंजाला बाईए ।
बाईए कसोक वेरोच मारे जीवडान, काई छान यामू बाई जीवडाना ।
लकोई वासू जीव खिंवाव बाइए, तात-तात लकोई रांदला - बाईए ।
बाईए कसोक वेरोच मारे जीवडाना, काई छान यामू बाईए ।
जीवडाना ।
माछे वासू जीव खिंवाव बाइए, चावळे माछेसी माळ वोणदा बाईए ।
बाईए कसोक वेरोच मारे जीवडाना, काई छात यामू बाई जीवडाना ।
लापसी वासू जीव खिंवाव बाईए, लापसी रांदन सरादा बाईए
बाईए कसोक वेरोच नारे जीवडाना, काई छान यामू बाई जीवडाना ।

एक अन्य गीत में गर्भवती स्त्री द्वारा विविध प्रकार की साध सामग्री मांगने का और उसकी मानसिक एवं शारीरिक स्थितियों का वर्णन है । गीत इस प्रकार है -

ओरो एके मिना जाये धूरो माचको
ओहो घरे घारे पर चित जाये धूरो माचको
ओरो दियो मिना जाये धूरो माचको
ओरो सगार-कगार जीव करा धूरो माचको
ओरो तीव मीना लागे धूरो माचको
ओरो आंकोन नींद आय धूरो माचको
ओरो चार मो मोना लागे धूरो माचको
ओरो आम्बा पर मन जाय धूरो माचको
ओरो पाघो मोना लागे धूरो माचको

ओरो लापसी पर मन जाय धूरो मावलो
ओरो छामो मीना लागे धूरो मावलो
ओरो खीर पोळी पर मन जाय धूरो मावलो
ओरो सातमों मीना लागो धूरो मावलो
ओरो जीवेन आनन्द लाग्या धूरो मावलो
ओरो आठमें मीना नागे धूरो मावलो
ओरो धरे दारेन आनन्द लाग्या - धूरो मावलो
ओरो नवमी मीना लागे धूरो मावलो
ओर धर डाका जमों धूरों मावलो

उक्त गीत के अनुसार भावी जननी का चित्त प्रथम मास में घर में - रमने लगता है, दूसरे मास में जी घबड़ाता है, तीसरे मास में नींद आती है, चौथे मास में उसका मन इमली या कच्चे आम पर जाता है, पाँचवे मास में हलवा चाहता, छठे में खीर पूरी की इच्छा होती है, सातवें में शिशु की प्रतीक्षा करती है, आठवे में पूर्ण पति या घरवालों से खुश रहती है तथा नवें महिने में शिशु का जन्म होता है ।

1.2. <u>प्रसवगीत : (ओर गीत) :</u>

प्रसव पीड़ा से विकल बनजारिन की मनोस्थिति का व्यंजक "सोहर" गीत इस प्रकार है । सभी परिजनों का वह पीड़ा से मुक्त करने के लिए आह्वान करती है -

भोजाईए जे धामाबा मारो जीवड़ाना, वड़े माँ सूका चले नाग
भोजाईडा-चिया ।
पेटेमां दूकाजना जीवड़ा धमलाचा भोजाईडा-चिया ।

भाडीएजे ताजेब गोरेमा सवारलेन मना बचालेनी भाडिए - डिया ।
भोडीएजे धामला मारे जोवडाना, कडेमा सूक चले लाग भाडीए-डिया ।
दादीएजे मन कनेसी लेलेनी, बकडीमा भर लेनी दादोए-डिया
बब बानीएजे तारेय पोटीन बक्कड ला नानिया-डिया ।
नानिए जे धामला मारे जोवड़ा ना, कड़े मा सूका चले लाग
नानिया-डिया ।

एक अन्य प्रसव गीत में दाई को घोड़े पर या बैलगाड़ी में प्रसूती के लिए घर तक लाने का वर्णन है ।

दाई तू मार थाडी चाल छपको घरेन
तोन रूपेर हांसडी घडादियूं
दाई तू मार थाडी चाल छपको घोड़े पर
तोन रूपेर सांकली घड़ा दियूं
दाई तू मार थाडी चाल छपको बड़ी पर
तोन सोनेर भुरिया घड़ा दियूं
दाई तू मार थाडी चाल छपको
तोन रूपेर पोंजण घडा दी दीयूं
दाईतू मार थाडी चाल छपको नंदिया पर
तोन रूपेर घुघरा मडा दीयूं
दाई तू मार थाडी चाल छपको घरेन
तोन फेटिया सीडा दीयूं
दाई तू मार थाडी चाल छपको घरेन
तोन पूंच पाली दाणा मया दूयूं
दाई तू मार थाडी चाल छपको घरेन
तोन मोतीर टिकली मंडा दीयूं

दाई तू मार याडी चाल छपको घरेन
तोन घुंघटाको छाटिया वराडियूं
दाई तू मार याडी चाल छपको घरेन
तोन काचेवाक काचको लीडा दयूं
दाई तूमार याडी चाल छपको घरेन
तोल पामडी उडादियूं
दाई तू मार याडी चाल छपको घरेने

उक्त प्रसव लोकगीत में दाई को घोडे पर या बैलगाडी पर बैठकर प्रसूति के लिए घर तक चलने के लिये अनुरोध किया जाता है । सुखद प्रसूति करवा देने पर उसे वस्त्र, आभूषण और धान्य दान देने का वादा किया जाता है । इस गीत में दाई को मातर के रूप में सम्बोधित किया गया है ।

1.3. पुत्र जन्म :

पुत्र जन्म टाँडे की एक विशेष घटना है । बनजारा मानस अपनी जाति की वृद्धि देखकर नाच उठता है । टाँडे का सारा वातावरण मादक और मधुर हो उठता है । टाँडे की नारियाँ उमड़ती हुई जच्चा के आस-पास घिर आती है । जन्म सम्बन्धी प्रथाओं के साथ वे सम्पन्न करती है । जच्चा और होनेवाले शिशु का पिता गर्व से उभर उठते हैं और टाँडे के सभी बनजारे उन पर शुभ कामनाओं की वर्षा कर देते हैं । वैसे तो औपचारिक रूप से पुत्री के जन्म को शुभ माना जाता है पर पुत्र जन्म के समान उसका उत्सव नहीं मनाया जाता है । इस अवसर पर यह गीत गाया जाता है -

बापए गरू बाबारो असीस छ तारे बाका पर
बापए बालाजीरो असीस छ तारे बाका पर
बापए रामेरो असीस छ तारे बाका पर
बापए किसतेरो असीस छ तारे बाका पर
बापए हनुमानेरो असीस छ तारे बाका पर
बापए गौ याडीर असीस छ तारे बाका पर
बापए सत्ती याडीर असीस छ तारे बाका पर
बापए मिठु भुकियार असीस छ तारे बाका पर
बापए सोमादेरो असीस छ तारे बाका पर
बापए धड़-बूढ़ेर असीस छ तारे बाको पर
बापए दनियार असीस छ तारे बाका पर
बापए चान्दा-सूरजेर असीस छ तारे बाका पर
बापए ठकरो धनकीर असीस छ तारे बाका पर
बापए चौकली याडीर असीस छ तारे बाका पर
बापए काकूराम बाबा असीस छ तारे बाका पर

पुत्र जन्म पर कहा गया है कि अंधेरे कमरे में कृष्ण का जन्म हुआ है । इस अवसर पर वासुदेव-देवकी सोच-विचार कर रहे हैं । उनके द्वार पर चार द्वारपाल पहरा दे रहे हैं । गीत इस प्रकार है -

बापए कसना जनमोध अंधारी कोठड़ीमा
बापए ओरो बाबा वासुदेव विचार माँ पड़गो
बापए भगवान जनमोध अंधारी कोठड़ीमा
बापए ओर माता देवकी विचारे माँ पड़गी
बापए रामेर अवतार जनमोध अंधारी कोठडीम
बापए ओरो बाबा वासुदेव विचारे माँ पड़गो

बाइए काको बाबा जनमोच अंधारी कोठड़ीमा
बाइए और माता देवकी विचारे मां पड़गी
बाइए वासलीवाळो जनमोच अंधारी कोठड़ीम
बाइए ओरो बाबा वासुदेव विचारे मां पड़गो
बाइए दाना न मारेन कसना जनमोच अंधारी कोटड़ीया
बाइए और माता देवकी विचारे मां पड़गी
बाइए नंदबाबा घर जावेन कसना जनमोच अंधारी कोठड़ीमा
बाइए ओरो बाबा वासुदेव विचार मां पड़गो
बाइए गावडो चरावेन कसना जनमोच अंधारी कोठड़ीम
बाइए और माता देवकी विचारे मां पड़गी
बाइए लूणी छायेन कसना जनमोच काळी कोठड़ीम
बाइए ओरो बाबा विचारे मां पड़गो
बाइए पापोन मारेन कसना जनमोच अंधारी कोठड़ीम
बाइए और माता देवकी विचारे मां पड़गी
बाइए गलमा पर वार सिपाई छूकेच
बाइए ओरो बाबा, माता विचारे मा पडगो

1.4. <u>कादा</u> :

प्रसव के पश्चात् जच्चा को एक विशेष प्रकार का प्रिय पदार्थ दिया जाता है उसे "कादा" * कहते हैं । कादे को पिलाया जाना भी गीत की गूंज के साथ सम्पन्न होता है । गीत इस प्रकार है -

---

* सूंठ, जीरा, मोड़ी, दालचीन, जायफल, पीपलो, गुड़ और असली घी से कादा बनाया जाता है ।

काड़ो पीलाए मार लाड़ली बेटी

काड़ो पीलाए मार नाजुक बेटी

काड़ो पीलाए मार नायकण बेटी

काड़ो पीलाए मार डूंलण बेटी

काड़ो पीलाए मार सुवाड़ी बेटी

काड़ो पीलाए मार सेराव बेटी

काड़ो पीलाए मार चरमटड़ी बेटी

काड़ो पीलाए मार मारवाड़ी बेटी

काड़ो पीलाए मार धरमणी बेटी

काड़ो पीलाए मार दूबळ बेटी

काड़ो पीलाए मार राणी बेटी

काड़ो पीलाए मार देसमुखणी बेटी

काड़ो पीलाए मार राजपूतणी है बेटी

काड़ो पीलाए मार बेपारी बेटी

काड़ो पीलाए मार धालोणी बेटी

काड़ो पीलाए मार नामदारणी बेटी

काड़ो पीलाए मार भगतण बेटी

काड़ो पीलाए मार बलादणी बेटी

1.5. <u>भूजमालापसो : (हलवा) :</u>

प्रसव के दूसरे दिन जच्चा को "भूजमालापसो" * खिलाया जाता है । हलवा को गुड़, असली घी, गेहूं का आटा और काजू डालकर बनाया जाता है । इस अवसर का गीत इस प्रकार है -

---

* विशेष प्रकार का हलवा ।

बाइए भूजमा क लापसी घोट देनी बाइन
बाइए गहूँर भूजमाँ लापसी घोट देनी बाइन
बाइए गोठेर भूजमाँ लापसी घोट देनी बाइन
बाइए घीएर भूजमा लापसी घोट देनी बाइन
बाइए टोपटेर भूजमा लापसी घोट देनी बाइन
बाइए बादामेर भूजमा लापसी घोट देनी बाइन
बाइए चावळेर भूजमा लापसी घोट देनी बाइन
बाइए चारोळेर भूजमा लापसी घोट देनी बाइन
बाइए मुनकार भूजमा लापसी घोट देनी बाइन
बाइए काजूर भूजमा लापसी घोटि देनी बाइन
बाइए छार भूजमा लापसी घोट देनी बाइन
बाइए मोवठार भूजमा लापसी घोट देनी बाइन

1.6. <u>छटी :</u>

शिशु जन्म के पश्चात् छटवाँ दिन विशेष महत्वपूर्ण होता है। इस दिन जच्चा को "माथो धोणो - स्नान" * कराया जाता है - जैसे प्रसव कालीन अशुद्धता को धो डालने के लिए ही यह स्नान कराया जाता है। गीत स्नान के क्रम को मुखरित कर देता है। गीत इस प्रकार है -

बाइए सुवाड़ी पर पाणी रेड़ीए बाइए।
बाइए सुवाडी पर समेळेर पाणी रे ड़ीए बाइए।
बाइए सुवाडी पर नीमेर पाणी रेड़ीए बाइए।
बाइए सुवाड़ी पर बाड़ेर पाणी रेडीए बाइए।

---

* विशेष प्रकार का स्नान

बाछ्य सुवाड़ी पर कोकनो पाणो रेड़ोय बाछ्य ।
बाछ्य सुवाड़ी पर मोडोर पाणो रेड़ोय बाछ्य ।

1.7. जलपूजन और कौमरी बाँटना :
(घुघरी बैंटनो)

उत्तर प्रदेश और राजस्थान में मुख्य रूप से यह दोनों प्रथाएं जन्म के अनुष्ठान के मुख्य भाग है । जिसको बनजारों में जल का पूजन कहा जाता है । वही इन क्षेत्रों में कुएं का पूजना है । "घुघरी" बाँटने के समय का गीत भी बनजारों के गीत के समान हैं । इस गीत में पुत्र को जन्म देनेवाली जच्चा के अहंकार की अभिव्यक्ति हुई है साथ ही ननंद और भावज के सम्बन्ध की कटुता को भी प्रकट किया गया है । विवाह के उपरान्त ननंद भावज को तंग करती हैं । पुत्रवती जच्चा उसी का बदला लेती है । इस अवसर पर यह गीत गाया जाता है -

बाँदी टाँडे माँ घुघरी बैंटिया
बाँदी डाय सणी घुघरी बैंटिया
बाँदी नायकेन घुघरी बैंटिया
बाँदी नायकणेन घुघरी बैंटिया
बाँदी सोल्लणून घुघरी बैंटिया
बाँदी नाना-नानीन घुघरी बैंटिया
बाँदी दादा-दादीन घुघरी बैंटिया
बाँदी मामा-मामीन घुघरी बैंटिया
बाँदी काका-काकीन घुघरी बैंटिया
बाँदी भायेन घुघरी बैंटिया

---

* कौमरी

बांदी

बांदी बाढी-बापेन घुघरी वेंटिया
बांदी पापो- फुफन घुघरी वेंटिया
बांदी नणदोइन घुघरी वेंटिया
बांदी नणदेन ठाल थाळी वताया
बांदी नणदेर आंको वाकूया

1.8. नामकरण {घुंड} :

बनजारा समाज में नामकरण संस्कार पुत्र जन्म के दसवे दिन या होली के त्योहार के दिन होता है । कन्या का नामकरण जन्म से बारहवें दिन पर सम्पन्न होता है । नामकरण संस्कार को बनजारा समाज में "घुंड" कहते हैं । इस अनुष्ठान में टांडे का नायक, होली का गेरिया तथा टांडे के सभी लोग भाग लेते हैं । इस संस्कार के लिए हरी-भरी डालियों से मंडप बनाया जाता है । नामकरणवाले लड़के को वस्त्राभूषणों से अलंकृत कराया जाता ह । उसे मंडप के नीचे पट्टे पर बिठाया जाता है । मण्डप के नीचे एक क बर्तन में नारियल, केला, मोसम्बी तथा अन्य फल रखें जाते हैं ।

इस अनुष्ठान के अवसर पर नाच करनेवाले लड़के की माँ अनेक वस्त्राभूषणों से दुल्हन की तरह अलंकृत होती है । टांडे की स्त्रियाँ उसके श्रृंगार का वर्णन करती हुई गीत गाती है । गीत इस प्रकार है -

छोरे बाकारो छ तैयार, मोड़-मोड़ कोदी सणगार
हांस घाली हवेलैये वाली, घाल लोदी नवसेरी हार
घघरी वो काई मसराईरो पेरी, वजी लोवडी ती सजगी नार
लोवडीसो ओढ़ो रेशमेरी, वजी घूंघटे वो सजगी नार

काचळी तो पेटी कोतकोरी, वजी पाराती सजगी नार
घुघरी तो घाली सोनेरी, वजी टोपलीती सजगी नार
पाटली तो घाली चान्दी केडी, वजी बलियाती सजगी नार
चोंटोतो घाली आंगळी मों, वजी फूलियाती सजगी नार
थांकडी तो घाली पगेभा, कस घालन सजगी नार,
चरकी तो घाली आंगळीमा, वजी केंगूळका ती सजगी नार
ओरी बाबारो छ तैयार, मोड़-मोड़ कीदो सणगार

लड़के की माँ अनेक वस्त्राभूषणों से अलंकृत होती है । उक्त लोकगीत में उसका ही नख-शिख वर्णन है ।

इस दिन जच्चा और बच्चा को बंधु और बांधवों के द्वारा उपहार दिये जाते हैं । नाई की सहायता से लड़के के पिता द्वारा लड़के के केश काटे जाते हैं । तत्पश्चात् पुरोहित ज्योतिष के अनुसार जन्म की घड़ी का अध्ययन करके नामकरण कर देता है । होली का गेरिया बरतन में से खाद्य-पदार्थों को जोर-जबरी से उठाकर अपने साथियों को बांटता है और स्वयं भी खाता है । इस महत्वपूर्ण अवसर पर निम्नलिखित गीत गाया जाता है -

पैलो तो नाम स्वामी रो ले - स्या ।
स्वामीरो जायो आनंद वदायो ।
दूसरोतो नाम महल्या पाणीरो लेस्या ।
महल्यारो जायो आनंद वदायो ।
तीसरो तो नाम धरतीरो ले स्या ।
धरतीरो जायो आनंद वदायो ।
तू भलो जन्मो थे केसरिया के रजपूत ।
सात आंगळा गळरस आयळो ।

तू भलो जन्मो ये अर्जुन सरीके वीरा ।
तू भलो जन्मो ये रावल्या के रजपूत ।

7.9. अन्न प्राशन : (लपटो चटाणों) :

बनजारा जाति में अन्नप्राशन को "लपटो चटाणो" कहते हैं । शिशु का छः मास का हो जाने के बाद और एक वर्ष का होने तक "अन्नप्राशन" संस्कार किया जाता है । शिशु की दादी उसे गोद में लेकर खीर (लिपटी) या (लपटी) चटाती है । इस अनुष्ठान के बहुत कम गीत पाये जाते हैं । उनमें से एक गीत इस प्रकार है -

रामेरो रूपड़ा चांदिरो टुकडा चाटला लपटी चाट ।
किसनेरो रूपड़ा चांदिरो टुकडा चाटला लपटी चाट ।
बालाजीरो रूपड़ा चांदिरो टुकडा चटला लपटी चाट ।
सेवारो रूपड़ा चांदिरो टुकडा चाटला लपटी चाट ।
गादीवाको रूपड़ा चांदिरो टुकडा चाटला लपटी चाट ।

1.10 कर्ण छेदन : (काने माँ बाळली घालनों) :

लड़की और लड़के दोनों ही के कर्ण छेदे जाते हैं किन्तु उत्सव लड़के के ही कर्ण छेदन का मनाया जाता है । कर्ण छेदन घर की वृद्धा स्त्री की गोद में बिठाकर कराया जाता है । सोनार बाळी बनाकर लाता है और उस बाळी को ही पहना देता है । इस अवसर पर गाये जानेवाले गीतों में से एक प्रकार का गीत देखिए -

बाका सोनेर बाळली पेटला, याडीर असीस लेला ।
बाका सोनेर बाळली पेटला, बाधेर असीस लेला ।

बाळा सोनेर थाळी पेटला, दादीर असीस लेला
बाळा सोनेर थाळी पेटला, दादीर असीस लेला
बाळा सोनेर थाळी पेटला, बाकीर असीस लेला
बाळा सोनेर थाळी पेटला, काकार असीस लेला
बाळा सोनेर थाळी पेटला, नायकेर असीस लेला
बाळा सोनेर थाळी पेटला, नायकणेर असीस लेला
बाळा सोनेर थाळी पेटला, सनारेर असीस लेला

....

2. विवाह गीत : ....

2.1 सगाई :

बनजारा जाति में विवाह का आरम्भ सगाई से होता है। सगाई के समय लेन-देन की बात पक्की होती है। वर के पिता से कन्या का पिता पांच बछडे लेता है। इसे केन्डार [बछडे की] सगाई भी कहते हैं जिस वर के पिता के पास बछडे उपलब्ध न होतो पांच बछड़ों का मूल्य ही दे दिया जाता है। जिस सगाई में बछड़ों के स्थान पर पैसे दिये जाते हैं उसको "वाम्सकोर" सगाई कहते हैं। बनजारों में दहेज प्रथा नहीं है।

2.1.1 पचार [कुशल क्षेम] :

पचार अनुष्ठान में जाति के प्रमुख लोग पंचायत की महत्ता की घोषणा करते हैं। राजा भोजन विक्रमादित्य की सभा से इस पंचायत को उपमित किया जाता है। प्रमुख पंच इस समय पहेली द्वारा कुशल क्षेम पूछते हैं। पहले इस प्रकार है :

पंच पंचायत राजा भोजेर सभार भिया।
भेट भिया भाइन सगा, पचारे जगत।
दमतो दियो, सियामला सयात्।
ताटेर धौंकळो, जकेर लोटार भिया
तक कसळ, जक कसकर भिया
कसळ छ भभियारी धाटर भिया
हात कटाणी डोर
कटवा बेटे चार, सगा बेटे चार र भिया।

कष्टा तो कोनि पीयर भिया
धन पोरेर पच भोवार भिया
वेपार आपणो कळक वोयार भिया
बाल बच्चा, गावडी ढोर कळक वोयरा भिया
भगियार वाटेन छोडन, हमार वाटेन आयेर भिया
सो वरसेर जोडा करेन आयेर भिया
मळाव कमोती आयो कायेर भिया ।
थाव राजा भोजेर दरसण वेगोर भिया
साक्या संगळी अगेन वेला यो कायेरा भिया
आपण से आईयात छ भिया
आज भले लोगूर दरसण वेगोर भिया
आपण से पळक उमर कार्डर भिया ।

उक्त पहेली के अनुसार - सगे-संबंधियों की जमघट राजभोज की सभा के समान सुशोभित है । इस सभा में सभी बनजारे बंधु बैठे हैं । सभी लोग धन धान्य से संपन्न है । संसार में मर्यादा होने के कारण हमारी वंशावली भी सुविख्यात है । जहाँ भी जाये वहाँ मान की तादेर पिढकी [आसन] तथा चाँदी की झारी पानी पीने को मिलती है । जिस तरह जल तल पर बहकर सरल चला जाता है उसी तरह ब यमराज के पास पहुँचने की सरल मार्ग है । काल की डोर यमदूतों के हाथ में अभी है जो चारों ओर से संकट से घिरी है । इस सभा के सभी भाईयों के परिवार कुशल क्षेम तो है । इस समय अन्य व्यक्ति प्रत्युत्तर देता है कि ईश्वर की दया से सभी भाईयों का दर्शन प्राप्त हुआ है ।

कुशल क्षेम के पश्चात् सम्बन्धियों का स्वागत किया जाता

है । स्वागत के समय पहेली गाई जाती है । पहेली इस प्रकार है -

पंच पंचायत राजा भोजेर सभा
माखन सवा लाख भाईर, आनंद समेर समक
भाई आपण आनंद, सगा आपण समक, तव्यो पालक ध्यान
है तो कोटी छोडूं ज्ञान, नहीं तो पंचों में भगवान
तव्वी है संसार में, भात-भतेर लोग
सैल हल-मल चालिया तो नंदी नाम संयोग
मेवा सगान मेवा करिया येवा नंदी नीर
छापो छापसिंग सिया जु जूर घट्टे सीत
मेवा सगान येवा न जाये येवाच सिंगड़ा टीका लोग
परमकना प्याडले कुआका सुह - सुकरा सुपारिया रंग -
कसुंब होय
भाई अगर रंग दूजो होय
सुक सुकटा सुपारिया रंग अगा अगर दूजो न होय
सुक सुकटा गंगन मन मड़ी डोर
तम समंदर हम माछला तम लिया हलोल
पाँचो भाई करा कलोळ
छोको घोड़ो हाथिलो, छूटी टको लगाम
सनौतो सगा मळो, दस दाड़ करांधा मकाम
ढूंगर थे जब दूर थे, अब पडी जाण पछाण
सगाती सगा मळो, हीरा निपजे खान
लड़-लड़ती परवाना भेजू, भेजू वो कस्तूरी
छोडू तो कस्तूरी तोडू तो सनयेम पूरीच पूरी
सोनेर थाळी रूपेर वाटी

सगाती सगा मळो, हीक वेगी छाती
राजा बादशाहार भोपाळेर गढ़ची
अब आपण तकत मेल छंव
भुवयार छोरी, वडत्यार छोरा साक्या पक्को रंग
पक्को नेम धरम हुओ, कोंटरी वाड़ भांगो मर्दरीवाड़ वेच ।

उक्त पहेली के अनुसार पंचों की पंचायत राजा भोज की सभा है । हम लोग इस सभा के लाख-सवा-लाख की पूंजीवाले प्रतिनिधि हैं । आप सब कुशल तो हैं न? सत्य यह है कि पंच ही परमेश्वर होते हैं । आपस में रिश्ते जोड़ने से हमारी जाति की उन्नति होगी । हमारे रिश्ते नदी के संगम के समान निर्मल होंगे । हमारे रिश्ते किसी मुकुट के हीरे के समान होंगे । समधी तथा सम्बन्धों के समान दूसरी शोभा नहीं । हम एक दूसरे की सहायता से समाज में उन्नति करें । सागर में मछलियाँ जिस प्रकार मिल कर रहती है उसी प्रकार हम भी रहेंगे । आप हमारे गौरवनीय सम्बन्धी है । इसी प्रकार इसीलिए घोड़े की लगाम खूँटी से बांध दीजिए और आराम कीजिए । हम लोग यहाँ पर कुछ समय तक रहेंगे । हमारे टांडों के बीच जंगल, पर्वत होने से हम लोग आज तक एक दूसरे अलग थे । आज इस रिश्ते ने हमें मिलाया है । आज हमें हीरे की खान मिल गई है । आप का यश कस्तूरी के समान फैला हुआ है । इसलिए/? हम आप को यहाँ पत्र भेजकर बुलवाया है । हमारा संयोग सोने की थाली में चांदी के कटोरे के समान है । आप के मिलने से हमारा मन प्रसन्न है । बादशाह ने हमसे भोपळगढ़ [भोपालगढ़] छीन लिया है । आज से यही स्थान हमारा राज्य है और यह हमारा सिंहासन है । भुवया की लड़की से वडत्या का लड़का सगाई कर रहा है । इसलिए यह सगाई पक्की हुई । इसे कोई तोड़ नहीं सकता ।

2.1.3. गोळ खाणो (गुड़ खाना) :

सगाई की बात तभी पक्की होती है जब की गुड़ खाने की रस्म भी अदा हो जाती है । वर और कन्या के दोनों पक्ष के लोग किसी बाग में इकट्ठे हो जाते हैं वहीं पर गुड़ खाने का कार्यक्रम सम्पन्न हो जाता है । वर का पिता गुड़ की पांच भेली साथ में ले आता है । लेरिया * गुड़ की भेली से मुट्ठी भर गुड़ लेकर पंचों की पंक्ति में घुमता है । पहले गुड़ देने का मान भूकिया गोत्रवाले व्यक्ति को दिया जाता है । अन्य गोत्र के व्यक्तिको यह मान-सम्मान नहीं मिलता । "लेरिया" हाथ में गुड़ लेकर पंचों की पंक्ति में घुमता है । इसके बाद गुड़ देने का मान नायक को दिया जाता है । उसके पश्चात् सभी सदस्यों को दो-दो मुट्ठी बांटा दिया जाता है ।

गुड़ खाने के कार्यक्रम से पहले ही वर पक्ष के लोग रास्ते में चोरी से "बामण्या गोळ" (ब्राह्मण का गुड़) खाकर आते हैं । यह कहा जाता है कि ब्राह्मण के लड़के ने बनजारों की लड़की से प्रेम किया था उस समय ब्राह्मण के लड़के का गुड़ चोरी से रास्ते में ही खाया गया था ।

गोळ खाणी कार्य में वर का पिता तीन नारियल ले आता है । तीन में से एक को कुल गुरु के नाम पर, दूसरे को नारियल दोनों पक्ष के नायकों को दे दिये जाते हैं । ये नारियल मान के प्रतीक होते हैं । इस अवसर पर गीत नहीं गाये जाते ।

---

* वर के साथ रहनेवाला व्यक्ति ।

2.1.4 साक्यार रुपया : (= भेंट का रुपया) :

वर का पिता लेरिया के द्वारा एक रुपया कन्या के पक्ष के नायक को भेंट देता है । इस रुपया को "साक्यार रुपया" कहते हैं । इस रुपया का संकेत नायक को साक्ष बनाना है । यदि लड़की का पिता कन्या को कहीं दूसरी जगह ब्याह देता है तो इसकी पूरी जिम्मेदारी उस नायक पर होती है । इसलिए "साक्यार रुपया" विशेष महत्व रखता है । कन्या के पिता पर नायक का भरोसा न हो तो वह "साक्यार रुपया" स्वीकार नहीं करता ।

2.1.5 कोतळीर रुपया : (= थैली का रुपया) :

वेवाडू (वर) का पिता पैसे की थैली में पांच रुपये डालकर लेरिया के द्वारा पंचों को दिखाता है । इस थैली को "करारेर कोतळी" (वादे की थैली) कहा जाता है ।

यह करार या वादे का प्रतीक माना जाता है । करार की थैली को स्वीकृत व्यक्ति को सौंप दी जाती है। वृद्ध पांच पंचों के समक्ष थैली में निहित पांच रुपयों को ही पांच सौ रुपये होने की घोषणा करता है । ये पांच रुपये कन्या के पिता को दे दिये जाते हैं । पांच पंच मिलकर जैसे वर पक्ष की ओर से आरंभिक शुल्क के प्रतीक के रूप में ही पांच रुपये देते हैं । यह शुल्क इस बात का प्रतीक है कि वर पक्ष का विवाह-प्रस्ताव कन्या के पक्ष के लोगों को स्वीकार है । अन्त में वर का भावी साला अपने भावी बहनोई को दो रुपये पंचों के समक्ष भेंट करता है । यह इस बात का प्रतीक है कि कन्या के पिता को ही नहीं उसके भाई को भी सगाई स्वीकृत है ।

2.1.6 रंगेर रुपया :

एक लोटे में गुलाबी रंग घोला जाता है । वर का भावी साला उस लोटे को बहनोई के समक्ष रखता है । वर उस लोटे में एक रुपया डालता है । इस रुपये को "रंगेर रुपया" [रंगा हुआ रुपया] कहते हैं । सर्व प्रथम भावी साला बहनोई के कपड़ों पर रंग छिड़कता है । उसके पश्चात् पंचों पर रंग छिड़का जाता है । रंग छिड़कना भी प्रेम की प्रवृत्ति का एक प्रतीक है । दूसरी ओर नव-सम्बन्ध की भूमिका के उल्लास और उत्साह कोभी यह प्रकट करता है । लोटे का रुपया साले को ही दे दिया जाता है । इसके बाद सगाई का गीत भ गाया जाता है ।

गीत इस प्रकार है -

आम्बार बागे माँ बेटेट पंच मेलू
आम्बार बागे माँ कीदेर सगाई
आम्लीरे बागे माँ बेटेर पंच मेलू
आम्लीरे बागे माँ कीदेर सगाई
मोलसीरे बागे माँ बेटेर पंच मेलू
मोलसीरे बागे माँ कीदेर सगाई
मोरसीरे बागे माँ कीदेर मटाई
मोलसीरे बागे माँ खादेर सीधा पोको
मोलसीरे बागे माँ जोडेरे सगाई
नारेलेरे बागे माँ कीदेर सगाई
नारेलेरे बागे माँ खादेर मटाई

नारंगेर बागे मां खादेर छीया पोळी
नारंगेर बागे मां जोडेर सगाई

नारंगीर बागे मां बेटेर पंच मेळू
नारंगीर बागे मां कीदेर सगाई
नारंगीर बागे मां खादेर मटाई
नारंगीर बागे मां खादेर छीया पोळी
नारंगीर बागे मां जोडेर सगाई ।

2.2. मनोरंजन :

सगाई के पश्चात् सामूहिक मनोरंजन का क्रम घटित होता है । इसमें कई कार्यक्रम होते हैं, वे इस प्रकार हैं - ताडीपान, भांग, मदिरापान, स्वागत धो, हुक्का और पान-सुपारी । सभी ~~कार्यक्रम में~~ कार्यक्रमों में पहेलियां गाई जाती है ।

2.2.1. ताडीपान :

मनोरंजन के कार्यक्रम में सर्व प्रथम ताडीपान किया जाता है । ताडीपानी पीने से पहले एक पहेली गाई जाती है, पहेली इस प्रकार है -

पंच-पंचायत राजा भोजेर सभा ।
सग-सगाई परक दोपरी लात ।
ठ़ी काटा न परेवड़ा रे ।
भाई छ दुधारी धार ।
नदी किनारे ठेल छाई ।
नदी डाबर नायक ।
कुआरी-कुआरीरो जोडा सदा डाबर नायक ।

उक्त पहेली के अनुसार -

बाग में पंचों की सामूहिक सभा उसी तरह बैठी है जैसे राजा भोज के नेतृत्व में, उनके राज-दरबार में बैठा करती थी । इन पंचों ने अपने सगे-संबंधियों में ही अपनी सन्तान की सगाई निश्चित की है । ऊँचे-ऊँचे पेड़ पर लम्बे-लम्बे काँटे अटके हुए हैं । इन पेड़ों को कोई पसन्द नहीं करेगा, किन्तु नदी के किनारे खड़े इन पेड़ों के अंत:स्थल में दूध की धारा प्रवाहित होती हैं । नदी का पानी डाँबर के समान काला है, किन्तु इन पेड़ों के भीतर बहनेवाली मैंदी {=ताड़ी} दूध के समान है ।

दोनों समधी मिलकर इसी शुभ्र ताड़ी को पंचों को पिलाते हैं । इसी प्रकार अन्य पहेलियाँ कही जाती है ।

2.2.2 भाँग :

ताड़ीपान के पश्चात् भाँग पिलाने का कार्यक्रम होता है ।

भाँग को इस प्रकार तैयार किया जाता है :-

खस-खस, किशमिश, गुड़, गाँजा, भाँग की पत्तियाँ, काली मिर्च, जायफल, जायपत्री, बादाम आदि को दूध में घोटकर बनाया जाता है । ये भाँग बड़े शान से बनाई जाती हैं । भाँग को लोकगीत इस प्रकार है -

ओडीया रंगी-चंगी रो तारो कूंडो । सतारड़ा रंगी चंगी रो
तारो सोटा ।
आज काई टोपरो कुटेन भीजो । सरको आव्व किनारिया ॥

भांग को पत्थर के उखल (कुण्डों) में लकड़ी के सोठे से घोसकर तैयार किया जाता है । इन साधनों को बनानेवाली ओडीया (पत्थर तोड़नेवाला) और बढ़ई की इस गीत में प्रशंसा की गई है ।

विवाह के संस्कार क विशेष पर भांग को प्रसाद के रूप में किया जाता है । भांग से तात्पर्य यह है कि - संस्कार विशेष का पंचों के समक्ष शुभारंग करना । इसी को "भांग करणो" कहा जाता है । बनजारों में भांग का मान भंगी भूकिया नामक गोत्र को दिया जाता है ।

बनजारों के विवाह में भांग के सात प्रसंग आते हैं - पहली भांग गुड़ खाने के समय संपन्न होती है इसे "गोळेर भांग" कहते हैं । यह भांग लड़की-लड़के की सगाई निश्चित होने की सूचक है । भांग की पहेली इस प्रकार है -

"भांग में भांग सलताणी भांग ।
हीरा मोतीण को छाण कवे कपड़ा में छाण ।
भांग मिटो न राम दीटो सोने सरीकी कावेरी बेटी ।
चपटी कन बीजा भोको लो भाई संग भांग ।

उक्त गीत के अनुसार -

बनजारों का विश्वास है कि सबसे अच्छी भांग सुलतानी भांग हो सकती है । भांग पी लेने पर वे अपने आप को सुलतान ही समझने लगते हैं । उनके पास भांग का महत्व उतना ही है जितना कि हीरा-मोती के छान को दिया जाता है । भांग के नशे में व्यक्ति अपनी चुटकी में इमली के बीज को मसल डालने की हिम्मत रखता है ।

सलताणी भांग [सुल्तानी भांग] की अन्य एक पहेली इस प्रकार है ।

भांग रे भांग सलताणी भांग
भांग न छिटी राम न मिटी
रामे सरीको सभा बेठी
सूटा मोटी सांग
रण मोटी तलवार
रजपूत भरी कोठडी
साधा मोटी घोड ली
सेज मोटी कामिनी
पचिम मोटी भांग
लो भाई सगा भागे

उक्त पहेली के अनुसार यह सभा राम की सभा के समान है । शिकार के अवसर पर बर्छी प्रिय होती है, युद्ध के मैदान में तलवार प्रिय होती है, दरबार के लिए राजपूत प्रिय होता है, वीर को घोडी प्रिय होती है और सेज पर कामिनी विशेष प्रिय होती है । उसी प्रकार इस शुभ अवसर पर सलताणी भांग प्रिय है । इसे ग्रहण कीजिये ।

2.2.3. मदिरापान :

भांग के पिलाने के पश्चात् मदिरा पान भी होता है । इस अवसर पर भी पहेली गाई जाती है । पहेली इस प्रकार है -

छक छाले छकिया छक, छके छेट का ठुठ
बेठो रसिया मद पिय छ टपको पड़े बूंद

येव मोवडारो खीर लापसो, येव मोवडारो दास
परायखाको पूछ, न पूछ तो तन मन वेजाए वार
वेतडू दूवो जाणेसी, लो भाई प्याला मानेती ।

उक्त पहेलो के अनुसार छेर की सूखी लकड़ियां जलाकर महुए की शराब निकाली गई है । यह महुए का शराब खड़ी के समान है । दुल्हे की खुशी के लिए सम्बन्धियों को पिलाई जाती है ।

2.2.4. <u>स्वागत भोज :</u>

मदिरा पान के अनन्तर बाग में स्वागत भोज दिया जाता है । भोज के अवसर पर पहेलीगाई जाती है । पहेली गाने के बाद में ही भोज का आरम्भ होता है । पहेलो इस प्रकार है -

पंच पंचायत राजा भोजेर सभा
पधारे बाको लाख अन पधारे बाको सवाल लैाख
बाछाई कवेरी अमराई
जगत एकेम एक सवाई
टगी वंगी पांच मंगाका सिता सरोकी नार
पक्वाण बेढो जगद बनावे भूरिया
उछा भाड न खरा
फक घाल हिंग बोजवार
बनाई मोठा फल
किये काजेरी तीन कढ़ी
लो भाई सगा टगेरी खिचडी
सगा आयो पामणो, उबी राको गाद
असो बिचारो भावजी, तो दूधासू धोई पांव

भोज के अवसर पर कहा जाता है कि राजा भोज की सभा के समान है । यह अमराई कचहरी के समान है । सीता जैसी स्त्री ने पंच-पकवान बनाई हैं । सूके मेवे हींग-मसाले डाल कर रंगीन खिचड़ी [illegible] भी बनाई है । हमारे सगे बैठने के लिए ऊँचे गद्दे बिछाए हैं । भोली-भाली घर की स्त्री ने अतिथियों के पैर दूध से धोये हैं ।

2.2.5 <u>होका (हुक्का) :</u>

भोजन के पश्चात् हुक्का, पान-सुपारी की व्यवस्था होती है । हुक्का में इस शुभ अवसर के लिए मँगाई गई गुजरात की तमाखू होती है । पंचों को हुक्का देते समय पहेली गाई जाती है । पहेली इस प्रकार है -

होका तो होती भाई, चलम भाई
गुजरात की तमाखू कत वसीती रात
कत्त वसीती रात पड़े मर्दों के हाथ
दो दुःख सारी रात
हात न जळे, पाव न जळे, जळे बतीसा रंग
वेतहू हूवो जाणेती, तो भाई होका माने तो ।

2.2.6. <u>पान-सुपारी :</u>

हुक्का के अनन्तर पान-सुपारी की व्यवस्था होती है । पंचों को पान-सुपारी देते समय एक पहेली गाई जाती है जो इस प्रकार है -

रतन गढ़ेरी सपारी, चंपा गढेरो पान
कातो केम? लाल गलाल, कातो केम? कड़वा-कड़वा

कड़वा हमारो जात
चूनो केम? डूंगर को कांकरा
जयसो पाणो मळ जावे तो पाणी सरीको पातळो
लूंग केम? चरको-चरको, सबसे जादा पाचोर
कर दू एक मन, वेतड़ डूबो जाणेतो
तो भाई सगा पान माने तो

रतन गढ़ की सुपारी तथा चंपा पढ के पान है। बनजारा समाज के जैसा कड़वा गुलाल रंग का कत्था भी है। पहाड़ के कंकड़ों वाला चूना है जो पानी की बूंदे पड़ते ही घुल जाता है। इनके साथ चरपटो लौंग भी है।

2.3. वर यात्रा :

कन्या-गृह के प्रस्थान के समय अनुष्ठानों की एक श्रृंखला ही बन जाती है। इनका परिचय नीचे दिया गया है।

2.3.1 पाल माँड़णो (पत्तों का मंडप बनाना) :

शादी अनुष्ठान के अवसर पर घर के आँगन में पत्तों का मंडप बनाया जाता है। इसे "पाल माँड़णो" कहते हैं। इस अवसर पर स्त्रियाँ यह गीत गाती हैं -

झुरमोतीरो माँड्वा छ्वामेलो वेतुड़।
चाँदीरी थम्बा छ्वामेलो वेतुड़।
सोनेरी पीढ़िया रोका मेलो वेतुड़।
ओर बेट नायकेन बेसार मेलो वेतुड़।

हारे-हारे ढंका मेलो वेतुडू ।
छैंडोमा सेगाछेगेन बेसार मेलो वेतुडू ।
ओर हेट भोजन करारो वेतुडू ।
घेरो नाम बड़ा मेलो वेतुडू ।

उक्त गीत के अनुसार -

वेतुडू ने [वर] अपने घर के आँगन में चाँदी के खंबे का सुन्दर मण्डप बनाया है । उसने हरे-भरे पत्तों से ढके मण्डप के नीचे सोने का पाट डलवाकर उस पीढे पर नायक को तथा सगों को बिठा रखा है । मण्डप की शीतल छाया में सगे-सम्बन्धियों को भोजन खिला रहा है । इससे वर के पिताजी का नाम रोशन हो रहा है ।

मण्डप के नीचे घर के दरवाजे के सम्मुख कंबल तानकर छोटा-सा मण्डप खड़ा करते हैं । इस मंडप को पाल कहते हैं । लेकिन बनजारों के सभी गोत्र पाल का आयोजन नहीं करते । वड़त्या नामक गोत्र के लिए पाल का आयोजन आवश्यक समझा जाता है ।

2.3.2 मंडिवड़ो [छोटा मंडप] :

साड़ी ताणणो अनुष्ठान के दिन सेवर की लकड़ी के एक छोर पर पानी से भरी झारी * बांधते हैं । इस झारी में नारियल, सुपारी, चावल, गेहूं तथा पांच आने पैसे डालते हैं । झारी पर "गणणो"[2] ढकते हैं । इस लकड़ी को आँगन में गाड़ देते हैं । इस लकड़ी पर कपड़ा तान कर मंडप खड़ा कर देते हैं । इस प्रकार से निर्मित मंडप

---

* लोटा
2 विशेष प्रकार का कपड़ा

को "मंढिवड़ो" कहते हैं । इस अनुष्ठान पर स्त्रियाँ यह गीत गाती हैं -

तारे बापेरो मंढिवड़ो, हरो-भरो मंढिवड़ो ।
तारे दादारो मंढिवड़ो, हरो-भरो मंढिवड़ो ।
मंढिवड़ो हेट य हार, हरो-भरो मंढिवड़ो ।

तुम्हारे पिताजी और दादा जी का मंडप हरा-भरा था उसी मंडप की पंक्ति में तुम्हारा यह मंडप हरा-भरा ही रहेगा ।

2.3.3 कळस : (कलश) :

मंढिवड़ो के मध्य स्थित सेंबर के खंभे के पास दो फीट चौकोन जमीन को गोबर से लेप दिया जाता है । लिपी हुई धरती पर हलदी, कुंकुम, तथा ज्वार के आटे से चौक बनाते हैं । इसको "चौकोपूर्णो" कहते हैं । लेपकर रखी हुई धरती पर "गूण" रखते हैं । गूण के ऊपर मिट्टी का मटका एक रखा जाता है । मटके में थोड़ा पानी, चावल, सुपारी, नारियल और पांच पैसे डालकर उसके मुंह पर गणो (विशेष कपड़ा) ढाक दिया जाताहै । उसी घड़े को "कळस" कहते हैं । इस अवसर पर टांडे का नायक तथा कारभारी एक-एक रुपया कळस पर चढ़ा देते हैं । रुपया चढ़ाने को "कळस धोकणो" कहते हैं । कळस-धोकणो का अर्थ है - कळस की वन्दना करना । अन्य टांडे के बनजारे कळस की वन्दना प्राय: नहीं करते । केवल टांडे के प्रतिष्ठित व्यक्ति ही इस वन्दना में भाग लेते हैं ।

2.3.4. आगेर डाग :

कळस के सामने पीढ़ा पर वर को बिठायाजाता है । एक प्रतिष्ठित व्यक्ति कळस के सम्मुख जलते हुए दीये पर सुई गरम करता है

और साथ ही वह गुरु बाबा के मन्त्र को जपते रहता है । गुरु बाबा के मन्त्र को सात बार दोहराने तक सुई तपती रहती है । मन्त्र के अन्त में गरम हुई सुई से वर के भुजा को दागते हैं । दागने की प्रक्रिया को "दागेर दाग" देणो" कहते हैं । गुरु बाबा का मन्त्र इस प्रकार है :-

> कोणी आख्व, कोणी जाख्व ।
> कोणी भाई जन समाव ।
> धोळो घोड़ो हस लो ।
> पातळ्या असवार ।
> मुंगी बावड़ा मोगरा ।
> लळो बावड़ो कमान ।
> मार्इर पूजा, मार्इर पातो ।
> मार्इर पूजा हार ।"

उक्त गीत के अनुसार -

सफेद घोड़ा है । घोड़े पर सवार होनेवाला दुबला-पतला सा है । उसके पास मूंग के अनुपात सा एक मोगरा है जिससे वह सृजनशीलता की प्रक्रिया को गति देता है । इस सूक्ष्म सृजनशीलता में ही वह [घुड़सवार] पूजा-पाती तथा भोजन भजन-भोजन करता है । इसको केवल गुरु बाबा का ज्ञान ही समझ सकता है जो सदा अमर है ।

23.5 बदाव [बधाई] :

बदाव अनुष्ठान में भी मुख्यत: कुल देवता, कुलगुरु, लोक देवता जैसी अति मानवीय शक्तियों की प्रार्थना से संबंधित गीत गाये जाते हैं । बदाव में बधाई का अर्थ ध्वनित होता है । विवाह का

उद्देश्य भी वंशवृद्धि है । वंशवृद्धि के उपलक्ष्य में वदाव संस्कार का आयोजन होता है । इस अवसर पर बहन भाई को प्रेम से पीढ़े पर बिठाती है । भाई के कपाल पर कुंकुम का टीका लगाती है । तत्पश्चात् कांसे की थाली में कपूर और घी का दीया जलाकर आरती उतारती है ।

भाई के आरती के बाद देवी-देवताओं की सामूहिक वन्दना की जाती है । वन्दना का गीत इस प्रकार है :-

पैलो मुढ़ावो धार दे, वो गोसाईंरो लेस्या ए ।
गोसाईंरो जाए आणंद वदाव दे, दूसरो मढ़ावो धार दे ।
वो धरतीरो लेस्या ए, धरतीरो जाए आणंद वदाव दे ।
तीसरो मढ़ावो धार दे, बहे वो ब गंगा मातारी लेस्या ए ।
गंगारो जाए आणंद आसनान दे, चवतो मढ़ावो धार दे ।
वो विद्या लड़ी रो ले स्या ए, विद्या लड़ीरी जाए आणंद
पूत दे ।
पांचवो मढ़ावो धार दे, वो बाप लड़ी रो लेस्या ए ।
बाप लड़ीरी जाए आणंद आसीस दें ।

उक्त गीत के अनुसार -

प्रथम वन्दना उस गुरु बाबा को, जिसने सभी प्रकार का ज्ञान प्रदान कर सुखी जीवन का पथ-प्रदर्शन किया है । द्वितीय वन्दना उस धरती को है, जिसने अपनी गोद में बिठाकर आनन्दित जीव को दुलार दिया है । तृतीय वन्दना उस गंगा माता को है, जिसके पवित्र जल से शुद्ध स्नान किया जाता है । चतुर्थ वन्दना उस विद्या की परम्परा को है, जिसको प्राप्त कर पुत्र ज्ञानी बनता है । पंचम वन्दना माता-पिता के चरणों में है, जिनकी कृपा से जीवनदान मिला है ।

2.3.6. साड़ी ताणणो : { साड़ी तानना } :

बारात के कन्या के घर जाने के तीन दिन पूर्व साड़ी तानने का अनुष्ठान होता है । इस अवसर पर सभी को दावत दी जाती है । इस समय दो व्यक्ति साड़ी के दोनों छोरों को पकड़कर खड़े हो जाते हैं । उस समय स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत का गायन करती है ।

चांदणी माँ चांद चोराधोरे के हरी ढाले भुकिया ।
चांदणी माँ साडो तणाओर के हरी ढाले भुकिया ।
चांदणी माँ टेवूपेरा ओरे हरी ढाल भुकिया ।
चांदणीमा झुरको नथा ओरे हरी ढाल भुकिया ।
चांदणीमा नागारा छोरा ओरे हरी ढाल भुकिया ।

2.3.7 वेतडुन साडोर हेटेन काडणो { वर को साडी के नीचे से भेजना } :

इस साडी के नीचे से धीरे-धीरे आगे चलता है । साडी के दो छोरों को पकड़े हुए व्यक्ति वर के चलने की गति के अनुसार साडी को लपेटते हैं । उसके पीछे स्त्रियाँ गीत गाती चलती है । इस प्रकार वर को साड़ी के नीचे से बाहर लाते हैं । इस अनुष्ठान में स्त्रियाँ यह गीत गाती हैं -

तू कुणबी बाई रो बाळा रे । हारी नंदलाला ।
तू गोकुळे मा काटो चाबा रे । हारी नंदलाला ।
तू धीये गोवेरो लाड़ी रे । हारी नंदलाला ।
छेन-छेनाडी रो बाळा रे । हारी नंद लाला ।

उक्त क गीत के अनुसार -

वर उसकी माता तथा पिता की तुलना श्रीकृष्ण भगवान्, यशोदा और नन्द से करती है। साथ ही श्रीकृष्ण की नटखट चेष्टाओं की ओर संकेत किया गया है। भगवान श्रीकृष्ण चोरी से माखन तथा दही खाते थे।

घर के दरवाजे पर दो व्यक्ति साड़ी के दो छोर को पकड़े रहते हैं। उस लंबी साड़ी के नीचे से दुल्हा धीरे-धीरे आगे चलता है और उसके पीछे स्त्रियाँ गीत गाती चलती हैं। साड़ी के दो छोर को पकड़े हुए व्यक्ति वर की चलने की गति के अनुपात में साड़ी को लपेटते और छोड़ते रहते हैं। इस प्रकार वर को साड़ी के नीचे से घर के बाहर लाते हैं। इसे "वेतुडून साड़ी हेटेन काढ़णो" कहते हैं।

एक बार घर के बाहर निकल आने के बाद वर के लिए घर के अन्दर प्रवेश करना मना है। वधू के आने पर ही वर-वधू का संयुक्त रूप से घर में प्रवेश होता है।

साड़ी के छोर की घर के आँगन में समाप्ति पर वर वहीं खड़ा हो जाता है। उसके पदतल की धरती को गोबर से लेप देते हैं। लीपी हुई जमीन पर ज्वार के आटे से स्वास्तिक चिह्न बनाते हैं। उस चिह्न पर पाँच पैसे रखते हैं और ऊपर से "गुड़" रखकर उसी गुड़ पर वर खड़ा हो जाता है। कुंवारी-कुंवारे के पाँच जोड़े बारी-बारी से वर पर पाँच-पाँच बार चावल फेंकते हैं। इनको "चावळ वारणो" कहते हैं। चावळ वारणों के बाद वर वयस्कों के पैर छूता है। अगर पिता, भाई आदि किसी की अकाल मृत्यु हो गयी तो माता तथा बहनें वर के गले में अपना गला डालकर रोती है। गम से व्याप्त वातावरण से वर को बाहर निकालने की कोशिश की जाती है।

वर और मेरिया दोनों मंडप के बाहर चले जाते हैं । वर के लिए धोती, कुर्ता आदि को कोतळोमें [थैली] रख देते हैं । उस कोतळो को लेकर मेरिया मंडप की पूर्व दिशा में वर को साथ लेकर बैठता है । वर और मेरिया को पानी का लोटा दिया जाता है ।

2.3.8. कोतळो गजावणो [थैली के लिए जागना] :

वर यात्रा के लिए आवश्यक सामग्री को एक थैली में रखा जाता है । उस थैली को कोतळे कहते हैं । "सेतळून साडो वेटेन काडेर" अनुष्ठान के बाद दावत होती है । दावत के पश्चात् "टांडे वाले रात भर जागते" हैं । इसलिए इसको "कोतळो गजावणो" कहा जाता है । स्त्रियाँ मधुर गीत गाकर नाचती हैं । उनमें से एक इस प्रकार है -

मोघडीरो झाड भूंजो
पोयेवाळो माटी वगाडो
लिवान ककोळोमा गाडो
वोरो पूरो सवाई धणाळो

कवी छक पको दारु वळो
तीन मंगाकार करमेनो मेळो
पेसाळीसेती लरोच आवो टाळो

पिछ वेरो तीन कोनी कळो
छड छळी लीदो जमा करो
लडाई करन फोडा लीदो लाळो
ज्यादा दारु पीन वेगो बावळो

माटी वाळेरो करतो दागीळो
आवे आवे जमाव टाळो

विष्णुदास केरो पोवराधाको
दारु पीवे वाको करारा पियालो
भोष्कीर बाड लदाई भूंको

2.3.9. केलकून वाट नवाणो [वर को रवाना करना] :

"ओलको गवाभणो" अनुष्ठान के पश्चात् दूसरे दिन वर बारात के साथ रवाना होता है । बारात में केवल सात या नौ लोग जाते हैं । टाँडे के छोटे बड़े सभी लोग बारात को रवाना करने के लिए उपस्थित होते हैं । वर आगे-आगे चलता है और टाँडे के सभी लोग पीछे-पीछे चलते हैं । इसका वर्णन निम्नलिखित गीत में पाया जाता है :-

राम निकलो ताँडेर भार बार्यद ।
रामेरी सेना देको बार्यद ।
केलूडू निकलो ताँडेर भार बार्यद ।
केलूडू रो सेना देको बार्यद ।*

इसका हिन्दी रूपान्तर इस प्रकार है :-

इस गीत में टाँडे के झुंड को सेना से संबोधित किया गया है । इस सेना के साथ वर का टाँडे के बाहर निकालने का भाव प्रकट होता है ।

---

* भीमला बाणोद, आयु 60 वर्ष, हिट्टमपल्ली टाँडा, विकाराबाद तहसील, ब आन्ध्र प्रदेश

2.3.10 हेलेर रुपया :

वर के साथ टाँडेवालों का झुंड पूर्व दिशा की ओर चलता है। मैदान देखकर झुंड खड़ा हो जाता है तत्पश्चात् वर का ओढ़ा हुआ खोळ (शाल) जमीन पर बिछा देते हैं। कुल देवता के नाम पर या गुरू के नाम पर अगरबत्ती जलाकर वर एक रुपया शाल पर रखता है। रुपया रखते समय वर शाल को स्पर्श नहीं करता। पाँच व्यक्ति मिलकर शाल को जमीन से उठाते हैं। वे पाँचों व्यक्ति विवाहित होते हैं। उस रुपये को शाल के एक छोर पर बाँध देते हैं। विवाह के समय ससुराल में यह रुपया वर के पास ही रहता है। इस रुपये को "हेलेर" रुपया कहते हैं। "हेलेर" रुपया कहीं खो गया तो अशुभ माना जाता है। विवाह के पश्चात् "हेलेर" रुपया गुरू को भेंट दिया जाता है। "हेलेर" रुपया शाल के छोर पर बाँध लेने के पश्चात् वर और लेरिया मिलकर हनुमान जी के दर्शन के लिए मन्दिर में जाते हैं। मृत पूर्वजों को बीड़ी, तंबाकू, दारू, ताडी आदि चढ़ाया जाता है। वर टाँडेवालों के पैर छूकर आशीर्वाद प्राप्त करता है। आशीर्वाद लेकर वर, वधु की ओर निकल पड़ता है। उस समय टाँडेवाले वर को बिदाई देते हैं। इस अवसर पर स्त्रियाँ गीत गाती हैं। गीत इस प्रकार है :-

तारो ढाले वेराजो रे राजार बेटा ।
तारो ढाले वेराजो रे ।
पाणी भरतु वाटड़ी जोवर झाँ - झाँ लूबि-जड़ी ।
लूबि-जड़ोरो मेळोर राजा ।
तारो बरची वेराजो रे राजार बेटा ।
तारो बरची वेराजो रे ।
लकड़ी वांदतु वाटड़ी जोवर झाँ-झाँ लूबे जड़ी ।

लूंबी-लूंबी रो मेला जाईर राजा ।
तारी सोरटी तलवार र झां-झां लूबे-जड़ी ।
घोळी पोवतू घाट तारी जोवर झां-झां लूबे-जड़ी ।

उक्त लोकगीत के अनुसार -

हे राजा का बेटा तेरी तेज तलवार से शत्रुओं को संहार कर आगे बढ़ें । पनघट पर तेरी प्रिया राह देख रही है । तेरी प्रिया के साथ सहेलियों का झुंड भी है । तेरी तलवार और प्रेयसी की सहेलियाँ वधु को वरण करने में मदद ही करेगी । तेरी ढाल और बरची भी शत्रुओं को पराजित करने के काम में उपयोगी बनेगी । पर्वत पर लकड़ी काटनेवाली तेरी प्रिया तेरे लिए प्रतीक्षा कर रही है । रोटी सेंकती हुई प्रिया तेरे लिए राह देख रही है । तुम उसके पास तुरन्त पहुँच जाओ ।

2.3.11 <u>सीख (उपदेश) :</u>

टाँडे की स्त्रियाँ वर को विदा करने से पहले उपदेश देती है: "ससुर के टाँडे में पहुँचते ही पहले टाँडे वालों को हाथ जोड़कर राम-राम कर लेना, उसके पश्चात् तम्बाकू से भरा हुक्का उन्हें पीने के लिए दे देना, सिर झुकाकर सासू के चरण छू लेना, साले-सालियों को हाथ जोड़कर सुपारी दे-देना । निम्नलिखित गीत में इसका वर्णन है । उपदेश देती हुई टाँडे की स्त्रियाँ यह गीत गाती हैं :-

आगे छ ससरेरो मकाव
हाता जोडी रामी-रामी कहलेरे राजारो बेटा

गढ को ढोक्का भरदेरे राजारो बेटा
तवन पंचून देसरे राजारो बेटा
केढी बात मत साम्भळेसरे राजार बेटा
नव ढंकन रेस रे राजार बेटा
टाँडेर नाम रकाळेस रे राजार बेटा
कूटि मत कढायेस रे राजार बेटा
बहादूर केरायस रे राजार बेटा
ससरेर बात मानेसरे राजार बेटा
आंग दिसाया सासुरो घूरलो
माताँ नवान नवण करलेस रे राजारो बेटा
सासुर असीर लेलेस रे राजार बेटा
आंग दिसाय साकीर मकाव
बात जोडन सपारी देसरे राजार बेटा
नरमीती रोपरो देसरे राजार बेटा
रोस मत करेस रे राजार बेटा
आंग छ साकेर मकाणो
नवतो-नवतो तम्बाकू देसरे राजार बेटा
हंसतो-हंसतो वाते करेस रे राजार बेटा
टाँडेर वळ्यूहून इज्जत देसरे राजार बेटा
बाता जोडी रामी-रामी करलेरे राजार बेटा ।

2.4 वर का स्वागत

2.4.1 कोतको धरेमा लेणो
(थैली की स्वीकृति) :

बराती कन्या के टाँडे के पास के पठार पर या मैदान में

बैठ जाते हैं । बरात की सूचना देने के लिए लेरिया टाँडे के नायक के पास जाता है । नायक कन्या के पिता को बुलाकर बरातियों के स्वागत करने के लिए कहता है । तीन दिन के पश्चात् नायक के साथ टाँडे वाले बारात की ओर जाते हैं । कुँवारी लड़की पानी की झारी लेकर आगे चलती है । पीछे टाँडेवाले चलते हैं । इस अवसर पर कन्या की माता उपस्थित नहीं होती । इस अनुष्ठान में स्त्रियाँ यह गीत गाती हैं ।

वाया करेन आयोरे भमियार बेटा
मळायेन लायोरे भमियार बेटा
घुरलेन लायोरे भमियार बेटा
हूलेती आयोरे भमियार बेटा
नायकेर बेटारे भमियार बेटा
वेराडू आयोरे भमियार बेटा
तीन राड वेगेर भमियार बेटा
काइ वेला पडरे भमियार बेटा
मैदाने माँ पडेरे भमियार बेटा
झाडे छट सूतेरे भमियार बेटा
पाणी कत सूतेरे भमियार बेटा
पाणी कत पीदेरे भमियार बेटा
बाटी कत खादेरे भमियार बेटा
लेरिया न मेलोरे भमियार बेटा
काई वाका पड्योरे भमियार बेटा
तार छाती फाटोरे भमियारे बेटा
ढूंरेन देकन तारछाती फाटोरे भमियार बेटा
कुँवार छोरी पाणीर झाबरी भर लावरे भमियार बेटा

टाँडेर मजाव आयोरे भमियार वेटा
टाँडेर नायकडा आयेरे भमियार बेटा
वाया करेन आयोरे भमियार बेटा

2.4.2. <u>वर की प्रशंसा :</u>

स्वागत के अवसर पर टाँडे की स्त्रियाँ वर की प्रशंसा गीत गाकर वर की प्रशंसा करती है । गीत का भाव है : वर राम नाम जपता हुआ आया है, वह कन्या के लिए मंगल सूत्र लाया है, वीर वर बरछी, भाला लेकर गोरी को ले जाने के लिये आया है, वह नदी, नाले और जंगल लांघ कर गोरी के टाँडे तक पहुँचा है । गीत इस प्रकार है -

राम नाम भजतो आयोरे हुसिया
देवेन धोकतो आयोरे हुसिया
गरूर असीस लेन आयोरे हुसिया
वड बूढेर असीस लेन आयोरे हुसिया
भाला बरची लेन आयोरे हुसिया
खाकिया, लंगको लंगन आयोरे हुसिया
गटला, डूंगर लंगन आयोरे हुसिया
झाडी बोचका लंगन आयोरे हुसिया
वैला खेवतो आयोरे हुसिया
तडके मॉ तपतो आयोरे हुसिया
रातेन दीयाँ करतो आयोरे हुसिया
घुगरी घालेन आयोरे हुसिया
वाकडी पेरायेन आयोरे हुसिया
चूडो तोपेन आयोर हुसिया
बाजर वतारेन आयोरे हुसिया

पागडी बांधन आयरे हुसिया
छोक ओढन आयोरे हुसिया
तमाकूर कोतळी लटकान आयोरे हुसिया
पान सपारो लायोरे हुसिया
तिसरी घालेन आयोरे हुसिया
लाकडी वासा आयोरे हुसिया
वाया करेन आयोरे हुसिया

2.4.3. स्वागत के समय वर का व्यंग्य :

स्वागत अनुष्ठान के समय टांडे की स्त्रियाँ व्यंग्य से कहती है - तू इस टांडे के पास क्यों आया है? तू शायद दुल्हन, उसके पिता और भाई को लूटने आया है । हमारी नारी लूटने के लिए तू अपने साथियों को भी ले आया है । इसलिए तू सीधे कन्या के घर चला जा । वहाँ जाकर सूखी रोटी खा ले और घडे का ठंडा पानी पी ले । बरातियों को भी अपने साथ ले जा । इस प्रकार स्त्रियाँ वर से मजाक करती है । इस समय का गीत इस प्रकार है -

आरे चोट्टा तू कोन आयोरे वेतड़
तू वाया न कोति तू बे लूटेन आयोरे वेतड़
लूटेन आयोरे भूखड़ा वेतड़
लूटेन तू तारलार मळाव लायोरे वेतुड़
तू इत मत धम, सूदो नववेरो घर धास रे वेतुड़
ताटवासू सुकी बासी पडी रे वेतड़
जान खालेन वडिआर छीकी पाणी पीलजा वेतड़
सूको छरायेन मळायेन लेजोरे वेतड़

येत मत धम रे वेतडू
अरे चोट्टा तू कोन आयोरे वेतडू

2.4.4. टाँडे वालों को चूरमो [चूरमा] बाटना :

वर अपने साथ में घर से चूरमा लाता है । इसे स्वागत के समय टाँडे वालों को प्रसाद के रूप में बाँटा जाता है । पहले दोनों समधी एक दूसरे के मुँह में चूरमा डालकर हास-परिहास करते हैं । चूरमा को कन्या पक्ष के की स्त्रियाँ भी खाती है । वे वर को चिढ़ाती है और व्यंग्य कसती हुई निम्नलिखित गीत गाती है -

ओलो-आलो मूँडो, बाडो-बाडो आँकी
ई तो नदियाँ दकावे बाड्या
उंड-उंड ढोला, कोतकोर पुंचडो,
ई तो खाबिया दकावे बाड्या
छाबलास कान, सूँडे सरीक नाक
ई तो हाती दकावे बाड्या
लाम्ब-लाम्ब हात, लाम्बो-लाम्बो-आंगळी
ईतो वाँसा दकावे बाड्या
लाम्बो-लाम्बो टाँगे, लम्ब-लम्ब तळवा
ई तो उटंडो दकावे बाड्या
काळो-काळो रंग, घोळ-घोळ दान्त
ई तो धेला दकावे बाड्या
ढेबरासे पेट, कोळासो मातो
ई तो मिटका दकावे बाड्या ।

2.4.5. वर का कन्या के घर आना :

वर का साला अपने भावी बहनोई को मैदान से अपने घर तक कंधे पर बिठाकर ले जाता है । घर के सामने पट्टे पर वर को खड़ा कर देता है । इस अनुष्ठान के पश्चात् बरातियों को हाथ मुंह धुलाते हैं । इस अवसर पर स्त्रियाँ एक गीत गाती है । गीत इस प्रकार है -

पीढ़िया पर बेतह ढूबोचरे बालाजी
कसबेती ओन इ रकाडेस बालाजी
हमार नगरीन नाम रकाडेस बालाजी
हमार लाङलीन पण्डेन आयोरे बालाजी
ताई छाया हमार नगरी पर रेदेस रे बालाजी

2.5 घोटार नका (घोल पीने का कार्यक्रम) :

2.5.1 घोटा (घोल) :

वर और बरात के कन्या के घर पहुंचने पर "घोटा" पिलाया जाता है । घोटा, गुड़ और इमली का घोल ही है । चार रंजन (घड़े) के पानी में घोटा घोला जाता है । विवाह अनुष्ठान का यह पहला कार्यक्रम है । घोटा अनुष्ठान में टाँडे की स्त्रियाँ कई गीत गाती हैं । उनमें से एक इस प्रकार हैं -

बापए रंजने मा घोळ दीने आमली गोळ
बापए भेळदीन ओभा द्रोपदी - छमछेर मोल
बापए वाया करेन आयेव ढूंगा नायक
बापए घोळदीने घोटा नायकूर नायक

बाप्प मकायेन घोटा, वेतकून सोटा
बाप्प वोन सोटा चाखेती, छोरीर पोटर
बाप्प घोटार नक्ता करदीनो नायक ।

2.5.2 टेको (= वरात का भोजन) :

घोटा के पश्चात् कन्या का पिता टाडेवालों के लिए, भोज का आयोजन करता है । इस भोज को "टेको" कहते हैं । भोजन परोसने से पहले परोसने वाले निम्नलिखित पहेली कहते हैं ।

वड़ काट् वड़्यानी काट् -
वड़ेर काट् गेदा
गेदा पर मेलू भारी
भारी पर मेलू झारी
छोडोये हासे भूरिया वाळी
पंचूरी थाळी ।

2.5.3. थाळी बांधणों (थाली बांधना) :

कन्या पक्षवाली एक स्त्री भोजन के लिए पंक्ति में बैठे पुरुषों की थाली, पानी की झारी, उनके बैठने के पाट, नहाने के पाट, सिर की पगड़ी आदि को पहेली द्वारा बांधती है । पुरुष को पहेली का जवाब पहेली द्वारा ही देना पड़ता है । पहेली का प्रत्युत्तर देने के पश्चात् ही थाली खुली हुई मानी जाती है । फिर पुरुष पंक्ति के लोग भोजन कर सकते हैं । इस अवसर पर स्त्री ~~निम्नलिखित~~ पहेली सुनाती है -

2.6 नवलेरीर वायारे ढंगोळो :
(कन्या का विवाह स्नान)

2.6.1 गरतणी छोड़णो (= काली पोत खोलना) :

विवाह अनुष्ठान से एक वर्ष पूर्व कन्या नाना प्रकार काले मोतियों को धागे में गूंथ कर अपने गले में और पैर में बांधते है। विवाह के समय कन्या की सहेलियां "गरतणी" को खोल देती है। कन्या गरतणी पहनकर वर के साथ फेरे नहीं लगा सकती। इस अवसर पर कन्या अपनी सहेलियों से गरतणी * नहीं तोड़ने के लिये प्रार्थना करती है। गीत इस प्रकार है -

गरतणी मत तोडो जामणे
तोडो का वटाणी काकरोसी

---

* काली पोत

मार वीरार हाते ही
गरतणी मत तोडो
मेरेरो मेरावी
गरतणी मत तोडो ।

2.6.2 <u>हळदेर टीको [= हल्दी का टीका] :</u>

जब कन्या को मंडप के नीचे पट्टे पर बैठ जाती है, तब उसका भाई हल्दी को पानी में भिगाकर बहनें के माथे पर टीका लगाता है । इस अनुष्ठान को "हळदेर टीका"* कहते हैं । टीका लगाते समय कन्या रोने लगती है, अपने भाई से वह हाथ जोड़कर विनंती करती हुई कहती है कि मुझे अपने घर से पराए घर क्यों भेजते हो ।

2.6.3. <u>हळद लगाड़णो [हल्दी लगाना] :</u>

पिसी हुई सूखी हल्दी खाने के तेल में भिगाई जाती हैं । "मेंदीपोटी"[2] और मेंळल[3] को अलग से पीसते हैं । उसके पश्चात् पिसी हुई "मेंदी पोटी" और "मेंळल" को हल्दी के साथ मिला देते हैं । इस प्रकार से मिश्रित लेप को वधू और वर के शरीर पर लगाया जाता है । इस अनुष्ठान को "हळद लगाड़णो" कहते हैं । इस अवसर पर टांडे की स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती हैं -

मेंदी लाड़ान छम दीजो
मेंदी लाड़ीन छम दीजो

---

* हल्दी का टीका 2 मेंहदी की पिट्टी 3 मेंहदी के पान को मेंळल कहते हैं ।

लाड़ान घम-घम रे हल्द घम
लाड़ीन घम-घम से हल्द घम
घम-घम रे हल्द घम

2.6.4 नवलेरीन वायार हंगोळी
<u>§ कन्या का विवाह स्नान § :</u>

हल्द लगाड़णों अनुष्ठान के पश्चात् स्त्रियाँ नवलेरी" को स्नान कराने के लिए ले जाती हैं । वे सर्व प्रथम कन्या की वेणी को खोलकर धोती है । इस समय कन्या को अपनी माँ की याद आती है । वह सहेलियों से कहती हैं : मेरी माँ स्वयं अपने हाथों से मेरी वेणी गूँथती थी । इस अवसर पर कन्या निम्नलिखित गीत गाकर अपनी वेदना प्रकट करती है -

मते के छोड़ो भोजाइये
मारीज याड़ी मेरी हातेरी लटा लटाही गूँथणो गूँतणी
दुआ छोयरे लेप लगायोय पटड़ी
मारीज काकी रे हातेरी लटा लटायोरी गूँतणी
मते के छोडो भोजाइये
पराये घरेर परको साडी
पराये घरेर सुंदी-खांदी औली-औलाई साडी
मत विंटाबोए भोजाइये
मत गूँतो याडी सोनेरी हातेर बालरिया टोप
पराये देसेरी परकी घुटो लोड़
हमनेन आच दकायेनी भोजाइये ।

2.6.5 हास-परिहास :

(स्नान के समय की मसखरी)

कन्या को स्नान कराते समय टांडे की स्त्रियाँ गीत गाती हुई हास-परिहास करती हैं। कन्या के शरीर को धोती है और झारी-पर झारी पानी बरसाती है। इस अवसर पर टांडे की स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती है -

लाड़ली हमार छूमरीन कराव असनान बाइया
छूमरीर पूटेन मसका बाइया
चरमटड़ीर हतेन मसका बाइया
लाड़लीन असनान करावाँ बाइया
गोरीर टाँगे मसका बाइया
छोडी माता धोवाँ बाइया
लाड़लीन असनान कराई बाइया
झारी पर झारी पाणी झोकोए बाइया

2.6.6 साड़ी पर व्यंग्य करना :

वर के द्वारा लाई हुई साड़ी पर टांडे की स्त्रियाँ व्यंग्य करती हैं। वे वर को नानाप्रकार की गालियाँ सुनाती है। वधू की दृष्टि में यह साडी उसके भैय्या द्वारा खरीदी गई साड़ी की तुलना में तुच्छ है। अत: कन्या स्नान के बाद कन्या इस साडी को न पहनने की इच्छा प्रकट करती हैं। इस अवसर पर वह निम्नलिखित गीत गाती है -

काई साड़ी लायोरे रड़ी-पड़ी
वे मोलेर साडो लायोरे रड़ी-पड़ी

वेतड़ तू कसो आदमी छी रे रड़ो-पडो
छींदी खादी साडी लायोरे रड़ो-पड़ो
कच-कामेर छेनीरे रड़ो-पड़ो
तू बेमोलेर साडी लायोरे रडी-पडी ।

2.6.7 नवलेरी वायदो : (कन्या का वादा) :

नहाती हुई कन्या अपने माता-पिता, भाई और भाभी को गहने भेंट करने का वादा करती है । माँ के लिए गले में हंसली, पिता के लिए और भाई के लिए कमर की करधनी और भाभी के लिए आदकाट * भेंट करने का वादा करती हैं । इस अवसर पर वह निम्नलिखित गीत गाती है -

याडी भेय री जे
  य तारेवासु रूपेरो हंसलो घड़ा लायूं या यार्‌या
बापू रेय-जे
  यें ब तारेवासु कड़ेर कणदोरी घड़ा लायूं बाप हियार्‌या
वीरणा रेय-जे
  य तारेवासु रूपेर कणदोरी घडा लायू वीरा-हियार्‌या
भावजाण ये जे
  य तारेवासु आदकाट मंडलायूं भावजण-हियार्‌या

---

* एक विशेष प्रकार का गहना ।

2.7 वेतडूर हंगोळी
(वर का स्नान)

2.7.1

स्नान करने के लिए वर को पट्टे पर बिठाया जाता है । किन्तु कन्या पक्ष के नव-युवक वर की ताकत अजमाने के लिए उसे पट्टे पर नहीं बैठने देते हैं । वर अपने साथियों के सहारे पट्टे पर बैठता है । इस अवसर पर टांडे की स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती है -

मारो छणा - मणा, वेतडू चालो गंगा असनान
मारो छणा - माथा, छोड़-छोड़ घेरी कीदो असनान
मारो छणा-मणा, मसूरू की कोतळी म धतूरार बाजा
मारो छणा-मणा, पटगीर कोतळो रड्गो बोजा
मारो छणा-मणा, पैंक दीनो कोतळो कसेना बीजा ।
मारो छणा-मणा, वेतडू चालो गंगा असनान ।

2.7.2.

वर नहाने के लिए पट्टे पर खड़ा हो जाता है । टांडे की नायकिन के आज्ञा देने पर पट्टे पर बैठ जाता है । तब वर की सास उसके सिर पर की पागडी उतारती है । वह पागड़ी उतारने का अधिकार दूसरों को नहीं है । सास अपने जवांई (दामाद) की पगड़ी उतारने के पश्चात् झारी से नहलाती है । बाद में टांडे की अन्य स्त्रियाँ वर को नहलाती है । नहलाते समय वर की ब सालियाँ वर के शारीरिक बनावट का वर्णन करती हुई निम्नलिखित गीत

द्वारा व्यंग्य कसती हैं । गीत इस प्रकार है -

वणूलडा जसो दकावे भेनड़ा
वादिर जसो वींचकारोये भेनड़ा
भैंसा सरीको पस-पस करवरो भेनडा
गद्दा सरीको वोको-वोकी टांगाको भेनडा
हातीर कानाको भेनडा
ऊंटड़ीर गुदडोये भेनडा
टूटी-टाटी कड़ेवाको भेनडा
वणूलड़ा जसो दकावे भेनड़ा

2·7·3

नहाते समय वर की सालियाँ वर की पीठ रगड़ती हुई उसे कीचड़ में गिरा देती है । वर का भाला वजन देखने के मिस बहाने वर को उठाकर कीचड़ में गिरा देता है । दूल्हा के गिरने पर कन्या पक्ष की स्त्रियाँ उसे चिढ़ाती है । वे गीत में वर से इस प्रकार पूछती है -

कीचड़े माँ कीच खारोरे   चरपक्या
तू कतरा दाड़ेती भूकोरे   चरपक्या
बार माँई दम छेनी रे   चरपक्या
तार माँई जोर छेनी रे   चरपक्या
तू तो बाई जसो पड़गोरे चरपक्या
कींचडेमाँ कीच खारोरे   चरपक्या

2·7·4

2.7.4

नहाने के अन्त में एक स्त्री वर के सिर पर झारी से पानी डालती है । वर की सास अपने हाथों से उसकी चोटी को संवार कर चोटी से गिरे हुए पानी को छः बार मुँह में लेकर कुल्ला करती है और सातवें घूँट को पी लेती है । इस अवसर पर टाँडे की स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती हैं -

गंगार पाणी, झारी पीदी
झारीर पाणी, चोटी पीदी
चोटीर पाणी, सासू पीदी
चोटीर पाणी कत मक बाध्या ।

2.7.4 सासूर सात सोटा
(= सास के द्वारा सात सोटे मारा जाना)

नहाने के समय सास वर के पीठ पर मुसल से सात चोट मारती है । बनजारों का विश्वास है कि मुसल सात चोट खाकर वर ज्ञानी बन जाता है । वर मुसल की चोटों के बदले में अपनी सास को दो रुपये भेंट देता है । इस अवसर पर टाँडे की स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती है -

वेराडू बनजोरे गेनी तू
वे ढ़ंगी वेराडू बनजोरे गेनी तू
सात चोटे सारारी खान वेराडू
बनजोरे गेनी तू

सासुर वोतेर सोटारी चोटे पड्या वेराडू
भेमैया सादे जड्जाय वेराडू
वेराडू वेतड़ तु कनजोरे गेनी तु

2.7.5 दोसक्या फोड़णो (मिट्टी के पात्र को फोड़ना) :

स्नानोपरान्त वर पट्टे पर खड़ा हो जाता है । वर का साला दोसक्या को पाट के पास रख देता है और वह वर से दोसक्या फोड़ने के लिए कहता है । दोसक्या फोड़ने के लिए पैर आगे बढ़ता है तो साला उसे पीछे खींच लेता है । इस प्रकार से वर का साला वर को पहली बार में दोसक्या फोड़ने की क्रिया को असफल करने की चेष्टा करता है । पहली बार में दोसक्या फोड़नेवाले वर को बहादुर माना जाता है । वर को ऐसे तीन दोसक्यों फोड़ना पड़ते हैं । इस अनुष्ठान में टाँडे की स्त्रियाँ यह गीत गाती है -

फोड़दोनो दोसक्या, कमारेर दोसक्या
फोड़दोनो दोसक्या, तीन कमारेर दोसक्या
फोड़दोनो दोसक्या, नकतार दोसक्या
फोड़दोनो दोसक्या, छोलालीदो अँगूठा
फोड़दोनो दोसक्या, धूळेलागो भोसक्या
फोड़दोनो दोसक्या, मट्टीरो दोसक्या ।

2.7.6 कानेन कांकरा लगाड़नो
(कान में कंकर लगाना) :

वर का साला कान को दो कंकर लगाकरह दबाता है । भविष्य में परिवार के सभी सदस्यों के साथ अच्छा व्यवहार करने के

लिए वह वादा कराता है । इस अनुष्ठान को कानेन कांकरा लगाणो कहते हैं । इस अवसर पर स्त्रियाँ यह गीत गाती है -

सोगन छोरे वेतड़िया, लागगे तारे कानेन कांकरा
ससरेती नवन रेस, लागगे तारे कानेन कांकरा
सासुती सीको बोलेस, लागगे तारे कानेन कांकरा
साकेती मसकरी मतकरेस, लागगे तारे कानेन कांकरा
साळीन टोपर दरायेस, लागगे तारे कानेन कांकरा
टांडे वाकेती समोर रेस, लागगे तारे कानेन कांकरा
नायकेती हात जोड़ ला, लागगे तारे कानेन कांकरा ।

2.77 <u>छाचड़ा गोकणो (जूते छुपाना) :</u>

साला वर के जूते छुपा देता है । वर साले को कुछ पैसे देता है तब वह उसके जूते लौटाता है । इस अवसर पर भी स्त्रियाँ वह वर को चिढ़ाकर गीत गाती हैं । गीत इस प्रकार हैं -

छाचड़ा वासु चिंधकारो वणुतड़ा
रुपड़ा देदारे = मळजाय छाचड़ा
मोचड़ार छाचड़ा, वतगे वणुतडा
साळेन रुपड़ा देदा वणूतडा
मळजाय छाचड़ा
छाचड़ा वासु चिंधकारो वणुतड़ा ।

2.8 वावार वागेर नक्ता :
(सप्तपदी से पूर्व अनुष्ठान) :

2.8.1 कन्या को रुपये भेंट देना :

कन्या को नये कपडे पहनाकर मंडप में लाया जाता है । उसे पट्टे पर बिठाया जाता है । वर की ओर से एक व्यक्ति कासे की थाली में चावल, कुंकुम और पांच रुपये लेकर कन्या के पास पहुंचता है । कन्या को टीका लगाकर उसके सिर पर सात बार चावल रखे जाते हैं । इसके पश्चात् कन्या को पांच रुपये भेंट में दिये जाते हैं । इस अनुष्ठान को "छोरीन रुपया मानणो" कहते हैं । उसकी सहेलियां रुपये भेंट देनेवाले व्यक्ति पर गीत द्वारा व्यंग्य कसती हैं । गीत इस प्रकार है -

> कसो नवरो बाई ई कूकड़ो
> कसो चावळ लायो बाई कूकड़ो
> कसो कुंकु लायो बाई कूकड़ो
> कसो भेंट लायो बाई कूकड़ो
> कसो चाला बाई ई कूकड़ो
> कसो रुपया लायो बाई कूकड़ो
> कसो रुपया मनारो बाई कूकड़ो
> कसो वेतकूर कूकड़ो, वैचे देकन रपट पड़ो

2.8.2. कन्या को गहने भेंट देना :

कन्या का पिता वर से सगाई के समय पांच बळडे लेता है । वह प्रतिदान के रूप में अपनी लड़की को कुछ गहने बनाकर देता है ।

इस अनुष्ठान को "भेणो देणो" कहते हैं । कन्या का भाई कन्या को मंडप में बिठाकर टांडे वालों के सम्मुख गहने भेंट करता है । इस अवसर पर भांग पी पी जाती है, जिसको केल्डार भांग कहते हैं । इस अनुष्ठान में टांडेवाली स्त्रियाँ यह गीत गाती हैं -

> होरा मोतीर गेणा लेला बाई लाड़ाली
> सोने रुपेरी गेणा लेला बाई लाड़ाली
> कानेर कन्या लेला बाई लाड़ाली
> रुपेरी टोपली लेला बाई लाड़ाली
> सोनेर-मोतीर बाट्टाकाटा लेलाबाई लाड़ाली
> रुपेर घूघरीरा घूघरा लेला बाई लाड़ाली
> रुपेरी हासलो लेलाबाई लाड़ालो
> रुपेरो हासालो लेला बाई लाड़ाली
> सोनेरो भुरिया लेला बाई लाड़ाली
> रुपेरी साकळी लेला बाई लाड़ाली
> तारे देवेरी गेणा लेला बाई लाड़ाली

2.8.3. डोरण बांधणो-छोडणो :
(धागा बांधना - छोडना) :

नहाने के पश्चात् वर को भी पट्टे पर बिठाया जाता है । पट्टे के चारों ओर पांच छोटी हांड़िया रखी जाती हैं । प्रत्येक हांडी के पास विवाहित स्त्री और पुरुष ही बैठते हैं । कच्चे धागे को वर-वधू के चारों ओर से सात बार घुमाकर एक लड़ तैयार की जाती है । इस लड़ को डोरण कहते हैं । यह क्रम दो बार चलता है और दो लड़े तैयार हो जाती हैं । डोरण पर सात गांठे

बांधी जाती है और वर और वधू के गले में उन्हें पहना दिया जाता है। इसके पश्चात् वर-वधू के बायें हाथ को लोटे पर रख कर अन्य एक डोरण तैयार किया जाता है। उसे वर-वधू के हाथ पर बांधा जाता है। इस अवसर पर कई गीत गाये जाते हैं इनमें से एक गीत इस प्रकार है -

खेनी कुमरि बारी डोरण भेदरोच
खेनी कुमरिया गदळा पाड़रोच
कुंकम डोमरी दक-दक रोरोच

डोरण कन्या के माता पिता की सम्मति पर ही बांधी गयी है। टांडे वाली स्त्रियाँ कहती है कि दुलहन डोरण वर से छुडाती रहे। दूसरों को डोरण छोड़ने का अधिकार नहीं है। टांडे के सभी लोग लाद गये हैं और गाय भी चरने के लिए छूट गई है, इस अवसर पर गीत इस प्रकार है -

तारे बापे हातेरी बादा डोरणो
मत छोड़ ए लाड़ी
बादा डोरणो मत छोड़ ए लाड़ली
छोड़कर छोड़ाऊंकर
बेटी डोरण छोडाऊं कर
तांडो हवी लादागो
गाय चरेन छुटगी ।

2.8.4. चावळ वारणो (चावल उतारना) :

वर और वधू को लोगों की नजर से बचने के लिए

"चावल वारणो" * कार्यक्रम होता है । इस अनुष्ठान में बच्चे काँसे की थाली से कुंकुम और चावल लेकर वर और वधु पर फैंकते हैं । इस अवसर पर स्त्रियाँ गीत में वर और वधु को राम और सीता की जोड़ी से तुलना करती है । वे कहती है कि ईश्वर ने इन दोनों को एक दूसरे के लिए जन्म दिया है । गीत इस प्रकार है -

चावल वारुं क कूकू वारुं
चाँदी वारुं क सोनो वारुं
हीरा वरुं का मोती वारुं
चावल वारुं का रुपया वारुं
जो वारुं सो थोड़ा
बाई राम छरेरो जोड़ा

2.8.5. पानेर बीडो
(पान का बीडा) :

वर विवाह क में वधु का चेहरा नहीं देखता । चावल वारनो अनुष्ठान के पश्चात् वर वधु को एक पान का बीडा बनाकर देता है । पान के बीडे में लौंग इलायची के अतिरिक्त वह अपने शरीर का मैल डाल देता है । बनजारों में विश्वास है कि वधु को शरीर का मैल खिलाने से वह जीवन भर वर का साथ नहीं छोड़ती । इस अवसर पर टाँडे की कुँवारियाँ निम्नलिखित गीत गाती है -

बीड़ा छणो छबोलो रेणो
बीडा कम लावांनी

बीड़ा मां मेल न रेणो
बीड़ा हम खावांनी
बीड़ाम कचरो न रेणो
बीड़ा हम खावांनी

2.8.6. भाईती भेनेर विनती :
(भाई से बहन की प्रार्थना) :

सप्तपदी अनुष्ठान से पहले वधु अपने भाई से कहती है : तुम पंचों को सप्तपदी की विधि के स्थगित करने के लिए कह दो । इतनी जल्दी सप्तपदी की क्या जरूरत है? इस अवसर पर कन्या निम्नलिखित गीत गाती है -

वीरणी रे-रे ।
आपणे बापूरो लेको वीरा तो
आम्बा आमलीर छाया बेसन छाणमो-आ-हिवा
पराये पतिआरो लेको वीरा तो
आयेर सवार छाणमो वीरणा-आ-हिवा

2.8.7 भाईन भेन सेराणो :
(बहन के द्वारा भाई की प्रशंसा)

सप्तपदी अनुष्ठान को आगे न बढ़ाने के लिए वधु अपने भाई की प्रशंसा भी करती है । वह अपने भाई से इस प्रकार कहती है । तू मारवाड़ देश का बड़ा व्यापारी है । तेरी कमर में मूल्यवान करधनी है । तेरा जैसा चतुर कहीं पर भी नहीं है । तू लाखों में एक है । तू वीर भाई है फिर भी मुझे घर में से क्यों जल्दी बिदा करना चाहता है? इस अवसर पर

कन्या निम्नलिखित गीत गाती है -

मार मारवाड़ी वीरणा
चान्दा गढ़ेर चावळ्या
माधर गढ़ेर वेपारी वीरणा
नाळेमा चालसतो तू नालीज ओळकावेयो वीरणा
वीरणारे जे
अतरा जल्दी मत करो
अतरा जल्दी करन
कुणले बापोतीर लेको करेन चालो वीरणा
आ-हिया

2.8.8. <u>नवलेरीरो दस (कन्या की वेदना) :</u>

सप्तपदी अनुष्ठान की तैयारी को देखकर कन्या दुःखी हो जाती है । उसके घर के सामने होमकुण्ड खोदते समय ज्यों-ज्यों सब्बल की चोट धरती पर पड़ती है त्यों-त्यों कन्या की छाती धड़कती है । वह वैवाहिक सामग्री - आक और ढाक की लकड़ी, कच्चा घड़ा - लाने के लिए मना करती है । वह उपरोक्त वेदना को गीत में इस प्रकार प्रकट करती है ।

वीरणारे - जे
आपणे बापूरे साठ हाथेस आंगणेमा
कुवेर वावड़ी मतखोदो वीरणा-आ-हिया
वीरणारे - जे
मारे छातीमाँ सब्बेरी चोटे जू पडा
तारी भेनडेरी छाती धड़-धड़ाव वीरणा-आ-हिया

वीरणारे - जे
देखा छोड़ देवळा
आके दाकेरी लकडी मत मंगाजो वीरणा - आ - हिवा
वीरणारे - जे
कमारेर कावो आवा
मत मंगाजो वीरणा - आ - हिवा

..

2.9.1. वावा भादिर तयारी
(सप्तपदी की तैयारी) :

सन्ध्या समय पर कुम्हार चालीस हंडियाँ लाकर टाँडे के बाहर रख देता है। कन्या पक्ष के युवक उन हंडियों को मंडप के व नीचे ले आते हैं। हंडियाँ व आकार में छोटी-बड़ी होती है। मंडप के नीचे चार दोलक्या रख देते हैं। उन पर क्रम से हंडिया जमा दी जाती है। इस प्रकार से हंडियों के चार खम्बे तैयार हो जाते हैं। इनके बीच में दो मूसल गाड़ दिये जाते हैं। हंडियों पर आक-और दाक की टहनिया रख दी जाती हैं। दोनों मूसलों पर ?मोरेंडल "भेडल" बांधा जाता है। मूसल के खड्डे में कौडी और भलामा जाती है। बनजारों का विश्वास है कि भलामा और कौडी के जलने से भूत-प्रेत का डर नहीं रहता। इनकी बीच की भूमि पर कन्या अपनी सहेलियों के साथ उड़द, मूंग, ज्वार और गेहूं आदि धान्य को छिड़क देती है। मंडप की धरती को पानी से सींचा जाता है। इस अवसर पर स्त्रियाँ एक गीत गाती हैं -

कम्हारेरो हांडी, चाळीस लावे
कम्हारेर दोसक्या, चार मेल दीने
उंदेरवळ्य गाददीने मूळ, मूळके हेट घालदीने कोडी-भाभा
कम्हारेर हांडीपर मेलदीने आके-ढकेरो डोको
मैळ बांधि लोटारे भातेर
बारोह पाणीतो ओपदोनो धरतीन लाडी
घर-घर ळगको पंचमेळुदाणान लाडी

वाधार भांग
(विवाह की भांग) :

मंडप के नीचे गीली धरती पर वर और वधु खड़े हो जाते हैं। स्त्रियाँ चावल और कुंकुम से उनकी नजर उतारती है। इस अनुष्ठान में जो भांग पिलाई जाती है उसे वाधार भांग कहते हैं। इस अवसर पर स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती हैं -

मळावा कुवा, गळ-गळ पीताणी
वाधार भांग बाई वाधार भांग
छक-छक हंसरे, धम-धम नाचरे
गळ-गळ पीताणी वाधार भांग
वाधार भांग बाई वाधार भांग

2.9.2. फेरा करणो
(फेरे लगाना) :

वधु की दाईं हथेली में सुपारी के दो टुकड़े, दो कौड़ियाँ, और "हेलेर रुपया" रखकर वर की दाईं हथेली में थमा दिया जाता है।

वर वधु की हथेली को मजबूती से पकड़ कर प्रथम मूसल के चार और दूसरे मूसल के तीन फेरे लगाता है । इस प्रकार से वर और वधु सात फेरे लगाते हैं । इस अनुष्ठान को "फेरा फेरणो" कहते हैं । इस अवसर पर वधु स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती हुई नजर आती हैं । गीत इस प्रकार है -

बाडी ये
नव लाको जीवड़ा लाडू मरए बाडीया आ-हिया
भावजो बे-जे
बिन घोरो जीवडा घोरेमा घालो भावजो-आ-हिया
बापूरे-जे
वराण पतिवार हाते माँ देन घालो बापूरा-आ-हिया
वीरणारे - जे
पगेमा पग बेठो घम देन कूबरेगो वीरणा-आ-हिया

2.9.3. वकोलड़ी धोकणो (गोबर की पूजा) :

फेरा फिरने के बाद वर और वधु को गोबर की पूजा के लिये ले जाया जाता है । इस पूजा में गुड़, चना, हरी चूड़ियाँ, कुंकुम, हल्दी ले जाये जाते हैं । वकोलडी मंडप के बाहर रहती है । वर और वधु गोबर पर पहले पानी छिड़कते हैं, फिर वे उसकी पूजा करते हैं । इस अनुष्ठान को "वकोलडी धोकणो" कहते हैं । इस अवसर पर स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती हैं -

छोरा नाम चोको न वकोलडी धोकाँ
छोरी नाम चोकोन वकोलडी धोकाँ

छोरी नाम चोकोन भुडान गोकी

छोरा नाम चोकोन चूड़िन गोका*

2.9.4. पलंग राळावणो (पलंग रखना/बिछाना) :

गोबर पूजा के पश्चात् वर और वधू घर में जाते हैं । घर में पहुँचकर वधू अपनी भाभी से रंगीन पलंग बिछाने के लिए कहती है । पलंग का गीत इस प्रकार है :-

पलंग रोळा द ए मारी भावज
पलंग रोळा द ए भिया
चार टांगीरो
चार नकस्यारो
पलंग रोळा द रे वोरणा-आ-भिया

2.9.5. कौंक्या खाणो
(हलवा खाना) :

वर और वधू को उस पलंग पर बिठाया जाता है । कन्या की भाभी एक थाली में लापसी* ले आती है । इस "लापसी" को वर और वधू एक दूसरे को खिलाते हैं । पानी भी एक ही बर्तन से पीते हैं । इस अनुष्ठान को कौंक्या खाणो कहते हैं ।

2.9.6. मांड रमणो :
(चावल के पानी से खेलना) :

वर और वधू को आमने-सामने बिठाया जाता है । दोनों के बीच में मांड से भरा एक पात्र रखा जाता है । निष्पक्ष व्यक्ति सुपारी

---

* हलवा

रुपया और कौड़ी पात्र में छोड़ता है । वर और वधु इन्हें एक दूसरे से पहले पकड़ने की कोशिश करते हैं । दोनों में से जो अधिक चीजों को पकड़ता है, उसे चतुर माना जाता है । इसके अतिरिक्त एक थाली में पानी भरकर वर और वधु के सामने रख दिया जाता है । वे एक कटोरी से पानी एक दूसरे पर उछालते हैं । इस खेल में, पानी छलकाने वाले को नादान माना जाता है ।

2.9.7. चूड़ो तोपणो :

(कड़े पहनाना) :

विवाह अनुष्ठान की समाप्ति पर कन्या के लिए सोनार घूघरी, चूड़ो, अंगूठा, फूला, हासली, कन्ठा, आठकांट आदि गहने ले आता है । इस अनुष्ठान में घूघरी को कन्या की वेणी में बांधा जाता है । सुनार चूड़ो को उसकी दाहिनी भुजा पर पहनाता है । चूड़ो तोपने का काम सोनार को दिया जाता है । अन्य गहने कन्या की सहेलियाँ पहनाती है । घूघरी और चूड़ो पहनने के पश्चात् वधु पराये घर की मान ली जाती है । इस अवसर पर स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती हैं -

चूड़ो हथिवाल तोपेछ रे, सनारेर बेटा
तारो तोपे गळवरे, सनारेर बेटा
चूड़ो हथिवाल तोपेसरे सनारेर बेटा

2.9.8. मातो बांधणो (माथा बांधना = वेणी गूंथना) :

"चूड़ो तोपणो" संस्कार के पश्चात् स्त्रियाँ वधु की वेणी गूंथती है । वेणी गूंथ ते समय कन्या रोती हुई अपनी माँ और भाभी से

"सेराती" है । इस अवसर पर निम्नलिखित गीत गाती है -

बाड़ियो-ऐ-
मत घालो बाडी घुघरीर लोल
मत घालो बालनिया टोपली-आ-डिया
माड़ियो-ऐ
बालनिया-भुंडकियार छोड़की मत घालो
मारी मारोणी हातेरी बाडे लटारी
बयासी पटड़ी मत छोड़ो बाड़िया-आ-डिया
बाड़िओ-ऐ मारो बानो मन सोबो बाड़ियों
मारच धाकपणेरो मार मन दो बाड़ियों-आ-डिया
बाड़िओ-ऐ क्या कोमटेन लूटनाके भावजो,
छटाणे पतियारो सोबो धालन
मन वराणो मत करो बाड़ियो-आ-डिया

2.9.9. गोट (विवाह समाप्ति का भोज) :

विवाह अनुष्ठान समाप्त होने के पश्चात् कन्या का पिता एक भोज का आयोजन करता है । इस अवसर पर बकरे की दावत दी जाती है । "गोट" के बकरे को "मरामायाडी" * के सामने खड़ा कर दिया जाता है । उसकी पीठ पर और मुँह में पानी डालकर उसके माथे पर हल्दी का टीका लगा दिया जाता है । ठण्डे पानी से थरथराता बकरा अपने शरीर को झटक देता है । इस प्रक्रिया को "झड-झडी"[2] कहते हैं । बकरा के

---

* महाकाली देवी

2 शरीर को झटकना

धड़-धड़ी न लेने पर उसपर दुबारा पानी छिड़का दिया जाता है। फिर लोग माता को नमस्कार करते हैं। उसके बाद उसकी बलि चढ़ाते हैं। बलि चढ़ाने के पश्चात् बकरे के कलेजे को देवी पर चढ़ाया जाता है। इस अनुष्ठान में सभी पुरुष देवी से विनंती करते हैं। विनंती इस प्रकार है -

उदे-उदे नमस्कार
मरयामा वाड़ी साढेकणी,
चस्तो काम फस्तो कर
सेरे माँ सवासेर कर
करतेव बरकत देस
सावकारेन समनक रकाड़ेस
कवेरीन लार रकाडेस
धरमीन धनेती धमाड़ेस
वाडी साढेकणी,
वाल बच्चारो, डाव ढवेरो
चूरा मुंगरोरो, जीव जीन गानीरो
नगरी नमारोरो, कोडी मुंगीरो
साथीस वाडी साढेकणी

2.9.10. चोरीर हंगोळी
(चोरी का स्नान) :

विवाह अनुष्ठान के पश्चात् वर-वधू को फिर से चोरी से स्नान कराया जाता है। इस अवसर पर अन्य कोई स्त्री या पुरुष उपस्थित नहीं होते। इस स्नान के पश्चात् टांडे की स्त्रियाँ

वर-वधु को विदा कर निम्नलिखित गीत गाती है -

करलोदे बं बाई हंगोळी चोरीती, सोना जोरीती
वेतह्, नवलेरी वेगे चोर बाई
करलोदे हंगोळी चोरीती, सोनाजोरीती
सेर आंकोगोचन करलोदे बाई
हंगोळी चोरीती, सोना जोरीती

...

2.10. छोरीन भार काढ़णो :
(कन्या की विदाई) :

कन्या का भाई, मामा और अन्य व्यक्ति कन्या को घर के बाहर लाने के लिए कन्या के पास पहुँचते हैं। कन्या खम्बे से बँधी रस्सी को पकड़कर घर के बाहर न आने के लिए जिद्द करती है। कन्या का भाई उसके हाथ से रस्सी छुड़ा देता है। रस्सी छोड़ने के बाद कन्या रस्सी की सात गाँठ बाँध देती है। कहा जाता है कि कन्या इन गाँठों के साथ अपनी याद छोड़ जाती है। कन्या का भाई और मामा उसे समझाकर घर के बाहर ले आते हैं। इस अनुष्ठान को छोरीन "भार काढ़णों" कहते हैं।

2.10.1. हवेली :

आँगन में कन्या के पिता के द्वारा भेंट में दिया हुआ बैल खूँटे से बँधा रहता है। कन्या को उसके पीठ पर खड़ा किया जाता है। कन्या बैल के पीठ पर खड़ी होकर अपने दोनों हाथ

हवा में फैलाकर "डोंकिया"* से कहती है कि तू खूँटे से बंधी रस्सी को तोड़कर भाग जा ताकि मुझे अभी पति गृह में न जाना पड़े। तू मेरी बात मान जाएगा तो तुझे हरी घास खिलाऊँगी और तालाब का पानी पिलाऊँगी। तेरे सींग सोने से तथा तेरे खुर चाँदी से मढ़वा दूँगी। कपाल पर बाँधने के लिए चाँदिया तथा गले में चाँदी की जंजीर बनवाऊँगी। तब तू सजे हुए नंदी के समान गर्व से चलना। तू मेरी बात मान ले और यहाँ से भाग जा। तू केवल बैलों के समूह से बिछुड़ेगा किन्तु मैं अपने माता-पिता से बिछुड़ना पड़ेगा। इस अवसर पर वह निम्नलिखित गीत गाती है -

नंदियारे - जे
तू छटियेक छूट जोरे-मारे बापूरो
नंदिया - आ - दिया
राठी तोड़ान घांस जोरे-मारे बापूरो
नंदिया-आ-दिया
नंदिया रे - जे
मंतोन दूधिया तळावेरो पाणी परादू रेक मारे बापूरो
नंदिया-आ-दिया
मै तोन दोई सींग सोनेती मंडा दू रे - मारे बापूरो
नंदिया-आ-दिया
नंदियारे-जे
मै तार चारों खुर रूपेती मंडा दूवे - मारे बापूरो
नंदिया-आ-दिया
तोन करा दू चाँदीर चाँदियाँ कपाळेनर-मारे बापूरो
नंदिया-आ-दिया
नंदियारे-जे

तु सोनेर सीगेती, चांदोर खरेती चालेसरे-मारे बापूरो
नंदिया-आ-दिया
तु माने तो पूंछठी पाड़न चालेसरे-मारे बापूरो
नंदिया-आ-दिया
सोती तार खूंटामाईर छाड़ छुटियारे-मारे बापूरो
नंदिया-आ-दिया
पणन मोती मार-थाड़ी बापू छुटिबारे-मारे बापूरो
नंदिया-आ-दिया
नंदियारे-जे
तु मारीवाते मानकारे-मारे बापूरो
नंदिया-आ-दिया
खूंटाती राड़ी तोड लेन घांस जोरे-मारे बापूरो
नंदिया-आ-दिया

2.10.2. मड़ाी (पितृ गृह) :

कन्या बैल के पीठ पर खड़ी होकर हाथ फैलाकर अपने पिताकी मड़ाी* की प्रशंसा करती है। इस मड़ाी में उसे खाने-पीने की कभी कमी नहीं रही; उसके पिता के मड़ाी के किवाड़ सोने के हैं। वह अब पराये घर की हो गई है। इसलिए कन्या अपने लोगों से एक बार बात कर लेना चाहती है। अपने घर को वह एक बार देखना चाहती है। इस वेदना की अभिव्यक्ति निम्नलिखित गीत में हुई है -

कुट गयावे मारो बापूरी हवेली
खावेशी पिवेशी नंगरी

मारे नायक बापूरो नंगरी
गुजरातनी वाडी
उमरियाव बापू
केसरिया विरण्णा
हवेल छोडीवाली वाडी

2·10·3· कमार वासो :
(कुमार वास)

हवेली अनुष्ठान के पश्चात् वधू की डोली तत्काल ही ससुराल नहीं जाती । बारातियों को कन्या के टाँडे के बाहरवाले मन्दिर में रातभर रुकना पड़ता है । मन्दिर जंगल में होता है । उस रात में कन्या लोमड़ी से भोंके भोंकने के लिए प्रार्थना करती है । लोमड़ी की आवाज को अशुभ माना जाता है । अशुभ आवाज सुनकर बारात और एक दिन के लिए रुक सकती है । वह साकिया के गीत में इस प्रकार कहती है :-

बाडिये-जे
तारा छाई - चांदा छाई रात - आँ-हिया
तू घड़ी एक वदेस रात - आँ-हिया
घड़िएक वदीस तो मं सोधूं मार बाड़ीर गोदेमा - आँ-हिया
सुतो-चोक जागरोधी नंगरीरो नायक बापू आँ-हिया
तारी बेटी मां आदी रातेरी वाका पड़रे बा-आँ-हिया
घड़िएक अटन वेसजो नायकड़ा बापू -आँ-हिया
फटिया पापको वेजाव वजाको -आँ-हिया
वेजाव पतियान सरको-वरको वाट-आँ-हिया

घडिकके बोलेसरेरा जंगलेर साकिया आं-िउया
तार बोलेती नायक बापू ऊटिया, सच्ण दवारिया साकिया-
आं-हिया
फेर धाम दिया एक दाडो साकिया-आं-हिया
धमदीया तो पेर एक दाडो तो में सोधूं मारे बापूरे गोदेमा
-आं-हिया
घडी एक मत बोलेस रे मारे बापूरो पोसिया कूकडो-आं-हिया
घडिपक न बोलीस तो में बेसधूं मार सोवतपूर नार-आं-हिया

2.10.4. दावलो (गीत में दुःख की अभिव्यक्ति) :

कन्या को विवाह के छः महीने पूर्व से दावलो *
करने का प्रशिक्षण दिया जाता है । कन्या एक दावलो गीत में
अपनी वेदना प्रकट करती है, तब - टाँडे की स्त्रियाँ, कन्या की
माँ, कन्या की भाभी उसके गले से दावलो करती है ।

ए या
कालो कुँ निरमल भरो
जेमा धीमरिया जाल नाको
जाला माँ माछली फसागी
यूँ तारो बेटी फसागी बाडी
-आ-हियाँ

उक्त गीत के अनुसार काले सागर में निर्मल पानी भरा
था । उसमें मछुए ने जाल बिछाया और उस जाल में मछलियाँ फंसा
गई । उसी तरह तेरी बेटी भी पराये पथिक के जाल में फंस गई है ।

---

* गीतों में बनजारिन के रोने के ढंग को ही दावलो कहते हैं ।

दावको का अन्य एक गीत इस प्रकार है -

बाठीये - जे - आ-लिया
चान्दा-सूर्यारी जोडी जूं
मां बेटीर जोड़ी वेतोती
कोडी मूंगी सपाती जूं तमार बेटी कोनी सपाती
नींबू नारळ वकजाव जूं
तमार बेटी वकवाली - आ-लिया

उक्त लोकगीत में कन्या रोती हुई अपनी माता से कहती है कि मां-बेटी की जोडी चांद और सूरज के जैसी थी । तू मुझे पाल पोसकर पराये पथिक के साथ भेज रही है । तुम मुझे नारियल, नींबू की तरह बेच दी है ।

2.10.5. <u>बापेरी दावको :</u>

दावको में कन्या अपने पिता को सीख देने के लिए प्रार्थना करती है । दावको इस प्रकार है -

स्त्रियों के दवकों के पश्चात् पिता पुत्री के विदाई के समय दावको करता है । इस अवसर पर भी कन्या के कण्ठ से एक गीत फूट पड़ता है -

सीख द बापू - सीख द रे बा - आँ -लिया
तारी सोकेन भूंदु मां छाटियार गाठ-आँ-लिया
रागी हुं नवाजूं नवडूं - आ-लिया
रूपो जूं तपवाड़ूं तपडूं - आँ-लिया

सोनेर नाई निकळ्यूं - आं-हिया
सूईर नाके माई तो निकळ्यूं - आं-हिया
तमेन आलम-बाट कोनी लायूं बापू-आं-हिया
तारो सोकेन काढू, तीज तेवारेर बा-आं-हिया

उपरोक्त लोकगीत में कन्या अपने पिता को आश्वासन देती है कि वह ससुराल में हर किसी से नम्रतापूर्वक व्यवहार करेगी । वह कहती है कि मैं रांगे की तरह झुककर, चान्दी की तरह तपकर, भी नायक बापू की इज्जत रखूंगी ।

2.10.6 भाईरो दावलो :

पिता के पश्चात् भाई बिलख उठता है । बहन से मिलकर वह दावलो करता है और एक करुण वातावरण की भी सृष्टि करता है । बहन भी एक गीत में बिलख पड़ती है ।

वीरणा रे - आ-हिया
तारी भेनङ छ करन - आ-हिया
सात समंदरेन पार करन - आ-हिया
तारी भेनठेन खबर लेन आवेस - आ-हिया

उक्त लोकगीत में बहन अपने भाई से कहती है कि तू तेरी बहन का कुशल क्षेम पूछने के लिए सात सागर को भी पार करके आया कर ।

2.10.7. सोबतणूंरो दावलो
(सहेलियों के साथ रोना)

पारिवारिक जनों के पश्चात् कन्या की सखियां दावलो करती

है । कन्या एक गीत गाती है जिसमें सखियों के साथ रहने और खेलने की पुरानी बातें सजीव हो उठती है - दावलो इस प्रकार है -

सोबतणी थे - आ-हिया
चालो तो कुवरियार परारो भराजाव - आं -हिया
वैसा तो सोकपट्टीर सादरी भराजाव - आं-हिया
धोवेन जावों तो घरी आंगणीर वेठोदेन चालां - आं-हिया
एक घडी लागा वक्त दस घड़ी लगाडां - आं-हिया
पाण्यान जावां तो बापूर मछीन तोन क्या देकां - आं-हिया
सोबतणों-थे-आ-हिया
तार मार बाळपणेर दोस्ती अब टूटे लागी - आं-हिया
घुघरारो धमको जसो आपणी समझो - आं-हिया
नंदीरो पाणी हलोको माराजू - आं - हिया
आपणी बापूर मछीमा दूबो हलोका मारो-आं-हिया

2.10.6. <u>समधन के लिए दावलो :</u>

कन्या की मां अपनी समधन के लिए सन्देशा देती है कि मेरे पेट की आंतडी तुम्हारे पेट में डाल रही हूं । फूल जैसी लाडली को तुम्हें सौंप रही हूं । उसे किसी चीज़ की कमी पड़ गई तो वह फूल के समान मुरझा जायेगी । उसे अपनी बेटी समझकर उसका ख्याल रखना । इस अवसर पर कन्या की मां निम्नलिखित दावलो का गीत गाती हैं -

बाईओं-जे-आ- हिया
मार आंतरेन तमार पेटेमा घालरोछूं - आं-हिया
मार कमळेर फूल तमार पदरे मां पाड़ दोनीछूं - आं-हिया

दोवेर सरोक मार लड़ाकोरो वजाओ - आँ-हिया

कमबेर पूलेर ज़ु मार मार लड़को [redacted] कमकावच - आँ-हिया

2.10.9. जमाईती दावलो :

कन्या की माँ अपने जँवाई से रोती हुई कहती है कि मेरी बेटी ना समझ है, यदि उससे कोई गलती हो जावे तो मन को समन्दर* बनाकर उसमें उसकी गलती को समा लो । उस समय का दावली गीत इस प्रकार है -

बापूरे-जे
अनकव्ता भार लाड़ली लड़की - आँ-हिया
कोई गुनावोया तो - आँ-हिया
तारे पेटेमाँ घालन - आँ-हिया
समदर करलेस - आँ-हिया

2.10.10. याडी बापेती दावलो
{ माता-पिता के साथ दावलो } :

कन्या विदाई के अंतिम क्षण पर अपनी माँ से कहती है कि मुझे एक बार अपने गर्भ में छुपा लो । भाई से कहती है कि - मुझे अपनी जेब {खिस्सा} में कागज की पुड़िया बनाकर छिपा लें । अपने पिता की गोद पर सिर टेककर कहती है कि मुझे अपनी सात हाथ की पगड़ी के आँचल में छिपा लो । इस अवसर पर दावलो का गीत इस प्रकार है -

---

* सागर - मनको उदार करना ।

याडिये-जे-आँ-हिया
तमारे गुदकासे पेटेमा घालन छडो एक गोकला-आँ-हिया
वीराओं रे तमारे झिरमिटिया खीसेमा छडो एक गोको-
आँ-हिया
वीरणारे-जे-आँ-हिया
क्वडा दूरसे मार्वती मन टाकनाके वीरणा - आँ-हिया
बापूरे-जे - आँ-हिया
पाक्तू पोसतू दाड लागे पण साँक्तू वेका कोनी लागे बापूरे
- आँ-हिया
तार साठ हातेरी पागडीर पेचेमा - आँ हिया
घालन छडोक गोकला वा-आँ-हिया

2.10.11. नवलेरीर याडीन समझाणो
(कन्या की माता को समझाना) :

विदाई का इस प्रकार बनजारा कन्या की विदाई का अवसर करुणा से विकलित हो जाता है वैसे सब कुछ आँसुओं में डूब गया है । न जाने कितनी यादें आकर रुदन के क्रिया को और बढ़ा देती है । जब कन्या की माँ अत्यंत अधीर हो जाती है और उसके आँसू रोके न रुकते तब कन्या की सहेलियाँ उनके माँ को धीरज बंधाते हुए एक गीत गाती है -

रो मत याडी तार छेनी छोरी
तार छोरी चाली पर घर पामणी
पचेमा हात पकडो जकोज
और जनमेर साथी याडी

2.10.12. कन्या की याद :

कन्या की विदाई होने पर टांडे की स्त्रियाँ गीत गाकर कहती हैं कि नीम के पेड़ पर कौए का नीड़ है; उसकी बच्ची उड़ गई और नीड़ खाली हो गया; उसी के समान बेटी की विदाई हो जाने पर बाप का घर खाली हो गया है । इस समय का गीत इस प्रकार है -

बाईए नीम्बेर झाडेपर कोवलो रो माळो
बाईए कोवल उड़गी
बाईए डालो वेगो माळो
बाईए बेटी चाली सासरेर घर
बाईए और बापेर महीगो ठाल वेगी

2.11. तांगडी जाणो :
(थैली का जाना)

कन्या के दहेज में दी गई सामग्री को थैली (तांगडी)* में उसको डालकर उसको बैल के पीठ पर रख दिया जाता है । वधू की डोली वर के घर की ओर प्रस्थान करती है । बनजारों की बारात बैलगाड़ियों पर सवार होती है । बैल गाड़ियाँ, नदी, नाले तथा पहाड़ के टेढ़े-मेढ़े रास्तों को लांघती हुई चलती है । रास्ते में कई टांडे दिखाई देते हैं । उन टांडों की स्त्रियाँ बारातियों को पानी पिलाती है । कन्या उन स्त्रियों से कहती है कि तुम्हारे जैसी ही माँ पीछे रह गई है । बहनों और सखियों के छूटने मुझे विदा

---

* सुतली से गूंथी हुई बड़ी थैली ।

किया है । पानी पीने के पश्चात् गाडी चल पड़ती है । उसके बापू का टांडा सौकोस पीछे हो गया है । इस अवसर पर वह निम्नलिखित गीत गाती है - ४

रेगोबे मारो रंगारारो रंगी सनीडारो सदरी मारी छूरले
-आ-हिया
बे लाश रेंगिबे मारी नानी मोटी सातणो रो छूरलो
- आ-हिया
रेगोथे मारी बाडो बापूरी हरी-भरी हवेली - आ-हिया ।
छूटी चालोबे मारी तानी मोटी भाइयाँ रो मळगी - आ-हिया
रेगोबे मारी छूलंणो भावछूरी छूरलो - आ-हिया ।

2.11.1 नवलेरोन सोबतणेर दलाचा
§ वधू को सहेलियों का समझाना §

कन्या को समझाती हुई सखियाँ कहती है कि तू रो मत । तेरा पति राम जैसा है । तेरा ससुर बाप के समान और तेरी सास माँ के समान है । तेरा जेठ भाई जैसा है । वे तुझ से वैसी जैसा बर्ताव करेंगे । इस अवसर पर स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती है -

तू रो मत ए, हमार लाड़ली बाई
तोन दीने कोनी वनेर माई, हमार लाड़ली बाई
तू रो मत ए हमार लाड़ली बाई
तारो पति छ रामेर नाई, हमार लाड़ली बाई
तू रो मत ए हमार लाड़ली बाई
तोन रकाड्य ए सीतार नाई, हमार लाड़ली बाई
तू रो मत ए हमार लाड़ली बाई

तार सासू छ बाडीर नाई, हमार लाड़ली बाई
तू रो मत ए हमार लाड़ली बाई
तार ससरो छ बापेर नाई
तू रो मत ए, हमार लाड़ली बाई
तोन रकाड़िया ए बेटीर नाई
तू रोमत ए, हमार लाड़ली बाई
तार जे जेठ छ भाईर नाई, हमार लाड़ली बाई
तोन रकाड़िया में भेनेर माई, हमार लाड़ली बाई

2.12. कन्या पति गृह में :

कन्या पतिगृह में पहुँचने के पश्चात् सास और ससुर के चरण छूती है ।* इस अवसर पर उसकी सास कन्या को अपने गले से लगा लेती है । और ससुर आशीर्वाद देता है । इस अवसर पर स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती है -

हमार नंगरीर असीस लेला, बाई सासूर असीस लेला
हमार नंगरीर असीस लेला, बाई ससरेर असीस लेला
हमार नंगरीर असीस लेला, बाई जेठेर असीस लेला
हमार नंगरीर असीस लेला, बाई नायकेर असीस लेला
हमार नंगरीर असीस लेला, बाई तन्जार असीस लेला
हमार नंगरीर असीस लेला, बाई सेवार असीस लेला
हमार नंगरीर असीस लेला, बाई बालाजीर असीस लेला
हमार नंगरीर असीस लेला, बाई रामेर असीस लेला
हमार नंगरीर लेला असीस लेला, बाई सोटावाळेर असीस लेला
हमार नंगरीर लेला, बाई बड़-बूढ़ेर असीस लेला

---

* इसे नवण करणी कहते है ।

2.12.1. वधू को वंश में मिलाना :

कन्या पति गृह में प्रवेश करके अपने नवीन जीवन का प्रारंभ करती है । वह सर्व प्रथम टाँडे के कूप से जल भरकर लाती है । उस जल को घर में रखे हुए जल में मिलाया जाता है । यह जल सम्मिश्रण बताता है कि वधू पति के वंश में मिल चुकी है और उसकी कोई पृथक सत्ता नहीं है ।

2.12.2. कन्या के हाथ का भोजन :

नवागत कन्या के हाथों से पकाए हुए भोजन को खाकर वर के सम्बन्धी कन्या को अपने कुल में मिलाने की अनुमति देते हैं । इस अनुष्ठान के पश्चात् विवाह कार्य की समाप्ति मान ली जाती है । इस अवसर पर स्त्रियाँ निम्नलिखित गीत गाती है -

[illegible] मालीर हातेरी पोळी मीटी,
मालीर हातेरी लापसो मीटो,
मालीर हातेरी धोया तोरी मीटी,
मालीर हातेरी मैती लकी घी मीरो

2.12.3. वेतड़ूति विनती (वर से विनती) :

कन्या वर से कहती है कि माँ ने जन्म दिया और पिता ने पालन-पोषण किया । भाई ने लाड़-प्यार से रखा । मुझे पंचों के सम्मुख तुम्हारे साथ भेज दिया है । मेरा जीवन तुम्हारे साथ है । इस अवसर पर वधू निम्नलिखित गीत द्वारा वर से प्रार्थना करती है -

मन जनम दोनो मारो बापू रे राजा
मन पाळो-पोसो मार याडी रे राजा
मार हात लगाये राजा तोन
माँ सात नभावूँ सारे मार राजा
मोती कोई भूँ वतो सम्भळलेस राजा
हात जोडो विनती करेरोपूरे राजा तोना ।

....

3. मृत्यु संस्कार के गीत :

मृत्यु के सम्बन्ध में बनजारों के विचार अनेक प्रकार के हैं। बनजारे जन्म और मृत्यु के चक्कर में विश्वास करते हैं। पूर्व जन्मों के सम्बन्ध में अनेक अनुश्रुतियां भी प्रचलित है। पिछले जन्म की यादों की सम्बन्ध में भी कितनी ही कथाएं कही जाती है। बनजारा जिस मृत्यु को आदर्श मानता है, उसका रूप यह है।

अविवाहित तथा माता रोग या अकाल मृत्यु से मर जाने वालों को गाड़ा जाता है और अन्य शवों का दाह संस्कार किया जाता है। दाह संस्कार पुत्र ही करता है। उसके न रहने पर अन्य परिजन ही संस्कार कर सकता है। लावारिस शव का संस्कार पंचों के द्वारा भी किया जा सकता है।

वयोवृद्ध व्यक्ति की मृत्यु होने पर ढ़प बजाते हुए खुशी मनाते हुए शव को ले जाया जाता है। शव के साथ कोई एक लोहे की वस्तु ले जाने की प्रथा है। विश्वास यह किया जाता है कि लोहे की वस्तु साथ में रहने से भूत-प्रेत का डर नहीं रहता। दाह संस्कार के पश्चात् चिता को घूम कर नहीं देखा जाता है। शव यात्रा के पश्चात् लोग किसी जलाशय नदी में स्नान करते हैं व तत्पश्चात् मृतक के सम्बन्धियों को दारू पिलायी जाती है।

मरण से लेकर तीन दिन तक शोक, शोक का समय (शोक समय) माना जाता है। उसके बाद मृत भोज आयोजित किया जाता है। इस भोज को कांधिया * कहते हैं।

---

* जिन व्यक्तियों ने शव को उठाने में अपना कन्धा दिया है उसे कंधिया कहते हैं।

इस समय गीतों का क्रम इस प्रकार रहता है । मरने के पश्चात् का गीत : इसमें दिवंगत के गुणों तथा उसके जीवन की अन्य स्मृतियाँ रहती है । इस अवसर का गीत इस प्रकार है -

बापूरे जे, ई - डिया
मारो जे बापून क्ना देकिके ई - डिया
मारो जे नायक बापू हमेती अम्मा देगो - ई - डियां
मारो जे धरमी बापू हमेना छोड़ान जागी - ई - डिया
मारो जे बापू हमेन दनियार पाल करगो - ई - डिया
मारो जे बापू हमेन कांटार वाकेमा छोलगो-ई-डियां

3.1. <u>मृत्यु सम्बन्धी गीत :</u>

बनजारा जाति में मृत्यु संस्कार के समय मरे हुए व्यक्ति की प्रशंसा करती हुई स्त्रियाँ इस प्रकार का गीत गाती है -

सामो लोभा
ये पाडे मारडे गुडान सटान मेन
पडाडे सरीक पडाव
दुलक गोच आपन भी इस वाटे ती जाय लाल छाँ
अब तम रोजो रोको मत सामो घरो मत करो
केना वार छ रोवों मुक्यो
मुकेन मट्टो जिवतेना काटी

3.2. <u>शवयात्रा के पूर्व का गीत :</u>

इसमें भी गुणों की स्मृतियाँ रहती है । समय का गीत इस प्रकार है -

मारो ये वीर नायक - वे - ई - डिया
~~उसकी माँ नाम काडो - ई - डिया~~

तारे हाते री हवेली माँ एकलीन छोडागो - ई - हिया
तारे हातेरो छेले माँ नागर कुण चलाया - ई - हिया
तारे हातेरी गावडीऊन कुण चराया-ई-हिया
तारे हातेरी कब्दूत कुण देकिया-ई-हिया
मोती री मान कलेना चालो मारो जे वीर नायक - ई -हिया

यदि दिवंगत व्यक्ति अपने पीछे अपनी स्त्री को छोड़ जाता है, कादिया भोजन के पश्चात् उसे विधवा बनाया जाता है । उस क्रम में चूड़ियों को तोड़ना, आभूषणों को उतारना व सिन्दुर को पोंछना जैसी क्रिया जाती हैं । इस अवसर पर कई गीत गायें जाते हैं ! उनमें से एक इस प्रकार है :-

मारवाडनी बाई तारे वेलुड़ु चलोगो
वो री सोभी कादन पेक बाई
मारवाडनी बाई तारे वेलुड़ु चलोगो
बलिया धोधा कादन पेक बाई
फोडन पेक बाई मारवाड़नी बाई
मारवाडनी बाई तारे वेलुड़ु चलोगो
घुगरी बद तीन सोवो देनी कादन पेक बाई मारवाड़नी बाई
मारवाडनी बाई तारे वेलुड़ु चलोगो
वाकडी मत हो जा बाई
वाकडीन तोडन पेक मारवाडनी बाई
मारवाडनी बाई तारे वेलुड़ु चलोगो
चुडो कादन पेक बाई मारवाडनी बाई
चटको अंगुलका कादन पेक मारवाडनी बाई
मारवाडनी बाई तारे वेलुड़ु चलोगो

4. देवी-देवताओं के गीत :

लोक-जीवन में पौराणिक देवी-देवताओं के अतिरिक्त हृदय की अनन्य भक्ति और विश्वास के फलस्वरूप अनेकों लोक देवता, देवियों एवं पितर पितराणियों की मान्यता है । हिन्दू शास्त्रों में जिन देवी देवताओं का उल्लेख है - ब्रह्मा-ब्रह्माणी, लक्ष्मी-विष्णुनारायण, शंकर-पार्वती, काली दुर्गा, सरस्वती, गणेशजी, बजरंगबली, आदि पूर्ण भक्ति और श्रद्धापूर्ण मानस से उनकी उपासना तो करते ही है - परन्तु जनमानस की अनन्य भक्ति भावना के फलस्वरूप कोई भी व्यक्ति विशिष्ट कृत्य अथवा अलौकिक चमत्कारों के कारण पूजा जाने लगता है ।* इस प्रकार से ही बनजारा जाति के अनेको देवी-देवता सिद्ध रूप होकर पूजे जाते हैं ।

बनजारा जाति में अनेकों देवी देवताओं की मान्यता है । इनको चार वर्गों में बाँटा जा सकता है - 1. पौराणिक देवता 2. लोक देवता 3. सन्त या महापुरुष वर्ग 4. सती । पहले वर्ग में गणेशजी, राम, सीता, श्रीकृष्ण, बालाजी, हनुमान जी, सूर्य देवता और चन्द्र देवता आदि । दूसरे वर्ग में प्रेत, औत, शीतला, तल्जा और भवानी, आदि । तीसरे वर्ग में (1) भक्त सेवाभाया (2) लोकामसंद (3) हाथीराम बावा (4) सोमालाद (5) काहूराम बावा (6) गुरु नानक (7) मीठू भुकिया आदि । चौथे वर्ग में सती माता, चौकली देवी, ठकरी और भवकी आदि ।

---

* लोक साहित्य विमर्श, रत्न स्मृति प्रकाशन, बीकानेर - डॉ. स्वर्णलता - पृ.सं. 117

4.1. पौराणिक देवता :

इन देवताओं में मुख्य रूप से गणेश, राम, कृष्ण, बालाजी और हनुमान आते हैं । कुछ अन्य देवता भी है जैसे - सूर्य और चन्द्रमा भी देवता के रूप में मान्य हैं ।

4.1.1. श्री गणेश जी के गीत :

वैसे तो गणेश अनुष्ठानिक मंगल की दृष्टि से पूज्य अखिल भारतीय देवता है किन्तु महाराष्ट्र में गणेश की मान्यता सर्वाधिक है । महाराष्ट्र के बनजारे भी अन्य स्थानों के बनजारों के अपेक्षा गणेश के प्रतीक अधिक समर्पित है । उनमें गणेश जी के अनेक गीत प्रचलित हैं उदाहरण के लिए एक गीत दिया जा रहा है -

गोरीरो गणेशा बाळ ।
तारे नामेरी जपूवु माळार ॥ धृ ॥

सेर आंग तार पूजा
तुच कैलाशी राजा
तारे के नामे मार्ई मजा
बाज झांझेरी बजावा ठाळ ॥ १ ॥
मनतार लागी मोडी
देव आजो रुडी-रुडी
मार बंदळे गाडी ॥

4.1.2. श्रीराम और सीता के गीत :

बनजारे श्रीरामचन्द्र को अपना आदि पुरुष मानते हैं और

सीता माता को अपनी माँ के रूप में पूजते हैं । त्योहारों के अवसर पर स्त्रियाँ श्रीराम और सीता माता के कई गीत गाती हैं । उनमें से एक गीत इस प्रकार है -

असी धराती पर सीता राम खेलागो
असी धराती पर सीता माता खेलागी
उनके बीच खेलारा सब दनियाँ धरती तोपर
धरती तोपर - भाई-भाईर धरती तोपर मतरेती
असी धराती पर दसरतेस बेटा खेलागो
असी धराती पर जानकी बाळी खेलागी
उनके बीच खेलार सब दनियाँ धरती तोपर
धरती तोपर भाई-भाई र धरती तोपर मतरेती
असी धराती पर लोकमाता खेलागी
उनके बीच खेलारा सबदनियाँ दरती तोपर
धरती तोपर भाई-भाई र धरती खोपर मतरेती
असी धराती पर दनियारो बापू खेलागो
असी धराती पर दनियार बाळी खेलागी
उनके बीच खेलारा सब दनियाँ धरती तोपर
धरती-तोपर भाई-भाई र धरती तोपर मतरती ।

4.1.3. श्रीकृष्ण के गीत :

जैसा कि अन्यत्र देखा जा चुका है कि बनजारों की एक शाखा माथुर बनजारों के रूप में भी जानी जाती है । स्वभावत: माथुर बनजारे अपने आदिम पुरुष के रूप में कृष्ण के गीत गाते । वैसे तो बनजारों के कृष्ण के छुट-पुट के गीत गाये जाते हैं किन्तु

माथुर बनजारों में कृष्ण के बहुत से गीत प्रचलित हैं । एक गीत इस प्रकार है -

गुरुदेवेरी चमत्कार भजन माला - विष्णुदास कनिराम 2.
भजन-2 ‖ चाल सरळ ‖

घनश्याम तारी माया कठिन रे
घेरलीदो आत्मारामेन रे
कुठी लागे लागो नाम तारो
मन गुताणो माया जाळेना
गती वेळलेंदोद देवेन घेरली दो ।। 1 ।।

मीठो लागेनी हरिभजन
मन छळेनी रे पुण्य दान
गरकेती करोचो तीर्थधाम घेरली दो ।।2।।

भरम पडगो कुओमा काढी सुवेनो आत्मारामे मा ।
सुदीवाट वता भगवान रे ।। 3 ।।

प्रभु तोड मायोरो बंधन
सुखेम निवाद जीवन
विष्णु केरो तारे सेवाघळेदरे ।। 4 ।।

4.1.4. बालाजी के गीत :

बनजारा जाति में बालाजी की पूजा धूम-धाम से की जाती है । प्रायः सभी बनजारे बालाजी की पूजा करने के लिए तिरुपती जाते हैं । कुछ लोग अपने टाँडे के मन्दिर में ही भोग चढ़ाकर बालाजी की पूजा करते हैं । पूजा के अवसर पर पुरुष कई

गीत विख्यात हो जाते हैं । एक गीत इस प्रकार है -

बालाजी से बनजारा जाति का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है । किंवदन्ति के अनुसार हाथीराम बाबा श्री वेंकटेश्वर बालाजी के साथ चौपड़ तक खेलते थे । इस अभिप्राय को श्री वेंकटेश्वर के मन्दिर के प्रस्तर खण्ड पर भी अंकित किया गया है । हाथीराम बाबा बनजारा जाति से ही बतलाये जाते हैं । इसलिए बनजारे लोग अपने पूर्वज के सादृश श्री बालाजी के भक्त बन गये । बालाजी के सम्बन्ध में कई गीत प्रचलित हैं । एक गीत इस प्रकार है -

बालाजीर देवळेमा पूजा कुण करगे ।
पूजा हम करगेरे बालाजीरो पतिया ।
बालाजीर देवळेमा भोग कुण लगाडे ।
भोग हम लगाडेर बालाजीर पतिया ।
बालाजीर देवळेमा लगी कुण झुलागे ।
लगी हम झुलागेर बालाजीर पतिया ।
बालाजीर देवळेमा भेंट कुण चढागे ।
भेंट हम चढागेर बालाजीर पतिया ।

4.1.5. हनुमान जी के गीत :

बनजारे हनुमान जी को घर का रक्षक समझते हैं । हनुमान जी की पूजा पुरुष ही करते हैं । पूजा के अवसर पर चूरमा बनाया जाता है । घर के सामने एक होम कुण्ड बनाया जाता है । होमकुण्ड में गाय के घी से हवन किया जाता है । इस अवसर पर

पूजा प्रार्थना (अरदास) करते हैं। प्रार्थना इस प्रकार है -

गादीवाळो भूत छ्याड़ तारे सोराती
गादीवाळो चोड़-चपट छ्याड़ तारे सोराती
गादीवाळो पापोन छ्याड़ तारे सब सोराती
गादीवाळो अधर्मोन छ्याड तारे सोराती
गादीवाळो चोरेन छ्याड तारे सोराती
गादीवाळो जादू टोणान छ्याड तारे सोराती
गादीवाळो डाको जोकोन छ्याड़ तारे सोराती
गादीवाळो दानान छ्याड तारे सोराती

एक अन्य गीत इस प्रकार है -

रामेरो भक्त, सीतारो सेवक
सीको ताड़ो रकाडेस हमेना
रामेरो भक्त, सीतारो सेवक
हरो-भरो रकाडेस हमार खेतारीन
रामेरो भक्त, सीतारो सेवक
अन्न-धनेती रकाडेस हमारे घरेना
रामेर सेवक, सीतारो सेवक
रोगे दकेती धणा रकाडेरा हमेना

••

3.2. लोक देवता :

पौराणिक देवताओं का सम्बन्ध जहाँ बनजारा मानस के धार्मिक स्तर से है, वहाँ लोक देवता इस मानस के जादू पक्ष (मैजिक अस्पेक्ट) से सम्बन्धीत हैं जहाँ पौराणिक देवताओं को संतुष्ट करने के लिए "पत्रम् पुष्पम् फलम् तोयम" का को भेंट दी जाती है वहाँ लोक देवता को संतुष्ट करने के लिए बलि आवश्यक होती है । बलि पशु के रूप में बकरा ही स्वीकृत है । कम साधन सम्पन्न बनजारे मुर्गे की बलि देकर भी लोक देवता को संतुष्ट करने की कोशिश करते हैं । इन देवताओं से सम्बन्धित मंत्र भी है । जिनसे देवताओं को प्रसन्न करके मन चाहा कार्य कराया जा सकता है । ऐसी मान्यता है । इन देवताओं से सम्बन्धित गीत भी है ।

लोक देवताओं के विषय में डा॰ स्वर्णलता का कहना है - लोकजीवन में पौराणिक देवी देवताओं के अतिरिक्त हृदय की अनन्य भक्ति और विश्वास के फलस्वरूप अनेको लोक देवता, देवियाँ एवं पितर पितराणियों की मान्यता है । हिन्दू शास्त्रों में जिन देवी-देवताओं का उल्लेख है - ब्रह्मा-ब्रह्माणी, लक्ष्मी-विष्णु नारायण, शंकर-पार्वती, काली-दुर्गा, सरस्वती, गणेशजी, बजरंगबली आदि पूर्ण भक्ति और श्रद्धापूर्ण मानस से उनकी उपासना तो करते ही है - परन्तु जनमानस की अनन्य भक्ति भावना के फलस्वरूप कोई भी व्यक्ति विशिष्ट कृत्य भावना के फलस्वरूप कोई भी व्यक्ति विशिष्ट कृत्य अथवा अलौकिक चमत्कारों के कारण पूजा जाने लगता है ।"

4.2.1. तुलजा :

तुलजा देवी का मन्दिर पोहरादेवी में इस देवी के दर्शन करने के लिए नवकरों की टोलियाँ नवदुर्गा को अवसर पर जाती है । वास्तव में तलमा और काली एक ही शक्ति के दो नाम है । तुलजा के मन्दिर में भी बलि देने की प्रथा है । बनजारा जाति में तुलजा की सबसे अधिक मान्यता है । अपने परिवार, टाँडे और बनजारा जाति की सुरक्षा के लिए देवी के सामने बनजारा विनत होता है । अनेक बनजारे देवी को भेंट चढ़ाते हैं । देवी की यात्रा से लौट कर बनजारा अपने घर में देवी की पूजा भी करता है । तुलजा देवी के सम्बन्ध में अनेक गीत प्रचलित है । घर में तुलजा देवी की छवी भी होती है । यह छवी प्राय: चाँदी की होती है । इस छवी को तलजा का प्रतीक माना जाता है । घर में इस छवी के सामने बत्ती होती है । प्रार्थना के पश्चात् टाँडेवाले को प्रसाद बाँटा जाता है । इस अनुष्ठान में रात तक कई गीत और भजन गाये जाते हैं । उनमें से एक गीत इस प्रकार है -

घिंगड घिंगड नौबत बाजा डंको पडे भवानी तारो ।
डंको पडे भवानी तारो सेवारो ।
छोसर जोगण आँगा चाला, छोकट जो गण पाचा चाला ।
बीच चालारे छपनिया भीरू ।
भीमा रामावैतेरो ताँडो पूछी तार भक्ति द ।
उमर छला सोना वरछो, सासो बोल मरमा माछवे ।
पाँच भाई तो सेवा सरीके, गाल-गाल पर लो दे लडाई ।
कार भोजुन जीतन आयो, पट्टा चलायो सेवा भाया ।

चढेन घाटेरी घडो पीडिया, रेसम पाकटो लम्बी डोर ।
ऊपर बैठी आन मरामा ।
पीळो साडो काजळ कुंकू तलक चढावो सेवा भाया ।
सुते के जागेर दनिआरे लोको ।
वेगो सवारेर निकळो दाडो ।
सलोपगत/सनजर
इतो तळजी मारीन वरसीस मोह ।
माता आईरो लस्कर वाडा नादो ।
लाजोरे गुलाम छुको, माता आई छसतोजा ।

..

4.3. सन्त या महापुरुष वर्ग : ....

4.3.1. भक्त सेवा भाया के गीत :

बनजारे सेवा भाया * को कुल देवता के रूप में पूजते हैं । सेवाभाया का मन्दिर सभी टांडों में रहता है । इस मन्दिर पर पीला झंडा फहराया जाता है । इसको चूरमा का भोग चढाया जाता है । मन्दिर में केवल समाधि ही रहती है । इनकी पूजा पुरुष ही करते हैं । सेवा भाया वास्तव में तुलजा देवी का ही भक्त था । इस ब्रह्मचारी भक्त ने तुलजा देवी के मन्दिर में जीवित समाधि ली । उसी समय से वह देवता के समान पूजी जाती है ।

---

* महाराष्ट्र में पोहरादेवी नामक स्थान पर सेवा भाया का सबसे बड़ा मन्दिर है ।

रागो ध्यानी मनी बटोच
रोज मंजुळ वाणी बोलचर ।।धृ ।।
दसवे द्वारमे बेटोछ रागो
देखन काळ वोरो भागो
त्रिकूटेप छंटा छोरच ।। 1 ।।
रागेन पोसेवाळो ब्रह्मचारी
पाणी पराव छोरी कुंवारी
वोरे बोरे ठंको छोरच ।। 2 ।।
भक्ती नामेरे बगीचारो फळ
तोडन खावच गळगळ
आसा तृष्णा पूरी कररोच ।। 3 ।।
कोणी कळ सत् गुरु शिवाई
छाम गाळो जना मळोच

बड
4.3.2. लोकामसन्द :

गुरु लोकामसन्द बनजारों का पूर्वज था । उन्होंने बनजारा जाति के लिए अपने शरीर को त्याग दिया था । इनकी पूजा आन्ध्र में तेलंगाणा प्रान्त के और प्रान्त कर्नाटक के बनजारे करते हैं । इनकी पूजा पुरुष ही करते हैं ।

बात यह हुई कि गुरु नानक के अनुयायी सिख भी थे और बनजारे भी । लोकामसंद गुरु नानक के विशेष कृपा पात्र थे । सिख वर्ग इनसे चिढता था । नांदेड [महाराष्ट्र] में दोनों वर्गोंमें संघर्ष छिड गया सिखों ने इन पर आक्रमण किया । बनजारों की रक्षा के लिए आन्ध्र में आकर वीर मत को प्राप्त हुए । इस धर्म वीर की वहाँ पर समाधि

बनी हुई है। चैत्र मास में उस समाधि के पास पूजा के लिए आते हैं। इस अवसर पर लगभग 50 हजार बनजारे एकत्र होते हैं। इनके सम्बन्ध में अनेक गीत गाये जाते हैं। उनमें से एक इस प्रकार है। वह सम्भवत: गुरु नानक के समकालीन थे।

सांई वेस लोकामसंद बापू
अज्ञातेन दूर कर लोका
देवधरम याद आवेनीर लोका
ज्ञानीर जादूवान छेक लोका
सदा मन रेवेणी निर्मळ लोका
सत् भावना मनेमा लादेनी लोका
वेद गितार ध्यान पूचेनी लोका
काशी तिर्थरि धाम भावेनी लोका
तमाशा विन मन धामेनी लोका
ज्ञानीर भिक्षा भरपूर लोका
माता पितार करेनी कदर लोका
धमणीरे बिना कोकभावेनी लोका
भक्ती नामेर ज्याणी जगाणी लोका
कीमत वोस मन माणी लोका
भूलेन वाट वतान जगाणोलोका।

- गुरु सोमासाद का मन्दिर महबूबनगर जिला के कंदुकूल तहसील में लोकामसंद नामक स्थान पर है।

4.3.3. हाथी राम बाबा के गीत :

आन्ध्र प्रान्त के तिरुपति नामक स्थान एक बड़ा पुण्य क्षेत्र है । वहाँ पर बालाजी का मन्दिर स्थित है । इस मन्दिर के सामने हाथी राम बाबा का एक विशाल मठ है । राम बाबा बंजारे ही थे । वे मथुरा से आकर तिरुपति में बस गये थे । इस मठ में प्रतिदिन हजारों बनजारे आकर हाथीराम बाबा का दर्शन करते हैं ।

बालाजी और हाथीराम बाबा के सम्बन्ध में अनेक किम्वदन्तियाँ प्रचलित है । एक बार श्री वेंकटेश्वर जी हाथी बाबा के साथ चौसर खेलने के लिए आये और अपने हाथ का एक कंकण भूल गये । दूसरे दिन पुजारियों ने उस कंकण को लेकर हाथीराम बाबा पर चोरी का आरोप लगाया । बात कृष्णदेवराय तक पहुँची । तब वेंकटेश्वरजी की कृपा से हाथीराम बाबा निरपराध सिद्ध हुए ।

सुनते हैं कि एक बार उनके हाथी जैसे शरीर को देखकर उनसे गन्ना खाने के लिए कहा गया था और रात भर में वे एक कमरे में भरे हुए गन्नों को खा गये थे । इन्हीं हाथी राम बाबा को अपने एक शक्ति का पुरुष मानते हैं ।जिस प्रकार तुलमा देवी की यात्रा करने के लिए प्रतिवर्ष हजारों बनजारे जाते हैं उसी प्रकार बालाजी के दर्शन करने और हाथीराम बाबा को भेंट चढ़ाने के लिए हजारों बनजारे जाते हैं । उनके सम्बन्ध में कई गीत गाये जाते हैं :

एक अन्य गीत इस प्रकार है -

बालाजीन भक्तो हातीराम निकळो
सात गटमान गोडो टेकन चक्गो
बामण-कण्यातो भक्तीर वाते कीदो
बालाजीर दरसण कीदो
बालाजीर कळेमा कोढ़ी रम्भों
कृष्णदेवराजेन भक्ति वातायो
पुजारीजन और सक्तो वतायो
बालाजीर देवळे समनक
समाधी भंदायो ।

4.3.4. गुरू नानक के गीत :

दक्षिण भारत के बनजारों में से कुछ लोग गुरू नानकजी की पूजा करते हैं । इनका गुरुद्वारा बीदर और पाकिस्तान में है । उसका नाम " ननकाना"साहब है । बनजारे पूजा करते समय अरदास करते है । अरदास इस प्रकार है :

कजली वन में धव जले
जले चंदन ना रुखा
हम जलों बिन पंख से
तू क्यों जले पंखी बात
सत्नाम
फल खावे पता बिगाडे
बेठे तुम्हारी डाल
तुम जलो हम बढ़ चला

जिसे कितना काल
सत्नाम
कजली बन में सुकरा क्या करो
चलो हमारा देस
पावां नरवा दूं पिंजणी
महलो में कर दूं साज
सत्नाम
मछली कइये दल मिले
कपड़ा असल सपेद
तिरया रंग में सांवली
घोड़ा असली कमोद
सत्नाम

4.3.5. काकूराम बावा के गीत :

आन्ध्र के आदिलाबाद जिले के बनजारों और महाराष्ट्र के बनजारे काकू बावा की पूजा करते हैं । वे इस प्रान्त के सुप्रसिद्ध गुरु माने जाते हैं । इनकी पूजा भी पुरुष ही करते हैं । पूजा के समय पुरुष कई भक्ति गीत गाते हैं । उनमें से एक इस प्रकार है :

काकूराम बावा साक्षिगो भीया
नवरैतो देखन कांही रुप आत्मा रामेरो भीया
हाते माई कलडा छ तारो भीया
पग मनें माई पसतारों भीया
जसो हरनारय कस्तुरी रो भीया

वोन दूँढेन तू भार जारो भीया
वोर रतन वोन भुलारोरें भीया
जलो मंथन करव दुधरो भीया
वोम रूप निअल धोईरो भीया
वलो ध्यान लगाल ब्रम्हेरोरें भीया
देह जडं जाणम तारो भीया
क्षण अगेर दिवे दुखेरो भीया
ब्रह्मानंद चेतन्य रूप न्यारोरे भीया
भजलो काकूरामेरी सीख भीया
नजरेती देखलो रूप आत्मारो भीया

4.3.6. सोमासाद :

गुरु सोमासाद बनजारों का गुरु माना जाता है । आन्ध्र में तेलंगाणा प्रान्त के बनजारें तथा कर्नाटक प्रान्त के बनजारे गुरु सोमासद की पूजा करते हैं । इनकी पूजा करते समय सिख धर्म के अनुसार ही अरदास किया जाता है । गुरु सोमासद के कई गीत प्रचलित है । ~~इनमें से एक इस प्रकार है :~~

---

* आन्ध्र के महबूबनगर जिले में कड्डो तहसील में इनका मन्दिर है ।

4.4 सती :

सती उसे कहते हैं जो अपने पति के मृत्यु के पश्चात् अपने प्राण त्याग देती है । इस प्रकार की सती भी दिव्य स्थिति वाली हो जाती है । प्रसिद्ध सतियाँ यह है - ठकरी और झमकी आदि ।

सतियों के विषय में डॉ. स्वर्णलता का कहना है -
सतीत्व की रक्षा तथा पतिव्रत धर्म पालन के लिए बलिदान होनेवाली सतियाँ, अविवाहित बाइयाँ, पितर-पितराणियाँ तथा भोमिये भी देवताओं की भान्ति पूजे जाते हैं ।[2]

4.4.1. चौकली देवी :

चौकली देवी की समाधी आन्ध्र[3] में है । यहाँ के बनजारे इनकी पूजा धूम-धाम से करते हैं । चौकली देवी अपने पति के मृत्यु के पश्चात् कई दिनों तक एकान्त में रहकर लोक कल्याण की कामना करती रही । कहा जाता है कि वह बनजारों की उन्नति के लिए भगवान से प्रार्थना भी करती है । वह जीवन में

---

1 लोक साहित्य विमर्श : पृ. सं. 117

2 वही

3 आन्ध्र के रंगारेड्डी जिले में मंचनपल्ली नामक गांव में इनकी समाधि है ।

कभी झूठ नहीं बोली और अपने स्वार्थ के लिए कोई काम नहीं किया। मरते समय चोकली देवी बनजारों को दारू न पीने की, झूठ न बोलने की सीख दे गई थी। इनकी मृत्यु के पश्चात् बनजारे इन्हीं सती के रूप में पूजने लगे। बनजारों का विश्वास है कि चोकली देवी की समाधि पर फूल चढ़ाने से उनकी मनोकामना पूरी होती है। चोकली देवी के कई गीत प्रचलित है। उनमें से एक गीत इस प्रकार है :

नाम तारो गावे दावाडी
सत्तेर गाडी चलादेनी वाडी
काढे माई ती बैंचा दा वाडी
भारकाढ़दा वाडी मावार फादे माई ती
पापे हो जगत कणोच आंदो
पाप छमा कर दा वाडी
हम गोरन अमृत पश दा वाडी
गमेर कोक छरादा वाडी
ऊंचा रे छोकामाई ती
भार छींच ला वाडी
चोकली वाडी तर पग ला
पडांधा वाडी

3.4.2. ठकरी देवी :

ठकरी देवी की समाधि कर्नाटक प्रान्त में कमलापुर नामक स्थान में है। कर्नाटक प्रान्त के बनजारे ठकरी देवी की पूजा करते हैं। पूजा के अवसर पर कई गीत गाये जाते हैं। उनमें से एक इस प्रकार है -

मत्ती बाडो, ठकरी बाड़ी
बेटोच देखके मां
दरसण देरोच, भक्तुन
मत्ती बाडो, ठकरो बाडी
बेटोच देखके मां
सौकी सौकी ऊँडीमा
हमेन बेसर मेलोच
कीया पोळी हमेन छरारीब
कि मत्ती बाडो, ठकरी बाड़ी
बेटोच देखकेमा

५. पर्वोत्सव सम्बन्धी गीत :

पर्वोत्सव सम्बन्धी गीतों में त्योहारों और " देवकूट जातरा " के गीत अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं । त्योहारों और देवकूट जातरा " के गीतों में लोक जीवन का यथार्थ स्वरूप मिलता है । बनजारा संस्कृति इस दृष्टि से सर्वोपरि है । विभिन्न मेलों और त्योहारों पर गाये जानेवाले गीतों का ऐतिहासिक महत्त्व भी है । बनजारा जाति में गीतों की विशिष्टता की दृष्टि से होली, दीपावली, दसराव और तीज का त्योहार सर्वाधिक महत्वपूर्ण है । धार्मिक आस्था के साथ साथ सोमासाद, सेवाभाया, लोकामसंद, बालाजी और गुरु नानक के उत्सवों पर आयोजित मेलों के अवसर पर गाये जाने गीत बड़े मनोहर, मधुर और सांस्कृतिक भावनाओं के व्यंजक होते हैं ।

बनजारा जाति के मन्दिरों में जितने अधिक मेले होते हैं उतने अन्यत्र नहीं । तालाब, पहाड़ी या झील, झरनों के किनारों पर बनजारों के पूर्वज किसी न किसी देवी-देवता की स्थापना कर दी और उस जगह हजारों की तादाद में वे इकट्ठे होने लगे । इस प्रकार के मेले बनजारों के जीवन के लिए मनोरंजन के साधन बन गये ।

देवेन्द्र सत्यार्थी का कहना है कि लोक गीतों का बचपन धर्म की छाया में व्यतीत होता है । गीतों की काफी संख्या ऐसी मिलेगी जिनका जन्म पूजा, पर्व, त्योहारों तथा व्रतों के साथ होता है । कुलदेवताओं के पूजाओं के गिर्द घूमने वाले गीतों में जनता के रीति-रिवाज हमें अपनी आत्मकथा सुना देते हैं ।[2]

5.1 होली :

बनजारा जाति में होली के लगभग दस दिनों पूर्व से ही होली के उत्सव के लिए टाँडे के युवक नायक की अनुमति प्राप्त करते हैं । नायक के मार्गदर्शन में ही होली का पर्व मनाया जाता है । होली बनजारों का सबसे बड़ा त्योहार है । इस अवसर पर सम्पूर्ण बनजारा टाँडा गूँज उठता है । युवक ढप बजाते हैं और युवतियाँ गाती हुई नाचती है । होली के अवसर पर युवक दुःखी परिवारों के घरों में जाकर सामुहिक श्रद्धांजली अर्पित करते हैं । वे कहते हैं कि इस संसार में केवल सूर्य, चन्द्र, और तारे अमर है बाकी सब नाशवान है इसलिए मृतों के लिए अधिक काल तक दुःख न मानकर होली के त्योहार में सम्मिलित होकर नाचो गाओ । इस अवसर पर एक गीत गाया जाता है, गीत इस प्रकार है :

दुनिया में अमर रेनो कोई
चन्दा मरेनी वे दुनियामा
बाकी से छुटिया वे दुनिया मां
सूरा मरेनी वे दुनिया मां
बाकी से छुटिया वे दुनिया मां
तारा मेरनी वे दुनिया मां
बाकी से छुटिया वे दुनियां मां
मरदार मुंडे मडके मां मारी
औवतेर मुंडे मां बाटी

श्रद्धांजलि कार्यक्रम के पश्चात् टांडे में होली के मुखिया का सर्वसम्मति से चुनाव होता है। इसे गेरिया कहते हैं। यह अविवाहित गेरिया युवकों के साथ टांडे के सभी अपंग व अनाथों के सुखी जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है। प्रार्थना इस प्रकार है :

लंगडेरी टांग सम्हारे करता भाया
ओदाडो आवोर भाया
आंधेर आंखी सम्हारे करता भाया
ओदाडो आवोर भाया
बेरेर कान सम्होर भाया
ओदाडो आवोर भाया
लूलेर हाथ सम्हारे कर दाता भाया
होलीर दाडो आवोर भाया

व्यापार के लिए दूर देश में गए पति के समय पर न लौटने पर दुःखी पत्नी उसकी प्रतीक्षा करती है । गीतों का डफ फूटा हुआ है । बरगद की लकड़ी व भेड़ का चमड़ा लाकर अब डफ कौन बनायेगा ? इसलिए विरहिणी करुण स्वर में रो उठती है । लेरिया अपने साथियों और टांडे की युवतियों के साथ उसके द्वार पर जाता है और हर्षोल्लास के होली के महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए कहता है । टांडे की टोली को देखकर विरहिणी करुण स्वर में गा उठती है ।

भियारे मार गाटो छ परदेसे मां वेपारे भाई
भीयारे मारु डफडा टूटरो-फूटरो वेरोच सुणियर माई
और वास
भीयारे बड़ला को लकड़ा, कूण लाय – खाल्डोकूण लाय
भीयारे बड़ला को लकड़ा, छेलीरो चमडा चाय
भियारे और बना दू वाजिवा डफड़ा मारो
भियारे और बना दू वांजू गीद
भियारे और बना दू नाचू खूद
भियारे मार गाटो छ परदेसे मां वेपारे भाई

विरहणी को मनाकर लेरिया अपने साथियों के साथ टांडे के नायक के द्वार पर पहुँचता है । वह उसकी प्रशंसा करता हुआ कहता है कि नायक बड़ा भला है, इसीके कारण टांडे में एकता है । इसी कारण होली का त्योहार धूम-धाम से मनाया जा रहा है । इस अवसर का गीत इस प्रकार है –

नायक हमारो बडो भलोर भीया
तांडे मां छ एक मतरोर भीया

जत मत्थोर वत गोकुळ नगरीर भीया
होळी गाडी हवेली खुली वेगीर भीया
नायकेर नाम मोटो छार भीया
नगरी हमारी हरीभरी वेगीर भीया

होली के अवसर पर रात में होलिका को टांडे के बाहर जलाया जाता है । इस अनुष्ठान में युवक ढप बजाते हैं और युवतियाँ गाती हुई नाचती है । वे गीत में कहती है कि - [illegible] श्रीराम ने होली जलाई है, लक्ष्मण ने डंडा सम्हाला है तथा हनुमान ने ललकारा है । गीत इस प्रकार है -

राम जनम के लीदोरा धरती पर
राम होळी रमोरा धरती पर
राम होळी बाळोरा धरती पर
राम जनम लीदोरा धरती पर भाइ-भाईर
लक्ष्मण डंडा पकडोर धरती पर
हनुमान बुमडो मारोरा धरती पर
राम जनम लीदोरा धरती पर भाइ-भाईर

होलिका जलने के दूसरे दिन धूम-धाम से रंग खेला जाता है । इस अवसर पर सभी लोग भांग या दारू पीते हैं । इस अवसर पर कई गीत गाये जाते हैं । एक गीत में युवतियाँ गाती है कि कृष्ण की पिचकारी ने राधा को नख-शिख भिगो दिया है । राधा की चोली और लेंवडी रंग से भीग गई है । गीत इस प्रकार है -

दस वरसेरो कृष्ण मुरारीरे, बव वरसेरी राधा प्यारी रे
मत मार अतना पिचकारी रे, मारी कांचळी भीजगी सारीरे

डाबे हातेमा रंगेर लोटा, जमणेमा लीदो पिचकारी रे
मत मार कसना पिचकारी रे, मारो लोवडो भी जगी सारो रे
होळी रमेन राधा चाली प्यारो रे, मतमार कसना पिचकारी रे
मतमार कसना पिचकारी रे, मारो कांचळी भीजगी सारी रे ।

फाग खेलते समय टांडेवालों का विश्वास रहता है कि राम, कृष्ण, हनुमान, राधा, कृष्ण और बालाजी भी उनके साथ रंग गुलाल में रम गये हैं । इस अवसर पर गाया गया फाग गीत इस प्रकार है -

मत मतरोर वत गोकुळ नगरी ।
असी नगरीमा बाळा राम वे राजो ।
दवाई पळस गोपालारो जेबोलो लक्ष्मन बाळारो ।
नदि लालारी रे घेरी वाकेरी रे, जेबोला लक्ष्मन बाळोरी रे ।
असी नगरीमा गोपी कृष्णा वे राजो ।
लार-लार डोकरी तो आंग-आंग छोकरी ।
दवाड पडेरे राजा रामेरी, जेबोलो लक्ष्मण बाळारी
काकी दादो रीस मत करणो हम खेलाया होळी
होळी वे लारी झमार गोळी, भर बेरारी झोळी ।
उतो भूमि कोर ज्वाररेरे होळी खेमारे-भाई-भाई-भाई ।
अम्नवन्द-धम्नवन्द चालेर मस्माइन ।
मस्माहती खेमलाये पोरिया घुमावेरे ।
पोरिया गडे पर भावासे देवक भेदावो रे ।
देवकेरो छावा, बेटी मरामा मायां ।
लेंगी झूलेद -भाइ-भाइर
रे लेंगी बरमाणी वाबारियां - लेंगी झूलेद - भाई-भाईर ।

फाग अपनी चरम स्थिति पर पहुंच जाने पर सभी नाच गाकर

थक जाते हैं। युवतियाँ डफ धीरे-धीरे बजाने की प्रार्थना करती है। डफ यदि धीरे नहीं बजाया गया और नृत्य करनेवालियों को अधिक सताया गया तो डफ बजाने वाले पर व्यंग्य कसती है। इस अवसर पर गीत इस प्रकार है -

अरे डफे वाळेरे लाम्बे-लाम्बे कपा,
और कपान देख-वलम रसियो-डफ चालेद-भई-भईर ।
अरे डफे वाळेरे कांदे पर शाल,
और शालेन देख-वलम रसियो डफ चालेदा ढोलेती भई-भईरा
अरे डफे वाळेरे चालडी पागडी,
और पागडीन देख वलम रसियो उफ चालेद गमते तो
भई-भईर ।
अरे ढफेवाळेरे हातुमाई कडा,
और कडान देख वलम रसियो डफ चालेद मतरेतो भई-भईर ।

6.2. दीपावली :

दीपावली का त्यौहार कार्तिक अमावस्या के दिन मनाया जाता है। इसे काळी मास भी कहते हैं। दीपावली के रात को बनजारों के सभी घर दीपकों से जगमगाने लगते हैं। कुँवारी कन्याओं का झुंड थाली में दीपक लेकर पहले नायक के घर जाती है। वे उसे दीपावली की शुभ कामनायें देकर लौटती है। उसके बाद वे सभी के घर जाकर दीपावली की शुभ कामनायें देती हैं और उनसे आशीर्वाद लेकर आती है। इस प्रकार से घर-घर घूमने की क्रिया को "मेरा" कहते हैं। "मेरा" करते समय लड़कियाँ कई गीत गाती हैं, उनमें से एक गीत इस प्रकार है -

कोटदाड़ेर दवाळी याडीर लेला असीस
जग-मग, जग-मग दीया चळके लेलो हमार असीस
काळीमासेरी लछमी याडीर लेलो असीस
मेरा कररो हम कुवारीवेरो लेलो असो
कोटदाड़ेर दवाळी याडीर लेला असीस

युवकों का एक झुंड तिल के डंठल को एक लम्बी लकड़ी पर बांध देते हैं और उसे जलाते हैं । जलती हुई लकड़ी को हाथ में लेकर टांडे का चक्कर लगाया जाता है । वे चक्कर लगाते समय, पशुओं को सतानेवाली मक्खी और मच्छरों को भगाने के लिए कहते हैं । इनका विश्वास है कि इस प्रकार से कहने से मक्खी और मच्छरों का नाश होता है । इस अवसर पर बोल इस प्रकार है -

जग-छड़, जग-छड़ गंगोड छड़
माकी-माचर दोरों परतो छड़

दीपावली के दूसरे दिन कुंवारी लड़कियां उपवास करती हैं । युवक गाय के सींग रंगते हैं और कन्याएं उन्हें पूरण पोली खिलाकर पूजती हैं । इस अवसर कई गीत गाये जाते हैं । उनमें से एक गीत इस प्रकार है -

गो माता देदा हमेशा असीस
गो माता करदा हमारी नगरोन आबाद
गो माता अन-धने ती रकाडेस हमना
गोमाता पद्धवर सेताणी सकेती रकाडेस हमना

5.3. दसराव [दशहरा] :

यह इस जाति का प्रमुख धार्मिक त्योहार है । यह त्योहार भी टाँडे के नाईक के नेतृत्व में ही मनाया जाता है । इस पर्व के दिन सुबह आँगन को गोबर से लीप दिया जाता है और गो-मूत्र घर पर छिड़का जाता है । द्वार पर नीम और आम के पत्ते बांधे जाते हैं । घर के सभी लोग नये कपड़े पहन कर खुश रहते हैं । संध्या के समय घर का बड़ा आदमी नाईक द्वारा निश्चित समय पर टाँडेवालों को पूजा में भाग लेने के लिये कहता है । निश्चित समय पर नाईक और टाँडेवाले उसके आँगन में आकर बैठ जाते हैं । वह आँगन की पूर्व दिशा में गून रख देता है । कुंवारी लड़की तुळजा भवानी की छड़ी को आँगन में ले आती है । छड़ी को दूध से धोया जाता है । छड़ी और कोतळी को गून पर रखकर हल्दी-कुंकुम लगाया जाता है । गून पर कौडी, सुपारी, पान और चान्दी के सिक्के भी रखे जाते हैं । इस अवसर पर नाईक की अनुमति से देवी को बकरे की बली चढ़ाते हैं । उसके बाद नाईक तुळजा भवानी से प्रार्थना करता है कि माता टाँडेवालों को सुख, संतोष से और धन-धान्य से पूर्ण रखें । प्रार्थना इस प्रकार है -

याडी साहेबणी -
हात-जोडूं, पगना पडूं
साई वेस याडी साहेबणी
पीडा-पीडा
दळदारेन दूर करेस याडी साहेबणी
दसमणेन दूर, दोस्तेन कन करेस याडी साहेबणी
क्वेरेनी लारेन
साहुकारेन समनक लायेस याडी साहेबणी

हमार नगरी न
झ शीको ताड़ो रकाडेस याडी साहेबणी
वेंडे भोकेर पूजा मंजूर करला
वेंडे भोकेर घरेन आबाद करदा याडी साहेबणी

भजन गाते समय तुळजा देवी के साथ-साथ सेवाभाया के भजन भी गाये जाते हैं । उनमें से एक भजन इस प्रकार है -

गाउ आईबाळा तारी लीला ।
सोकलेम जगदम्बा ज्वाला ॥ धृ ॥
तारो सत अदावेरबार
बणानाको तू नरेरी नार
किदो वेरेरो अमृत गोळा ॥1॥
भुई मटीनकीदो जिवतो
सूर छडेरो रण तू जीतो
भभियारी सेना कीदो गोळा ॥2॥
पिढारारो परेजेन तू रोको
भरी गंगान लंघन रुको
धर्मी सातेन बतायो कळा ॥3॥
आसे आनेक पुराव तार
राजूदास वर्णन कर
तारी दया रेद धन निळा

दूसरे दिन सुबह होने पर घर के सभी लोग देवी को आरती देते हैं । आरती का गीत इस प्रकार है -

काचकेरी दीवलो कपूर केरी वाडे मां ।
जग-मग जोत जगाई सारो रात ये ।

तोळजा तारी आरती सदा-सदा ।
भवानी तारी आरती सदा-सदा ।
सदा सवाइये भगतुन पाइये ।
मोतिया चोको पुराई सारी रातये ।
अम्बातारी आरत सदा-सदा ।
भगतुरी मातारे, जगेरी पूजारणी ।
डाको-जोको दूर-दौटे हाथ तरकूणी ।
दानान मार पिटाई सारी रात ये ।
तळजा तारी आरत सदा-सदा ।

5.4. तीज :

इस त्योहार को बंजारे "ज्वारा" कहते हैं । राखी पूर्णिमा को तांडे की सभी कुंवारी कन्यायें नायक के घर जाकर तीज या ज्वार पेरने की अनुमति मांगती है । इस अवसर पर कन्यायें नायक की प्रशंसा करती हुई एक गीत गाती है, गीत इस प्रकार है -

हमारो नायक आयो रे बालाजी
कुंवारी बेटी उरो असीस लेलदोरे बालाजी
हमेनी तीज पेरायो रे बालाजी
कुंवारी बेटीउरो असीस ~~बालाजी~~ लेलदोरे बालाजी ।

नायक की अनुमति मिलते ही सभी कन्यायें गीत गाती हुई पूजा स्थान की ओर जाती है । इस अवसर पर सेवाभाया की स्तुति करती हुई एक गीत गाती है - गीत इस प्रकार है -

सं लोवूंरे भावारो नाम
सेर पच नाख्यूं

मैं लवूरे सेवारो नाम
जेर पच नाच्यूं

यह गीत तीजोत्सव का मंगला चरण है । इसके पश्चात् बादलों से सम्बन्धित गीत गाकर नृत्य करने लगती है । आकाश में बादल घिर आये हैं जैसे किसी ने सुन्दर ओढ़नी ओढ़ ली हो । वर्षा की छोटी-बड़ी बूंदों की झड़ी सी लगी है - गीत इस प्रकार है -

झरमरिया लागी झड़ी, नानीमोटी बूंदे पड़ी
आज मारो खुशी बढ़ी
रंगारातो रंगी लोवडोर भाते पडी
झरमरिय लागी झडी, नानी मोटी बूंदे पड़ी

कन्यायें गीत गाती हुई ताडे के बाहर से वाल्मीकि की महीन मिट्टी लेकर नाईक के घर लौटत ैं । बांस से बनी छोटी-छोटी टोकरियों में नाईकन द्वारा फुलाए गये चने या गेहूं को बोती है । तीन दिन के बाद वे अंकुरित हो जाते हैं । इस अवसर पर कन्यायें [illegible] हर्षोल्लित होकर गा उठती है -

हरो-हरो ज्वारो उधरो सेवालाल
तू कीमेती आई तीज
हरो-हरो ज्वारो उधरो सेवालाल
सोनकूप कलायो तीज
हरो-हरो ज्वारो उधरो सेवालाल
`भी सोना वीरा कलायो तीज
हरो-हरो, ज्वारो उधरो सेवालाल
सोना बापू कलायो तीज
हरो-हरो ज्वारो उधरो सेवालाल

सावन का महिना होने के कारण हरा-भरा होकर बढ़ रहा है। इस अवसर पर चन्दन के झूले में रेशम की डोरी बांधकर स्त्रियाँ झूल रही थी। झूलने में एक स्त्री गिर पड़ी। उसकी कमर में चोट आई है, पति ने उसे उठाकर मरहम पट्टी कर दी। दर्द कम नहीं हुआ किन्तु उसकी सहेली के आने पर ही उसकी पीड़ा दूर हुई। इस अवसर पर का लोकगीत इस प्रकार है -

सावन-भादोरो मस्त मीना आयरे तीज
हिंदोलो झूरे तीज
चंदणेर लकडीरो हिंदोलो
हिंदोलो झूरे तीज
रेशमेर रंगीन बदनारो हिंदोलो
हिन्दोलो झूरे तीज
बापू मां पड़गीरे तीज
हिन्दोलो झूरे तीज
छणेर पट्टीती दुखणो कम वेनी रे तीज
हिन्दोलो झूरे तीज
सोबतण ती दख मरगोरे तीज
हिन्दोलो झूरे तीज

नौ दिनों तक ज्वार को रखा जाता है। ज्वार के प्रति कन्याएं मग्न हो जाती है। नवे दिन ज्वारा का विसर्जन नदी के प्रवाह में किया जाता है। विसर्जन के पूर्व के दिन कन्याएं ज्वारा को और कुछ दिनों के लिए रुक जाने की विनंती करती है। विनंती इस प्रकार है -

मारी वेला केलारी तीज घड़ीक रमली दो
मारी वेला केलारी तीज घड़ीक नाचली दो

माठी वेला केलारी तीज छडीक हंस लीदो
मारी वेला केलारी तीज छडीक बोल लीदो
मारी वेला केलारी तीज छडीक पेरी मार लीदो

ज्वार का विसर्जन निश्चित तिथि पर होता है । अतः इस तिथि को टालने के लिए कन्याएं ज्वारा को पूरन की रोटी खिलाने का प्रलोभन देती है । इस अवसर का गीत इस प्रकार है -

मारी गवरीय, आजरो खिवाड़ो रेतोईजा
मारी गवरीय, पूरणेरी पोळी खातोईजा
मारी गवरीय, सातण मनाई जा
मारी गवरीय, नायक मनाय रेतोई जा
मारी गवरीय, खीरन पोळी खातोई जा

टांडे की कन्यायें बड़े धूम-धाम से निश्चित तिथि के दिन नदी के प्रवाह में ज्वारा को विसर्जित करती है । इस समय कन्याएं ज्वारा को सीख देती है कि तू झाड़ियों से नाता जोड़कर उनको मां कह देना और पर्वतों को पिता मान लेना । वे इस अवसर पर एक गीत गाती है, गीत इस प्रकार है -

बाइए किमेती आयो बेटी झाकिया
बाइए मारी गवरीन ले चालो
बाइए झाडीन देखन याडी कीजो
बाइए गटलीन देखन बापू कीजो
बाइए जाये मारी सातण वेगेरी आजो ।

विसर्जन के अन्त में कन्याएं ज्वारी से कहती है कि तू अगले वर्ष हमसे मिलने जल्दी लौट आना ।

6. श्रम परिहार सम्बन्धी बनजारा लोकगीत :

बनजारा जाति में श्रम परिहार के गीत पुरुषों द्वारा व्यवसाय करते समय गाये जाते हैं । बनजारा लोक जीवन में पुरुषों के खेती, बायती, चराई, पिसाई अथवा कुओं से पानी भरना प्रत्येक कार्य में उत्साह और मस्ती छायी रहती है । उनकी यह मस्ती व्यवसाय करते समय गाने जानेवाले गीतों से अभिव्यक्त होती है । बनजारा लोक जीवन में हर क्षेत्र में श्रम करनेवाला व्यक्ति गाता हुआ मिलेगा । कठिन से कठिन काम करते हुए मनुष्य को गीत के धुन में श्रम का बोझ अनुभव नहीं होता और गीतों से श्रम का बोझ हलका हो जाता है । "स्टेन्डरड डिक्शनरी आफ फोकलोर" ने श्रम परिहार के गीतों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि मनोविज्ञान के विद्वानों तथा कार्य-दक्षता के विशेषज्ञों ने भी स्वीकार किया है कि गीतों से कार्य की उत्पादन शक्ति बढ़ती है ।*

बनजारा श्रम परिहार सम्बन्धी गीतों के मुख्य भेद निम्नलिखित है :-

{1} कृषि के गीत {2} पशु चराने के गीत {3} लदणी[2] के गीत {4} पानी भरते समय के गीत {5} चक्की के गीत ।

---

*

2 बनजारे व्यापार के लिये - खाद्य सामग्री को बैल के पीठ पर लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान को जाया करते थे ।

6.1. पशु चराने के गीत :

बनजारा जाति में पशु चराने के गीत अधिकतर वर्षा से सम्बन्धित होते हैं । भेड़-बकरी और गाय, चरानेवालों के निर्द्वन्द्व जीवन की झलकी उनके गीतों में मिलती है । चरवाहों के कई गीत हैं, उनमें से एक इस प्रकार है -

तीकी-तीकी गळ्नी रे छेड़,
हरी-भरी-उंगलेरे गाँई बैठो मारो भाया
भाया न भजूं, भाया न पूजूं
भाया को दरसण करूं, वादळेरो दरसण करूं
सूर्यारे तड़केती, सारी जम्मी चिलकारी
भाया रे गरजादा वादळेन
भाया रे चमकादा विजळीन
वसोदा घुळियाती सारी दुनिया माँ
वसोदा घुळियाती तीकी-तीकी गळ्नी पर

6.2. कृषि गीत :

खेती करता हुआ बनजारा खेती को देवी स्वरूप मानकर उसकी अराधना करता है । देवी की स्तुती से आरम्भ गीतों में सभी विषय सम्मिलित हो जाते हैं । गीत इस प्रकार है -

जम्मी याडी उमा भवानी तारे द्वारे
गढ़ पर नौबत बाजे
औधान बांकी दीनी
सदर जम्मी याडी तारेछ द्वारे
गढ़ पर नौबत बाजे
वाळिया उमा भवानी तारे द्वारे

गरीबेना हरीब कर दीनी
सदर जम्मी थाड़ी तारे द्वारे
गढ़ पर नौबत बाजे
हमार छेतेमा बर्कत कर दा
सदर जम्मी थाडी तारेड द्वारे
गढ़ पर नौबत बाजे

6.3. चक्की गीत :

बनजारा स्त्रियाँ प्रातः चार बजे से उठकर आटा पीसती है । चक्की चलाते समय आनन्द मग्न हुई कई गीत गाती है, उनमें से एक इस प्रकार है -

राजपूता राजा, अमर सिंग राजा
घोडे घोडे पर सवार राजा, दसमणा देकन छूगे राजा
घोड़ेर खोरती गढ़ हालागो, गढ़ हालगो तार फौज हालगी
राजपूता राजा, अमरसिंग राजा
चक-चक तारी तलवार चक्काच;
तलवार चळकच, ढुक-ढुक तार ढालड बोलच
राजपूता राजा, अमरसिंग राजा
भूं-भूं संख बजायो, ढब-ढब डैका बजायो,
डंका बजायो, तुरी बोलायो
राजपूता राजा, अमरसिंग राजा
राजपूते वासु, वेर लेवो राजा
अमरसिंग राजा, अमर वेगो राजा
राजपूता राजा, अमर सिंग राजा

6.4. पणिहारी गीत :

बनजारा लोक जीवन में प्रात:काल स्त्रियाँ रंग-बिरंगी केसरिया, कसुम्बल ओढ़ने ओढ़ सिर पर ईंडुणी और ईंडुणी पर पानी के लिए टोकणा रखे हुए तालाब या नदी पर जाती हुई स्त्रियों का दृश्य बड़ा मनमोहक होता है । वे स्त्रियाँ तालाब या नदी के किनारे पर इकट्ठी होकर अठखेलियाँ करती और गाती है । उनमें से एक गीत इस प्रकार है -

गटलीर पेरेती दाड़ो निकळो च
दाड़ो निकळोच, थाळी निकळोच
टोकणेर केडो लेन मार थाळी निकळोच
गटलीर पेटेती दाड़ो निकळोच
टोकणेर केड़ो लेन मार बाई निकळोच
गटलीर पेटेती दाड़ो निकळोच
दाड़ो निकळोच, सोवळण निकळोच
टोकणेर केडोलेन मार सोवळण निकळोच
गटलीर पेटेती दाड़ो निकळोच
बाई दाड़ो निकळोच

7. व्यापार के गीत :

बनजारा शब्द के साथ ही व्यापार का अर्थ सम्बद्ध है । "बणज" या बनज का तात्पर्य वाणिज्य ही है । एक भोजपुरी लोकगीत में "बनिजारिया" शब्द तो वाणिज्य के अर्थ में ही प्रयुक्त होता आया है । बनजारिन का पति उत्तर देश को वाणिज्य कर्म अर्थात् व्यापार करने जा रहा है, तब वह कहती है कि मेरे उजड़े हुए बंगले की कौन

मरम्मत करेगा? * गीत इस प्रकार है :-

पियवा जे चलेला उतर
बनिजारिया कि केई रे छवहैं ना ।
मोरा उजकल बंगलवा
कि केई रे छवहैं ना ।

बनजारा भारतवर्ष की एक ऐसी घुमन्तू जाति है जिसका सम्बन्ध मध्यकालीन इतिहास के सूत्रों से बंधा है । अपनी अनोखी वेशभूषा और रंग-रूप के कारण आज भी बनजारे अपने अस्तित्व को अनेक जातियों से पृथक् घोषित करते हैं । भारतीय लोकगीत और लोक कथाओं में बनजारा अपने बैलों पर दूर-दूर तक सामान लादकर ले जानेवाला पात्र एवं चतुर व्यक्तित्व धारण किये हुए हैं । बुन्देलखण्ड की एक लोक कहानी में बुन्देला ठाकुर की दी हुई भेंट एक बनजारा सिंहल के राजा और काबुल के बादशाह तक ले जाता है ।[2]

बनजारिन का पति व्यापार करने उत्तर देश को गया है । होली के अवसर पति के न लौटने पर दुःखी हो जाती है । इस हर्षोल्लास के अवसर पर काम आनेवाला डफ फूट चुका है । व्यापार से लौटने पर नया डफ बनाने की बात पति ने कही थी । अब डफ कौन बनायेगा? इस प्रकार से वह रोती हुई गा उठती है -

पिया परदेसी, परगनवो मे ना कब अली
डफ मंढल मदल संग आई होली, डफ मंढार

---

* भोजपुरी ग्राम गीत : पृ॰166-279 ।

2 शिवसहाय चतुर्वेदी लिखित "गौने की विदा" संग्रह की "बुन्देला ठाकुर" शीर्षक कहानी ।

काहे को लकड़ा? काहे को चमड़ा
बकुला को लकड़ा मैंढ़ी को चमड़ा - डुम मंडलर

विरहिणी पत्र द्वारा पति का कुशल समाचार जानना चाहती है । उसका पति जिस देश में वहाँ पर होली का त्योहार मनाया जाता है या नहीं? वहाँ पर फाग खेली जाती है या नहीं? इस समाचार को ले आने के लिए वह एक तोते से कहती है । गीत इस प्रकार है -

सुआ ले जोर, ले परवाना
ले परवाना, वत नायकेन दीजारे
वत लेंगी बोलीरे? पूछी आ जोरे
वत होली कुंड रे? पूछी आजोरे
ले परवाना, वत कारभारिन दी आजोरे
सुआ ले जोरे
ले परवाना, सुआ ले जोरे

इस गीत में बनजारे के साथ किसी वियोगिनी का पति बारह वर्ष के पश्चात् लौटा है और वह उसी के एक वट वृक्ष के नीचे आकर ठहरा है ।

बारह बरीसवा पर लवटल बनीजारिवा
राम की बारावाँ तरावा ना

मालवी गीतों में बनजारा अपनी "मोर" के लिए प्रसिद्ध है । मोर बड़े प्रमाण में लाए हुए माल को कहते हैं ।" हल्दी" के नाम से विख्यात एक गीत की प्रथम पंक्ति है -

आई बणजारा री मोर उतरी बड तले
मोलावे लाडला लाडा रा काकाजी

अर्थ : बनजारे की मोर आकर वटवृक्ष के नीचे उतरी है । लाडले दूल्हे के काका उसका मोल भाव कर रहे हैं ।

षष्ठम अध्याय : .. ..

बनजारा लोक गाथा

बनजारा : लोक गाथा : ....

बनजारा जाति में लोकगीतों के समान लोकगाथाएं प्रचलित है। लोकगाथा कुछ लोगों तक ही सीमित रहती है। लोकगाथाओं में धार्मिक भाव, वीर भाव, प्रेम भाव, रोमांचक भाव संचार करते हैं। लोकगाथा में कथा का तारतम्य आदि से अंत तक क्रमानुसार चलता है। बनजारा जाति में ढाडी बनजारे लोकगाथा गाकर सुनाते है। पर्वोत्सव के अवसर पर अन्य गायक भी लोकगाथा गाकर सुनाते है।

1. लोकगाथा की परिभाषा :

भारतीय साहित्य में "गाथा" शब्द गेय [illegible] कथांश गेय स्त्रोत आदि के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। गीत के अर्थ में यह संस्कृत "गै" धातु से

निष्पन्न हुआ है ।* वाचस्पत्यम्,[2] ऋग्वेद,[3] एतरेय ब्राह्मण[4] तथा महाभारत[5] में "गाथा" का अर्थ गाने योग्य स्तोत्र किया गया है । पश्चिम में "लोकगाथा" के लिए "बैलेड" शब्द का प्रयोग किया गया है ।

2. लोकगाथा की विशेषताएं :

लोकगाथा की विशेषताएं इस प्रकार हैं :-

1. अज्ञात रचयिता 2. प्रामाणिक मूल पाठ का अभाव 3. संगीतात्मकता 4. स्थानीय रंग 5. मौखिक परम्परा 6. उपदेशात्मक का अभाव 7. अलंकृत शैली का अभाव 8. रचयिता के व्यक्तित्व का अभाव 9. सुदीर्घ कथानक 10. टेक पदों की पुनरावृत्ति 11. जन भाषा का प्रयोग 12. सामुहिक भावभूमि 13. अनेक रूपात्मकता 14. संदिग्ध 14. ऐतिहासिकता 15. धर्म निरपेक्षता आदि ।

3. लोकगाथा साहित्य का वर्गीकरण :

किट्ज ने लोकगाथाओं को दो भागों में विभाजित किया है :- 1. चारण गाथाएं 2. परंपरागत गाथाएं 3. इसी प्रकार से गमूर[6] ने लोकगाथाओं को 6 भागों में विभक्त किया हैं - 1. प्राचीनतम गाथाएं 2. कुटुंबिक गाथाएं 3. अलौकिक गाथाएं 4. पौराणिक गाथाएं

---

* प्राक्टिकल संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी, पृ.466

2 गाथं - गातव्यं स्तोत्रम् - भट्टाचार्य तारानाथ, वाचस्पत्यम्, चतुर्थ भाग, पृ.2570

3 अक: । यत् । वृ: । मरूत: । हविष्यमान् । गायत् । गाथ । सुत सोम: दुवस्यन् । -- मेक्समूलर [एडि] ब्वा. । पेज 732, ऋग्वेद, 1-13-167

4 "तदेषा अभि यज्ञगाथा गीयते" डा. द्विवेदी [एडि] सेल्कशन परम ब्राह्मणी 4 उपनिषद - ऐतरेय ब्राह्मण ।

5 "गाथा च गीतिका चापि तस्य सर्वोच्चते नृप: !

6 गूमर, एफ.बी, द पाप्युलर बेलड्स, पृ.135

5. सीमान्त गाथाएं 6. आरण्यक गाथाएं ।

डा. कृष्णदेव उपाध्याय[2] ने लोकगाथाओं के तीन वर्ग माने हैं । 1. प्रेमकथानक गाथाएं 2. वीरकथात्मक गाथाएं 3. रोमांच कथात्मक गाथाएं ।

इस दृष्टि से पाश्चात्य विद्वानों में किट्रिज चाइल्ड, गुमर, होगर्ट, सिजिविक तथा भारतीय विद्वानों में डा. सत्येन्द्र; डा. कृष्णदेव उपाध्याय आदि मुख्य हैं ।

4. बनजारा लोकगाथा का वर्गीकरण :

बनजारा लोकगाथाओं को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है - 1. धार्मिक गाथाएं 2. वीरगाथाएं 3. प्रणय गाथाएं 4. और रोमांच गाथाएं ।

4.1. धार्मिक गाथाएं :

धार्मिक लोकगाथाओं का मुख्य केन्द्र धर्म है । लोकगाथाओं के गायक प्रायः ढोल, थाली, ढफ आदि वाद्यों के साथ गाथा प्रस्तुत करते हैं । इन गाथाओं में पौराणिक देवी देवता, लोकदेवता, सन्त और महापुरुष, सती आदि धार्मिक गाथाएं सम्मिलित हैं । इन लोकगाथाओं के प्रारंभ में देवी देवताओं का स्मरण मंगलाचरण के रूप में किया गया है । एक होली गाथा में महादेव, राम, लक्ष्मण, शत्रुघ्न और हनुमान जी बनजारों के साथ फाग खेलने का वर्णन है । गाथा इस प्रकार है -

---

2. डा. उपाध्याय कृष्णदेव : लोक साहित्य की भूमिका : पृ. 149

फाल्गुन मयना, मसाड़ मयना घर-घर बाजे-बाजे आनंदा चाल सख्यों, आपण फागुण रम्मा, आपणा आपणे दल-कमला परवत सोमायोरे, महादेव आवाज कुधीरे कानों में । के महादेवुए, सोनो पारवती, फागुन खेलने कू । कुना देसान आया पतिया, अध्मलिया, लोडीगी । मार लेकलक, किगाकी यालू, रातू, घुमधु लठे । राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न से पाया गहोन । कमे महादेव सोनो रामजू, होली खेलने कू । खाडी खाडीधुन, बताकरी झागे में अया मेरे सुजन । झट-पट जामो बैगे धवे छाई, भमर बनाता ।

4.1.1. <u>राम, लक्ष्मण और सीता की लोकगाथा :</u>

शीतला पर्व के अवसर पर राम, लक्ष्मण और सीता के प्रति एक लोकगाथा गाई जाती है । इस गाथा में बनजारे राम, लक्ष्मण और सीता के प्रति प्रार्थना करते हैं । गाथा इस प्रकार है -

राम तारो गुडी अंधिरा नंदि पेर ।
रामा डाब भजन सीता भावे ।
रामा जगदे भजने लछमन भावे ।
रामा सीताबाई धुने कूरे छे ।
रामा लछमन भाई धुने भोले रो छे ।
रामा सूरे मुरा भेटेलो छे ।
रामा घारे चणीया धोने धारे छे ।
रामा भाग बंदारो वरो छे ।
रामा खिनव कसत दरो देखलेमा ।
रामा भद्राचलमेमा, मा बेटा छे ।
रामा समसीर झरे से अंकी बालो छे ।

4.1.2. <u>मरामा याडी (माता) की लोक गाथा :</u>

मरामा बनजारों की लोक देवता है । मरामा गाथाओं में देवासुर संग्राम का वर्णन है । इन गाथाओं में देवी को भवानी, चामुण्डी, तळजा आदि कहा गया है । लोक गाथा इस प्रकार है -

रामेर धरीती तारो पवाडा आयो, पवाडा आयोरे
रामेडा गोसाइडा ।
शिराजी केशेमा भायान जन्म दीनों, जन्म दीनोर रामेडा ~~गोसे~~/
गोसाई डा ।
भरर मिनारी तीन खबरड़ कीदी, तीन खबर कीदीरे रामेडा
गोसाईडा ।
तीन रे दाड़ेरो याडी वायदोरे मागी, वायदो मागी रे रामेडा
गोसाईडा ।
पाच करा दूधु, सवाख्य गहू दूधु, मार जनता हाल बंद ।
याडी मत अतरा रोलेन, मार जनतान छोड देणो ।
अन्न करन की सादु तार गुस्न छोड़ दीनो, कोर को डर भाई ।
आवयू मन तीन दाड़ेरो वायदो देणो, तो याडी मानी ।
कोती सादूवन अपनी देनो कोणी अपना देदीने ।
हाते पर हात मरलेनो, तीन दाडेर भाई, मार आडतुन आणो ।
हाते पर हात मार लेन याड़ी, हुआर गो एके दाड़े मा ।
सुब आदमीन खागी, तीसरे दाड़ेमा याडीस ।
गोमाता न खागी, दी दाड़ेस खागी रामेड़ा ।
दि दाड़ेर भाई गमेर पचाती गोवालेन शाये कत सादु ।
कन पर माती, तो सादु-अवडा हमनुन बड़ो पड़रो फिक ।
हमनोन कोई कुछको वचन कर, तमारे मरोवो मनक्या हूं

जेरे पंच गोमेरे पंचाती काक-हात जोडे, करनो
येन वैल करनो, तो कोई मागैची, पकोदेन त्यार ।
तो उट पडो साद् देवरे पूजा कर लीदो भंडारेर कोतळी
आते भाई परसाद, तो आई साद् कना ली दो वाट ।
तु आंगतेन माण्झोरो लवड़ो पकड़ छो दोकरो ।
पची सुआड़ मेनी, बार मिळी बुडिरे भाई मारन चेक ।
मैलो लवड़ा का जान साद्, भंडारो, फेकदीनो ।
याड़ी छोड़ दीनीरे सामेड़ा, गोसाइड़ा ।
आंग तोर भळगी मारो, साद् घणो खरो सोपड़ा ।
भंडारो पैके छम्मत, पड़े-छड़े उट वाट छन लीरे सामेडा ।
याडी औ गामे माछती आर निकळन सादर वाट ।
देखती वेसगी सामेडा गोसाइडा ।
ओर माछती नंगर बेसन सादुन एक सो रपया ।
आयोर भीदे, वाट लगाड़ दिने, सामेड़ा गोसाइडा ।
आंग आयो साद् याडी ओर सोबत वेगीरे सामेडा ।
कोई भळन घरेमा आवे, घरेर भाई आन याडी दरसण ।
दोरी तो जनगानी घरेमा छैनी सामेड़ा ।
पवारेर केस्ड-केस्डा विस हजार देन, साभे नातो वेपारे
तो भाडी, छोडन जान पकड़ लीदोरे सामेडा ।
साद् न लयनों आयोरे, तीन दाड़ेरा तारो हकम चड़गो,
तीन दाड़ेमा काई, जाखो करला सामेड़ा ।
एक दाड़ो वेगो - दी दाड, वेगे, तीन दाड़े भाई याडी ।
मार्मत्या साद् रो भळ्जो तोड़ जा वीरे सामेड़ा गोसाईड़ा ।

4.1.3. सेवा भाया की लोकगाथा :

सेवा भाया बनजारों का इष्ट गुरु है । सेवाभाया के लौकिक और अलौकिक कार्यों का वर्णन गाथाओं में मिलता है । प्रस्तुत लोकगाथा में सेवा भाया के अलौकिक कार्यों का वर्णन है । गाथा इस प्रकार है :-

गण गवुरे सेवालालेरो । सुकर जेता जंग देवारोर ।
गुरु घर राम जी नायकेरो । गूती कारी गुरुकाम वेरो ।
गूती कमदारी रामजी रेन । तिन पुत्र वेतेरे बोन ।
हत्थु, खेमा, भीमा, तिसरो । गूती कारी----- ।।

चिन्ता पड़ी राम जी नायकेन । मोरो भीमा आयोरे भायान ।
बामणेन घर बलारो । राम जी केरो देख बामणेन
जाणा लागे चित्तौड़ गढ़ेन । भीमारी सगाई करेरो । गूती ।।
बामण जारो चित्तौड़ गढ़ेन । जेराम जाधवेर घरेन ।
उसेरी छोरी भीमा सारू मागीरे । जेराम केरो बामणेन ।
वासी भविष्य देख दोबर । कन्यादान छोरी ओन देश । गूती ।।

4.2. वीर गाथाएं :

बनजारे वीर गाथा को * "पवाड़ेर" भाखो कहते हैं । पवाड़े का अर्थ है, किसी वीर का प्रशस्ति काव्य । वीर के पराक्रम, विद्वानों की बुद्धिमत्ता तथा किसी व्यक्ति विशेष के सामर्थ्य, गुण कौशल आदि का काव्यात्मक गेय वर्णन "पवाड़ा" कहा जाता है । ईसा की तेरहवीं शताब्दी

---

* डा. शर्मा गोवर्धन : प्राकृत और अपभ्रंश का डिंगल साहित्य पर प्रभाव, अनुसंधान प्रकाशन कानपुर, 1965 ईस्वी, पृ. 217 ।

में अब पवाडों का प्रचार महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, पंजाब और ब्रज प्रदेश में होने के संकेत उपलब्ध है ।[१] "हिन्दी शब्द सागर" कार ने पवाडे शब्द को संस्कृत प्रवाद [प्रवाद] से ही उत्पन्न माना है ।[3] राजस्थानी में "पाबूजी आदि के पवाडे, प्रसिद्ध है जिनका रचना काल 17 वीं शताब्दी माना गया है ।[३ 3]

शिवाजी के पुत्र संभाजी की मृत्यु के पश्चात् [सन् 1689 ईसवी] छत्रपति राजाराम [1670-1700] के काल में औरंगजेब मराठों पर आक्रमण कर दिया था । इस काल में संभाजी घोरपडे और धनाजी जाधव सेना में अग्रसर सरदार थे । ये दोनों सरदार सतारा जिले के कोरेगांव में औरंगजेब की छावनी पर हमला कर उन्हें परास्त कर दिया । इस घटना से बनजारे प्रभावित हुए । इस घटना का वर्णन सेवा भाया लोकगाथा में किया गया है । इस गाथा में शिवाजी और उनके दरबारी कवि भूषण का वर्णन भी मिलता है । गाथा इस प्रकार है -

> कूली शेय्या, चोयासी कोटेरी सेवा राजीया ।
> अत मंडेव डेरा, अनमेक्व कोह ।
> वल्याजोरे मेलमाई, सेवा करगो चोर ।
> काईक लूटे ज्वार, बाजरी, काईक लूट रागी ।
> धारयाजोरे मेल भाई, सेवा लूटे कानी,
> कूली रोट - या चोरासी कोट सेवार,
> अरबन होती, जरबन होती ।
> एक सेवान होते, तो सबकी सुन्नत होती ।
> कूली रोश्या, चोयासी कोटेरो, सेवाराजी चोर ।

---

* डा. माधवे प्रभाकर : मराठी और उसका साहित्य, पृ.26
2 डा. शर्मा गोवर्द्धन : प्राकृत और अपभ्रंश का डिंगल साहित्य पर प्रभाव पृ.218
3 नाहटा अगरचन्द : प्राचीन काव्यों की रूप परंपरा, पृ.96

2.1 जयमल-पत्ता की वीर गाथा :

जयमल पता की गाथा में शौर्य, कायरता, देशप्रेम, देशद्रोह, कुल गौरव, कुल कलंक और वीरता का वर्णन है । जयमल बिजनौर का राजा था । उसका जन्म राठौर वंश की मेरतिया शाखा में हुआ था । पता केलवाडे का राजा था । वह चन्दावत शाखा के गावत गोत्र में जन्म लिया था । जयमल और पता वीर राजा थे, वे लड़ाई के मैदान में घुसकर शत्रुओं का सामना किये थे । इनकी प्रशंसा स्वयं अकबर बादशाह ने किया था ।

चित्तौड़ के संग्राम में शालुंब्रा का राजा चन्दावत रहीदास मारा गया । उसके पश्चात् पत्ता ने मुगलों से भिड़ गया । उस समय उसकी आयु 16 वर्ष की थी । वीर बालक मुगलों की गोली से मारा गया । इसी प्रकार से जयमल भी अकबर की बंदूक की गोली से धरती पर गिर पड़ा । अकबर उस बंदूक का नाम "संग्राम" रखा । इसका वर्णन अबुल फजल ने अपनी "जहांगीर नामा" नामक पुस्तक में किया है । इस लड़ाई में जयमल और पत्ता की बहादुरी देखकर अकबर बहुत प्रसन्न हुआ था । उसने दिल्ली में किले के सिंह द्वार उंचे चबूतरे पर दोनों की प्रस्तर मूर्तियां स्थापित करवाई ।* सन् 1963 ईसवी में भारत भ्रमण हेतु आए फ्रेंच यात्री बर्नियर ने इन वीरों के स्मारक को देखकर एक पत्र लिखा ।[2] जयमल और पत्ता की लोकगाथा इस प्रकार है -

भूकिया तू जगे मां छुं केसी मोटी ।
चित्तौड़ गढ़ पर बरसत आयो जनाकत क गोतो ।
जंगल पत्ता हेगे सत्ता किरते सात ।
उत्तराक भूकिया रंगियो करेन हमनी बात ।
कवच भांदवो सुन्दरेरी भोजा घुकरोत ।
भूकिया जातेती बे वदेनी नाक ।

सामळरे बावतका तु सामळ भारी वात ।
किवेते जेमल फत्ता देगे साथ ।
तार सरीक कायर रेगे करेन असी वात
रेते ते वादेन तो दकळ देते हात ।
क्वत बांधो क्वतीरो कसन्या भूकिया
रकाओ राणा से जातुरी लाज ।
होती होती जगकरन होती किदो रायमल ।
रांड्या गोरिन पडा लायो भूकिया ।
असो तारो दादा गवार ।
वाचो हात बतायो भूकिया राठोड़ राज
जलमेर छोड़ भेजगी ।
उबे झ. मूंडर करन करेची वात ।
क्वत बांधो सुंदर रो भोजा ।
सत्ता वीसेन छेनी लाज ।

....

होती होती रायमळ कियो ।
अन होती को जी कि नोरे बावना ।
रायमलोत रांड्या गोरिन ब पण ।
गोसेन कर रिनो वात ।
क्वत बांध्यो क्वतीरो कसन भूकिया ।
रकाड गो राणा से जातुरी लाज ।

* 2.2 सेवाभाया की वीर गाथा :

लावड्या गोळवाला सेवाभाया अपना टांडा लादकर चल रहा था । मार्ग में देवगर के राजा ने उसे दरबार में आमन्त्रित किया । उस दरबार में नरसी पेठ के एक गवारी ने स्वयं को अपराजेय घोषित किये जाने की

मांग की । इस विषय पर सेवाभाया क ने स्वयं को रघुवंशी बताकर उसे ललकारा । दोनों वीर भिड़ गये और सेवाभाया का स्वर्गवास हुआ । इस समाचार को पाकर सेवाभाया का भाई नरसीपेठ पर आक्रमण कर दिया । इस लड़ाई में नरसीपेठ मर गया । सेवाभाया का भाई विजयी होकर लौट पड़ा । लौटते समय गंगा में बाढ़ थी किन्तु उसकी विनंती सुनकर गंगा शान्त हो गई । गाथा इस प्रकार है -

सतगुरु समस शारदा, सरस्वतीन धाऊं ।
देवी शारदान धायूर, धाऊं मां कंठेमां सरस्वती बोल ।
हरदो खोलन गाऊं, लावड़िया सेवा
मजल दर मजला लोठ ताडो लादलेर ।
चाला लावड़िया मजला-मजला लादियां ।
सिरपेन आयो, पारवतीन आयो, देवळेन आयोरे ।

\- -- - -- --

देवगढ से राजा, राजन बलायो -
लावडीया सेवा, राजा बतलायो दरबार रे
नरसीपेठेरो गवरी कोटी बोलियो --
समळ सेवा वात, ध रा जोतती ह टाकोर वाजो - चव्हाण गेरी जातरो ।
लावड़िया सेवा, राळो छाजो बावन कुळतीरे ।
सेवा नाइक बोलियो -- सामळ मारो वात
गामेरो बेतला वातरे बात ।
रजपूतेरे घरेमां जलम लीरो ।
वीरेरो छ क इटमान, सुरेरो छ अपमान ।
रघु कर जनम लीदो ।
कोनी मानूं वात, गाभिरा वाणी,
धुम मचायु बावन कुळापोरो ।

छदा चन्दा बड़तिया, दालूर कोट वतायो ।
वर छाट मेघवर छायो, गोलीरो मार लगायो ।
अट जेर घाडी समंत पुरिया,
कोसु मड़कायोर घाडी सेवेटा ।
सिर पड़ा हरिया बाडो मारे ।
...   .
सेवा नायक सामन कला, दनिया कच आयो ।
ससोर कच आयो, रघुवर ब जलम लीदो
पग न दियो पाछ लावड़िया ।
सेवा घूम मचायो बावन कक्तीरे ।
...   .
सेवान खबर लागी, वाघान पड़ागो कोर ।
चढ़ी बाघला जोरेती । पड़ी नंगारा ढोक ।
रघु रो वाघा, बस घड़व रणजित शोरे ।
चढ़ो वाघला जोरेती, छोड़ी परती घाव ।
सिंदुड़ा छड़तो आव, तुकारी पड़तो आवरे - आवड़ ।
लारं समत हलके आवरे ।
...   .
एकदाड़ एक राते मां परभाती ।
आत मलायो रघुरे वाघा ।
आन मलायो नरसो पेठे मारे ।
परभातीरो किलो फोडो, मानो तेड़ो ।
घालो लांवडिया घेरो, एक दिन एक रात मां ।
सेवारोवेर पेरो, रघुरो बाधा ।
वेर लियायो, सेवा नायकारो ।

4.3 प्रणय गाथाएँ :

भारत में प्रेमाख्यान की जो मध्यकालीन परम्परा है, उसका आधार लोकगाथाएँ ही हैं । इससे सूफी आख्यान भी बच नहीं सके । स्वयं सूफियों के प्रेमाख्यान काव्य का आधार लोकगाथाएँ ही है ।* बनजारा प्रणय गाथाएँ भी इसी मध्ययुगीन परम्परा के साथ है । बनजारों का निवास राजस्थान होने के कारण इनकी प्रेमगाथाएँ अन्य जनपदों की प्रेमगाथाओं के समान है । सभी प्रेमगाथाओं में युद्धों का वर्णन, सुन्दरियों को प्राप्त करने का वर्णन, संयोग और वियोग वर्णन प्रस्फुटित होता है ।

4.3.1. ढोला मारवाण्णीर साखी
[ढोला-मारवाणी की गाथा] :

राजस्थान, छत्तीसगढ़, और ब्रज प्रान्त में ढोला मारवाणी की गाथा प्रसिद्ध है । बनजारा समाज में भी यह गाथा प्रचलित है । गाथा इस प्रकार है -

ढोला नरवर देश के राजा का पुत्र था और मारवाणी पुगल के राजा पिंगल की पुत्री थी । इनका विवाह बचपन में हो जाता है । ढोला बड़ा होकर मालवा के राजा की कन्या रेवती से विवाह कर लेता है । मारवाणी पितृगृह में रहकर व्याकुल हो जाती है । वह एक दिन स्वप्न में अपने प्रियतम को प्यार का सन्देश भेजती है । किन्तु रेवती और उसके मंत्री भीखुसिंग संदेश वाहक को मरवा देते हैं । मारवाणी के प्रेम संदेश को सुनकर ढोला रेवती का सिर मुंड्वा देता है और उसे गधे पर बिठाकर नगरी के बाहर निकाल देता है । उसके पश्चात् ढोला मारवाणी के साथ रहता है । गाथा इस प्रकार है -

तिजे तेवारे री दने आयो, रे बापू मां मारोणी रो
सठो लग गौर रे गणवतौ ।

मारे पिताबेरेरी एकोदुडी भरीयमों मारोणी बाई ।
काड़ काड़ पेर लये साल सरोषा और गणवती ।
तिये तेवारे रोदने आये दने अगोच ने याडी मां ।
भारोपीरो, रुडो सणेच गोर रे गणवती ।
पाटे पिताबेरेरी ये काटडी भरीयमो ब मारोणी बाई ।
काडे काड पेर लाये लालसरो पावो ए गणवती
कीड़ी मूंगीरो जोड़ी लक्योरे भावानमां, मारोणी
रोकूडे सन मोर रे गणवती ।
तूं का कुर मररोये मारोणीबाई कलो प्यारी
सगाई छ ये दुलारो देसरे गणवती ।
कूणस दे सेती आव्ये, करं जण बाई तमतो,
जावोये कुणान देसरा गणवती ।
कुामण देसेती आइ ये मारोणी बाई
हमतो जमाय दुलारो देसेरी गणवती
लख-लख परवान गान दूवुंये करं जणबाई ।
तमको दिवोये दुलारो गढ़रे गणवती ।
सोने सरीकी रूप रे दुला भाया,
कवतेरी जातेरी गणवती,
कूणस देसेती आव्ये करं जण बाई
तम तो ब जावोए कुणन देसवे गणवती ।
सण-सण रे गोर माटी भीया,
तम तो जावोर ब कुणन देस रे गणवती
सण सणये मां मारणीबाई
हमतो जमाय दुलारो देसरे गणवती
काया कवतेरी जोतरे ढोलाई चिढ्ढा दिवगो
तम दो दुलारो गढ़रे गणवती ।

सण-सण रे दाडी हो बाबा,
तमतो आयोरे कुण देखरे गणवती ।
लख-लख परवान गान दूधुरे दाडी बाबा,
तम दिनयो रे ढोला रो गद्दे रो गणवती ।
सोच सोच देकलेर ढोला भरोसा,
वेतो तारो देसरे ।
से कोई सोचों ये मारवणी
कवनेरो काया छ तारी रे गणवती ।
मारोणी बाई ढोला लेन राजा,
दोई सुखीती जिंदगी गैबारे ।

2.4. <u>रोमांचक गाथाएं :</u>

इस वर्ग की गाथाओं में जादू-टोना, आकाशगमन, रूप परिवर्तन, परियों की गाथाएं मुख्य हैं ।

<u>सातपरीर साखी {सात परियों की गाथा} :</u>

उंबेरे देसेमां भोज राजा वेतोतो क्षीमरा ।
ओर सात बेटा रे क्षीमरा
ओर बागेमां दाड़ी सात परी क्षीमरा ।
हंगोळी करन चली जातीतो क्षीमरा ।
बागेर फल-फूल तोड़लेन जातीत क्षीमरा ।
राजार बेटा परीयून पकड़ेन क्षीमरा ।
बागेमां जपगे क्षीमरा ।
सेन नींद आवगी क्षीमरा ।
सेन नींद आवगी क्षीमरा ।

नवम् अध्याय :

बनजारा लोक कथा

0. प्रस्तावना।

लोकसाहित्य के रससिक्त गीत जहां हृदय को आप्लावित करते हैं, वहां हृदय को आप्लावित करते हैं, वहां कथाएं मनोरंजन के साथ ही मानसिक रस तृप्ति प्रदान करती हैं। मानव स्वभाव से ही कथाप्रिय है। कथा में मन को मोहित करने की अद्भुत शक्ति होती है। " लोकमानस ज्ञान को कहानी के रूप में ही स्वीकार करता है। जो ज्ञान कहानी के रूप में सरल नहीं वह लोकमानस में नहीं पचता। मानव जाति बुद्धि का कितना ही विकास कर ले, वह प्रत्येक नई पीढी में बाल-भाव से ही जीवन-चक्र का आरंभ करते हैं। बाल-भाव की शिक्षा-दीक्षा, रुचि और विचार का एकमात्र आश्रय कहानी है।"[1.] मानव मन की सहज करुणा एवं कौतूहल कथा के प्राण हैं। " कथा मानव जीवन का उत्स है और कौतूहल भी। जीवन स्वयं सत्य है और कथा उसका प्रतिबिम्ब।"[2.]

लोककथाओं का मूलाधार लोक-मानस होने के कारण इनमें हमारी आदिम मनोवृत्तियां, पारंपरिक आस्था और विश्वास संचरित होते रहते हैं। ये हमारी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, आदिम मानव मनोवृत्तियों, आस्थाओं और विश्वासों, रीतिरिवाजों एवं संस्थाओं के अध्ययन की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होती है। स्टिथ थामसन ने लोककथाओं की महत्ता को व्यक्त करते हुए उन्हें मानव-जाति के सांस्कृतिक इतिहास का महत्वपूर्ण भाग बतलाया है।[3.]

---

1. डा. अग्रवाल वासुदेवशरण : भारत की लोककथाएं - सीतादेवी, भूमिका, पृ. 5 ।
2. डा. शर्मा विनयमोहन : दृष्टिकोण, पृ. 9 ।
3. स्टैइथ थामसन : दी फोक टेल्स, पृ. 448.

1. लोकगीत और लोककथा :

यद्यपि लोकगीत और लोक कथा दोनों ही लोकसाहित्य के अभिन्न अंग हैं, फिर भी दोनों के रूपांकन में मौलिक अंतर है । "लोक साहित्य का जो सुदीर्घकालीन पट इस देश में बुना गया है, उसमें लोककथाएं ताने के समान और गीत बाने के समान है । इसी ताने बाने में लोकमानस का बहुरंगी चित्र व्यंजित है ।"[1]

2. कथा और कहानी

कथा और कहानी में अंतर है । कल्पना पर आधारित कहानी " कथा " कहलाती है, फिर भी जो कहानी धार्मिक अभिप्राय से अनुष्ठान के साथ सुनाने के लिए हो, वह कथा कही जाएगी ।[2] कहानी लोकमानस की मूल भावना के रूप को स्थूल प्रतीक से अभिव्यक्त करती है, अत: कहानी में कुछ ऐसा रोचक वर्णन होता है, जिसमें अविवेकी और निर्जीव प्राणी भी बिल्कुल मनुष्यों की भांति ही कार्य करते हुए दिखाई देते हैं और उनका लक्ष्य नैतिक उपदेश देने का रहता है ।[3]

3. लोककथाओं की प्राचीनता

वेद विश्व-साहित्य की प्राचीनतम पुस्तक है । उसके कितने ही वृत्त कहानी के रूप में हैं । यहां कहानियां भी हैं और कहानी के बीज भी ।[4]

1.

2. डा. धीरेन्द्र वर्मा (संपा.) हिंदी साहित्य कोष, पृ.351.

3. इन्साइक्लोपीडीया ब्रिटानिका, खंड 9, पृ. 21

4. डा. अग्रवाल वासुदेवशरण : "धूमिल फूल " की भूमिका ।

ऋग्वेद में शुनः शेप का प्रसिद्ध आख्यान है, जिसमें वरुण की शुनः शेप द्वारा प्रार्थना की गई है ।[1] अपाला और आत्रेयी के नारी आदर्श का चित्रण भी इसमें मिलता है ।[2] संवाद-सूक्तों में पुरुरवा - उर्वशी संवाद यम-यमी संवाद [3] और सरमा - पाणिष संवाद [4] व सरमा - पणिष संवाद [5] महत्त्वपूर्ण हैं । इसमें पुरुरवा - उर्वशी की कथा को विद्वानों ने " स्वान - मेडन " मानक रूप के अंतर्गत रखा है ।[5क] एनसाइक्लोपीडिया आफ रिलीजियन एन्ड एथिक्स के अनुसार यह सुंदर और व्याख्यात्मक पुराख्यान प्राचीन मूल का आख्यान है । यह विविध रूपान्तरों में विस्तृत भू-भाग में फैला हुआ है ।[6] पैंजर ने भी बताया है कि यह कथा संभवतः विश्व की प्राचीनतम प्रेमकथा है ।[7] इस प्रकार हमें वेदों में वे बीज और बिंदु और किसी सीमा तक उनका विकास मिलता है, जो संसार की लोक संस्कृति और लोक कथा-कहानी के एक विशद भाग का मूलाधार है ।

वेदों की बीज कहानियाँ पुराणों की कथाओं में पल्लवित पुष्पित हुई है । ब्राह्मण ग्रंथों में - " शतपथ ब्राह्मण " में -- पुरुरवा और उर्वशी की कथा प्राप्त होती है । सृष्टि का विकास-क्रम, आर्य-आर्येतर

---

1. ऋग्वेद : 1·24·30
2. ऋग्वेद : 8·9·1
3. ऋग्वेद : 10-85
4. ऋग्वेद : 10-10
5. ऋग्वेद : 10-130

5क. स्कैन्डीनेवीयन लीजेन्ड्स और फोक टेल्स, पृ· 174·

6. इन्साइक्लोपीडीया आफ रीलिजियन एंड इथीक्स, खंड-12, पृ·125
7. पैंजर, एन·एम· : दी ओसोयन आफ दी स्टोरी, पृ· 245

जातियों के संघर्ष, जलप्लावन आदि लौकिक आख्यान शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ में लिखे गए हैं ।[1] शतपथ ब्राह्मण में पुरूरवा-उर्वशी की कथा वेदों के समान प्रणयगाथा के रूप में पाई जाती है, लेकिन उसका सुंदर रूपक कालिदास के विक्रमोर्वशीय नाटक में मिलता है । ऐतेरेय ब्राह्मण में शुनःशेप का आख्यान भी पाया जाता है ।[2] शतपथ में दधीचि की हड्डियों से बने वज्र द्वारा वृत्रासुर के वध की कथा[3] तथा देवासुर संग्राम की कथा[4] पाई जाती है । पुराण -युग में वेदों के कथाबीज निश्चित रूप से विकसित दिखते हैं । लेकिन इस विकास-प्रक्रिया में बहुत फेर बदल हुए । वेदों में जो देवता प्रमुख थे वे गौण हो गए और उनका स्थान नए देवताओं ने ले लिया । संहिता काल के मुख्य देवता इस युग में कुछ गौण हो गए हैं, अथवा गौण प्रधान हो गए हैं और कहीं कहीं नए देवता भी कल्पित किए गए हैं ।[5] वेदों की कथाएँ पुराणों में लोकदृष्टि से देखी जाती है ।[6]

उपनिषदों में भी अनेक कथाओं का सूत्रपात हुआ है । कठोपनिषद में नचिकेत की कथा है जिसमें यमराज से उसने तीन वर मांगे थे ।[7] केनोपनिषद् में अग्नि और यक्ष की रमणीय कथा दी गई है ।[8]

1· शतपथ ब्राह्मण : 11-5-1
2· ऐतरेय ब्राह्मण : 7-3
3· शतपथ ब्राह्मण : 2-1-6
4· ऐतरेय ब्राह्मण : 1-4-23
5· उपाध्याय बलदेव : वैदिक साहित्य और संस्कृति पृष्ठ 260
6· डा· सत्येन्द्र : ब्रज लोक साहित्य का इतिहास, पृ·396
7· कठोपनिषद : 12-13
8· केनोपनिषद : 3-4-5

4. **बृहत्कथा :**

संस्कृत में लोक कथाओं का सबसे प्राचीन और विशाल ग्रंथ बृहत्कथा है। डा॰ बूलर के मतानुसार " बड्ड कहा " की रचना ईसा की दूसरी शताब्दी में हुई थी । इसका सबसे अधिक प्रचलित और प्रख्यात अनुवाद सोमदेव का " कथा सरित्सागर " है ।[1] इसमें 18 खंड और 24 अध्याय हैं । इसका अंग्रेजी में सी॰एच॰ टौनी ने अनुवाद किया, जिसका 10 भागों में संपादन पेंजर ने किया है ।[2]

---

1. उपाध्याय बलदेव : वैदिक साहित्य और संस्कृति, पृ.346
2. हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, षोडश भाग, पृ.111

5· बंजारा लोक - कथाओं का वर्गीकरण

विषय और शैली की दृष्टि से कथाओं के वर्णनात्मक तथा अभिनयात्मक ऐसे दो भेद होते हैं । इस दृष्टि से प्राचीन तथा अर्वाचीन विद्वानों से इस पर विस्तृत विवेचन किया है । प्राचीन वर्गीकरण के अनुसार कथाएं दो वर्गों में विभाजित होती हैं --

1· कथा - कवि कल्पना द्वारा निर्मित जैसे बाणभट्ट की " कादंबरी " तथा दंडी का "दशकुमार चरित" ।

2· आख्यायिका - जो इतिवृत्तात्मक है, जिसका आधार इतिहास है, जैसे बाणभट्ट का " हर्षचरित" आदि ।

इस संदर्भ में आनंद वर्धनाचार्य तथा हरिभद्राचार्य का वर्गीकरण महत्वपूर्ण स्थान रखता है ।

आनंदवर्धनाचार्य ने कथा के तीन भेद बताए हैं --

1· परिकथा - यह केवल इतिवृत्तात्मक होता है । अभिनवगुप्त के मत से इसमें विचित्र वर्णनात्मक वृतांत भी रहता है ।

2· सकल कथा - इसमें समस्त कथा का सन्निवेश आरंभ से अंत तक उपलब्ध होता है । हेमचंद्र ने इस प्रकार की कथा को रचित कहा है ।

3· खण्डकथा - इसमें एक देश प्रधान कथा होती है ।

हरिभद्राचार्य के द्वारा किया हुआ कथाओं का वर्गीकरण निम्न प्रकार है --

क· अर्थ कथा - इन कथाओं में अर्थ की प्राप्ति का उद्देश्य प्रमुख रहता है ।

ख. काम कथा – इनमें प्रेमविषयक वर्णन अधिक पाया जाता है ।

ग. धर्मकथा – इनमें धार्मिक आख्यानों की प्रधानता पाई जाती है ।

घ. संकीर्ण कथा – इन कथाओं के प्रेमी – मध्यम – दोनों लोकों की इच्छा रखने वाले कहे जाते हैं ।

इस प्राचीन वर्गीकरण के अतिरिक्त आधुनिक विद्वानों द्वारा भी कथाओं का वर्गीकरण किया गया है । डा. कृष्णदेव उपाध्याय तथा डा. सत्येन्द्र का नाम इस क्षेत्र में विशेष रूप से प्रचलित है ।

डा. उपाध्याय ने लोककथाओं का वर्गीकरण इस प्रकार किया है--
{1} उपदेश कथा {2} व्रत कथा {3} प्रेमकथा {4} मनोरंजन कथा {5} सामाजिक कथा {6} पौराणिक कथा ।[1]

डा. सत्येन्द्र ने ब्रज लोकसाहित्य का अध्ययन में कहानियों को प्रमुखत: {1} गाथाएं {2} अवदान {3} कहानियां ऐसे तीन भागों में बांटकर साधारणत: कथाओं के आठ भाग माने हैं --

{1} गाथाएं {2} पशु पक्षी संबंधी {3} परी की कहानी {4} विक्रम की कहानी {5} बुझौवल संबंधी {6} निरीक्षण गर्भित कहानियां {7} साधु पीरों की कहानियां {8} कारण निर्देशक कहानियां ।[2]

इस दृष्टि से बंजारा लोककथाओं का विषयगत वर्गीकरण निम्न प्रकार से है --

1. उपदेशात्मक कथाएं
2. प्रेमकथाएं
3. पारिवारिक कथाएं
4. अद्भुत कथाएं
5. मनोरंजक कथाएं
6. संकीर्ण कथाएं

---

1. उपाध्याय कृष्णदेव : लोकसाहित्य की भूमिका, पृ.161
2. डा. सत्येन्द्र : ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, पृ.83

उपदेशात्मक कथा :

गोसाई बाबा

एक दाड़ लखन सिंह सास ससरेर घर जारोतो :	एक दिन लखनसिंह ससुराल जा रहा था ।
वारे मैं पर ओत एक साधु दकायो :	रास्ते पर उसे एक साधु मिला ।
वू साधुन हाथ जोड़न राम-राम कीदो :	उसने साधु को प्रणाम किया ।
साधु तोन काई चाणो पूछो :	साधुने कहा-तुझे क्या क चाहिए" ।
लखनसिंह बाल-बच्चार आसीस मांगा:	लखनसिंह सन्तान के लिये आशीर्वाद मांगा ।
साधु तांड़ीन लेन आ को :	साधु ने उसकी पत्नी को लाने को कहा ।
वू दूसरे दाड़ और गोण-गोन लेनू साधु कनगो । :	वह दूसरे दिन पत्नी के साथ साधु के पास पहुँचा ।
साधु को तार गोण्णीर माते पर परी बेटी चा :	साधु ने कहा -"तेरी औरत के सिर पर परी बेठी है ।
वू परी तार अवलादेन खालेरीचा :	वह परी तेरे सन्तान को खा रही है
साधु एक लकडी मंत्रन दोनो :	साधु एक लकडी को मंत्र पढ़कर दिया
अ दी मंदळिया भी दीनो :	दो तावीज भी दिया ।
लकडी सांद्रुरर माते पर बांध दीनो	लकडी को औरत के सिर पर बांध दिया ।
मंदीळ्या दोई कोनू पर लटका दीनो:	दोनों कानों पर तावीज लटका दिया
आशीश देन एक मंत्र पढ़ो । :	आशीर्वादके देकर एक मंत्र पढ़ा ।
और पच्चा लखनसिंहरे बार बेटी बार बेटा वे :	उसके पश्चात लखनसिंह के बारह लड़के और बारह लड़की लड़किया हुई ।

साधुर असीसे ती लखनसिंह सुखीवेगो	: साधु के आशीर्वाद से लखनसिंह सुखी हो गया ।
वू सेन धरम की दो	: वह सबको दान देने लगा ।
और औलाद भी धर्म ती सकी वेतीती	: उसकी औलाद भी दान-धर्म में सुखी थी
वाँदूर बेटा राजा बने	: उनके लड़के राजा बने ।
वाँदूर बेटी राणी बणी	: उनकी लड़कियाँ रानियाँ बनी ।
देसेमाँ उंदिर नाम मोटो वो	: देश में उनका नाम हुआ ।
साधुर नाम गोसाई बाबा वेगो	: साधु का नाम गोसाई बाबा हुआ ।
जकतो गोसाई बाबार पूजा की दे	: सभी लोग गोसाई बाबाकी पूजा करने लगे ।

....

<u>प्रेमकथा :</u>

राजकुमारीर साखी

एक राजा वेतो तो	: एक राजा था ।
और ऐकबेटी वेती ती	: उसकी एक लड़की थी ।
एक दाड़ एक हाथी आयो	: एक दिन एक हाथी आया ।
हातो राजार बेटीन पाड़ लीदो	: हाथी राजा की बेटी को उठा लिया ।
वोती राजा लड़ो	: उससे राजा लड़ाई किया ।
हाती और बेटीन छोडो कोनी	: हाथी उसकी बेटी को छोड़ा नहीं ।
वू जङ्गली माँ धासि गि गो	: वह जंगल में भाग गया ।
राजा ढिंढोर पिटा दिनो	: राजा राज्य में नगारा पिटवा दिया
हातीन मारन राजकुमारीन लाये वाकेन आदो राज दियूं को	: उसने कहा कि जो व्यक्ति हाथी को मारकर राजकुमारी को लायेगा उसे आधा राज्य दूंगा ।

घणा आदमी जंगले माँ जान मदगे	:	कई लोग जंगल में जाकर मर गये ।
राजेर भाण्जो जंगले माँ गो	:	राजा का भानजा जंगल में गया ।
और लार एक कोमटिया भी गो	:	उसके साथ एक बनिया भी गया ।
राजेर भाण्जो हातीन मार नाको	:	राजा का भानजा हाथी को मार दिया ।
राजकुमारीन सोबत लेन आरोतो	:	राजकुमारी को साथ लेकर आ रहा था
वाटे पर राजकुमारीन तरस लागी	:	रास्ते में राजकुमारी को प्यास लगी ।
राजेर भाण्जो वावड़ी माँ वुतरो	:	राजा का भानजा कुएं में उतरा ।
और कोमटिया ओन वावड़ी माँ धकेल दीनो	:	बनिया उसे कुएं में गिरा दिया ।
कोमटिया राजकुमारीन लेन राजा कन आयो ।	:	बनिया राजकुमारी को राजा के पास लेकर आया ।
कोमटिया राजाती आदो राज मांगो	:	बनिया राजा से आधा ब राज्य मांगा ।
राजकुमारी से ब वाते बापेने के दीनी	:	राजकुमारी राजा से सारी बात समझा दी ।
राजा को मटियार माता समरायो	:	राजा ने बनिया का सिर मुंडवा दिया ।
गद्दा पर बेसारो	:	गधे पर बिठाया ।
ओन चूनेर भट्टीमाँ बळानाको	:	उसे चूने की भट्टी में जलवा दिया
पछ राजार भाण्जो आयो	:	बाद में राजा का भानजा आया ।
राजा ओन आदो राज देता को	:	राजा उसे आधा राज्य दे दिया ।

....

पशुओं की कथा :

साक्यार वाती [लोमड़ी की कहानी]

एक साक्या वेतोतो	: एक लोमड़ी थी ।
जंगले मां होती एक गोर लाती दोस्ती वेगी	: जंगल में एक भेड़ से उसकी दोस्ती हो गई ।
दोई भळन जंगलेमां चरेन जाते ते	: दोनों मिलकर जंगल में चरने जाते थे ।
एक दाड़ गोरलाता तरस लागी	: एक दिन भेड़ को प्यास लगी ।
दोई एक तळावकन गे	: दोनो एक तालाब के पास पहुंचे ।
गोरला पाणी पीये लागो	: भेड़ पानी पी रहा था ।
साक्याओन तळाव मां धकेल दीनो	: लोमड़ी ने उसे तालाब में गिरा दिया
गोरला मरगो	: भेड़ मर गया ।
गोलावरर धासन आये	: गड़रिये दौड़कर आये ।
गोरलान कटाड़े पर लाये	: भेड़ को किनारे पर ले आये ।
साक्या रोये बब लागो	: लोमड़ी रोने लगी ।
गोलावार पूछे कसेन रोरीची	: गड़रिये पूछे तू क्यों रो रही है?
साक्या बबब जवाब दीनो	: लोमड़ी ने कहा
मार दोस्त मरगो	: मेरा मित्र मर गया ।
ओर वात साम्भन गोलावार भी रोये लाग	: उसकी ब बात सुनकर गड़रिये भी रोने लगे ।
गोलावारर गोलो जोड़े मां धासरीती	: तब उनकी भेड़ बकरियां मैदान में दौड़ रही थी ।
जन गोलावारून साक्या को	: तब गड़रियों से लोमड़ी बोली ।
तमार गोरलो धासरोच	: तुम्हारी भेड़ बकरियां दौड़ रही है ।
गोलावार गोरलो फेरेन धाटे	: गड़रिये भेड़ हकालने दौड़े ।
मौका देकन साक्या गोरलान खाड़े मां खींचे लेगो	: खाड़ीमांबबब मौका पाकर लोमड़ी भेड़ को खाई में खींचकरब ले गई ।

अद्‌भुत कथा :

रींचेर वाजी [भालू की कथा]

एक जंगल मां एक छोरी गावड़ी चरारीती : एक छोरी जंगल में गाय चरा रही थी ।

वोन एक रींच पाड़ लेगो । : उसे एक भालू उठाकर ले गया ।

कोन ओर गवो मां लेगो : उसे उसकी गुफा में ले गया ।

ओत ओन खामेन से चीजे लान दीनो : वहां उसे खाने की सामग्री लाकर दिया

ओर भाई छोरीन ढूंडन आये : उसके भाई उसे ढूंढने आये ।

रींच छोरी तल्वा चाटे लागो : भालू लड़की के तलवा चाटने लगा ।

छोरी तल्वा नरम पड़गो । : छोरी के तलवे नरम हो गये ।

उन चालेर मसकल वेगे : उसे चलना नहीं आता था ।

गुफा मां रोती बसती ती : वह गुफा में रोती हुई बैठती थी ।

रींच सिकारेन गो : भालू शिकार के लिए गया ।

ढूंडते-ढूंडते ओर भाई गवो मां आये : ढूंढते-ढूंढते उसके भाई गुफा में पहुंचे ।

भाईन देकन, भेन रोवे लाग : भाई को देखकर बहन रोने लगी ।

भाईन भेनेनी कांदे पर पाड़ ली दो : भाई ने बहन को कांधे पर उठा लिया

जल्दी-जल्दी गवोर भार निकलो : जल्दी-जल्दी गुफा के बाहर निकला ।

अतरा मां रींच आयो : तभी भालू वहां आ पहुंचा ।

दूदूमां वेर पड़गो : उनमें लड़ाई हुई ।

लड़ाई मां रींच एक भाईन मार नाको : लड़ाई में भालू एक भाई को मार डाला ।

जन दूसर भाई रींचेन मारना के : तब दूसरे भाई भालू को जान से मार डाले ।

मरतो-मरतो रींच छोरी आम दीटो : मरते-मरते भालू लड़की की ओर देखा ।

छोरीर भाई रींचेर मसाण भादि : लड़की के भाई ने भालू की समाधि बनाई

उंदाड़ी छोरी गावड़ी चरायेर भूलगी : उस दिन से लड़कियाँ गाय चराना भूल गई ।

......

<u>मनोरंजक कथा :</u>

<u>परीर साखी [परियों की कथा]</u>

एक राजा वेतो तो : एक राजा था ।

वोर सात बेटा वेते ते : उसके सात पुत्र थे ।

वोर गढ़े माँ एक बाग वेतो तो : उसके किले में एक बगीचा था ।

बागे माँ एक मोर वावड़ी वेती ती : बगीचे में एक बड़ा कुआँ था ।

रात क्णा सात परी ओमा हंगोळी करेन आती ती : रात्री के समय सात परियाँ उसमें नाहने के लिए आया करती थी ।

हंगोळी करलेन फळ तोड़लेन जाती ब ती : स्नान करके वे फल तोड़कर ले जाती थी ।

ई वात राजा न मालम वेगी : यह बात राजा को मालूम हुई ।

राजा मोटे बेटान परियून पकड़ेन मेलो : राजा ने बड़े लड़के को परियों को पकड़कर लाने के लिए भेजा ।

वोन नींद आवगी : उसे नींद आ गई ।

दूसरे दाड़ दूसरो बेटा गो : दूसरे दिन दूसरा बेटा गया ।

तीसरे दाड़ तीसरो बेटा गो : तीसरे दिन तीसरा बेटा गया ।

वोन भी नींद आवगी : उसे भी नींद आ गई ।

झूमरे/झरह

चारवें दाड़ चौतो बेटा गो : चौथे दिन चौथा बेटा गया ।
ओह भी ठाले हाँते ती होरो आयो : वह भी खाली हाथ से लौटकर आया ।
पाँचवे दाड़ पाँचवों बेटा गो : पाँचवे दिन पाँचवा लड़का गया ।
वूसी परीयून पकड़ो कोनी : वह भी परियों को पकड़ नहीं सका ।
छटवों बेटा ढाल-तलवार लेन गो: छटवां बेटा ढाल तलवार के साथ गया ।
उसेन भी नींद लागगी : उसे भी नींद आ गई ।
परी ओर ढाल-तलवार पाड़ लेगी : परियां उसकी ढाल-तलवार उठाकर ले गई ।
सातवें दाड़ सेती नातक्या भाई गो : सातवें दिन सबसे छोटा भाई गया ।
वू तार एक चाकू वजी मरचार भूकी लेगो : वह साथ में एक चाकू और मिरची ले गया ।
बागे माँ जान चटी आंगळी काट ली दो : बागमें पहुंचकर अपनी छोटी उंगली काट लिया ।
ओपर मरचार भूकी लगाड दीनो : उसपर मिर्च लगा दिया ।
ओन नींद आह कोनी : उसे नींद नहीं आई ।
परीआन हंगोळी करे लाग : परियां कुएं में स्नान कर रही थी ।
राजकुमार अंदून पकड़ लीदो : राजकुमार ने उन्हें पकड़ लिया ।
पच सात जणा सात परीऊंती वाया कर लीदे : उसके पश्चात् सातोंह राजकुमार सात परियों के साथ विवाह कर लिए ।

....

व्यापारिक कथा :

लाखा बनजारा

एक लाखा बनजारा वेतो तो	::	एक लाखा बनजारा था ।
और दाई एक लाख बळद वेतेते	:	उसके पास एक लाख बैल थे ।
वू लदणीर काम करता तो	:	वह लादनी का काम करता था ।
और टांडे मा बीस हजार आदमी वेतते ।	:	उसके टांडे में बीस हजार बनजारे थे ।
लाखा वेपारेन जारो तो	:	लाखा व्यापार के लिए जा रहा था ।
वू धिवडारेर अद्धो लगगो	:	वह धिवडार के झील को पार कर लिया ।
चालतो-चालतो वू पाटन नंगरो कन आयो	:	चलते-चलते वह पाटन नगर के पास पहुँचा ।
ओतेर राजा ओर एक लाख बळदून थाम दीती	:	वहाँ का राजा ने उसके एक लाख बैलों को रोक दिया ।
ओर आदमी चमके लाग	:	उसके साथी डरने लगे ।
लाखा राजार दरबारे मां गो	:	लाखा, राजा के दरबार में उपस्थित हुआ ।
वू राजा तो विनती की दो ।	:	उसने राजा से विनंती की ।
राजा ओतो एक लाख सोनेर रुपया मागो	:	राजा ने उससे एक लाख स्वर्ण मुद्राएं मांगी ।
लाखार दाई एक लाख रुपया को निवेतेते	:	लाखा के पास एक लाख स्वर्ण मुद्राएं नहीं थी ।
जन राजा जमानत मागो	:	तब राजा ने उससे जमानत मांगी ।

लाखा सूर्य, चन्द्र देवेती विनती कीदो	:	लाखा ने सूर्य और चन्द्रदेव से विनती की।
दोई देव आसमानेती हेट उतर आये	:	दोनों देवता गगन से नीचे उतरकर आये।
सूर्य, चान्द लाख सोनेर रुपयार राजान दे दोने	:	सूर्य औरचन्द्र राजा को दो लाख स्वर्ण मुद्राएँ दे दिये।
राजा लाखान छोड़ दीनो	:	राजा लाखा को छोड़ दिया।
सूर्या राजान रीसेती दीटो	:	सूर्य भगवान राजा को गुस्से से देखा
वह बलन भसम वेगो।	:	वह जलकर भस्म हो गया।

....

दशम् अध्याय :

बनजारा लोकोक्तियाँ

बंजारा लोकोक्तियाँ

अनुभव, अनुभूति और विचारों के आधार पर लोक की उक्ति लोकोक्ति है । लोक की यह उक्ति लोक छाप पाने पर ही लोकोक्ति बनती है ।[1] लोकोक्ति लोककथा और लोकगीत से पृथक होती है, लेकिन उसमें कथा की रोचकता और गीत की गति एवं ध्वनि होती है । इसका क्षेत्र बहुत व्यापक है । लोकोक्ति केवल कहावत ही नहीं है । हर प्रकार की उक्ति लोकोक्ति है । पहेली भी लोकोक्ति है ।[2]

इनमें गागर में सागर भरा रहता है । इनमें जीवन का सत्य बड़ी खूबी से प्रकट होता है । इसी कारण इन्हें डा॰ वासुदेवशरण अग्रवाल ने " मानवी ज्ञान के चोखे और चुभते हुए सूत्र " कहा है ।[3] जीवन के भिन्न - भिन्न अनुभव सर्वसाधारण जन के मानस को प्रभावित करके उसकी अभिव्यक्ति से संबंधित ढंग को उत्कर्ष प्रदान करते हैं । ये ही अनुभव लोकोक्तियाँ हैं ।[4] ये मानव विज्ञान के घनीभूत रत्न हैं, जिन्हें बुद्धि और अनुभव की किरणों से फूटने वाली ज्योति प्राप्त होती है ।[5]

लोकोक्तियों की प्राचीन परंपरा

संस्कृत साहित्य लोकोक्तियों का अखंड भंडार है । वेदों और उपनिषदों में भी इनकी कमी नहीं है । महाकवि कालिदास, माघ,

---

1. डा॰ बड़थ्वाल पीताम्बरदत्त : गढवाली पखाणा, भूमिका ।
2. गुप्त कृष्णानंद : लोकवार्ता पत्रक, सं॰ 3, पृ॰ 1
3. डा॰ अग्रवाल वासुदेवशरण : पृथिवीपुत्र, पृ॰ 111
4. अवस्थी सत्यव्रत : लोकसाहित्य की भूमिका, पृ॰ 280
5. परमार श्यामसुंदर : भारतीय लोकसाहित्य : पृ॰185 ।

भारवि और हर्ष की अमर कलाकृतियों में उनका सुंदर प्रयोग मिलता है। पंचतंत्र, हितोपदेश आदि नीति कथाग्रंथों में प्रायः नीति संबंधी लोकोक्तियों का यत्र तत्र प्रयोग किया गया है। संस्कृत में लोकोक्ति को सुभाषित या सूक्ति कहा गया है, जिसका अर्थ सुंदर ढंग से कहा गया कथन होता है।[1] सूक्ति शब्द की उत्पत्ति " उक्ति " से हुई और साधारण जनता ने इसको " लोकोक्ति " में बदल दिया।

वेदों की भाँति ब्राह्मणग्रंथों में भी लोकोक्तियों की भरमार है। जैसे -- " अश्रुं कृत्वा भवति। " या " सत्यं वा धर्मः। " उपनिषदों में ये लोकोक्तियां प्राक्तोक्तियों का रूप धारण करके प्रस्तुत होती हैं। " आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति।"[2] तथा " विद्या मृतमश्नुते।[3]

रामायण महाभारत तो लोकोक्तियों से भरे हुए हैं।

रामायण में --

" आम्रं छित्वा कुठारेण निम्बं परिचरेत्तु कः।
यश्चैनं पयसा सिञ्चेत् नैवास्य मधुरो भवेत्।"[4]

अर्थात आम के पेड को कुठार से काटकर नीम की परिचर्या कौन करे; नीम को दूध से सींचने पर भी वह मीठा नहीं होता। तथा " सेनापतयो यशो गन्ता, न तु योद्धारमर्थतम।"[5] अर्थात् - " लडे सिपाही नाम सरदार का।"

पंचतंत्र, हितोपदेश आदि ग्रंथों में नीति संबंधी उक्तियां बहुत अधिक मात्रा में उपलब्ध होती हैं। " आयसैः आयसं छेद्यम्;

---

1. " "सुभाषितेन गीतेन, युवतीनां च लीलया।
मनो न रमते यस्य स योगी अथवा पशुः॥

2. बृ. उपनिषद - 2-4-5।
3. ईशावास्योपनिषद् -- 11
4. रामायण -- 2-35-16
5. महाभारत - 5-168-28।

" कंटकैनेव कंटकम् " तथा " शठे शाठ्यं समाचरेत् " ऐसी ही उक्तियां हैं, जिनमें नीति या उपदेश भरा पड़ा है ।

प्राकृत साहित्य भी ऐसी उक्तियों से समृद्ध है, जिसमें लोकानुभूति की व्यंजना होती है । महाकवि राजशेखर के लिखे हुए " कर्पूर मंजरी " में " हत्थ कंकण किं दप्पणेण पेक्खी " अर्थात हाथ कंगन को आरसी क्या ; अपभ्रंश में " को तं पुसर णिडालड लिहियउ " अर्थात ललाट में लिखे हुए को कौन मिटा सकता है ;[1] जैसे सूक्त तथा सुंदर उदाहरण मिलते हैं ।

1. लोकोक्तियों की विशेषताएं

लोकोक्तियों में भावों की मार्मिकता घनीभूत होती है और लघु प्रयत्न से विस्तृत अर्थ प्रकट होता है । अत: सूत्ररूपता, बोलचाल की भाषा, वाणी का चटपटापन तथा रचयिता का अज्ञात होना आदि लोकोक्तियों की कुछ निजी विशेषताएं हैं । इसके अतिरिक्त समासशैली, गागर में सागर भरने की प्रवृत्ति, विशाल भाव शैली, लघुता, अनुभूति और निरीक्षण, सरलता गद्यात्मकता तथा पद्यात्मकता[2] लाघवत्व, सरल भाषा तथा लोकरंजकता [3] भी इनकी विशेषताओं में समाहित होते हैं ।

कहावतों का स्रोत अत्यंत प्राचीन है और संसार की सभी सभ्य-असभ्य जातियों में इनका प्रचार है । इनके प्रयोग से वाणी के विधान में तीव्रता तथा प्रभाव उत्पन्न होता है, भाषा सशक्त

---

1. पुष्पदंत महापुराण - 24-8-8 ।
2. डा. उपाध्याय कृष्णदेव : लोकसाहित्य की भूमिका, पृ. 188 ।
3. परमार श्यामसुंदर : भारतीय लोकसाहित्य, पृ. 185 ।

होती है, श्रोताओं पर व्यापक प्रभाव पड़ता है तथा लोकमानस के अनुभवों एवं ज्ञान का प्रकाशन होता है। सांसारिक व्यवहार पटुता और सामान्य बुद्धि का जैसा निदर्शन कहावतों में मिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। कहावतें मानव स्वभाव और व्यवहार कौशल के सिक्के के रूप में प्रचलित होती हैं और वर्तमान पीढ़ी को उत्तराधिकार के रूप में पूर्वजों से प्राप्त होती है। जिस देश के लोकजीवन में प्रफुल्लता, उत्साह और व्यवहार-पटुता की धारा निरंतर गतिशील रहती है, उस देश में कहावतों का प्राचुर्य सामान्यत: देखने में आता है।[1] अत: सामान्य लोक जीवन में कहावतों का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है।

संस्कृत-साहित्य में कहावतों को सुभाषित कहा गया है। इनमें सुंदरता, चमत्कार, प्रभविष्णुता तथा काव्यमयी उक्तियाँ पाई जाती हैं, किंतु संस्कृत के आचार्यों ने लोकोक्ति और कहावत में सूक्ष्म-सा भेद किया है। काव्य के अंतर्गत ये लोकोक्तियाँ अलंकार के रूप में व्यवहृत होती हैं। किसी लोकविख्यात कहावत के अनुसरण से यह लोकोक्ति अलंकार माना जाता है।[2] अरबी भाषा में " मसाल " शब्द कहावत के लिए प्रयुक्त होता है, जिसका अर्थ उपमा - अलंकार ही है।[3] हिंदी में भी कहावतों को लोकोक्ति मानकर अलंकार के अन्तर्गत रखा गया है।[4]

---

1. डा॰ सहल कन्हैयालाल : राजस्थानी कहावतें, पृ॰ 51
2. " लोक प्रवादानुकृति लोकोक्तिरीति भण्यते। "
   -- दीक्षित अप्पयशास्त्री, कुवलयानंद, पृ॰ 90 ।
3.
4. "जहँ कहानवति अनुकरन लोकाउक्ति "
   -- कवि पद्माकर : पद्माभरण, पृ॰ 257 ।

बनजारा समाज में कहावतों का स्रोत प्राचीन है । इनके प्रयोग से बनजारा बोली में तीव्रता तथा प्रभाव उत्पन्न होता है और इनके अनुभवों का प्रकाशन होता है । बनजारे प्राय: इनका प्रयोग गीतों में, नसाब §न्यायालय§ में या सीख देते समय करते हैं । बनजारा लोकोक्तियों का वर्गीकरण इस प्रकार हो सकता है -

1§ मुहावरे

2§ लोकोक्तियाँ

3§ कहावते और

4§ पहेलियाँ

<u>बनजारा बोली में प्रयुक्त लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे</u>

2· <u>मुहावरे :</u>

1·	आटे दाळेर भाव मालम वेणो	:	आटे दाल का भाव मालूम होना
2·	आँकी माँ धूळ नाकेचो	:	आँखों में धूल झोंकता है
	आँकी माँ धूळ नाकणो	:	आँखों में धूल झोंकना
3·	अड्डा जमाणो - अड्डा जमाणो	:	अड्डा जमाना - अड्डा जमाना
4·	आँकी कसेन काढ़रोची-	:	आँखें क्यों निकाल रहा है -
	आँकी काढ़णो	:	आँखें निकालना ।
5·	आँगळी पकड़न हात पकड़रोच	:	उँगली पकड़ ली पहुँचा पकड़ रहा है -
	आँगळी पकड़न हात पकड़नो		उँगली पकड़कर पहुँचा पकड़ना ।

6. सकेर वांसळी बजारोच : चैन की बंसी बजा रहा है
सकेर वांसळी बजाणो : चैन की बंसी बजाना ।

7. आंकी कसेन रातड़ पीळ कररोची : आँखें क्यों लाल पीली कर रहा है
आंकी रातड़ पीळ करनो : आँखें लाल पीली करना ।

8. मुंडिरवड़ी पडीस - : मुँह के बल गिरेगा - मुँह के बल
मुंडिरवड़ी पड़णो : गिरना ।

9. एक लकड़ीती हंकालरोच : एक लकड़ी से हाँक रहा है -
एक लकडीती हंकालना : एक लकड़ी से हाँकना ।

10. कानेती कान खबर लागेनी : कानों कान खबर नहीं होती
काने ती काने ताणी खबर न लागणो : कानों कान खबर न होना ।

11. कानेर ब घणो कांचो छ - : कान का बहुत कच्चा है - कान का
कानर काचो वेणो : कच्चा होना ।

12. कान भरदीने : कान भर दिये - कान भरना ।
कान भरदेणो

13. कुत्रार ब मौत मरणो : कुत्ते की मौत मर गया -
कुत्रार मौत मरणो : कुत्ते की मौत मरना ।

14. टांग उखड़गी : पैर उखड़ गये - पैर पखड़ जाना ।
टांग उखड़णो

15. वोको वोको देकाच - : टेढ़ा-टेढ़ा देखता है - टेढ़ी ।
वोको वाको देकणो : आँख देखना ।

16. वींटागो - : पाला पड़ गया - पाला पड़ना ।
वींटाणो

17.	वेगोजको काम बिगड़ो -	:	बना हुआ खेल बिगड़ गया -
	वेगोजको काम बिगड़णो	:	बना खेल बिगड़ना ।
18.	करम फूटणों -	:	करम फूट गया
	करम फूटणो	:	करम फूटना
19.	मोतेन लार लेलदो -	:	सिर पर कफन बांध लिया
	मोतेन लार लेणो	:	सिर पर कफन बांधना ।
20.	खाल्हाती खबर लीयूं -	:	जूतों से खबर लूंगा -
	खाल्हाती खबर लेणो	:	जूतों से खबर लेना ।
21.	घुस-घुस कररोच -	:	घुस-फुस कर रहा है -
	घुस घुस करणो	:	घुस फुस करना ।
22.	माते पर केसार लीदोच -	:	सिर पर उठा लिया -
	माते पर केसार लेणो	:	सिर पर उठाना ।
23.	सोळ घाटेर पाणी पीदो -	:	घाट-घाट का पानी पीया
	सोळ घाटेर पाणी पीणो -	:	घाट-घाट का पानी पीना ।
24.	निशाणी चूकगी -	:	दांव चूक गया - दांव चूकना
	निशाणी चूकणो		
25.	चारीवड़ी तो पत्तो	:	चारो खाने चित्त [गिरना] ।
	पड़ जाणो ।		
26.	सळगाच -	:	चुगली खाता है -
	सळगाणो	:	चुगली खाना ।

27.	मायेर दूध हरदे आय -	: छठी तक का दूध याद आयेगा -
	मायेर दूध हरदे आणो	: छठी का दूध याद आना ।
28.	येत ओकोढ़ेन आवचा -	: यहाँ [illegible] झक मारने आयेगा -
	ओकोढ़ेन आवण्टो	: झक मारना ।
29.	दमे माँ दम आवगो -	: दम में दम आ गया -
	दमे माँ दम आवणो -	: दम में दम [illegible] आना ।
30.	जम्मी पर टाँग टकरी कोनी	: जमीन पर पैर नहीं टिक रहा ।
	जम्मी पर टाँग न टक्णो	: जमीन पर पैर नहीं टिकना ।
31.	कूढी ज्वाब दीनो -	: मुँह तोड़ ज्वाब दिया -
	कूढी वाट केणो	: मुँह तोड़ ज्वाब देना ।
32.	क्सेन जान खाजररोची -	: क्यों जान खाये जा रहा है -
	जान खाणो	: जान खाना ।
33.	जाने तौ लड़गो -	: जान पर खेल गया -
	[illegible] जाने तौ लड़गो	: जान पर खेलना ।
34.	कूढी वस पीगो -	: जहर का कड़ुवा घूँट पी गया
	कूढी वस पीणो	: जहर का घूँट पीना ।
35.	धोका देनाको	: अँगूठा दिखा दिया
	धोका देणो	: अँगूठा दिखाना ।
36.	कोढ़ीर भाव वकरोच	: टके का ऊँट बीक रहा है -
	कोढ़ीर भाव वक्णो	: टका ऊँट बिकना ।
37.	दूदेयाँ ढ़ाँग क्सेन माटरोची	: टाँग क्यों अड़ा रहा है -
	दूदेमाँ ढ़ाँग मारतो	: टाँग अड़ाना ।

38.	तेल देख – लेकर धार देक – तैलेर धार देकणो	:	तेल देख तेल की धार देख ।
39.	थूक चाटणो	:	थूक कर चाटना
40.	दान्त खाट करदोयूं	:	दान्त खट्टे कर दूंगा –
	दान्त खाट करणो	:	दान्त खट्टे करना ।
41.	दान्त क्सेत चावटोची –	:	दान्त क्यों पीस रहा है –
	दान्त चालणो	:	दान्त पीसना ।
42.	दाळे मां काळो छ	:	दाल में काला है –
	दाळे मां काळो आणों	:	दाल में काला आना ।
43.	गोढार भी काळ रचा –	:	दिवाल के भी कान होते हैं –
	गोढार कान रेणो	:	दिवाल के कान होना ।
44.	जूनी वाते मत काड़ –	:	गड़े मुर्दे नहीं उखाड़ों –
	जूनी वाते न काढ़णो	:	गड़े मुर्दे उखाड़ना ।
45.	नाक काट्यायो – नाक काटणो	:	नाक काट आये – नाक काटना ।
46.	नाम डूबोक्यायो –	:	नाम डूबा ब आये – नाम
	नाम डूबोक्णो	:	डूबाना ।

....

3. लोकोक्तियाँ : ....

1.	कन आन धमगो	..	आसमान से गिरा खजूर में अटका ।
2.	अनकल्ता छणो बोला	..	अधजल गगरी छलकत जाय ।
3.	मोटो आदमी पतेकी वात	..	ऊँची दुकान फीका पकवान ।
4.	तू मरसतो दनिया सको	..	आप मरे जग प्रल परले होई ।
5.	मर जो सरग दकावच	..	बिना अपने मरे स्वर्ग नहीं दीखता ।
6.	तार जीभ आचतो अगिर गाम आचो	..	आप भला तो जग भला ।
7.	जल्दीर काम भूतेर काम	..	जल्दी का काम शैतान काम ।
8.	वल्टो चोर नायकेपर तलाब	..	उल्टा चोर कोतवाल को डाटे ।
9.	आंदू मां काणो राजा	..	अन्धों में काना राजा ।
10.	एक हाते हो हतेळी वाजेनी	..	एक हाथ से ताली नहीं बजती ।
11.	न मरा तो काय करतो	..	मरता क्या नहीं करता ।
12.	जूकीदो जूं भरणो	..	जैसी करनी वैसी भरनी ।
13.	कुत्रार पूछडो वाक्टे वोक	..	कुत्ते की पूंछ टेढी की टेढी ।
14.	कत नायकन कत जांगड	..	कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली ।
15.	काम निकळेती मतलब भलो बलाही काई	..	आम खाने की पेड़ गिनने ।
16.	अनकल्तान काई दकायेनी	..	काला अक्षर भैंस बराबर ।
17.	चोरेर सोबतीती चोर वेगो	..	कोयला की दलाली में हाथ काले ।
18.	बगलेमा छोरा टांडे में ढिंढारा.		बगल में छोरा शहर में ढिंढोरा ।
19.	जो खाड़ खोदया ओम उज पड़या	..	जो गड्ढा खोदेगा, वही गिरेगा ।
20.	रामेर जोड़ी एक आंधो एक काणो	..	राम मिलाई जोड़ी, एक अन्धा एक काणा ।

21. धोतो चणा वणो बाजा .. थोथा चना बाजे घना ।

22. वक्त पड़े बांका तो गधान .. मतलब को गधे को बाप
केणो काका .. बनाना पड़ता है ।

23. भसा जको कुत्रा काटेनी .. जो गरजता है सो बरसता नहीं ।

24. घरे माई बाग भार साळ्या.. घर में शेर बाहर गीदड़ ।

25. घर-घर घूळेट चूलो .. घर-घर चूल्हे मिट्टी के ।

26. घरेर भेदी लंका बाळो .. घर का भेदी लंका ढावे ।

27. माकी चकोडू .. चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय ।

28. कोमट्या बेपारेया - .. बनिया ढेली दे पर भेली न दें ।
मामा केदेनी

29. धाट दाड़ेट चांदणी फर .. चार दिनों की चांदनी फिर
उज अमासेर रात .. अंधेरी रात ।

30. चोर-चोर मासोर भाई .. चोर-चोर मौसेरे भाई ।

31. चोरीन उमरेटी सीता जोरी.. चोरी और सीना जोरी ।

32. दम तूटा जेतूणी आस छूटेनी.. जब तक सांस तब तक आस ।

33. कवडा मूंढो अवड़ी वाट .. जतने मुंह उतनी बातें ।

34. जेर जोर छ वारोज मक्क .. जिसकी लाठी उसकी भैंस ।

35. लबारीर कतरी टांगी .. झूठ के पांव कितने ।

36. जल्दी धरम सवा लाखे बराबर .. तुरन्त दान महाकल्याण ।

37. सळिया पर वागेर आंकी .. तिनके की ओर पहाड़ ।

38. जसो देस वसो भेस .. जैसा देश वैसा भेष ।

39. राड़ी बळगी पणन बळकोनी गी .. रस्सी जल गई पर ऐंठ नहीं
गई ।

40. छगमेर गटला आच दकरवा .. दूर को ढोल सुहावतें ।

41. दूदेर बळो जामण फूंक मारन.. पीणो ..	दूध का जला छाछ फूंक फूंककर पीवे ।
42. नसीब आंग-आंग चालाचा ..	तक्दीर चार कदम आगे चलती है ।
43. नाणक्या मूंडो मोट बात ..	छोटे मुंह बड़ी बात ।
44. नादानेर दोस्ती जानेर घात..	नादान की दोस्ती जी का जंजाल
45. पापेर घुड़िया फूटन रिया ..	पाप का घड़ा फूटके रहता है ।
46. पांच आंगळी बराबर रेनी ..	पांचों उंगलियां बराबर नहीं होती ।
47. ताडि मां रेन नायकेही वैर ..	पानी में रहकर मगर से वैर ।
48. जारे बारा बुंडा भी पोसा जाच..	गेहूं के साथ घुन भी पिस जाता है ।
49. सिकारीर टांगे मां ससिया.. पड़नो ।	बिल्ली के भाग से छींका टूटा ।
50. बेसजेती बौर ब तोड़नी भलो..	बैठे से बेगार भलो ।
51. लागतो शिकारो न तो भिकारी ..	लग जाय तो तीर नहीं तो तुक्का ।
52. मारेवाले न बुढ्ढो काय मोटियार काय ..	बुढ्ढा मरे भले चाहे जवान मुझे हत्या से काम ।
53. चूं बोया चूं - हकूज काटनो ..	जैसा बोये वैसा काटे ।
54. बोकी आंगळीरवन बिर घी निकळेनी ..	टेढ़ी उंगली बिना घी नहीं निकलता ।
55. वांदरेन काई मालम अदरे के रो संवाद ..	बंदर क्या जाने आदरक का स्वाद ।

4. कहावतें

पिये मंद हो गये धुंद । : (मद्यपान किया, बेहोश हो गए,
आगेर माटीन मळगी सेंड । अगले आदमी को अवसर दे दिया।)

स्वच्छंद खानपान एवं परिश्रमी जीवन के कारण बंजारे हृष्टपुष्ट होते हैं। राजपूती वंश का अभिमान होने के कारण उन्हें जाति पराक्रम का गर्व रहता है -

गोरमाटी, खा बाटी । : (बंजारा खाता है रोटी और
हातमां लै काठी । हाथ में रखता है लाठी ।)

निरुद्योगी मनुष्य के संबंध में कहा जाता है --

डाढू भाई रो हासिया । खेते भाई रो वासीया ।
मळाये माईरो नासीया ।

(गायों के झुंड में सांड, खेत में उगाई हुई घास और पंचायत
में बेशर्म के समान होते हैं ।)

किसी बात की सत्यता सिद्ध होने पर कहा जाता है --

छोरीन छेडार हूंस । : (लड़की को पल्लू पसंद ।
टांडरीन घूंघटेन हूंस । स्त्री को घूंघट पसंद ।
माटीन वातेर हूंस । मर्द को बात पसंद ।
वेळ आवेगी कते कट समय आने पर कट जाएगी
जारतार कूंच । तेरे पैर की नस ।)

घर का आदमी जब घरवालों को तकलीफ देता है तब कहा जाता है --

पाम्णी पाम्णी चोर मार : (चोर को मारने के लिए कहा तो
कतो, घरेर गावडीन मारन घर की गाय को मार कर पैर
टांग तोड मको ते कच । तोड़ दिया ।)

किसी बाहरी दिखावट में फंस जाने पर निम्न कहावत का प्रयोग किया जाता है --

कूं कसगी बाई, कसी मतारो,: ‖ ऊपरी तडक भड़क देखकर कैसे
झल्लर मल्लर देखकर फंस गई । फंस गई ।‖

सुख के दिन आने पर खुशियों में ही डूब जाने तथा भावी दुख की चिंता न करने पर निम्नलिखित कहावत का प्रयोग किया जाता है --

खाचो खादो आचो पिदो : ‖ खूब दीवाली मनाई,
अदो अमदन । तो दाड कोसान अब होली मना ‖
कोनो गै अब तू जाण ।

काम कम, बकवास ज्यादा करने पर कहा जाता है --

बाई बाई, केन हेट टांगे, : ‖ बकवास करके टांग हिलाते
खुदलेन आयेचो तूं । तू खाली हाथ आया ।‖

परंपरा को छोड़कर उल्टे मार्ग का अवलंब करने पर कहा जाता है --

अरकडी तरकडी जात पुरानी।: ‖ ऐसी वैसी जात पुरानी ।
आपण कूं पंडावलो कुरानो । आप उल्टे तो कुरान कैसे पढोगे!‖

इस वर्ग की कुछ अन्य कहावतें निम्न लिखित हैं --

काक कावर बकरा कादूं । : ‖ एकदम बकरे जैसा हलाल करूं या
मल काढू फेर । चमड़ी निकालू - तेरे लिए मैं
तारे वास्म वेटे छूं ढेर । मजबूर होकर बैठा हूँ । ‖

राम राम तू आयो । : ‖ राम राम, तू आया ।
तारो सोबतरो किमगो । तेरा साथी कहां गया !‖

धम धम नाचरो नारो । : ‖ नाच रही है नारी उधर और
कूणी ढागे किमजारो । मुझे ले जा रहे हैं किधर ! ‖

बंजारा लोकोक्ति-साहित्य में उपदेश और नीति से संबंधित कहावतें अधिक मात्रा में पाई जाती हैं । समस्त लोक-जीवन का सार इनमें मिलता है ।

पाप छिप नहीं सकता और सत्य प्रकट होकर ही रहता है । इस अर्थ की कहावत है --

पापेरो बलबला पानीमो	: {पाप का बुलबुला पानी में
बोल ।	बोलता है ।}

मतलब की बातें छोड व्यर्थ की बातें करने की प्रवृत्ति की भर्त्सना निम्न कहावत में मिलती है --

मरद मरद की जकडी ।	: {मर्द मर्द की जकडी है ।
टांग छोड जड पकडी ।	टांगे छोड कर जड मत पकड ।}

असत्य के सो पर्दों के पीछे से भी सत्य दिखाई दे जाता है । कहावत कहती है -

चटका किदो मटकाये ।	: {चटके पटक करके मटक रहे थे ।
भीया भांदो पटकाये ।	तुम्हें सफेद रूमाल से बांध दिया है}
आवटी वेळ एक एकन लटकाए।	ठहरो, अब समय आया है । मैं
	एक-एक को लटका दूंगा ।}

किसी के कर्मों का श्रेय कोई अन्य ले तो निम्न कहावत कही जाती है --

बाकन माये मिटको ।	: {बेटा मारे मेंढक, बाप तीरंदाज ।
बाप तिरंमदास ।	बाप की हाथ तो बेटा हाथ
बाप हागी की ।	सुंघाए ।}
बेटा सुंग हात ।	

सच्चाई कभी छिप नहीं सकती । बुरे कर्मों का हिसाब चुकाना ही पड़ता है । यही बात निम्न कहावत में कही गई है --

ये नसाबो दूढैसे छपाटा ।
मार मत लपाटा ।
आवगेच टैम, किम जावेगी बैटा ।

मनुष्य अपनी योग्यता के अनुरूप संकल्प करता है और उसी के अनुरूप कर्म करता है । इसके लिए निम्नलिखित कहावत है --

मानेन पान । बेसरमीन घान ।	: [मानी को मान और बेशरम को घान]

कमाये कोई और खाए कोई तो " बैठो पोसे कुत्ते खाय" के अर्थवाली निम्नलिखित कहावत प्रचलित है --

येर नसाबो कमाये मोई ।
खागे हरकोई । आंग पाच
देखतो रिये कोई ।

अपने काम में स्वयं उदासीन और निष्क्रिय रहने पर कहा जाता है --

खाकीया वेई आव भर हर । : खाकीया भाईतो निकळो तूं कडी । न बोली तूं कडी तो मारो कांई उकडी ।	[भरा हुआ नाला बहता आ रहा है । नाले में से एक गीदड निकला । गीदड ने न कहा तो मेरो क्या हानि होगी:]

आपस में लड़ने से हानि होती है --

मर हर छूटो वाळ । वाळेमा वाडो आव ढिरो ।
ढिरार टांग वाळ मारो । वाळेर टांग ढिरा मारो ।

सफलता प्राप्ति हेतु धैर्य की आवश्यकता होती है --

चावळ सोज होतूनीन । : (चावल पके ही नहीं, थाली चाट
कणकीर कांच निकल आई । चाट कर उसकी चमक निकाल दी ।)

बडी हानि पर ध्यान न देकर थोडी हानि पर पश्चाताप करना--

मारो भणमो बळगीन । : (पुआल का ढेर जल गया तू एक
पूळी सारु कसेन रायेच । आटे के लिए रोता है ।)

दूर के ढोल सुहावने --

आम दिखाच कोट सुंदर ।: (आम बाहर से सुंदर दिखता है,
भाई अंदर जर मार । लेकिन अंदर से कीडों से भरा है ।)

घमंडी का गर्व नष्ट होने पर --

घरमटडी पागडी कू । : (सजी पगडी बांधने वाले तूने अब
मारो दस दरियारो घोडेरी योंही क्यों पगडी लपेट ली ?
जीन कूं ढिल हुई । फौजी घोडी की जीन अब ढीली
कैसे हुई ?)

विविध विषयों से संबंधित कहावतें निम्नलिखित हैं --

किसी वस्तु को बाहरी दमक-चमक का भेद खुल जाने पर -

पाड दिये सोनेरी डळी : (उठा कर देखा तो सोने की डली,
फोडन दिये एक नोकळी । लेकिन फोडने पर राख निकली ।
बामण देखन मारोतो, ब्राह्मण समझकर बुलाया, वह डोम
ढेड निकळो । निकला ।)

निकम्मे से निकम्मा मिले तो काम बन चुका --

आळसीर संग हिजडा करो: (आलसी और हिजडे का साथ ।)
कच ।

अवसर से लाभ उठा लेने पर --

एक घालू एक घालू,	:	(एक डालूं, एक डालूं, कहकर
कैन दो घाल दिनो कच ।		दो डाल दिरन)

अब पछताऊ होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत ।

बापन बेटा दिन । बागे	:	(बाप बेटा दोनों मिले -
मारे तिन । बाग खागे		शेर मारे तीन - शेर बेटे को
बेटान । बाप बनगोहिन ।		खा गया)

किसो छोटी बात से काम बिगड़ जाना --

घट मटडी रचो पागडी,	:	(सज धज से बंधी हुई पगडी,
मरमटडी सी मूंछ,		तनो हुई मूंछ मुंह में आई,
वू मूं फेरे आई । सरो की		रेशम जैसी दाढ़ी में धूल कैसे
दाढी मां कू धूड भराई ।		भर गई ?)

5. <u>पहेली</u>

पहेली बुझौवल में मनोरंजन का उद्देश्य तो निहित होता ही है, साथ ही बुद्धि की परीक्षा भी ली जाती है । डा॰ फ्रेजर के अनुसार जब वक्ता को अपनी बात स्पष्ट शब्दों में कहने में कोई बाधा आई होगी तभी पहेलियों की रचना हुई होगी ।[1]

संस्कृत साहित्य में प्रहेलिका दो श्रेणियों में विभक्त है, जिन्हें क्रमशः अन्तर्लापिका और बहिर्लापिका कहते हैं । कुछ पहेलियों में प्रश्न का उत्तर भी जुड़ा रहता है और कुछ में उत्तर अलग से दिया जाता है । वैदिक ऋषियों ने अनेक ऐसी ऋचाओं की रचना की है, जिनका अर्थ विचारपूर्वक ही लगाया जा सकता है ।[2] गीता में श्रीकृष्ण द्वारा किया गया सृष्टि का वर्णन गूढ है, जिसका अर्थ समझना टेढी खीर है ।[3]

5.1. <u>पहेलियों का वर्गीकरण</u>

बंजारों में पहेलियों को " फोडेर साकी " कहते हैं, जिसका अर्थ है कूट प्रश्नों के उत्तर देना । इनका विषयगत विभाजन निम्न प्रकार से होगा --

1. प्रकृति तथा कृषि संबंधी 2. प्राणी-जीव संबंधी
3. भोज्य और खाद्य पदार्थ - 4. घरेलू वस्तु संबंधी ।
5. अंग प्रत्यंग संबंधी 6. मिश्र विषय ।

---

1. फ्रेजर जे.जी. दी गोल्डन बाउ, खंड.9, पृ. 121.
2. चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा, द्वे शीर्षे सप्तहस्ता सो अस्य ।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति, महादेवो मर्त्यामाविवेश ।।
--डा. उपाध्याय कृष्णदेव : लोकसाहित्य की भूमिका, पृ.207 पर
3. ऊर्ध्वमूलमधः शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ।।-श्रीमद्भगवद्गीता, ।:

प्रकृति तथा कृषि संबंधी

इस वर्ग की पहेलियों की संख्या ही सबसे अधिक है ।

झाड झांबरो फूल गोदळो ।	:	(झाड झूलता है और फूल झरते हैं । उत्तर – हरो धनिया)
खितरो समा गद गोलास बेटा	:	(पत्तों के जंजाल में छिपा रहता है गोल बेटा । उत्तर –बैंगन
तिक्की मुंडी तिंबु राजा अन् खाता अन् पाणी न पिता ।	:	(तिरछी मुंडी तिंबु राजा न खाता है न पीता है । उत्तर– पशुओं की एक बीमारी"घनेरिया
एक चिड़िया पहनी पाजामा चूड़ीदार । उसमे छिपे पिल्ले हजार ।		(उत्तर – खसखस)
थाळी भर रुपिया, तराप मोजेनी तराप मोजेनी ।	:	(थाली में भरे रुपए हजार, गिनते गिनते हो गए बेजार । उत्तर – तारे)
काळे खेतेर धहीर छोठी पडी।	:	(काले खेत में दही की हंडी गिर पडी । उत्तर –कपास)
एक मायेर तीन बेटा,तीनीर सर एक । तीन सरेन रुमाल बांधे , छुंगला छोडे चार ।	:	(एक माता के हुए तीन बेटे, तीनों के सिर एक । तीन सिर को रुमाल बांधे और चुंगला छोडे चार । उत्तर– धान बोने की तिफणी)
रातळो घोडो हरो पूछ । तीन आवतो तारे बापेन पूछ ।	:	(रात के घोडे को हरी पूछ । उत्तर न सूझे तो अपने बाप से पूछ । उत्तर-- हरी मिर्च ।

नानक्या रो माटी, मो धोती : (छोटा सा आदमी, पहने धोती -
पैर । उत्तर - मक्का ।

<u>प्राणी-जीव संबंधी</u>

पशु पक्षी का मानव जीवन से घनिष्ठ संबंध है । बंजारा जीवन में तो उनका बहुत अधिक महत्व है । इनसे संबंधित पहेलियां निम्नलिखित हैं --

पान छेनी, सुपारी छेनी : (पान खाया, सुपारी खाई, चूना
मुंडर गैती लाली । लगाया और ओठ लाल कर लिए ।
उत्तर - तोता ।

नाणक्या सो माटी थालम् : (छोटा सा मनुष्य माथे पर फूल लटक
धुलम् कळसाई माथे पर फूल । कर करता है थालम धुलम ।
उत्तर - मुर्गा)

अडभिंती पर पडभिंती पर : (आड भिंती पर पाड भिंती पर
पडनाण्या, तुम मा-याती हम डेरा लगाए, मार देते हो तो
धिंगाणी करिया । हम गड़बड़ करते हैं ।उत्तर-बिच्छू ।

काळे खेतम लीयेर डाग । : (काले खेत में पीला दाग ।
उत्तर - धामीण -सांप)

<u>भोज्य और खाद्य पदार्थ संबंधी</u>

भोज्य और खाद्य पदार्थों से संबंधित पहेलियां निम्नलिखित हैं --

माई मांस, ऊपर हाडका । : (अंदर मास और उपर हड्डी ।
उत्तर - नारियल)

याडी याडी बावडी देख, : मां मां बावडी देख, बावडी के
बावडी उपच झाड देख । ऊपर पेड देख, पेड के ऊपर फल देख
झाडे पर फड देख, फळेन खान फल को खाता मुंह देख ।
मुंडो देख । उत्तर - अमरूद ।

घरेलू वस्तु संबंधी

पांचीम पंच मेलू, दसेमां मिठी ।	:	{पांच पंच मिलकर, दसका मेल करना । उत्तर - रसोई }
दिन गोळा वेजाव, रात लांब वेजाव ।	:	{दिन में गोला होता है और रात में होता लंबा । उत्तर - चटाई }
सुकी वावळी मां मिटको बोलरो	:	{सूखी बावडी में बैठकर तोता बोलता है । उत्तर - घंटा ।}
उठ परभाती तारो छगड लेन चोस	:	{सुबह उठी और अपने प्रियतम को साथ लेकर चलो । उत्तर - गगरी }
घाटो घाटो लान कावेन वेसगो ।	:	{गडबडी से चला और कोने में बैठा । उत्तर - जूते }
फळेन वेल खाईजा ।	:	{पेड ने ही फल खा दिया । उत्तर - दीपक ।}

अंग-प्रत्यंग संबंधी

बंजारा समाज में मनुष्य शरीर के विभिन्न अंगों से संबंधित पहेलियाँ भी हैं --

नानकी देवळी तोताबाई नाचस	:	{छोटे से घर में मैना नाचती । उत्तर - जीभ }
नानकी सो हांडीम । चावळ्या चावळ्या ।	:	{छोटी सी हंडी में गडबडी मचाता । उत्तर - दांत ।}

मिश्र विषय

मां बेटीन जण बेटी मायेन पाडी हिंड ।	:	॥ मां और बेटी दो, मां को छोड बेटी निकली बाहर । उत्तर - सीप और मोती ।॥
जमीन जड पालो पेड सो फुलोरो एकज फल ।	: ॥	जमीन में जड, पेड में पत्ता और फूल - एक ही लगा है फल । उत्तर - जायफल ।॥
काळी गावडीर कळजो मिठ	:	॥ काली बूढी का दिल मीठा उत्तर -मधुमक्खी का छत्ता ।॥
छो मिनार छोरीर नव मिनार पेट ।	:	॥ छ: महीने की छोरी, नौ महीने का पेट - उत्तर -बाक॥
भारेती आए तीन पामण दो भार बेसगो, एक माई पेशगो ।	:	॥ बाहर से आए तीन मेहमान, दो बाहर बैठ गए, एक अंदर चला गया । उत्तर - दो जूते और एक मनुष्य ॥

उपसंहार

उ प सं हा र

आन्ध्र प्रदेश में रहनेवाले बनजारों को लम्बाड़ी नाम से भी पुकारा जाता है। यह शब्द इस जाति का नमक व्यवसाय के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध को द्योतित करता है। बनजारा शब्द वाणिज्य शब्द से व्युत्पन्न हुआ है। लावानी, लामानी शब्द जहाँ उसके नमक व्यवसाय से ही सम्बन्धित हैं वहाँ लदेणिया शब्द उनके लादने की व्यवसाय को प्रकट करता है।

बनजारा जाति यायावर जाति है और इसका वाणिज्य व्यवसाय भी घुमंतुओं की प्रकृति का है। बनजारे की गाडी के साथ उसका सारा परिवार रहता है और परिवार के सदस्यों के भाँति उसके पशु भी रहते हैं। पशुओं के क्रय-विक्रय का व्यवसाय भी इसका अपना है। किन्तु इस जाति का मुख्य व्यवसाय सामान इधर-उधर ढोना है। सामान ढोने का काम बैलों से भी होता है और ऊँटों से भी सम्भवत: घोडे और गधे भी काम में आते हो। लाखा बनजारे को अनुश्रुति से यह सिद्ध होता है कि वह एक लाख बैलों से लदने का काम करता था।

लादनेवाले बनजारों की सूचना नजीर की इस पंक्ति से भी मिलता है - "सब ठाट पड़ा रह जायगा जबलाद चलेगा बनजारा"।

धीरे-धीरे यह जाति भारत के प्राय: सभी भागों में फैल गई। दक्षिण के दुर्गम रास्तों को पार करती हुई इस जाति के टाँडे कन्या कुमारी तक पहुँचे। अपनी परिस्थितियों और प्राकृतिक वातावरण से अपनी अस्तित्व की सुरक्षा के लिये संघर्ष भी किया और समझौता भी।

विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं का परिचय ही प्राप्त नहीं किया बल्कि उनको बहुत कुछ ग्रहण भी किया । दक्षिण में इस जाति के मुख्य केन्द्र महाराष्ट्र और आन्ध्र बने । आन्ध्र के श्री वेंकटेश्वर से इनका पुराना धार्मिक सम्बन्ध है । आज भी नित्य प्रति बालाजी के दर्शन के लिये आते हैं और अपने सालभर के इस निमित्त जोड़े हुए पैसे बालाजी को भेंट कर जाते हैं । इनके पूर्व पुरुष हाथीराम बाबा का बालाजी से एक विशेष रागात्मक सम्बन्ध था । इसके विषय में कई अनुश्रुतियाँ भी मिलती हैं । तात्पर्य यह है कि बनजारा जाति का आन्ध्र प्रदेश से घनिष्ठ सम्बन्ध है ।

कालान्तर में इस जाति ने पठारी, ऊबड़, खाबड़, बंजर, और ऊसर ज़मीन पर अधिकार भी किया । बनजारों के घूमते हुए टाँडे इन स्थानों पर स्थायी रूप से बस गये । भूमि अच्छी होने पर इन्होंने अपना क्षेत्र भूमि को समर्पित किया अन्यथा पशु पालन का व्यवसाय चलता रहा । यदि टाँडेवाले किसी ऋतु विशेष में घुमक्कड़ी भी करते हैं तो अपने टाँडो में लौटकर आ जाते हैं ।

टाँडे की संरचना के केन्द्र में नायक की स्थिति है । नायक इस जाति के धार्मिक और सामाजिक मामलों पर अपना निर्णय देता है । विवाह जैसी सामाजिक संस्था भी इसके निर्देशन में चलती और विकसित होती है । नायक अहम सवालों के निर्णय के लिये बिरादरी के अन्य प्रमुख व्यक्तियों से सहायता लेता है । नायक का पद वंशानुगत होता है । टाँडे में नायक की बहुत अधिक प्रतिष्ठा होती है । टाँडा बहुत कुछ आत्मनिर्भर होता है । कुछ बनजारे सुनार का काम करते हैं और कुछ नाई का । ढाढ़ी और चारण इसके वंश का व्याख्यान करते हैं और प्रशस्त गायक भी हैं ।

जहाँ तक बनजारों के मूल स्थान का प्रश्न है, और कोई विशेष उलझन नहीं है । यह जाति राजस्थान से ही चलकर देश के विभिन्न भागों में फैली हुई है । इनके कई जातिगत वर्ग और गोत्र है । बनजारों के गोत्र अधिकांशत: राजस्थान के राजपूतों से मिलते-जुलते हैं । रीति-रिवाज भी बहुत कुछ राजस्थान जैसे ही है । राजस्थान से इनके निकलने और चलने के सम्बन्ध में कई अनुश्रुतियाँ प्रचलित है ।

इस जाति के सामाजिक सम्बन्ध राजपूतों जैसे ही है । बनजारा का विवाह एक महत्वपूर्ण घटना है । टाँडे की समस्त जनता विवाह में सक्रीय रूप से भाग लेती है । सामान्य रूप से विवाह सम्पन्न करने के लिए ब्राह्मण की आवश्यकता समझी नहीं जाती पर अब कुछ लोग ब्राह्मण को बुलाने लगे हैं ।

बनजारों की भाषा वैसे तो बहुत कु से स्थानीय प्रभाव ग्रहण करके विकसित हुई है पर इसका मूल रूप राजस्थानी बोली का ही है । राजस्थानी बोलियों की ध्वन्यात्मक और व्याकरणात्मक विशेषताएँ बनजारा बोली में अनुस्यूत हैं ।

बनजारा लोक साहित्य भी प्रचुर मात्रा में मिलता है । अधिकांश साहित्य गेय रूप में है - ।{" गाता जाये बनजारा" यह गीत विभिन्न देवी-देवताओं से भी सम्बन्धित हैं और बनजारों के धार्मानुष्ठान से बाते हैं । कुछ गीत संस्कारों से सम्बन्धित हैं । साहित्य की दृष्टि से इनमें प्रमुख हैं - जन्म, विवाह और मृत्यु । बनजारा गीतों में ही मग्न होकर देवता को प्रसन्न करता है, गीतों में ही हँसता है और गीतों में ही रोता है । कुछ गीत प्रबन्धात्मक भी होते हैं, जिनका गायन काफी लम्बे समय तक होते रहते हैं ।

गीतों के के अतिरिक्त विविध पहेलियों के रूप में बनजारा मुक्तक सा विधा भी है । इन पहेलियों का उपयोग कई अवसरों पर

होता है । मुख्य रूप से विवाह के अवसर पर अनेक पहेलियाँ बुझाई जाती हैं ।

कई प्रकार की लोक कथायें भी बनजारा कहलाता सुनाता है । कुछ देवताओं, साधुओं या विशेष वीरों या सतियों की कहानियाँ कही जाती है । मनोरंजन के लिए पशु पक्षियों, परियों और राजा-रानियों की कहानियाँ भी कही जाती हैं । बहुत से चुटकुले भी प्रचलित हैं ।

संक्षेप में यही इस प्रबन्ध के निष्कर्ष हैं यद्यपि निष्कर्ष बहुत नये नहीं हैं किन्तु प्रस्तुत प्रबंध में मूल सामग्री के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये हैं । आन्ध्र प्रदेश के बनजारों पर यह पहला प्रबन्ध आगे के शोध कार्य के लिये प्रेरक होगा ऐसी आशा है । यह प्रबन्ध सर्वेक्षणात्मक प्रकृति का है । आगे विशेषीकृत अध्ययन की कड़ियाँ जुड़ती चले यह मेरी कामना हैं ।

. ..

प रि शि ष्ट

परिशिष्ट - I

बनजारा बोली में प्रचलित वाक्य

बनजारा बोली में प्रचलित कहावत वाले वाक्य :

(1). सौ चोट सनारेर तो .. सौ चोट सुनार की एक चोट
एक चोट लवारेर .. लुहार की ।

(2). हातीर दान्त खायेर नाळो.. हाथी के दांत खाने के और
बतायेर नाळो . दिखाने के और ।

(3). सोनेर परख सनारे न्ह .. हीरे की परख जोहरी ही
मालम .. जानता है ।

(4). थूक चाटा तो तरस छटेनी .. ओस चाटे प्यास नहीं बुझती ।

(5).

....

बनजारा बोली सामान्यतया प्रचलित कुछ वाक्य
साधारण वाक्य (सामान्य कथन, सूचनात्मक वाक्य,
स्वीकारात्मक वाक्य आदि)

1. डोकरा चाकू लीदो । .. बूढ़े ने चाकू लिया ।
2. मारो बल्द लाड़ो ला । .. मेरा बैल प्यारा है ।
~~3/ मैने रस्सि हाथ में ली~~ ..
3. मैं राड़ी हाते मां लीदो .. मैंने रस्सी हाथ में ली ।
4. मन चोट लाग ग गी .. मुझे चोट लग गयी ।
5. वह बाजार जा रहा था .. व हाटेन जारो तो ।
5. व हाटेन जारो तो .. वह बाजार जा रहा था ।
6. मन व काय दीनो कोनी .. मुझको उसने कुछ नहीं दिया ।
7. मार एक बल्द मरगो .. मेरा एक बैल मर गया ।
8. राम खान खान्दो .. राम ने खाना खाया ।

9. इ जागगो .. वह जाग उठी

10. इ बाटी खा रोतो .. वह रोटी खा रहा था ।

11. ई हमारो घर छ .. यह हमारा घर है ।

12. वह हंसते-हंसते थक गया .. इ हंसतो-हंसतो हारगो

{इ हंसतो-हंसतो हारगो} .. वह हंसते-हंसते थक गया ।

13. चोटेन पकड़ लो दो .. चोट को पकड़ लिया ।

14. अब भी इ सोरोच .. अभी तो वह सो रहा है ।

15. ऊ नाचतो-नाचतो थम गो .. वह नाचते-नाचते रुक गया ।

16. इ छोरी नाचरोच .. वह लड़की नाच रही है ।

17. ~~अब~~ इ रमरोच .. वह खेलता है ।

18. सोमला कुराड़ी तो झाड़ काटो .. सोमला ने कुल्हाड़ी से पेड़ काटा ।

19. मं बाटी खावंचूं .. मैं रोटी खाता हूँ ।

20. ~~मैं/रोटी खा/रहा/हूं/~~ .. ~~मैं/बाटी~~

मं बाटी खारोचूं .. मैं रोटी खा रहा हूं ।

21. तलवे मां छोरी डूब गयी .. तालाब में लड़की डूब गयी ।

22. वाळे मां कपड़ा वळगो .. हवा में कपड़ा उड़ गया ।

23. मार घरेवाळ काम कररोच .. हमारी घरवाली काम कर रही है

24. मार चार छोरा छ .. मेरे चार लड़के हैं ।

25. ई छोटी सेरेर छ .. यह लड़की शहर की है ।

26. ई तांड़री रंडारोच .. यह औरत विधवा है ।

27. ई तांड़री पण्णागीच .. यह औरत ब्याहता है ।

28. तांड़री पींजण पेटरोच .. औरत पायल पहन रही है ।

29. मार गावड़ी घांस गी .. मेरी गाय भाग गई ।

30. तार छेळी मन मळी ती	..	तेरी बकरी हमें मिली थी ।
31. घटके सरेर जातरा भरारोच	..	घटकेसर का मेला ब लग रहा है ।
32. घणो मांदो सपनो दीटो	..	बड़ा बुरा सपना देखा ।
33. केल्डा रमरोच	..	बछड़ा खेल रहा है ।
34. मां बोर खायो	..	मैने बेर खाया ।
35. मां बोर खाल्दो	..	मैने बेर खायो ।
36. मां एक कपड़ा हेरा फेंक दीनों चूं	..	मैंने एक कपड़ा नीचे डाल दिया है ।
37. छोरा घोड़े पर सवारी की दो	..	लड़के ने घोडे पर सवारी की ।
38. ई ऊपरेती पड़गो	..	वह ऊपर से गिर गया ।
39. झाड़े पर कुराडी मेलोचूं	..	पेड़ पर कुल्हाडी रखी है ।
40. ई बकरा छ	..	यह बकरा है ।
41. ये दी बकरा छ	..	यह दो बकरे है ।
42. एक वादेर वेतो तो	..	एक बन्दर था ।
43. इ पळ खारोच	..	वह फल खाता है ।
44. दीरे कपड़ा धोरोच	..	औरते कपड़े धो रही है ।
45. मार टागि मां दूकरोच	..	मेरे पेट में दर्द मार रहा है ।
46. ऊंटे परती सवारी उतरी	..	ऊंट से सवारी उतरी ।
47. बळद जावच	..	बैल जाते हैं ।
48. दाळ सीजरोच	..	दाल पक रही है ।
49. आटो लायेना गो	..	आटा लेने गया ।
50. ई मालम छेनी कसेन वेगो	..	यह मालूम नहीं क्यों हो गया ।
51. ई मालम छेनी कूं वेगो	..	यह मालूम नहीं कैसे हो गया ।
52. ई मालम छेनी केवड़ी वेगो	..	यह मालूम नहीं किधर हो गया ।

53.	मा इ अचार खादो जेना मार दादी बनाईती ।	..	मैने वह अचार खाई जो मेरी दादी ने बनाई थी ।
54.	घणो मोटो दुनिया छ	..	बहुत बड़ी दुनिया है ।
55.	जहाँ मन चलेगा रहूँगा (जत दल भोजिया वत रीयूं)	..	जहाँ मन चलेगा रहूँगा । (")
56.	मा गोन वजी छोरो फरन आवगो	..	मैं गया भी और लौट भी आया ।
57.	तू जतरेची वत मार दादा भी रच	..	तुम जहाँ रहते हो वहाँ मेरे दादा भी रहते हैं ।
58.	मार गामें मा तार काका रच	...	मेरे गाँव में तुम्हारे चाचा रहते हैं
59.	इ चोर छ	..	वह चोर है ।
60.	इ आयो आदमी छ	..	वह भला आदमी है ।
61.	ई खेत मारो छ	..	यह खेत मेरा है ।
62.	तू कुणा से टाँडे रो छो	..	तू कौन से टाँडे का है ।
63.	छोरा दूध पीरोच	..	लड़का दूध पी रहा है ।
64.	इ गोबर पाड़रोच	..	वह गोबर उठा रहा है ।
65.	ई छ झूपड़ा छ	..	यह छ झोपड़ा है ।
66.	ई खड़ेर झूपड़ा छ	..	यह बांस का झोपड़ा है ।
67.	इ बाजरीर खेत छ	..	यह बाजरे का खेत है ।
68.	ई बाजरीरो खिचड़ी छ	..	यह बाजरेकी खिचड़ी है ।
69.	ई लापसी असली घीयेर छ	..	यह हलवा असली घी का है ।

...

नकारात्मक :

1. तू बाटी खान आजो मैं खाईनी । .. तू रोटी खा आ मैं नहीं खाऊँगी ।
2. मैं ओन दीटो भी कोनी .. मैंने उसे देखा भी नहीं ।
3. वजाकी वेगा क्सेन उटेसनी .. उठता क्यों नहीं सवेरा हो गया ।
4. आजेती कनाई लबारी कूँनी .. आज से मैं कभी झूठ नहीं बोलूँगा ।
5. वूँ वेगे मालम छेनी .. यह मालूम नहीं कैसे हो गया ।
6. मैं कनाई जामून खादो कोनी .. मैंने कभी जामून नहीं खाई ।
7. मन चणा खाय जायेनी .. मुझको चना नहीं खाया जाता ।
8. कोई काम करेनी .. कोई काम नहीं करता ।
9. मेर सगाई वी कोनी .. उसकी सगाई नहीं हुई है ।

....

प्रश्नात्मक वाक्य :

1. छोरा गावडीन क्सेन मारो .. लड़के ने गाय को क्यों मारा ।
2. तू धान क्सेन रांदी .. तूने चावल क्यों बनाई ।
3. क्सेन उटेसनी .. उठता क्यों नहीं ।
4. तार घरे माँ घी छक छेनी .. तुम्हारे घर में घी है या नहीं ।
5. तार कतरा भाई छ .. तुम्हारे कितने भाई है ।
6. खाल्देचक कोनी .. खाये है या नहीं ।
7. तू कत जारोची .. तू कहाँ जा रहा है ।
8. गीद क्सेन बोलरोची .. गीत क्यों गा रहा है ।

9. लड़ाई क्सेन कररोची .. झगड़ा क्यों कर रहा है ।

10. तू माते पर पागड़ी क्सेन बांदो कोनी .. तूने सिर पर पगड़ी क्यों नहीं बांधी

11. पगे मां खाचड़ा क्सेनी छेनी .. पैर में जूता क्यों नहीं है ।

12. मन काय मालम .. मुझे क्या पता ।

13. क्सेन कोम जारोची .. क्यों कहां जा रहा है ।

14. तू येन क्सेन मार शेयो .. तू इसे क्यों मार रहा है ।

15. तार गाम कट छ .. तुम्हारा गांव कहां है ।

16. तार नाम काई छ .. तुम्हारा नाम क्या है ।

17. तार कुणसो कुत्रा छ .. तुम्हारा कौनसा कुत्ता है ।

18. व तळाव मां कूं पड़गो .. वह तालाब में कैसा गिरा ।

19. काई काम छ .. क्या काम है ।

20. खान कन्ना खाराचो .. खाना कब खाएंगे ।

21. तार घर कसो छ .. आप का घर कैसा है ।

22. xxx व कूण देवळ छ .. वह कौन सा मन्दिर है ।

23. वावडीर पाणी कसो छ .. कुएं का पानी कैसा है ।

24. कोम गोली .. किधर गई थी ।

25. क्सेन धासंगी .. क्यों भाग गयी ।

26/ <u>प्रश्नोत्तर रूप में कुछ वाक्य :</u>

1. प्रश्न : तुम्ह तार कतरा छोरा छे? तुम्हारे कितने लड़के हैं?
   उत्तर : मार चार छोरा छ .. मेरे चार लड़के हैं ।

2. प्रश्न : कतरा बोर खादो .. कितने बेर खाये?
   उत्तर : चार बोर खादो .. चार बेर खाये ।

3.	प्रश्न :	काँई काम छ? ..	क्या काम है?
	उत्तर:	मार भाईर वाया वेरोच ..	मेरे भाई का विवाह हो रहा है ।
4.	प्रश्न :	खान कसेन खायेसनी? ..	खाना क्यों नहीं खाते?
	उत्तर:	भूख छेनी ..	भूख नहीं है ।
5.	प्रश्न :	हाटेन कूण गोच ..	हाट में कौन गया है?
	उत्तर:	काका गोच ..	चाचा गया है ।
6.	प्रश्न :	पामड़ी कसेक छ? ..	चुनरी कैसी है?
	उत्तर :	पामड़ी घण अच छ ..	चुनरी बहुत अच्छी है ।
7.	प्रश्न :	चावकेर काँई दाम छ?	चावल का क्या भाव है?
	उत्तर :	तीन रुपया न एक किलो	तीन रुपये में एक किलो ।
8.	प्रश्न :	ओन कसेन मारो? ..	उसे क्यों मारा?
8.	उत्तर :	ह मार कूंटी काड़रो तो	वह मुझे चिढ़ा रहा था ।
9.	प्रश्न :	आटो कूण पीसरोच?	आटा कौन पीस रहा है?
10.	उत्तर :	मामी आटो पीसरीच	मामी आटा पीस रही है ।
10.	प्रश्न :	खड़ कत छ? ..	घास कहाँ है?
	उत्तर :	खड़ खड़ मैदाने माँ छ	घास-मैदान में है ।
11.	प्रश्न :	शिकारे वास कूण गोच?	शिकार के लिए कौन गया है?
	उत्तर :	तार मामा गोच ।	तुम्हारा मामा गया है ।
12.	प्रश्न :	काँई नगावण रादूं?	क्या सब्जी बनाऊं?
	उत्तर:	पालकेर भाजी राँद ।	पालक की भाजी बनाओ ।
13.	प्रश्न :	पाणी केमा भरेचो?	पानी किसमें भरोगी?
	उत्तर :	पाणी घुड़िया माँ भरचूं ।	पानी मटके में भरूंगी ।

आदेशात्मक वाक्य :

1.	ई राडी लिया	..	वे रस्सी ले आ
2.	चणा भूंजला	..	चना भून ले
3.	नवण करला	..	पैर छू ले
4.	तु ई कुकडीउन पाड़ला	..	तू इनमू मुर्गों को उठा ले
5.	व्हां बोत मत जो	..	वहाँ मत जो
6.	पक मत खो	..	पन मत खा
7.	अरे भिया एत आजो	..	अरे भाई यहाँ आ
8.	ऊ बकरान लिया	..	उस बकरे को ले आ
9.	येतेती उगरजो	..	यहाँ से चला जा
10.	जान काम कर	..	जाकर काम कर
11.	जान सोजो	..	जाकर सोजा
12.	जान खाला	..	जाकर खा ले
13.	दूध पिरादा	..	दूध पिलाओ
14.	खान रांद	..	खाना बना
15.	बेसजो	..	बैठ जा
16.	समोर नाच	..	ठीक से नाच
17.	खिखेका मत	..	दांत मत दिखा
18.	ओन बांध द	..	उसे बांध दो
19.	खास जो एतेती	..	यहाँ से भाग जा
20.	राम-राम बोल	..	राम-राम बोलो
21.	भजन कर	..	भजन कर
22.	छोडी छांट	..	चटनी पीसो

23.

23. जाग झाड .. झाड़ू लगाओ

24. धापड़ मार .. थप्पड़ मार

25. काम कर .. काम कर

सलाह देनेवाले वाक्य :

1. चाल फरन आवां .. चलो, घूम कर आवें

2. छेळीर दूध काडुला .. बकरी का दूध निकाल लें

3. ला, दीवो बाळलां .. ला, दीया जला लें

4. वोत खतरा छ, मत बेस .. वहाँ खतरा है, मत बैठो

5. तार छोरा बीमार छ, .. तेरा लड़का बीमार है, उसे
वोन दारु द । .. दवाई दो ।

6. एन माफ करदा .. इसे माफ कर दो

7. ससुरेन नवण करला .. ससुर के पैर छू लें

8. मत मार .. मत मार

9. दारु मत पी .. दारू मत पीओ

10. लबाडी मत कर .. झूठ मत बोल

11. चोरी मत कर .. चोरी मत करो

12. विनती कर .. प्रार्थना करो

13. बरूला मत सामळ .. बुरा मत सुनो

14. धरम करो .. दान करो

15. अलह आचो रा .. प्रेम से रहो

16. आचो काम कर .. अच्छा काम कर

17. दया कर .. दया कर

18. सौन्ो वेजो .. शान्त रहो
19. गणिया बन .. गुणवान बनो
20. अकलबन्द बण .. ज्ञानी बनो
21. मा-बापेर सेवा कर .. माता-पिता की सेवा करो
22. डोक-डोकराइर असीस ला .. बड़ों का आशीर्वाद लो
23. कपट मत कर .. कपट मत कर
24. मलरेती रा .. मिल-जुलकर रहो
25. सत्तेवासु लड़ .. सच्चाई के लिए लड़ो

प्रार्थना करनेवाले वाक्य :

1. म दलेक वेळा आराम कर लूं .. मैं कुछ देर आराम कर लूं
2. म गाम जान आऊं .. मैं गांव हो आऊं
3. म कपड़ा धोलूं .. मैं कपड़े धो लूं
4. म अब धान खालूं .. मैं अब धान खालूं
5. म नाच देखूं .. मैं नृत्य देख लूं
6. मैं पूजा कर लूं .. मैं पूजा कर लूं
7. म जाऊं .. मैं जाऊं
8. म आऊं .. मैं आऊं
9. मार घूंघटी लादा .. मेरा कम्बल लादे
10. म हाटेन जारोचूं, .. मैं बाजार जा रहा हूं,
    मन एक रपया दे द .. मुझे एक रुपया दे दे
11. मार लाकुडी खाला .. मेरी लाकुड़ी खाले
12. मन मत मार .. मुझे मत मारो
13. मन माफ करदा .. मुझे क्षमा कर दो

14.	मु मन काम द	..	मुझे काम दो
15.	मन बाटी द	..	मुझे रोटी दीजिए
16.	मुझे मन रे वासु जाग चाणो	..	मुझे ब रहने के लिए जगह चाहिए
17.	मा पर रीस मत कर	..	मुझ पर गुस्सा मत करो
18.	हात जोड़ूं	..	हाथ जोड़ता हूं
19.	पगू पकड़ूं	..	पांव पकड़ता हूं
20.	असीस दा	..	आशीर्वाद दीजिए
21.	अरदास कर	..	प्रार्थना करो
22.	मातो टेकला	..	माता टेक ले
23.	हंगोळी कर लो	..	स्नान कर लीजिए
24.	से आवगे काई	..	सब आ गये
25.	आज्ञा दीजिए	..	

<u>डांटने-फटकारनेवाले कुछ वाक्य :</u>

1.	तु ससरेर मुणाग ऊबी, तोन सरम आयेनी	..	तू ससुर के सामने खड़ी, तुझे शरम नहीं आयी ।
2.	तु माते पर कपड़ कसेन ओढ़ी कोनी?	..	तूने सिर पर कपड़ा क्यों नहीं ओढ़ा?
3.	पगे मां खाचड़ा कसेन छेनी	..	पैर में जूता क्यों नहीं है?
4.	गाले पर थापड मार दियूं	..	गाल पर थप थप्पड मार दूंगा
5.	तु नायक छी, नायकेर काम करेसनी	..	तुम नायक हो नायक काम नहीं करते ।

6.	बेस अीत	..	बैठ यहाँ
7.	सरम छेनी	..	शरम नहीं
8.	काम कलेन करेसनी	..	काम क्यों नहीं करता
9.	कलेन हरगढ़ी सोयेचो	..	क्यों हमेशा सोते रहता
10.	दान्त छाट कर दियूं	..	दान्त खट्टे [illegible] कर दूंगा
11.	भेजो छेनीजको कलेरको	..	ज्ञान हीन कहींका
12.	तू वेडो छो	..	तुम पागल हो
13.	तू गतेलडा छो	..	तुम मूर्ख हो
14.	तू बेइमान छो	..	तुम नमक हराम हो
15.	तू राण्डिया छो	..	तुम कायर हो
16.	समोर बेस	..	ठीक बैठो
17.	तार चाल ठीक छेनी	..	तुम्हारा बर्ताव ठीक नहीं है
18.	बेइज्जत मत कर	..	बेइज्जत मत करो
19.	बीड़ी कलेन पीयेचो	..	बीड़ी क्यों पीता है
20.	गाळी कलेन देचो	..	गाली क्यों देता है
21.	मीटकीर नाई टर-टर मत कर	..	मैंढक के जैसा टर-टर मत कर
22.	कलेन मूंडो पगडरोचो	..	क्यों मुँह पकड़ रहो है
23.	मूंडो बूर	..	मुँह बन्द कर
24.	गबपश	..	चुप रहो
25.	वट-वट मत कर	..	वट-वट मत कर

26. आशीर्वाद वाले वाक्य :

1.	तार काम फते वेदा	..	तुम्हारा काम शुभ हो
2.	परमात्मा तोन सकेती रकाड़ेदा	..	ईश्वर तुम्हें सुखी रखे

3.	हमेशा गोद भरायेदा	..	सदा फलती फूलती रहो
4.	भगवान तार काम बणादिया ..		भगवान तुम्हारा काम बना दे
5.	भगवान तार गोद छोराती .. भर दीया	..	भगवान तुम्हारी लड़के से गोद भरे
6.	सकेती रा	..	खुश रहो
7.	राम तोन ताड़ो सीको करया..		राम तेरा भला करे
8.	दूदेर नाई तार घर उपण्या ..		दूध के जैसा तेरा घर उभरे
9.	माला माल वेजावो	..	माला-माल हो जाव
10.	काशी कावड़ेर असीस छ	..	बड़े-बूढ़ों का आशीर्वाद है
11.	[illegible] वेई मातार असीस ले ला		माता का आशीर्वाद ले ले
12.	काम पलते वेदा	..	कार्य सिद्धि हो
13.	नसीबदार छो	..	भाग्यवान हो
14.	काम आचो वेदा	..	कार्य मंगलप्रद हो
15.	राजार नाई जवोस	..	राजा के जैसा जीओगे
16.	राणी वणीस	..	रानी बनोगी
17.	पीड़ा टल जाय	..	कष्ट दूर हो जायेंगे
18.	भगवान तेरे पीछे है [भगवान तार लार छ]	..	भगवान तेरे पीछे है
19.	हमेसा सकेती रेस	..	सदा सुखी रहो
20.	हजारो बरस जवेस	..	जुग-जुग जीवो
21.	नाती पोत को देख बद् मरीस..		नाती पोत को देखकर मरोगे
22.	मार उमर भी लाग जाय	..	मेरी उमर लगजाय
23.	भगवान तोन अक्कल दीया ..		भगवान तुझे ज्ञान देगा
24.	लख पढ़न मोटो आदमी वीगा..		लिख-पढ़कर बड़ा आदमी होगा

25. भगवान तोन अंगारे मायती .. भगवान तुझे आग से बाहर निकालेगा
भी भार काढिया ।

<u>विस्मयादि बोधक वाक्य :</u>

1. शिकार करेन मामा जंगलेमां .. शिकार खेलने के लिए मामा
जाते ही अंदारो वेगो । ज्योंही जंगल में घुसा त्यों ही
अंधेरा छा गया ।

2. तू अवगोवस तो मा लार .. तुम आते तो मैं साथ चलती
आती

3. हाय मरगो .. हाय । मर गया

4. हाय लुटागो .. हाय लुट गया

5. ओह । काई आच चीज छ .. ओह । बड़ी बढ़िया वस्तु है ।

6. ओह । कतरा सुन्दर छोटा छ.. ओह । कितना सुन्दर लड़का है

7. बल्ला चोर आदो .. बुरी तरह चोर आया

8. अरे । पड़गो .. अरे गिर गया

9. अरे । वस खान्दो .. अरे विष खा गया

10. अरे । सरप डसगो .. अरे । सांप डस गया

11. वस चढ़गो .. विष चढ़ गया

12. हाय । छाडेरीन चोर पड लेगो.. हाय । औरत को चोर उठाकर
ले गया ।

13. हाय । छेलीन भेड़िया .. हाय । बकरी को गीदड़ उठाकर
पाड़ लेगो ले गया ।

14.	टपटन पड़गो	..	फिसल कर गिर पड़ा
15.	हाय । कांटो भकगो	..	हाय । कांटा चुभ गया ।
16.	घीडी फूटगी	..	मटकी फुट गई
17.	अरे । अचम्भलो छेत कळगो ..		अरे । अचानक छेत कल गया ।
18.	अरे झूपडा माँ अंगार लागगो..		झोपडे में आग लगी
19.	हाय राम मातेपर नारेळ पड़गो..		हाय राम सिर पर नारियल गिरा
20.	हेट पडेगेतो टांगे मोढागी ..		नीचे गिरने से पैर मोच आ गई ।
21.	हाय । पोसा गमागे	..	हाय । पैसे गुम गये
22.	हाय राम मार बापेन चोर..		हाय राम मेरे पिताजी को
	मारगो	..	चोर मार कर गया ।

...

परिशिष्ट - [illegible] II

बनजारा शब्दावली

§अ§

अक्कल दाड़	..	अक्कल दाढ़
अंगूठा	..	अंगूठा
अस्तर	..	अस्तर
अवार	..	
अगीठी	..	अंगीठी
अखोर मनक्या	..	अनमानूस
अपणो	..	अपना
अंधारो	..	अंधेरा
अखोर सूरी	..	जंगली सूअर
अगियार कूटा	..	जुगनू
अरदास	..	प्रार्थना
सूरी	..	सूअरी
अनकक्ता	..	ना समझ
अदोई	..	चींटी विशेष, दीमक
अनाडो	..	अनाड़ी

§ आ §

आरी	..	आरी
आपणो	..	अपना
आरसो	..	दर्पण

आरो	.. आरा
आसामी	.. असामी
आँखी	.. आँख
आमली	.. इमली
आँतड़ी	.. आँतड़ी
आना	.. एक आना
आठ आना	.. आठ आना
आठ	.. आठ
आड़्या	.. आड़ा
आड़काट	.. केशों में अटकाने का काँटा
आसरो	.. घर का कोना
आलमो	.. कोक
आवा	.. घड़ा
आवो	.. अच्छा
[illegible] आवल	.. असल
आरडो-आरडो	.. वह भूमि जहाँ कीचड़ न होता हो ।

(इ)

इलायची	.. इलायची का दाना
इण्डा	.. अण्डा
इमा	.. इसमें
इम	.. इधर
इमान	.. इमान

	ई	
ईल	..	कीड़ा
	उ	
उठ	..	उठ
उस्तरा	..	उस्तरा
	ऊ	
ऊंदर	..	चूहा
ऊन	..	ऊन
ऊंट	..	ऊंट
उमर	..	उमर
ऊंघणो	..	ऊंघनो
ऊंडो	..	गहराई
	ए	
एक	..	एक
एडी	..	एडी
एना	..	इसको
एला	..	ये लीजिए
एमा	..	इसमें
एवडो	..	इधर
एलमालो	..	ठीक
एकर	..	पकड

एता	..	इधर
एतेती	..	इधर से

(ओ)

ओर	..	उसका
ओरी	..	बकरा काटने का अनुष्ठान
ओवडो	..	उधर
ओतेती	..	उधर से
ओखळी	..	ओखली
ओरसेनी	..	घृणा करना
ओळखणो	..	पहचानना
ओल्डो	..	टोकरी
आको	..	टेढ़ा
ओकरा	..	बारिक सुतली से गूँथा हुआ थेला

(क)

कुत्रार पोला	..	कुत्ते का पिल्ला (कुत्ते का बच्चा)
केल्डा	..	बछड़ा
केल्डो	..	बछिया
कुराडो	..	कुल्हाड़ी
कैंची	..	कैंची
कुकळो कुत्रा	..	कुत्ता
कुत्री	..	कुतिया

कस्तुर बिल्ली	..	कस्तुरी मृग
कस्तुर बिल्ला	..	वहीं
कांदा	..	प्याज
क्वोको	..	कौर
कासेर थाळो	..	कांसे की बड़ी थाल
x x		कांसे की थाली
कान ळोथ्रा	..	कान का मैल निकालनेका चिमटा
क्सोरिया	..	कोनों से ऊपर कपड़े से बनाई गई पट्टी
क्स	..	एडी से ऊपर पैर में
कारभारो	..	पहनने का गहना
कारभारो	..	ताँडे का कार्य करनेवाला
केरा	..	घानमही
कोनी	..	नहीं
कसेना	..	क्यों
कूण	..	कौन
काई	..	क्या
काम	..	काम
काढ	..	निकाल
काकोटी	..	रोटी बनाने का लकड़ी का बर्तन
कुल्डा	..	कौन
कानेर फूल , कन्या	..	कर्णफूल
कांटा	..	कांटा
काडीर डब्बी	..	दियासलाई की डिबिया

काडी	..	दियासलाई की तीली
कोप	..	प्याला
काळो	..	काला
कातो	..	कुत्ता
कोरकोंडो	..	गिरगिट
काछो	..	कछुआ
काळो नागसाँप	..	काला नाग
केकडो	..	केकड़ा
कोडी	..	चींटी
कोडी	..	कौडी
कोटडी	..	कमरा
किला	..	किला
कागसो	..	कंघी
कुआँ	..	कुआँ
काँटा	..	काँटा
काँचळी	..	चोली
काका	..	चाचा
काकी	..	चाची
कपड़ा	..	कपड़ा
कडेर पट्टा	..	कमरबंद
कोट	..	कोट
कोस	..	कोस
काधो	..	कंधा
कनपटो	..	कनपटी
कड	..	कर्णपटह

कांवेर-डब्बी क्काई	..	कलाई
कान	..	कान
कांखो	..	कांख
कूणी	..	कोहनी
काफो	..	कहवा
कीमा	..	कीमा
कुल्पो	..	कुल्पे
कूंजी	..	चाभी
कुत्रार पिला	..	पिल्ला
कुत्रा	..	कुत्ता
कुराडी	..	कुल्हाडी
काडोर डब्बी	..	दियासलाई
कोप	..	प्याला
कचोली	..	कटोरी
करवा [यमराज]	..	यम
कलोक	..	खेमना
कमळाक्य	..	मुरझाती है।
कोळो	..	मकड़ी
कोतळी	..	थैली
कुकडी	..	मुर्गी
कुकडो	..	मुर्गा
कागला	..	कौआ
कोर	..	जो बनजारा न हो
कलाकन	..	शराब या ताड़ी बेचनेवाली स्त्री

कडची	..	बड़ा चमचा
कूंडो	..	ओखली
कुंडिया	..	मिट्टी का छोटा बर्तन
कालो	..	काली
कडी	..	कढ़
काचला	..	नारियाल का एक भाग
कडाव	..	गेहूं के आटे का हलवा ।

॥ ख ॥

क्षेमी	..	क्षेम
खच्चर गद्दा	..	खच्चर
खड	..	घास
खोला	..	घाटी
खोळ	..	दुशाल, चादर
खाल्डा	..	चप्पल
खटमल	..	खटमल
खळो	..	खलिहान
खाटो	..	खट्टा
खिडकी	..	खिडकी
खूंटा	..	खूंटी
खोपडो	..	झोपडी
खोडो	..	चरनी
खाल्डा	..	चमडा
खुरसी	..	कुर्सी

खुर	..	खुर
खाकिया	..	नाला
खुणिया	..	घर का कोना
खोळो	..	कढ़ाना
खाडू	..	पशुओं का झुंड
खुरिया	..	बकरे की पडी और घुटने के बीच का भाग
खविया	..	चोली के हाथ पर लगाने वाला वस्त्र

(ग)

गाडुर	..	गोबर का कीड़ा
गोरफली	..	ग्वार
गहूं	..	गेहूं
गोल बटाणा	..	गोल मटर
गुदडी	..	गर्दन
गळो	..	गला
गोद	..	गोद
गोडा	..	घुटना
गोण्णी	..	पत्नी
गोत	..	सगा
गावडोर बोटी	..	गाय का मांस
गोरला	..	भेड
गोरली	..	भेडी
गोरो	..	गोरा

गरतणो	..	काली पोत
गादी	..	गद्दा
गुढ़णो	..	पायजामा
गोद घाल लोदे जको बेटी	..	दत्तक कन्या
गोद घाल लीदे जको बेटा	..	दत्तक पुत्र
गोट	..	शादी का एक प्रकार का अनुष्ठान, बकरा काटने का
गोबर	..	गोबर
गावडी	..	गाय
गूलो	..	चूतड
गोर	..	बनजारा
गूतणो	..	गूथना
गडनो	..	कूदना
गावण्या	..	गानेवाला
गाँ गैंदिया	..	मोटापन
गुडली	..	खिलौना
गटको	..	घूँट
गडला	..	पहाड
गोळवाणी	..	पूरण पोली के साथ खानेवाला पदार्थ
गोर	..	बद भोज
गदका	..	उमंग
गरोडा	..	घुटना
गोकणो	..	छिपाना

गेणो	..	गहना
गाळ	..	पीने के भीतर जमी हुई चिकनी मिट्टी ।
गुदला	..	प्यारा-सा
गलालण्य	..	शौकीन स्त्री
गल-गल करनो	..	शोर मचाना
गळकनो	..	हर्षोल्लित होना
गेला	..	ढूंढ

[घ]

घी	..	घी
घंटा	..	घण्टा
घूगडी	..	कंबल
घाघोरा	..	लहंगा
घूंडो	..	बटन
घोटा	..	शादी में पिलाने का शरबत
घूघरा	..	नूपुर
घोडा	..	घोडा
घोडी	..	घोडी
घूंडी	..	कमीज का बटन
घालना	..	डालना
घोटा	..	इमली और गुड़का मिश्रित शरबत ।
घोर	..	चिन्ता

घूरल	..	घूरल
घमको	..	नाद
घूंडीवाळो हड्का	..	बकरा या बकरी की विशेष हड्डी
घट्टी	..	चक्की [जाता]
घि घिवडो	..	छिपकी

[च]

चणा	..	चना
चावळ	..	चावल
चा	..	चाय
चटो आँगळो	..	काळी अंगुली
चुतड	..	चुतड
चेला	..	चेला, शिष्य
चकळा	..	चकला
चमचा	..	चमचा
चिमटा	..	चिमटा
चिमनी	..	चिमनी
चूलो	..	चुल्हा
चूनो	.	चूना
चिमणी	..	धुंवाका
चेपलू	..	चप्पल
चादर	..	चादर
चूट्टा	..	चिलम
चाँदी	..	चाँदी

चूडी	..	चूडी
चमकणो	..	डरना
चौकुन्दो	..	चौकोन
चूर्मो	..	गेहूँ की रोटी का चूर्ण बनाकर गुड और घी मिलाकर बनाया जाता है।
चाटिया	..	बैलके माथे पर बांधने का कलात्मक कपडा
चंगीलो	..	रंगीली
चंगरो	..	रंग बिरंगी
चपटी	..	चुटकी
चौकेर दांत	..	सामने के दो बडे दांत
चोटा	..	चोर
चोटला	..7	घूघरी और रोपटो नामक आभूषण वेणी में गूंथने पर चोटला कहलाता है ।
चिराटो	..	कांटोवाला पोधा
चरी मरी	..	सजकर
चटक - फ ट को	..	तीखा स्वाद
चुट्टा	..	हुक्का
चकाणो	:.	चकाना

{ छ }

छाती	..	छाती {पुरुष}
छडी	..	छडी
छत्री	..	छाता
छाण्णी	..	चूना
छत	..	छत
छपट	..	छत
छपनो	..	छिपकली
छेनी	..	नही
छ	..	है
छो	..	छब
छोटै	..	छोट
छरी	..	छुरा
छमकीली	..	प्यारी युवती
छलकणो	..	छलकना
छिंग	..	चोटी
छंदोला	..	रंगीला
छेटो	..	दूरी
छेडा	..	बाजू
छेळी	..	बकरी
छकडा	..	छोटी बैलगाडी
छूंगा	..	इज्जत
छूंगाळी	..	एक पगड़ी का तुर्रा तुर्रेबाज

(ज)

जार	..	ज्वार
जवक्या	..	जई
जवक्यार आटो	..	जई का आटा
जड़	..	जड
जापडो	..	जबड़ा
जांघ	..	जांघ
जीभ	..	जीभ
जोड	..	जोड
जाळो	..	जाली (चूल्हे की)
जम्मी	..	[illegible] पशु
जूं	..	जूं
जोग	..	जूं जोक
जनावर	..	सिंह
जांगिया	..	जांगिया
जेब	..	जेब
जम्मीवाळो	..	जमींनदार
जठाणी	..	जेठानी
जमाई	..	दामाद
जामण	..	छाछ
जळ	..	जल
जलम	..	जन्म
जावणो	..	जाना
जीवडा	..	मन, शरीर

जांगड	..	बनजारों के पालतू

(झ)

झांझ	..	झांझ
झारी	..	गगरा
झूपडी	..	झोपडी
झिंगुर	..	झींगुर
झगला	..	कमीज
झेण्णी	..	मथनी
झारा	..	झरना
झाग	..	लार
झुडांको	..	प्रतिष्ठित
झागाळो	..	लार टपकानेवाला
झामरी झोल	..	हरी-भरी घासवाला खेत

(ट)

टांग	..	पैर
टागेर आंगळी	..	अंगुली (पैर की)
टपारो	..	छोटा बक्स
टमाट	..	टमाटर
टोपी	..	टोपी
टोपट	..	खोपरा
टांडा	..	बनजारों की बस्ती
टोपली	..	कान के पास बालों में बांधकर पहनने का गहना

टीकी	..	टीका (मांग)
टैछो	..	पंगत विशेष
टोक्णो	..	छोकरा
टिंगल	..	भांडा
टेक	..	बधाई
टको	..	टालना
टेकाबाजी	..	बड़प्पन
टण्को	..	किसी बात की चुभन

(ठ)

ठाँवा	..	पलंग का पांव, कागज
ठाणो	..	थाना
ठमकतो	..	चापलूसी करता हुआ
ठालो	..	सूना
ठास-ठासन	..	ठूंस - ठूंसकर

(ड)

डमठा	..	डफ
डुग-डुगी	..	डुगडुगी
डाडी	..	ठुड्डी
डब्बा	..	डिब्बा
डोकरा	..	बूढ़ा
डोकरी	..	बूढ़ी
डगडाव	विह्वलता	
डंगव	..	चले जाने का भाव

डोबी	..	टखनी
डोळा	..	आँख
डकार	..	छलांग
डबरा	..	पानी का कुण्ड
डळो	..	मांस का छोटा
डळो	..	टुकड़ा
डोडो	..	टेढ़ा

(ढ)

ढोल	..	ढोल
ढोलक	..	ढोलक
ढाकणो	..	ढकना
ढोर	..	पशु
ढेगची	..	देगची
ढाडो	..	प्यार
ढाड	..	आवाज
ढाकणो	..	ढकना
ढळो	..	ढलना
ढब्बू	..	मोटा

(त)

तुरही	..	तुरही
तूरी	..	अरहर, तूवर
तल्ली	..	तिल

तेल	..	तेल
ताळो	..	तालू
तितळी	..	तितली
तू	..	तुम
तमारो	..	आपका
ताळो	..	ललाट
तुवाल	..	तवलिया
तांगड़ी	..	दुल्हन को शादी में दिये जानेवाला दहेज को तांगडी कहते हैं।
तमाकू	..	तम्बाकू
तेवार	..	त्योहार
ताकड़ी	..	तराजू
तांडरो	..	औरस
ताजा	..	ताजा
तातो	..	गरम
टांडा	..	बनजारों की बस्ती

॥ थ ॥

थावर	..	शनिवार
थम	..	रुको
थाळो	..	थाली
थोंटिया	..	वर

§ द §

दाणा	..	अनाज, धान्य
दाडी	..	दाढ़ी
दांत	..	दांत, दन्त
दोस्त	..	यार
दुसरो बाप	..	सौतेला बाप
दक्वा	..	चौकट
दरवाजा	..	दरवाजा
दरवाजा चौकट	..	देहलीज
देवळ	..	मन्दिर
दकिया	..	डलिया
दाळ	..	दाल
दूध	..	दूध
दारू	..	शराब
दीतवार	..	रविवार
दल	..	हृदय
दोरा	..	तागा
दरवाणी	..	देवरानी
दादा	..	दादा
दादी	..	दादी
दामण	..	बांधने का साधन
दाढ	..	दाढ
दम	..	सांस
दवांई	..	दुवाई

दुबाडो	..	वह घास जो सदा हरा-भरा रहता है ।
दुनाघाटो	..	माल ढोनेवाला, बैल
दाडो	..	दिल
दिवलो	..	दीया
दिवाणी	..	राज्य के मन्त्री की पत्नी
दगलबाज	..	दगा देनेवाला

‖ध‖

धणी	..	पति
धेव	..	दही
धोळो	..	सफेद
घांस	..	भींगो
धड	..	धड
धराव	..	धोनेवाला
धोकणो	..	प्रार्थना करना
धांटा	..	भागा
धूंदी	..	मस्ती
धणी	..	पति

‖ न ‖

नंगाकण	..	कड़ी
नख	..	नख

नस	..	नस
नाक	..	नाक
नाडी	..	नाडी
नीवात	..	मिश्री
नाग सांप	..	नाग
नीलो	..	नीला
नाना	..	नाना
नानी	..	नानी
नूण	..	नमक
नायक	..	मुखिया
नसाब	..	टांडे का न्याय
नानक्या घोडो	..	टट्टू
नानक्या चीतो	..	तेंदुआ
नीलम	..	नीलम
नागर	..	हल
नातरी	..	पुत्र जन्म के अवसर पर गाये जानेवाला गीत
नवण करनो	..	चरण छूना
नवतो-छवतो	..	नम्रतापूर्वक
निलो	..	कच्चा
नैण	..	नजर
नसाब	..	न्याय
नायकण	..	मुखिया की पत्नी
नवणो	..	झुकन
नानकी	..	छोटी

नई	..	जैसा, जैसी
नैकी	..	अच्छाई
नाटडी	..	नटखट युवतियाँ
नकता	..	शुभ कार्य

(प)

पेंडी	..	अंग
पन्ना	..	पन्ना
पलंग	..	पलंग
पालकी	..	पालकी
पूंवडी	..	दुम
पंजा	..	पंजा
पिचकारी	..	पिचकारी
परेवडा	..	प्रेमपत्र
परमळा	..	प्रेमपूर्वक
पातळ्या	..	दुबला पतला व्यक्ति
पंतिया	..	पथिक
पेरणो	..	तैरना
पचार	..	पूछना
पनडा	..	वर
पस्ताणो	..	पस्ताना, पश्चाताप्
पोलगा	..	कलाउज
पपोळी	..	पो
पोतिया	..	पालतू

पन्वाडि	..	कोंपले
पदर	..	आंचल
पावणो	..	मेहमान
पिटी	..	चिड़िया
पळो	..	परोसने का साधन
पौंजण	..	पायजेब
पाणी	..	जल
पलक	..	पलक
पूटो	..	पीठ
पेट	..	पेट
पेटेमा	..	पेट {भीतरी}
पेडु	..	पेडु
पुतळी	..	पुतली
पूटेर बळका	..	टोंद
पेडु	..	गर्भ
प्रेम	..	प्रेम
पलंग	..	चारपाई
पाणीर घोडो	..	दरयायी घोडा
पीळो	..	पीला
पान	..	पान
परभाती	..	सवेरा
पामळी	..	दुपट्टा
पाटा	..	पट्टा
पटलोन	..	पतलून
पाट	..	रेशम

पागडी	..	साफा
पामण	..	अतिथि

(फ)

फबसवाडो	..	पसली
फेटिया	..	लहंगा
फरेको रंग	..	हल्का रंग
फूला	..	फूल की आकार वाली अंगूठी
फरवडा	..	फरवडा
फूली	..	कील (नाक की)
फराळा	..	हरी टहनियाँ
फूंदा	..	गोडरा
फूंदी	..	तितली

(ब)

बंगाई	..	पालना (झोला)
बेसणिया	..	बिछोना
बूमडी	..	बोम मारना
बानो	..	बाहना
बैस	..	बैठो
बांडो हथिर कोट	..	वासकोट
बावा	..	गुरु
बनजारा	..	बैलों की पीठ पर सामान लादकर ले जाने वाला
बोदलू	..	कोनी से ऊपर पहनने की लकडी की चूडी

बेगर	..	काँच से बनी चूड़ी
बकरा	..	बकरा
बुरस	..	बुरूश
बदना	..	रस्सा
बरमा	..	ब्रह्म
बोते	..	बहुत
बोडी	..	बहू
बदा	..	मनाई
बक्षीस	..	क्षमा
बकेडी	..	बकवास करने वाला
बाया	..	नौकर
बांडो	..	अपूर्ण
बकडी	..	बाहों में
बतासा	..	फल विशेष
बेलपतरी	..	बेल-फूल
बीन	..	बीन
बाटी	..	चपाती, रोटी
बाजरी	..	बाजरा
बगल	..	[illegible] बगल
बापणी	..	भौंह
बब्बीर मूंडी	..	चूचुक
बोडी	..	बहू
बाप	..	पिता
बेटा	..	पुत्र
बेटी	..	पुत्री

बाकेरतेल	..	ईंधन
बाण्णी	..	झाड़ू
बुनादी	..	नींव
बंगला	..	महल
बंबोळेर गूदं	..	बबूल का गोंद
बटाणा	..	मटर
बिल्ली	..	बिल्ली
बिलोर पीला	..	बिल्ली का बच्चा
बारह सिंगा	..	बारहा सिंगा
बारहा सिंगी	..	बारह सिंगी
बळद	..	बैल
बधवार	..	बुधवार

(भ)

भेजो	..	दिमाग
भुजा	..	बांह
भेन	..	बहन
भतीजी	..	भतीजी
भतीजा	..	भतीजा
भाई, भीया	..	भाई,
भाणजो	..	भानजा
भाटा	..	पत्थर
भेड़िया	..	भेड़िया
भांग	..	भांग
भाग	..	भाग

भात	..	भात
भभका	..	भभका
भूरो ससिया	..	खरहा
भूरिया	..	नभ
भोता	..	बोरा
भेनड	..	बहन
भडका	..	बेवकूफ
भूड	..	भाग्यहीन नारी
भूलाई	..	भूल, भूलैया में डालना
भसणों	..	भौंकना
भेना	..	उबालती
भाटा	..	पत्थर
भक-सक	..	भक्ष्य करना

{ म }

मटाई	..	मिठाई
मर-मरा	..	मुरमुरा
मेहय मैदार आटो	..	मैदा
मंगाळो	..	मधु, शहद
मिड्ता	..	टिड्डी
मंगळवार	..	मंगलवार
मिटकी	..	मेंढक
माचर	..	मच्छर
म	..	मै

मखमल	..	मखमल
मोल लेवाळो	..	ग्राहक
मरचा	..	मिरच
मसाळा	..	मसाला
मनक्या	..	मनुष्य
मंगाळा	..	चुल्हे का पत्थर
मल्ला	..	जंगल
मठावो	..	प्रार्थना
मेढी	..	खलिहान के बीच गढ़ी हुई थोली
मणि माणिक	..	माणिक
माळा	..	माला
मुकुट	..	मुकुट
मूंगा	..	मूंगा
मोती	..	मोती
मोतीर सीपनी	..	मोती की सीप
मसूडी	..	मसूडा
मुट्ठी	..	मुट्ठी
मूंठो	..	मूंगा
मोती	..	मोती
मोतीर सीपनी	..	मोती की सीप
मसडी	..	मसूडा
मूछ	..	मूंछ
मामा	..	मामा
मामी	..	मामी
मासी	..	मौसी

मासीर बेटी	..	मौसेरी बहन
मासीर बेटा	..	मौसेला भाई
मज़ीद	..	मस्जिद
मक्का	..	मकई
मळाई	..	मलाई
मसूर	..	मसूर
मळाव	..	जमाव
मेळू	..	मिलाई, एकत्र होना
मळतो	: [illegible]	गले में गला डालकर रोना
मूंग	..	महँगी
मळकाणो	..	मुस्कराना
मूरत	..	सूरत
मोचडा	..	जूता
मेलणो	..	रखना
मेलीडा	..	वर्षा ऋतु
मुंडी	..	सर
मळनो	..	मुखडा
माळा	..	नीड
मांळणो	..	जमाना
मिटको	..	मेंढक
मामलो	तलाक पर लगाया गया शुल्क	
मारोणी	..	[illegible] मारवाणी
माटी	..	आदमी, पुरुष

॥ य ॥

याडी	..	माँ
यार	..	यार

॥ र ॥

रौंवा	..	रौंवा
रमिया	..	प्रेमी
रकाड-रूकडी	..	रखेल
राई	..	राई
रैडो	..	रैडो
रीच	..	भालू
रातडो	..	लाल
रंग	..	ढंग रंग
रस	..	ईख रस
रजाई	..	रजाई
रू	..	रूई
रूपो	..	चाँदी
रपिया	..	रुपया
रेगमाळ	..	रेती
राख	..	राख
टाडी	..	रस्सा
रोकाणी	..	बिछाना
रूंगा	..	नाला
रकाड	..	रखना

कीडीर रैल	..	चींटी की कतार
रैल	..	धार
रामंडी	..	बैल के खूंटे से बांधने की रस्सी
रास	..	ढेर सारा
रंगळी	..	छोटा जाला
रंडवा	..	जिसकी पत्नी की मृत्यु हो गई हो
रातडो	..	लाल
रींच	..	भालू
रण	..	युद्ध

(ल)

लटकेण	..	लटकन
लट्टा	..	कैश बाल
लहिट	..	जंगली कबूतर
लोईंज	..	लड्डू
लेरिया	..	दोली [illegible] ढोनेवाला नौजवान
लभाण	..	व्यापारी
लकडी	..	लकडी
लदेणिया	..	सामान लादकर ले जानेवाला
लालडी	..	मोति, मूंगा
लेपो	..	पेटी
लबार	..	झूठा
लेस्या	..	लेने का भाव
लढ़ी	..	झूला

बमेवड़े		
लोवडी	..	ओढ़नी
लूंबी-झूंबी री मैला	..	सुन्दर युवतियों का समूह
लावा-लस्कर	..	सगे संबंधियों की अनगिनत संख्या
लाडी	..	वधु
लेको	..	हिसाब
लटको	..	जल्दी
लेरा	..	झूमना
लारो	..	लारवा
लुळणा	..	पोंछना
लोलेणा	..	माता

[व]

वांसळी	..	बांसुरी
ब वडद	..	उड़द
वारस	..	वारिश
वस	..	जहर
वसेर दांत	..	~~[illegible]~~ जहर के दांत
वदोई	..	~~[illegible]~~/ दीमक
वांदर	..	बन्दर
वाग	..	बाघ
वरस्पत	..	गुरुवार
वजाळो	..	~~उजाळो~~ उजाला
वद	..	वद

वढ	..	बढ़
वेरी	.	नदी में पानी भरने के लिए एक गज के घेरे में रेत निकालकर पानी निकालते हैं उसे वेरी कहते हैं।
वेलडु	..	दुल्हा
वेज	..	सुराख
वेपारी	..	व्यापारी
विनंती	..	विनंती
वकोलडी	..	गोबर का ढेर
वाड	..	खेत के चारों ओर काँटे बिछाना
वेणो	..	होना
वदणो	..	बढ़ना
वदका	..	पौधा
वचारणो	क्र.	उचाटना
वको	..	संकट
वपा	..	वोट
वगोणो	..	बदनाम करना
वगाणों	..	बताव करना
वडाव	..	हाथ फैलाकर रोना
वटला	..	छोटा भांडा
विवडो	..	बिछडाव
वडाळ	..	जिस स्त्री या पुरुष का चरित्र ठीक न हो
वटाळ्णों	..	उठाना

[ष]

षेळडो	..	जंगली जानवर

शरबत	..	शरबत

(स)

सुरी	..	सूअर
सोमार	..	सोमवार
सकुवार	..	शुक्रवार
सोजाणो	..	सो जाना
सूखा	..	सूखा
सपारी	..	सुपारी
सकाई	..	पका हुआ बकरे का खून
साबु	..	साबुन
सुराई	..	सुराही
सरोता	..	सरोता
सक्कर	..	चीनी
साग-भाजी	..	तरकारी
ससरो	..	ससुर
सासु	..	सास
संगासेण	..	संबंधी
सोकेर बेटी	..	सौतेली बेटी
सोको बेटा	..	सौतेला बेटा
सादरी	..	चटाई
सयाण्यिा	..	रूईदार तकिया
सांकळी	..	जंजीर
सीडी	..	सीढी
साक	..	धाम

सर्रा	..	भुट्टा
सूरीर बोटी	..	सूअर का मांस
सरबत	..	शरबत
सूजी	सू:	सूजी
सपोंकिया	..	केंचुली
साकिया	..	लोमड़ी
सांड	..	सांड
सींग	..	सींग

(ह)

हाट	..	हाट
हीरा	..	हीरा
हंसली	..	हंसली
हाथेर आंगळी	..	अंगुली (हाथ की)
होठ	..	ओंठ
हीवो	..	छाती (स्त्री)
हणूत	..	लंगूर
हण्णी	..	हिरण
हण्णीर पीला	..	हिरण का बच्चा
हाथी	..	हाथी
हटो	[illegible]	हटा
हडका	..	हड्डी
हंसलीर हडका	..	हंसली की हड्डी
हाथ	..	हाथ
हांक	..	आवाज

हळद	..	हल्दी
हुंडी वाळो हडका	..	बकरे के पैर की हड्डी
हुक्का	..	हुक्का
हांडी	..	मिट्टी का बर्तन
हथोडा	..	हथोडा

सहायक ग्रन्थ सूची

सहायक ग्रन्थ सूची

डा. स्वर्णलता :	1979	लोक साहित्य विमर्श, रत्न स्मृति प्रकाशन, बीकानेर
डा. श्रीराम शर्मा :	1973	लोक साहित्य सिद्धान्त और प्रयोग, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-3
डा. श्याम परमार:		लोक साहित्य विमर्श, जयकृष्ण अग्रवाल, कचहरी रोड, अजमेर ।
डा. एन.बी. चौधरी	1978	लोक साहित्य और पावरी भाषा, पुस्तक संस्थान, 37/50 गिलिस बाजार, कानपुर
डा. बंशीराम शर्मा :	1976	किन्नर लोक साहित्य, ललित प्रकाशन, लैंवेडी सरैन, विलासपुर – हिमाचल प्रदेश ।
डा. सत्येन्द्र :	1971	लोक साहित्य विज्ञान, प्रधान कार्यालय : अस्पताल रोड, आगरा ।
डा. चन्द्रभान रावत	1967	मथुरा जिले की बोली, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद ।
पद्मसिंह शर्मा :	1960	गुजराती और उसका साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
डा. सुनीत कुमार :	..	भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी ।
डा. रघुवीर सिंह :	1963	टॉड कृत राजस्थान, भाग 1, खण्ड 1, संगत प्रकाशन, जयपुर ।

सर जार्ज अब्राहम् : ग्रियर्सन	1959	भारत का भाषा सर्वेक्षण, अनुवादक : डा॰ उदयनारायण तिवारी, प्रकाशन शाखा : सूचना एवं जन संपर्क विभाग, लखनऊ - उ॰प्र॰
प्रो॰ सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार:	1960	भारत की जनजातियां, विद्या विहार, देहरादून ।
रमापति शुक्ल :	1969	हिन्दी का व्यावहारिक व्याकरण और रचना । विद्यामन्दिर, वाराणसी-1
डा॰ प्रभाकर माचवे :	1969	भारत की पन्द्रह भाषाएं बोलिये और सीखिए । पंजाबी पुस्तक भण्डार, दिल्ली ।
डा॰ भोलानाथ तिवारी	1969	शब्दों का अध्ययन
ब्लूमफील्ड :	1968	शब्दकार, दिल्ली । लैंग्वेज । रूपान्तर - भाषा - अनु॰ डा॰ विश्वनाथ प्रसाद, मोतीलाल बनारसीदास, बनारस ।
डा॰ अम्बाप्रसाद सुमन	1979	संस्कृति, साहित्य और भाषा, भारती प्रकाशन, अलीगढ़ ।
वही	1982	भाषा विज्ञान और सिद्धान्त और प्रयोग, सस्ता साहित्य भण्डार, दिल्ली ।

डा. बाबूराम सक्सेना	2004 वि.सं.	सामान्य भाषा विज्ञान, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।
डा. केशवदत्त रुवाली	1982	कुमाऊंनी भाषा और संस्कृति, ग्रंथायन, अलीगढ़ ।
डा. भोलानाथ तिवारी	सं. 1884	भाषा विज्ञान, चतुर्थ आवृत्ति । किताब महल, इलाहाबाद ।
पद्मसिंह शर्मा "कमलेश"	1955	हिन्दी गुजराती शिक्षा, तृतीय संस्करण राजस्थान प्रेस, [redacted] बम्बई-2
डा. रामविलास शर्मा	1969	भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी तीन खण्डों में । प्रकाशन : राजकमल प्रकाशन । नई दिल्ली ।
देवीशंकर द्विवेदी	:	भाषा और भाषिकी
पं. किशोरीदास वाजपेयी		भारतीय भाषा विज्ञान,
पं. हरगोविन्ददास त्रिकमचन्द सेठ	: 1928	पाइअ, सद्द - महण्णवो, कलकत्ता ।
मुहम्मद मुस्तफा खाँ "मद्दाह"		उर्दू- हिन्दी शब्द कोश ।
श्री चन्द जैन	:	वन वन घूमा बनजारा ।
डा. राजेन्द्र प्रसाद :	1951	अखिल भारतीय सांस्कृतिक सम्मेलन, दिल्ली का उद्घाटन भाषण ।

श्रीमती इन्दिरा गान्धी 1966 — अखिल भारतीय बनजारा सेवक शिविर उद्घाटन का भाषण ।

अशोक मेहता : 1966 — अखिल भारतीय बनजारा सेवक शिविर समारोह का भाषण ।

जवाहर लाल नेहरू : 1956 — विश्व इतिहास की झलक, पृ.15

द्विवेदी हरिनिवास : 1956 — मध्य भारत का इतिहास, प्रथम खण्ड ।

त्रिपाठी शंभु रत्न : — भारतीय संस्कृति और समाज, किताब घर,

डा. भार्गव व्ही.एस. — मध्यकालीन राजस्थान का इतिहास ।

ओझा गौरीशंकर हीराशंकर : — राजपूतों का इतिहास ।

कुलकर्णी, कृ.पा. : — मराठी व्युत्पत्ति कोश

डा. रामशंकर शुक्ल : — भाषा शब्द कोश

के. बनीराम हीरामण पाटील : — गोर बनजारे लोकांचा इतिहास ।

श्री गोवर्धन शर्मा : — डिंगल साहित्य

द्विवेदी हरिहर निवास — मध्य भारत का इतिहास - प्रथम खण्ड ।

डा.श्यामसुन्दरदास : — हिन्दी साहित्य का इतिहास ।

डा. महेश्वरी हीरालाल : — राजस्थानी भाषा और साहित्य ।

सह. संपादक : मनोहर प्रभाकर : — राजस्थानी साहित्य और संस्कृति ।

<u>हिन्दी पत्रिकाएं :</u>

भाषा, गवेषणा, हिन्दी अनुशीलन, भाषाविद, पूरना, बनजारा, लोक साहित्य आदि ।

REFERENCE BOOKS

Col. Meekenize	:	Berar Censces Report, 1881
Irvin	:	Army of Indian Mughals
Baines, Athislana	:	Ethuography, 1912
Col. Tad, James	:	Caletters on Mahrathas, Indian Office, Tracts, 1798
Nangundaya H.V.	:	The Mysore Tribes and Castes, Mysore The Constitution (S.T.) Order, 1950
Banjara Study Team	:	Report of All India Banjara Study Team,1968
Government of India	:	Report of the Criminal Tribes Act Enquiry Committee 1949, Government of India
Boas F.	:	General Anthropology
Dr. D.N. Majumdar	:	Science and Culture
Gillin, J.L. & Gillin, J.P.	:	Cultural Sociology
Dr. S.radhakrishnan	:	Hindu View of Tribe
V.A. Smith	:	India Vol. III
Col.Tod, James	:	Annals and Antequited of Rajasthan Vol. I, Introduction
Gurey, G.S.	:	Races andCastes of India
Sinha N.K.	:	History of India
Crooke W.	:	Castes and Tribes of the N.W. Provinces & onthe Vol. IV, 1896
Dr. Grierson	:	Linguistic Survey of RIndia, Vol.I, Part I
Ibbetson, D.J.	:	The Punjab Castes and Tribes Vol.II
COwell.	:	Akademy 14th May 1870

B.J. Kilts	:	Report on the Censces of Bearer 1881
Prasad Nanwadeswar:		Land & People of Tribal Bihar & Ranchi
Government of India:		Censces of India, 1961, Report on the Population estimate of India.
Rmmgra		
Epigraphica	:	Indica Vol.XI
Elliot H.M.	:	The races of the N.W.O. of India Vol. I, London 1869
Dr. Majumdar D.N.	:	Races and Culture of India, Bombay, 1958
Shersing Sher	:	The Sikligao of Punjab, Preface
Cumberledge H.R.	:	Monograph & Banjara Class, 1882.
Harson S.S.	:	The Castes and Tribes of H.E.H. The Nizam's Doveiuion Vol.I, Bombay
Sir Melcolne J.	:	Central India Vol.II
Shersing M.A.	:	Hindu Tribes and Castes on represented in Banjaras Vol.I, Calcutta 1872.
Sir Lyall, Alfred	:	Astiatic Studies Vol.I
Plowden, W.C.	:	Report on the Censces of British India, Vol.I, 1881
Hastings, Warreu	:	Censces of India, 1891, Vol.No.IV, Beras of Hyderabad assigned districts, Calcutta, 1892
Staurt, H.A.	:	Censces of India, Vol.XIII, Madras
Robertson B	:	Cencesof India, 1891 Vo.XI, the Central Provinces and Fenaltories Part I, Calcutta, 1893.
Apte V.S.	:	Sanskrit - English- Dictionary
Elliot H.M.	:	The races of North Western Provinces of India, Vol.I

Hassan, S.S.	:	The Castes and Tribes of Nizam's Domination
Shakespeare	:	Dictionary
Temple R.C.	:	Indian Antiquarry, Vol.IX
Thurston E.	:	Castes and Tribes of Southern India Vol. IX, Madras, 1909
Ibbetson	:	Punjab Castes & Tribes, Vol.II
Col. Mackenizee	:	Berar Censces Report, 1881
Syed Sirajul-Hasan	:	The Castes and Tribes of H.E.H. Nizam's Domination, Vol.I, Bombay 1920
Rose H.A.	:	Tribes and Castes of Punjab & N.W.F. Provinces Vol.II, Lahore, 1961 (Lahore)
Prasad Narmadeshwar	:	People of Tribal Bihar, Ranchi, The Tribal Research Institute, 1961.
Aiyappan A.	:	Report on the Socio-Economic Condition of the Ab-original Tribes of the Provinces of Madras, 1948
Krishna Iyer, L.A.	:	Anthropology of India
Kennaddy M.	:	Origi Criminal Classes of Bombay, Presidency.
Censces of India,1961	:	Report on the population, estimates of India (1820-30), The Provinces of Malwa & adjoining districts, 1922
Sher S.S.	:	Sikh Sikligars of Punjab
Censces of India,1961	:	Mother Tongue, Vol.IX
Dr.Chatterji, S.K.	:	Origin & Development of Bengali Language.
Dr. Grierson W.	:	Linguistic Survey of India Vol.I, Part I, 61 Calcutta 1927
Dr. Tessitory	:	Indian Antiquarry, 1914-16

Government of India : The Scheduled Castes and Scheduled Tribes, Lists of Notification Ord 1956 and Censces Report of India,

Cumberlage : Monograph on Banjara

Wellesly : Note on Deccan

Abb Dubb'os : Abbu Dubb'ois Notes

Col. Mecknizie : Berar Censces Report 1881

Col. Tod.J. : Letters on the Marhattas 1798 Indian Office Tracts.

~~Mrsxx~~

Lemmarchand A.W.M. : A Guide of Criminal Tribes, Nagpur 1908

Hollius, S.T. : Criminal Tribes of U.P.1914

Daly F.C. : Criminal Classes Operating In Bengal, 1916

Naidu,M.P.R. : The Criminal Tribes of Madras

Kant H.K. & Tourkeins L.L. : Report on the questions relating to wandering and criminal tribes of Punjab, Simla - 1914

Bhargawa B.S. : Criminal Tribes of India, Lucknow R 1949

Dr. Majumdar D.N. : Races and Culture of India, 1949

March of India, : Vol.9, No.3, March 1957

K. Iyer L.A. & Bal Ratnam : Anthropology in India, Bombay 1961

Bahl, Kalicharan 1967 : A reference Grammer of Hindi, Chicago, University of Chicago

Beames John : 1966. Comparative Grammer of the Modern Aryan Languages of India, Munsiram Manoharlal, Delhi (Ist Edition, 1972) Turnor & Co., London

Burton Page John : 1957. Compound and Conject Verbs in Hindi BSOASXIX 469-78 University of London.

Chidananda Murthy M.: 1965. Lambani Janol Mettu Awara Bhase, Prabuddha Karnataka 47:3, 53-78

Crooke, W. : 1973 Races of NorthernIndia Cosmo Publications, Delhi. X

Gazetteer of Bombay Presidency : 1899. VOl.IX, Part II, Bombay

Grierson, George A. : 1968. Linguistic Survey of India. Vol. IX, Part III, Motilal Banarasidas, Delhi, Reprint, (First Edition, 1907)

Hucker Paul : 1961. On the problem of a method for treating the compound and conjunct verbs in Hindi.
BSOAS, XXIV 484-516, University of London.

Horley, A.H. : 1960. Collogaial Hindustani Routledge & Kegan Paul Ltd., London.

Hockett, C.F. : 1955. A manual of phonology. Indiana University Press, Bloomington.

Irvine, William : 1962. TheArmy of the IndianMughals - Its organisation and Administration Eurasia publishing House Pvt. Ltd., New Delhi.

Kachru, Yamuna : 1966. An Introduction to Hindi Syntex University of Illinois,- Urbana.

Kellogg, S.H. : 1965. A Grammer of the Hindi Language, London Reprint of IInd Edition, (Ist Edition,1975)

Laxmi Bai,B. : 1975. An Excursion in to the semantics of some particles in Indian Languages, Osmania - Paper in Linguistics, Vol.I, 53-64. Osmania University, Hyderabad.

Lyons, John : 1971. Introduction to Theoretical Linguistics,Cambridge University Press, London and New York.

Olphen, Hermanvan: 1970. The Structure of the Hindi Verb, Phrase, University Microfilms, Inc. Ann Arbor, Michigan

Pratap Dr. : 1968. TheBanjara's of Bapunagar (A settlement in the Urban environes of Hyderabad) Research Paper II, Tribal Cultural Research andTraining Institute, Hyderabad.

Dr. Pratap : 1970. Festivals of Banjaras, TribalCultural Research and Training Institute, Hyderabad.

Siraj-ul-HassanSyed : 1920. Caste and Tribes of H.E.H. Nizam's Dominions, Vol.I, Bombey

Trail. Ronald L. : 1970. A Grammer of Lamani Summer Institute of Linguistics, University of Olkahoma, Norman

R.V.Russell and Hiralal : Tribes and Castes of the Central Provinces of India.

Mr. Bhimbhai Kirparam : Hindus of Gujrat,

Mr. Crocke : Elliots Races,

बनजारा चित्रावली